ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥ दोहा ॥ ॥ ॐकार ध्यावत मुनिगण सोय तामें गर्भित पंच पद तीनि पद्धर दोय १ गुण अ
नंत सागर विमल विश्वनाथ भगवान धर्मचक्र मय वीर निज वंदों सिर धरिपान २ सिद्धारथ कुल कमल रविचि
न्ह सत्यापुर अवतार वंदों सनमति चरन युग शुभमति के दातार ३ छप्पय जा पूरब अवतार मास षट तीन वर्ष लौं
बर वरषे रतन आ मोक्ष शुभ गर्भ छवि वंत पिता घर देषि सुअद्भुत रूप देव माणिक्य इन्द्र धन सुर अपति भयो नाहि
सोय कियें तब सहस अक्षर वर्धमान श्री वर्धअतिमान कीर्ति जग में सहिमान वर्धहूर दिन इम शक्र वर्धमान वासव कही
५ बालपने जग सार माया तज दीक्षा नाव त धरा तपस्या ज्ञान घोर घोर वन वृक्ष काम हत भोजन दान महान चंदना मुक्ति जो
दीन्यो पंच आश्चर्य प्रवान देखि देवनि पुरि छान्यो ज्ञानी परीसह दोष अति भयंकर जानि मोह श्री महावीर ना मा कहो
ग्रह विधि अनंत सुख्यानि लहा ५ काम वार्य को हन्यो शुक्ल ध्यानी अग्नि के तिन घाति कर्म रिपु छेदि वाय केवलक
रि के तिन निज रूप जिन भरा धर्म दोष विधि पर काम्यो करम मुक्ति को राय सकल भव्य निज प्रति भास्यो इनि आदि
ज्ञान गत विख्यात गुन संपूरन ज्ञान वार वर दूर खवंत संसार तक दोंत निगुन प्राय ति होय कर ६ दोहा भरम हरन आनंद कर
मुक्ति रमा निज भरतार मोह तमारि ना मन अरक वंदों निज हित कार ७ ॥ अथ चौबीसी नाम मंत्र ॥ चौपदी-
वृषभ वृष चक्रांति सार वृष सकताथी वरतावन हार वृषदाय क वृषभांत मज्ञान वंदों वृषभनाथ भगवान ८
मोह काम आरंत इंद्रिय दुख हरण सार इक्कीतीय एकाकी अरि मिलित तनु सर्व अजितनाथ वंदों तज गर्व ९ संभव
अरहंत महान तीन लोक भवंती वनिधान संपूरन सुख के रतार वंदों नरा धार मुक्ति सार १० चिदानंद मय वांनि
मनोग आनंद करा भोग आत्मथिति अभिनंदन देव आनंद हेत करो नित सेव ११ समति जिनेश्वर सुमति दातार
भव्य जीव संबोधन सार सहस्र सकमति का सक्षिक्षाल वंदों तास दरसन भवजाल १२ वंदों पद्मप्रभ भगवान प
द्मा पद्म भलंकृत ज्ञान सकल जीव के हेतार पद्मा पद्म कांति सुभ सार १३ नमो सुपार्श्वनाथ जिनराय सुधी
नरनि कों पार सदाय सुख अनंत अगुन जुअनंत अष्ट करम कों कीन्यो अंत १४ जग जीवनि आनंद करतार धर्मा
मृत करित सार मिथ्यात मद्दर चंद्र समान वंदों चंद्रा प्रभ सुदान १५ सुविधि प्रभृ विधि दूर तावान भव्य न विधि
उपदेश कज्ञान करण मुक्ति सुख प्राप्ति काज विहरि नाऊ क प्रण मोजिन राज १६ श्रीतल भव्य जीव कों सार

पापतापनाशूकभवतार वरवोरश्यसुधाकनिवास नमोपापछेदनसुकमभास २७ प्रणमोंश्रेयश्रेयदातारजेप्रभुगुनधा
रेसंसार विश्वश्रेयअरु मोकश्रेयलेनसुखदायकजेय २८ पूरितततीनलगतकारिदेव कारहोदुखवारदुखसेव निंदत
कोयहोयनहिभाव वासपूज्यकेआश्रयजाव २९ अननदिकर्महानिदातारवचनामृतकरिजोगानेहोयपापमलिनदूरमे
घसमान विमलनाथविमलातमस्थान ३० गुनअनंतपरिपूरितज्ञानसुरपतिसेवेहुदेआनगुनअनंतप्रापतिकेका
ज वंदोश्रीअनंतजिनराज ३१ भाव्योधर्मदुविधिसुखदान सुरगमुकतिकोकारनजान। सादुयधर्मचक्रमयसार
वंदोधर्मधर्मकरतार ३२ दुखोकर्मनाशुनिकोजोर कषायादिरुपदुरवघोर समतागिरवारिकरीव मुंतिगुंतिकरनमोसुकी
व ३३ दिव्यकमिमवसेदिगदीवकुथ्वादिकनविरोधेजावअपुनभूलिवोधेसारे वंदोकुथुरुपाकहोय ३४ वचनग
ह्यकारिघातेसार दुसरकर्मनाशुभयकार इंदुजनविषयदूरजनिनराज वंदोअरअरिहानककाज ३५ कर्ममल्लजीतेवर
वर सकलज्ञोयसरनागतधीर छठोमोहशत्रुदुखवंध्यो मल्लुराकिकारननमों ३६ मुनिवरआदिसकलज्ञनजेहुत
कोइहुनिरंतरतेहु हाथजोरवंदोविरनाय रतकारनमुनिसुरतपाय ३७ नमिजिननाशकआरतिध्याननाशकदूर
वंदिनभगवान दूयोकर्मअरिकेसंतान नागुनकारनजोरेपान ३८ मोहकामदोदुखखानि इनकोकरीनिरंतरहानया
रुपनेहदायकधारि नेमिअरथवंदोजुवनारि ३९ नाकेमदामंत्रपरभावलखोनागनागिशुभजाव धरनेंदूहपद
मावतिभई पार्श्वनाथानशिद्दिनप्रुतदई ४० कर्महूतनकोवीरमहानसनप्रतिधर्मपदेशकभानउपसर्गआगानसंता
पनहार महावीरप्रणमोहितकार ४१ ॥ अथचतुरमानवीनातीर्थंकरनमस्कार ॥ दोहा ॥ अतीतअनागततीर्थंकरहो
पञ्चदशमाहु तिनिपदपंचकजप्रनामियो भवदुःखदूरसुखदाहु ४३ ॥ सिद्धनकोंनम ॥ लोकशिखिरिआरूढकर्मका
यकरिहो नवक्षगुनमयदानोसहीज्ञानअनंतनलीन ४४ मूर्तिरहितआनंदमयानवसिधवसिवसंत गुनअनंतकेता
रनेप्रणमोसिधअनंत ४५ ॥ गनधरनमस्कार ॥ रुषभसेनिकोंआदिदे चतुरज्ञानधरतारसप्तरिधिभूषितनमो
कवरेश्वरगणधार ४६ ॥ अथकेवलीनमस्कार ॥ दो० ॥ मोक्षगयेश्रीवीरजिनउपनेकेवलतीन गोतमतथासुध
र्ममुनिजंबूस्वामिप्रवीन ४७ मध्यकवासदिवरसकेधर्मवर्तमुनिराजसरनगहोंपदकमलतीनउनकूकेगुन
गाउ ४८ ॥ पंचश्रुतकेवलीनाम ॥ नंदीनंदीमित्रपुनि अपराजितगोवर्धनभद्रबाहुश्रुतकेलि

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

॥ चौपई॰ सत्यवचनमंडितमहान धर्मवंतव्रतवंतवखान आरूचारित्रधरेपरमान नाहीमिथ्यातमछातमाज्ञान ६२ धर्मवेदताप
रमप्रवीन क्रियाचरनमेसोचहलीन कथिरआत्मापरमसलीन धर्मवंतजोपुरुषमहान ६३ ज्ञानहीनजेधर्महीत तिनको
बोधिपरमपदवखा ऐसे मुनिजनवचनगहीर नमोनमोश्रुतआत्माधीर ६४ दोहा॥ गुणस्तवनेकरतांके लक्षन गृहविधिज्ञान
वंदेगुनज्ञाता अवनिधर्मवंतशुभज्ञान ६५ अथश्रोगुण॰ चौपई॰ आरहभक्तिसराआचरे निरगंथागुरुसेवाकरे चतुरप्र
वीनकसोटाजेम सारअसारविचारतएम ६६ शुद्धिजुश्रुतश्रद्धाकरे सत्यवंतमनसमकंतभरे गृहविधिगुणअनंतनुत
होय गगरोधव्यापेनहिकोय अवश्रोताचौदहरूपरकार कहींसवेसुभअसुभविचार प्रथमहंसवतहवाभाग पयपीवे
अवगुनज्ञानत्याग ६७ कांदूसपसमानसुभाई अवगुणफटकेगुणरहजाई सुभ्रूसमानजेश्रोताकहे पटतपटावतलों
सुधिलहे ६८ शुभश्रोताएतीनजुभेय अवएकादशअशुभअनेय माटीवतजेश्रोताजोरसनतहिंगिलसराकटोर ६९
चलनीसमश्रोताहेडोरसारवस्तुकोंत्यागकरे हंसहिखावतपानिश्रोताकोय निर्मलनीरखावतसोय ७० श्रोताकोयावि
लावकआय घृतपयरधिभाजनदकाय छिद्रीपात्रिभुविचारतकिरे खोंगुणग्रंथहरेयेनाहूधरे ७१ मसकसमानजुश्रो
ताहोय भलोबुरोकोभेदनकोय श्रोतामूढजलकुंडासम पयनलिगहेरलअरुमांस ७२ उलुवासमजेश्रोताकहिहिमे
अंधरातिगलहेग्रंथसलसावे अधिकायसहजनीरनाहरीसेताय ७३ फूटघटवतश्रोताएकरहेनतामेनीरवेवेक पशु
समानजोश्रोताहोय मूरिखमहातमाहिअवलोय ७४ वगुलध्यानकीपटतरतेहु वृषीवाताहिय धरिहोहु श्रोताजेपारखा
नसमान तहनाधरभिरेनहिज्ञान ७५ एश्रोतारत्नाचारजुकहे निजानिजभावफलाफलकहे सकलशास्त्रकोवेदकहोय शु
भआसयनोभविकोय ७६ संवेया॥२३ श्लोकऊधृतगगनू धनीग्रहतोलसनाकेहाथकेहान्यो हेरततगहवायोत
हूनाहचितडेचगमवोकसकान्यो मोनालयेंतहांदृष्टिहिये आरुकासोनेकउसासनलान्यो लोयहग्रंथसुनेसवपोषल
हे करमोषश्रुतामृतभीन्यो ७८ ॥ अथश्रोतालक्षणसमुनजिरूपण ॥ ॥ चौपई॰ जिनसम्यक्तकहोपरवान जीवतभा
हिकुगनलीनतत्तभरथहे मुलविनाग भवमेभोगधामवरभाग ७९ ज्ञानहेयानेनपूजाकरे मूलचरतआदिकयधरे
तापकबंधमोषकरहोय इयमकहुभावकजनसोय ८० इत्यादिधरमज्ञानिपरकरे सरवसंगत्यागानु धरे गृहवि
धिभावबरनेकुभरुध्यान धर्मधनाहूरेधारुज्ञान ८१ श्रेतावपुरुषमहंतप्रवीन महारीधारीसुखलीन तीन

समोकरसोधान ६ तीर्थंकरमंदिरअतिघना तुंगकेतुझिमिहामिनिगना पुरःग्रामवनआदि अनेकमनोरमरचकरालएक ७
गनेनुगारुविहरेउ्यमहंत तुरीससंघभूषितग्रंथंत करतावेउहोंधर्मप्रभाव पाषंडीलिंगीनाहिनाव ८ इत्या धरमअरहू
नमुरवहोय श्रावगउत्तमदुविधिअवलोय षटअंगपूरवगुनज्ञानरहीत कुज्ञानकुशास्त्रअर्थान ९ प्रस्तावर्णन्नियमांहतसा
रआलसनवर्णनहोय उगारुकषमुधर्ममेसवपरवीन बहुतशास्त्रभ्यासीगुनलीन १० उपजेउहोंतीर्थंकरराय चक्राअ
धचक्रीबलभाय गनतीनहानकानकासरवदाय धनुषपंचसेंवीकाय ११ आवकोटिपूरवकीउहे कालचतुर्थसदानहों
रहे महापुरुषपदसाधेसोई करगमोषपदप्रापतिहोई १२ ताकेमटपनाभिवतकही नगरीपुंडरीकानसही दुरदृगोो
डानकांचीउगनि नवलोडानचोरीपहिचानि १३ ताकीकोटउगिरहकार चोप्रथसहीननगरविस्तार दरवाजेरुकसहस
बषान रुघुषीरकीउतपंचप्रमान १५ पथप्रतिवीथ्यांएकहजार तीनीसेातनीनिरधार वाससहससठानायोंसोई
१५ आतिउतंगजिनमंदिरपंति सोभेतासुधुनाफहराति धरमीजननिवसेतादृथांन धनकनपूरनपुन्यप्रधान १६
नगरीवाहीरत्नसोभंत आतिमनोगमधुनाममहंत शीलछाहफलेफलनहीं दुविधिध्यानमुनिभूषितत हीं १७ त
हांवसेभीलानवेसाथ पुरुरवांहोतानकोनाथ ताकीप्रियाकानाम शीलवतीरोमरोमनिनिवसेधाम १८ एकदिना
काननमेसाथ मृगयोनिरहेदुरवदाय तिहिअवसरलाबनमंझार आएउनिवंदभवातार १९ सारथवाहीसंगआभि
रामा सागरसेनमुनिकरनाम ईर्यापथसोधतपरवीन दरसनज्ञानचरनमयलीन २० देखसंघभीलनिघोरयो कू
टनकोतबउघाकयो वनदेवानिसंबोधोतवे अतिनिषध्यकारनयहसवे २१ तुमकरतअयोज्ञानहिनाथ अधकार
नदुरगतिकोंसाथ देववचनसुनउपसमसही कालछबधिकुमुनियोलही २२ पुरुरवातबभीलसुनामदेषमुनितहांकि
योउनाम धर्मवृद्धिकीनामुनिवानी कृपावंतहैभावपहिचानि २३ अहोभद्रमोवचकानसार धर्मज्ञानत्रिभुवनभव
तार धर्मप्रभावतक्षिमाहोय इंद्रकृतार्थकरसोई २४ भोगोपभोगवस्तुसुभजांन मनोभीष्टसुखसंपतिदान उंचगो
त्रवदुपुत्रसहीत धर्मप्रभावभरतकारप्राप्ति २५ पंचउइंदरतानमस्कार इनितेरहितहोयभवपार सम्यकसहितभनो
रतपंचगुणरत तीनिकहेतीनसंज्ञ २६ चउसिष्याहतभावसमेत सोधोमहपतिसर्गसुहेत दुरदृगतए श्राव

देवनिरचापरीशुभनहूं नवहूरत्नयोजनविस्तार वरनतकोनलहेवधपार ५२ तुंगकोरणापुरतासमारहार्घरचातिकम
लिरहकार मंदरपंतसघनसोभंत सुरआदिकतहांप्रीतिकरंत ५३ हेमतनेचेत्यालयसही रतनमयीप्रतिमांतहां
कही तिनीजनमारैयपरवान धर्मशीलश्रुतशुभआगयखान ५४ आर्जवादिगुनमंडितसोय रूपवलछविभूषितसो
य धर्मवंनउत्तिमआचार सप्तपुरषदानभक्तीसार ५५ पापरहितभरमहांपुनीत अतिधनवानपरस्परप्रीत वसेतुंग
मंदरमेसोय मानोसुरविमानयहहोय ५६ तिनीनेत्रियगुनअंगतिआचारसुरहेवीसुममेभासार रूछेअमरलेनअवता त्रि
नप्रापतिनगरनाविचार भूपनहरलक्ष्मीवंधाम भरथचक्रपतिगुनअभिराम आहिस्वाष्टिधरतानगडेस भरतक्षेत्रअ
धिपतिपरमेष्ट ५७ अकंपनामआहिकभूपाल नमिसुमुष्यरत्नापातसकुमाल आवेतापतापसोहेव नमोचरनअंबुज
कारसेव छहोखरंडसामीगुनलीन चरमअंगधरिनधर्मप्रवीन नवनिधिचोदहूरतनमहांन अस्त्राआदिहुतिल गुनखान
५९ तिनरानानअभकलाविवेकरूपआदिकगुनसहितअनेक रूपआदिबलसंपतिधनी वर्णिसकेकोवुधातिहतनी ६० पु
न्यवतीदेपीतसारनी पुन्यादासीसुरवकीखान पुन्यराहितप्रारहूयेविचार पुन्यलछनमंडितसार पुरुरवासुरतहां
नेचयो पुत्रआप्तताकेउरभयो नाममरीचकुवरतसतोय रूपआदिगुणमंडितसोय ६२ पुन्यवतीदेवीनकरानि पुन्या
रासी क्रमसोय्धि होयहि भूषनभूषितनिर्मलगात हलाअनेकशास्त्रपढितरा आपयोग्यपाई संपदा ६३ पीतासहितसु
त्रीरानेरे पूर्वपार्जितसुखभोपरे विधिभोगरथवामेसार भुगतेनेमारीचकुमार ६४ एकदिनाथीआदिजिनेस भो
गभंगरहाहकसंवेनाजसंवेगउपाद्योतवे ६५ इंद्रआदिसवराजानिलये वाहनसुवकामेगये ताजेकेदुविधिपारय
हूतज्यो सबभार यहतभयेसंयमसुखकार ६६ तवकथादिभूपपरवीनस्वामी भाखमेतत्पुरलीनचारिसहूसहानोसवलो
य निजेप्रभुकेसेवगसोय ६७ तिनिकेसंगमारीचकुमार संयमद्रव्य धर्योसउसार नगीनयोगधार्योहूतकार स्वामी
वतहूहूयेविचार छीरयोदेहूममतानदा अचलभएप्रभुमेरसमान हूयोकर्मउआरकोसंतान आरतरौद्रनीकेहूनजान ६८
छहूमहीनापरजंतसकलान धर्योयोगउतरूष्टप्रवीन लंबीभुजादंडकारसोय कायोत्सर्गध्यानादृढहोय तवरायकर्मके
क्षार पारिसकधार्यासोघोर ज्ञानमअंतलोप्योतपभडेयो हैअसमर्थसपीछेतडेयो कहेवप्रभुतोत्रागभस्तारज्ञान्यो
आयनकेतेकाल थिररहूहूयेहूविधिभूपाल ७० हूमडोहूनिसमानहूस्थान रहेहोयप्रानानकोहानी यातेकहां

करे आतमामेमरण १४ कपिलऋषिहुताशाख्यभवीन वल्कलचितमतअंतरप्रवीन इंद्रजालसमानेंद्रअपार यथाअर्थ
प्रतरूपनसार १५ इहीप्रकारभूलेजीवहोय मिथ्यामारगसाधिवाय आवअंतसमयमांहीनाव भरथराय सुतहोमारी
च १६ तपअज्ञानभयेफलएह ब्रह्मसुरगउपजेसोइह इहासागरताआयुप्रमान रिधिअनेकसंपतिसुखखान १७
कुलपतनोइहोपरभाव पायोसुरगसुखभलाव मतपतकरजोनरसुविचार तजेकुफलकोनाहीपार पाहीभरतक्षेत्रमेंजान
साकेतानगरीपहिचानब्राह्मनकपिलवसेतिहांम प्रियासुकीकालीनाम ९९ ब्रह्मसुरगतेसोकरचयो जटिलनामातिनके
सुतभयो दुरमतज्ञानभयेथकीहोय बेरशास्त्रकोवेहकोय १०० पूरवसंसकारकेजोग धार्योपारिव्राजकतपयोग मूढज्ञानने
कारवंहितभयो कुमतकुमार्गप्रकासुकथयो १ पूरववतविरतालभमेय आवछीनसोमनुकरेय कायक्लेशतनोफलकयो
प्रथममुधर्मसंसारसुखभयो २ सागरहोयआयुपरवान अष्टरिधिसुखसंपतिज्ञान देखोभवितनिरफलनाहिंजाहि कुविधि
कुतपसाजगमेंमांहि बहीभयुध्यानगरबिशाल शोभेमंदिरखंतिरसाल भारद्वाजविप्रातहि थानपुष्पदंतासुत्रियावषांन ५
सोमशर्मयोतहंतेजाय पुष्पमित्रसुततिनिकेथाय भ्यासिभयोवृशास्त्रअपार दुरगतिदुरवासअविचार ५ मिथ्यापाक
बहुरिसोजांन मिथ्यामतमोहिअज्ञान दीन्योपूरवभवततिनभेस श्रोरननदीन्योउपदेस ६ पंचवीसदुठनलअ
भ्यास दुरबहुमानेपुनिजास मंदकषायबांधिसुरआव छोरदेहपायोसुरदाव ७ सोसोधर्मसुरगसुरभयो सागरए
कआयुसुखलयो कुतपयोगबहुलक्षिमापा देखोतपनिरफलनाहिंजाय ८ एहीआरिजखंडमझार स्वस्तिकपुरसोभे
शुसार अग्निभूतिब्राह्मनतहांवसे नारीगोतमीताघरलसे ९ स्वरगआवचयकेसोदेव कर्मविपाकतनोफलएव अ
ग्निसिंधसुततिनिकेसार मतएकांतशास्त्रवेतार १० पूरववतसबविधिआदरी परिव्राजकदीक्षाउरधरी कुतपयोग
सबकालगमाय आवहीवतिनीछोरीकाय ११ तपअज्ञानकलेशप्रभाव भयोदेवपायोशुभदाव सनतकुमारसुरग
मेसोय सागरधिससप्तआयुतहांजोय १२ यहदेवक्षेत्रशुभभरथमहान मंदिरपुरतामध्यप्रमान विप्रवसेतहांगोतमना
म तासोंत्रियासिकीवाम १३ देवचयोतिनिकेसुतभयो अग्निमित्रनामतसुद्रयो मिथ्यादृष्टिउपन्योजासकुमतत
योंकीन्योपरकासा १४ पुनिपूरवभवसमअभ्यास पुरातनीशुद्धयाउरवास बहुकलेशुधार्योतिनकाय स्राव
शीनतहांमरनकरायेय १५ तपअज्ञानतनेपरभाय सुरगमेंहूप्रदेवपदपाय सागरसप्तआयुपरवांन श्री

" "इतिश्रीवर्धमानपुराणेभाषायां पुरूरवादिबहुभववर्णनोनामद्वितीयोधिकारः २ " दोहा· तीनिलोकमेंआगलागुण
अनंतजिनराज कहांहूंकेमेआचरे नमोतासगुनकाज १ चौपई· मगधदेशराजनिपधान राजग्रहतहांनगरवखान
सोहलनामविप्रतहांवसे पारासरीनारीतासे २ भवमेंभ्रमतवहुतदुःखपाय थावरव्यसकतउपन्योआय पूरववतमि
थ्यासंसकार पाखाजकदीक्षाधरधार ३ कायकलेशतनेपरभाय मदनअंतसुरउपन्योजाय कुरुपमहेदूअंबुनिधिसात
पाईआयुमुष्पाविख्यात ४ एहीमगधदेशमेंरूरे राजग्रहनभनगरसोविश्व भूतमाहूपतिकोमनो डोनीप्रियातासुके
धाम ५ सोवहदेवसुरगतेआय विस्वनंदसुतानिकेथाय अतिप्रसिद्धवीरुपपरवीन पुंन्यसुलक्षनगुनमयलीन ६ विस्वभू
तीभूपतीभ्रमेर अनविशाषभूतिगुनगेरू लक्ष्मनाख्यनारीकोनाम लक्षिनभूषितसुभगसुवांन तिनकेपुत्रकुबुधीभ
यो नामविशाखनंदताद्यो तेसवपूरवपुन्यसंयोग करेसुष्यमनवांक्षितभोग तेघपरलोकदोषाविनाश्या विस्वभूतिनप
भयोउदाय दृष्टिविधशाकत्रावसरीर विनसिजायउवोवादरनीर ९ लोकोजोवनलअरुआव देखुरीरमेंगतिकोचाव तोलो
अनघतपस्याकरेमोषतनोखतनोसामग्रीधरे १० इत्याहूकचिंतेहूतमधार तवसंवेगदृगुनाविचार भवभोगलक्ष्
मीतजी दीक्षालपनेहूरदेभजी ११ राजभारलवअनुजहाथ्यो परयुगराजपुत्रथापियो श्रीधरमुनिवरप्रणमो
जाय दुविधिपरिग्रहदूरीयोछाय १२ मनवचकायासंयमधार सोदेवानिकोदुर्लभसार शयतानिससंगसुजान छोड्योगा
रदोषदुःखदान १३ हूयोमोहदूरीमदघोर ध्यानसउगसंपमकेजोर उग्रउग्रतपकीन्योसार घातेकर्मघातियाचार १४
अव दूरकथारहीदूरसतोर भाषोभव्यथारथओर विश्वनंदीनरपवागविशाल सोदेसुंदरवागरसाल १५ देसकोदतस
गिरदाकार वारोदधूरवीजोवार वहनेकगूंदतुगसुटार चित्रविचित्रवंतववधार १६ तामेसघनेवृक्षअपार फलअरपू
लसहितसुखकार पारिकराषयफलसार नारिंगापुगीकचनार १७ लोंगलाचीअमिलीआम फलेनारीयरसोभाथा
म निंबुसराफलबेरिखजूर मदुवादाडमकेथबवूर १८ नीमकरोदातेदूतूत वरपीपरउंमरजुअतूत जामुनवेरगाडाडान
नवा चाडांतीतससगोनाधवा १९ चंदनपारलबूजोवेल कुंदगुलाबमालतीमेल कमलकमेगदनाकनयरजुही केवरीचं
पेकेतुकीगुही २० इत्याहूआदितरुनानाभांत सोदूतदेखिनंदनानापांत एकदाहूनातावनमंझार विस्वनंदीमन हरनसुसार
नारीसहितनिजक्रीडाकरे लोकाथितीकरिसुखथोपरे अतिमनोहरतादूरुद्यान नंदाविशाखगयोअनुद्यान २२

DR BHAU DAJI MEMORIAL डाक्टर भाऊदाजीदृश्यसंग्रहालय

वभोग २१ सोरठा॥ महापापकेउदयसो नमोसप्तमीभूर संपूरनदुखतहांसहैरहैसकसरावदूर २२ चौपई॥ अवत्रिगहि
तेमगोवरयात निर्तितयभूपायोअवदात साधेचक्ररतननकारिआनि तीनोखंडनरपतिप्रस्थान २३ खगपतिभूपतिय
तरदेवप्रणमेचरणकमलकासेव सारवलुसबभरपेआय कन्यारतनआदिसबदाय २४ विजयारधकीश्रेणीदाय
दानीजलनलीकोसोय बहुतविभूतीभेंईहांगेरू हलषउविधिबलमंडनहेन २५ दखादिखिजातिभएश्रीमान पुन्यवंत
सहूअगापरधानं अपनेपुरनिलकेर त्रियानिसाहितसुखभोसोवरे २६ पूर्वोपापकतनोफलजाना सप्तरतनआलूकृत न
मानोभूचरखेचरअंतरदेव सोरहसहूसभूपकीसुता परनीरूपकलासंयुतावविधिभो
गभुगतेसुकुमाल सरवसोजान्योकाल ३५ मरनप्रजंतरयो ग्रंथमादिधर्मध्यानाविधिजान्योनादि योहनअंधउलूकादेय
भानउदेतुनजानेसोय ३५ बहुआरंभपरिग्रहथोर भुंजवासपायेनतठोर विषयानमेंअनुरक्तअपार बांधीदुरगतिकेया
दुखकार ३६ दोहा॥ छोरेप्रानतणीर तेरौरुध्यानतेपोरपूरव पापविपाकतेगयोससमीद्वीप॥ ३७॥ कथातहांकेकष्ट
कीकोकरराकेवषान भुमतेसोजानेसहीकेजानेभगवान॥ ३८॥ अथसामान्यकर्मदुःखवर्णनं॥ घटाकारधिनावनी
अंधयामुखहोय संपूरनतनउपनेअंतरघटिकादोय ३९ तलजिरउपरपाहुडपरेभूमिमेंआय धीवूरकहजारतेअ
धिकवेदनापाय ४० उछलेजोजनपांचसेनरकसातवेमाहि विषमवज्रकंटकमयीपरेभूमिमेंआहि ४१ देखिनासकोना
रकीमारेनिरदयहोय पूर्णअसाताकेउदयचिंतेमनमाहिसोय ४२ कोनभयानभूमियहसबदुखथानकनिहरो रौद्र
वरनएकोनदेवेरनदायकरूंद ४३ कोमेकहांआयोहतेएकाकीसुखनाहीं कोनकमेयहउपन्योभूमिभयानकमांहि ४४
इत्यादिकचिंतकरत अवधिविभंगापाय शुभकूपजान्योपरसो निजपरवैरदुखदाय पूरवरसलोकहतोभाषेनवचन
कठार क्रोधेनरनिकोंकहकसमन्योग्रहिअतिदुःखकार ४५ परत्रियआदिकवसलेसेई हठकारसोयपधनमेंसबहरेक
सोपापवंतनरथहोय ४७ असजवलुसारेसबेंपायोजातीअधीय तेत्रसेयसोअचयहदुःखलीय ४८ सोरटा पुरुष
कीन्योपापसेणथैवैरीभयो घातआपनोआप ग्रारबदुनकाहूयेकरा ४९ सरगमुकतिदातार परमधर्मजान्योनहीं
पाल्योरतननलगार सोनिहवेभोगई ५० किंचितपनाहीकीनदान सुपात्रेनाख्यो जिनिपूजाकारहीनअशुभकर्मफो
तेपरे ५१ दोहा॥ सपूरनसोपायसबभुगतेसोरथांन तीव्रवेदनाथितिसवेपूर्वपापसोजान ५२ कहांलगेकहा

कर्मबंधमनुभागविपाकभेदकाय २७ महादुःखरूपादिसकलमनवचकाय प्रचारक्षेत्रतनोपरभावक्षयहेतवे परस्परहेतुरूपानेकस्था
त्रिसप्तभाङ्गसमृद्धतत्त्वसप्तधातुषपांचसेतुगगनवस्त्रेभ्यो श्रीजिनेभ्य २० वोपई- अवचालभट्टारकबलजास दूरितपुंजियोपसाठ
दूमास देवशास्त्रसंबोधोत्तवें निश्चैवरत्नभाई यात्रवे तावियोगसोवज्रकुपार पुण्यवंतबुधिवंतभवार रत्नभारनिहामृत
कोरहेयो गुरुवेआय महाव्रततत्वेयो २९ दुविधिप्रकारक्रियातपघोर शुक्लध्यानरूपसमुद्रोर घातिकर्मारिपुछेतामभए
अनंतचतुष्टयधाम ३० हेवससंघआर्चतसो भएपांछेपंचमगतिकोगए निरुपमनिरवाधभावकाय तीनिलोकवंदितजग
नाथ ३१ गीतासंदर॥ यहभांतिवरनसुयोगकरिकै भोगभुगते अतिधनेकरिजगतआर्चतभए निश्चेमात्रपरपायमोक्षने
कुवरनविपाकसुआरसोदूरिसप्तमेथानकपथ्यो सोजानिभविसम्यक्त्वमनदृढसारसुचरनआदरो ३२ दुःखविनाशुक
मुक्तिराग्यकर्मआरवंसकं अंततेजुभतितगुननिधिभवदूनपरहरूं कर मुक्तिसुखकरसरलसबकेजगत पति
आर्चनादूये सोधरमचरनतार्थभांतिमनचरुसागदृश्यमानगमेय ३३ ॥ इतिश्रीवर्धमानपुराणेभाषायांदुलीचंदषड्द्र
व्यवर्णनोनामतृतीयोधिकारः ॥३॥ ७ दो॰ मुक्तिवधूपतिवीरजिनवंदिजगत स्वामिसोयगुणअंतसोहे विमलनोकमलरूप
दरोय २ चोपई- दुःखसोनारकवदूनगए आवअंतकाल हूंतेवएसिधनामाभारवन मेआय धारीतहूंसिंधपरजा
य ३ हूंसाआरंभकर्मतेकूरकीनेवदूतधर्मधारदूर नामसोदरयतेत हूंम्वयों रत्नप्रभापृथिवीत हूंगयो ४ महादुःखपा
यातहूंहोर पापेवदूतजायकेहूंदीएदुष्टकर्मकीभोगेतभरे कछुकालमतेहूंतेवए भरतक्षेत्रपरवहिजजानि सिंधकू
टस्वामंतगिरिमानो मृगपातिभयो तहूंतेआया तीक्ष्णदंतदुःखदाय ५ कूरहिनामृगभक्षततातहि देख्योरूपावंतमुनि
वादि चारनरद्धिनिधिगुनिसुधाम गुनसुषेनगुनसारा नाम ६ क्षितवरुनिजानिकेसहीगगनतेआएमही शिलापोलपर
बेठेसोय रूपावंतचारनमुनिदेख्य ७ मृगासीनूधर्यो मुनिपास वचनामृतसंबोधोनास भोभोभविमुनिकेहूंरिहात मो
वचनसुनोआतमाकाज प्रथमहूंहुकूपुरजजानि भयोधर्मलेसकतुमज्ञान फिरसोधर्मसुरगतुमगए शुभकेउदय
तहूंतेचयें ८ भरथचक्रवतिसुतसोजानि नाममारिचप्रतापमहां रूपभनामस्वामिके साथरक्षायहूनाकियोपर
माथ २० षट्दिढंदर॥ दोवासपरिसभयअपार तत्रिजिनमार्गगायापाचिचार गहीयोयाषंडीभेष कूर दुरगतिको

करताअधमपूर २१ सुभभागदूषनकोप्रवानदुरमार्गवधावनपरमलो वचआदिनाथसुभमारगदूसनकोपवीन दूरमार्गच
धावनपरमलान वचआदिनाथमुनिकेमारच धरिकुदृष्टतावुद्धिनीच तिसमिथ्याउदयविपाकपाप जनमाद्मरनपीरयोभ्रा
य भवसागरभ्रमियोवदूतकाल सहियोकुकर्मसोदुःखताल २२ तहूंसूषवसुसोआतिवियोगदृष्टआतमचिरोगकरताभ्र
निदरसंपूर्ण असातापरधानकरी घोरचंतनविधहीन २५ कदूंपुन्यउदयकोहेतूपाय्यारत्नयदूविश्वसुनोदूराय तहूं
सयमजोरानदानबांधिभूपतित्रिपृष्टत्रयखंडसाधि १६ तहूंनवविधिभोगभुगतेअपारसुतनारीदृयगयरथभंडारकछु
दृयाधर्मव्रतगसोना आरौद्रध्यानसोपरलपाद २७ दो॰ महापापकेपापपाकतेमिषअंधबुधिहीन गयोरसमाअवनीसोदुः
ख सोहेवदूजान १८ तहूंकेवेतरणीनदीकरतप्रवेसू पूरवभदुःखसदेपापतनेअधिकार १९ अग्निकपत्रतरुकेतलेवेठनको
डेप्रान तप्तलोहपूतलीभेटावेतनआंन २० परवनिताकेदोषनेबांधेवंधनजोरकरन ओष्ठअरुनासिकाछेदेवदूविधि
घोर विनाहेंसाजीवकीतातेखंडीदेदू शूलीपरपानिरयोहीनआतमागेदू २२ इत्यादिकतहूंवाविधदुख भएकंदनघोर
असरनानितपिडेवदूरिकहोकहूंलोजोर २३ नरकआयुक्षयकनुलेषोदेकर्मउपाय पराधीनसगपातिभयोपापपर्वतदुः
खदाय २५ शीतउष्णवर्षाहिरतक्षुधाप्यासकेजोर कूरकर्मकनेअशुभबाधबानहीपघोर २५ प्रानीहीसाकेदुष्टदुःखवि
पाक अंकूरमधवीपृथिवीतुमएदेसुखसवदूर तहूंतेचयतुमऊपनेधरीसिंधपरजाय कूरपराक्रमकरतहेभ्रदुः
खविसराय २७ चोपई॥ दुष्टप्रकारामथ्याचिरकाकभटकेवदूविधिभवानधिकाल हालाहूलपावतसुधिकाय सम्यकबुद्धू
हियोविसराय अहेवछुदुरगतिकोवासछोड्यो कूरपराक्रमजासअनसनगहे विविधिपरकार व्रतपूर्वेकसुभरथविचा
र २९ भरथक्षेत्रयदूअरजटामदूहोदूसमीभवसुखधाम अंतमतीर्थकरमूलधीर वर्धमानस्वामीवरवीर ३० जंबूदीप
कभूतीवदेदू श्रीमंधरजिनपतिगुनगेदू श्रीमुखदिव्यथानेसुनत भावीतुमआगेसवमुनी मुनिकेवचसुनिदूरप्रकार जातीसु
मीरनऊपजोसारज्ञान्योभवसागरदुःखघोर सर्वअंगकंप्योभयजोर ३२ शीघ्रप्रनामदरिसवरहे शांतचित्तसोमुनि
पदगहे असकथनबदूकीन्योनहूं पश्चात्तापभादिदूरिजाहू ३३ पुनिमुनिसोमगपातमकही सम्यकबुधीभाषियें
सही शांततरंगाअक्षयाराम कहूतभरमूकिरयाधाम ३५ दो॥ धर्मकल्पतरुमूलतेवर्जितशंकारोषमुक्तिप्रथम

रिनि॥ज अस्तानेगयो पुन्यननितश्रियपाय॥देविनिसहितविमानमेतिहेसुषसमुदाय॥५५॥चौपही॥इत्यादिकबहुपुन्य
समेत॥धारेसोचेष्णसुभहेतसमहथतनउचितमनोगा॥नेत्रविवर्जितनिद्रारोगा॥५६॥मंडितमतिश्रुतअवधिसुज्ञान॥५७
विक्रयऋधिअधिकबलवान॥बीतेवरससहसजबदोयतेयअहारश्वधमायसोय॥५७॥पक्षिदोइमेरतितनहोया॥मानसी
कसवस्वभगतेसोयदेवैरूपविलासअपारनत्यैदिव्यजोषितासारा॥५८॥पर्वतादिउद्यानमठारा॥देविनिसहितरमेंकरिप्यरदी
पसमुद्रअसंष्यममार॥विहरेसहितविभूतिअपार॥५९॥सागरदोयआयुपरवांन॥सातधातुमलरहितमहांन॥अम
तसमानश्रुष्यअनेकसुष्यदुष्यतेरहितस्वरूपक॥६०॥दोहा॥विविधिभोगएपूरनचरनप्रताप॥कालजातन्योनहीसुषसोदेवस्व
आप॥६१॥चोपही॥धातकीधातुकीपमहान॥पूर्वविदेहसुउत्तिमथ्यान॥विजयारधपरवतनहांदीसहेउन्नतजोजनपचीस॥६२
सोहेकटजिनालयजहांबनश्रेणिपुरआदिकनहांताकीउत्तरश्रेणिमठामंगलावतिदेशविचार॥६३॥नगरकनकपुरसोहे
तहां॥स्वर्णमयीजिनमंदिरा॥जहांनकपूरराजातहांजांनप्रियाकनकमालातसुमांन॥६४॥सोरठा॥चयोनहांतेसोयसिंहकेतु
नामअमर॥कनकोज्वलसुठहोय॥कनककांतितनजासको॥६५॥चौपई॥जनमउछाहपितानेकियो॥वंदीजनेदांनबहु
दियो॥जिनअगारकराएसार॥६६॥कल्यानकवरधावनहार॥६६॥कीनीपूजामहाभीषेक॥पंचकल्यानकआदिअनेकगी
तनूरे॥अरुनचेअपार॥नरसमूहकोलाहलधार॥६७॥बालचंद्रसमवृधकराय पययांनीसोंसुषअधिकाय॥आपयोग्य
अतिक्रीडाकरै॥दिनदिनरूपकलागुणधीर॥६८॥अडिल्ल॥क्रमसोंजोवनपाय॥शास्त्राभ्यासीदयोविधि॥विवाहकीनासु
पिताकरतोभयो॥कनकवतीत्रियनामधर्मसोपीलीय॥६९॥कछूदिननियेकुवरएककीनीभली॥६९॥महामेरुजिनतनेवंदि
वेकोगयो॥भासहितकुवारविंवपूजनभयो॥भूषितऋधिअनेकगुनित्रयकेधनी॥अवधिज्ञानमुनिराय्यदेषिनज॥सार्यस

MEMORIAL OF BHAU DAJI

हिनकुमारावंचपूजिनभयो॥ भूषितरूहिअनिकगुणिवरकेधनी॥ अवधीज्ञानमुनिरायदेखिजगशिरमनी॥७०॥चाल॥ प्र
नमेशिरचरनलगाई॥ रूपपायतिकारनराइ॥ प्रभअनघधर्महैजोई॥शिवकरताभाषोसोई॥७१॥ सुनिकैतिनिकेवचयो
गी॥ भाषेसुनियेनृपसोगी॥ सवसमुदगिस्छोनरकोई॥उबरेधरिसम्यकसोई॥७२॥सिवमंदिरपीछेजाई॥त्रयलोक्यरा
जकोपाई॥ बिपिसंम्यकतत्वषान्यो॥संकादिरहितपरवान्यो॥७३॥चोपही॥ इहभवहोयधर्मसोंसार॥ कल्यानकनर
कोंसुविचार॥ सकलमनोरथपूरनजान॥दुषविलाइजगकीर्तिमहान॥७४॥परमवईइविभूतिअपार॥किंसरवारथसि
धिविचार॥तीर्थंकरवलिचक्रीहोय॥ धर्मप्रतापजानियेसोय॥७५॥दोहा॥ धर्मविनानहि॥ श्रीरजगसूषकरतातजिपाप॥ ल
क्षिनदयाविष्यातसुउक्तकेवलीआय॥७६॥चौपई॥ प्रथमअहिंसासत्यास्तेय॥ ब्रह्मचर्यसंगादिरहेय॥ ईर्याभाष
एषनादान॥ निक्षेपनउतसर्गवषांन॥७७॥मनोगुप्तिवचगुप्तिविचार॥ कायगुप्तमिलीतिनिप्रकार॥यहचारित्रत्रयोदशराजा
न॥ साधेरागरहितसुप्रवान॥७८॥ तथामूलगुनसबजानीयै॥ दशालक्षिनक्षिमादिमानियै॥परमधरमकरताजगसार॥ मो
हअसतस्करअपहार॥७९॥ बुधिवंतलीभोराजकुवार॥ धर्मजतीगोचरहियेधार॥ कामश्रादिजेअरिउषदाय॥ तपअशि
सोंतिहिघातकराय॥ ८०॥धर्मचिंतमेधरलोमहान॥ होयधर्मतैंसुरशिवथान॥ धर्मजमतमेंसवसुषदायनहा॥धर्मनअ
वरसहाय॥ ८१॥ नहीसाध्यअवरहितेओर॥ हनियेमोहसुभटअरिदोर॥ धर्मजतनसोपालोसार॥ मुक्तिनोसाधकसु
षकार॥ ८२॥ इहिप्रकारमुनिवचनसुनेहकनकोज्वलरूपचिंतीएह॥ भवतनभोगविरक्तअपार॥ द्वादशभावनहिरदे
धार॥ ८३॥ जोलोकमेंचिरानंदलियै॥ स्वर्गमेजगतमेंसुधिनहिहियै॥ कवहूंकनारिगरभरिपरे॥ जनमहोइविकलपसोमरे॥ ८४
सुरअहमिंद्रआदिहरिराय॥ सवेकालकेवशषराय॥ जनमकोहजिवनमदधरै॥ मूढमंदबुधिकैंअनुसरै॥ ८५॥ धर्मका
र्यकोंरूचेसार॥ मदहियधरैनएकलगार॥ अरूजेसठमदधारैअंगा॥ तिजेहैजमपथसरवंगे॥ ८६॥ अतिहिविचक्षनकारिज

न॥६॥वज्रसेनिहरुपपुरपतिपुन्यवंतगंभीर॥शीलवतीप्रीयतासुघर॥हंसलहालिनीधीर॥७॥देवस्वरगतेसोचयोसोउप्
ज्यो हरिषेनलक्षिनभूषितपूर्ण॥वपुदिव्यकांतिजुतनेना॥८॥चौपही॥तातमातसबकुटसमेता॥पुत्रमहोत्सवकियधारहेता॥लेहे
पुन्यफलसुष्यअनेक॥कारकालबुधिसहितविवेक॥९॥जिनसिद्धांतहियेवितधार॥सकलपदारथवेदकसार॥सबहिसंपदापू
रपरपार्थ॥विविधिभोगभुगतेमनलाय॥१०॥रूपकलातनतनजआपार॥गुनगरिपनाकापरकार॥इधेदिपक्षिमासरुवासा॥देवस
भानलहेजसुनासा॥११॥क्रमसोनोवनप्रापति मुणवहुतराजसुनाघरनए॥लक्ष्मीसहितपितापडुपाया॥सुगतेसुपनानाभ्र
पिकार॥१२॥सम्यकदरसनशोकानहि॥वृतनिर्मलपालेग्रहमोहि॥धर्मयहस्तसिद्धिअनुसार॥रहितप्रमादतजेअविचार॥१३॥आ
ठेचोदशिप्रोषधकरै॥सवसावद्यजोगपरिहरेउँ॥प्रातसामायकदेयआदिधर्मध्यानसुपलेया॥१४॥पिछीतनमंजनकरिशुद्ध॥
पात्रमधुरआहार॥आपसोज्ञात्रपरहिनकाजा॥१५॥धेसामायकविधिहाल॥१६॥पीछेजिनकेवलियोगिंद॥संघसहितवंदेजि
नचंदरफधकर्मतिकेप्रापतिकाजा॥धर्मतीर्थबधकरुषसाज॥१७॥तहसुधर्मसुनिजोसवतार॥मिथ्रितत्वआदिग्रोचार॥ए
गरहितत्रिहुंशेमभूपा॥बहुतभोगभुगतेसुखरूपा॥१८॥वात्सल्यधरमनमनकरै॥धर्मवटोमिथ्यापरिहरै॥दानमानबहुमुनिको
देय॥प्रीतिसहितगुणरंजितलोय॥१९॥जिनसासनमहात्मअपारकी॥न्यायसुधर्मबंधवर्धनहार॥२०॥पुन्यबंधसोभव्यमहानकीजो॥इहविधिशक्तिप्रवानाजोकेकरशक्तिहैनाहिसो॥अनमादधरोमनमो
हि॥२१॥इहिप्रकारबहुविधिभावन॥धर्मजिनेश्वरभावितसार॥मनवचकायआपुसंवरै॥भव्यनिकोंउपदेशबहुकरै॥२२॥
तीनिकालपालेनिजराज॥न्यायधनीव्रतेसुरवसाज॥पालेप्रजापुत्रसमजान॥संन्यडदयहिधरीविधिज्ञान॥२३॥एकदिना
कछुकारनपाया॥चिंतावंतभयोनरराय॥उठोसभातेविरतहेविवेकधरीउज्वलचिता॥२४॥सुतसागरयोगीस्वरनाम॥शु
तज्ञानस्यासीसुनधाम॥तीनिप्रदक्षिनादेशिरनाय॥प्रणमेजायमुनीस्वरपाय॥२५॥सोग्रसुकपावंतहियहोय॥कहियेमोसंशयखोय॥लक्षीनकुहाभ्रातमाननो किहिप्रकारजटचेतनिसनो॥२६॥किहिविधिबंधुकुटंबसुभाइ॥कारनकहाडुःखअधिकाय॥केसेसुष्यसासतोजान॥जातेविनसेआसाप्यान॥२७॥केसेहितअरुअनहितहोय॥

केसेंकृत्याकृत्यविलोय॥तबबोलमुनिवनविचारी॥सुनिभोभव्यएकचितधारी॥२८॥दरसनवृतादिअनेक॥गुनजुतरु
पमहात्मविवेक॥एलक्षिनचेतनिजुपदेव॥संधयागमोदेहअतित॥२९॥जेसेंपक्षीगनवृक्षमिलै॥तुंगतरोवरपरानिशिहि
लै॥तेसेंकुलकुटंबवरवीन॥आपसाधुभावनगुनलीन॥३०॥मोहमयमदवशजगजीव॥तासोदुःखलहेअपिकीवसुःख
सासतोहैनिरखा॥नरहितपरियहआसहाय॥३१॥तपरलनृपुसमनहिओर॥हितकरताजनकोसबदोर॥इंद्रीविषयअसुभ
यहथांन॥तासमग्रहितेभोरनहिजान॥३२॥वृहभवपरभवसुखअधिकायुक्तवलकोहैसुभाया॥दुरलभअधिकजवनकोहे
यो॥सोअलप्तकारनअवलोया॥३३॥इहिप्रकारमुनिवचसुनिसार॥धरिसंवेगकर्मअरिहार॥देहआदिजगशोषअनेक॥
छोडेज्योजीरनतृनरेक॥३४॥मज्योकुंडसुरासवभाव॥जान्योसारएवकापाषान॥अंगीकारकियोतपराजा॥निरनरयहीगमसु
निराज॥३५॥वाहिंजअंतरपरिग्रहत्यागो॥मनवचकायाआतमा॥मन्योमुकतिपुरीकीइछाकरी॥जेवीदीस्यानपत्रआदरी॥३६॥
कर्मकुलाचलघातसंवे॥तपवजायुधकरिमुकितवै॥इहअक्षिआदिमनकोंरोधिध्यानकरै॥ऋषभसम्यकसोधि॥३७॥कंदरआदि
अरन्यअन्येक॥गुफामसानबसेमुनिएक॥सिंहसमानसदाविहरंत॥धर्मध्यानधरिहिरदेसंत॥३८॥अटवीग्रामखेटपुरजि
ते॥विहरेईर्यापथसोधते॥अस्तहोयरविअंधबेरा॥दयाअर्थनिषेनहोइ॥३९॥यावतकालरुखकेमूल॥जहांरहेव्यापेवऊसू
लल॥पुकेहामिकुलावाउ॥वरसेमनोवज्रकोघाउ॥४०॥हिमकलसुधिनिष्ठवहा॥वुंगनहीतटहिमकुला॥जहाध्यानअनाहतधारे
धीर॥बाधापरीतसहेजगवीर॥४१॥घीषमग्रस्यकिरणकोतेज॥पर्वतपीठशीलासीतासिरसेज॥धरेध्यानउसर्गमहीन॥बाधाअध्यात्म
णनिपरमानु॥४२॥इत्यादिकअंतरतपघोर॥देहिकलेशकायकोजोर॥वाहिजेआभ्यांतरपरवीन॥ध्यानाध्यायनमध्यसोलीन॥४३॥स
वेमूलउत्तरगुनजान॥पालेजतीपरमसुजान॥अंतसनेअनशनआदस्यो॥वपुतेपांमपांनपरिहस्यो॥४४॥सम्यकदरसनज्ञानचरित॥
तपसोदायकमोषवित॥यहेचारिआराधनराधिमनवचकायासुधिकरिसाधि॥४५॥तबसुध्यानसोछोडेप्रान॥धरिसामाधिहिरदेशुभध्या
नामहाशुक्रसुरगेसोगयो॥तपफलदेवमहर्धिकभयो॥४६॥संपुटशिलातलभवितहारयो॥अंतमुहूरतजोवनलेयो॥अंवरभूषितसहजसु
भाय॥मानधातुसुकाय॥४७॥अतिमरिहनिलक्षीधीरेषि॥[illegible]॥जान्योपूरवसंवविरतंती॥परभवतनोधर्मफल

संत॥ ४८॥ तातें धर्म सिधेके काजा गए जहां मंदिर जिनराज ॥ तमें फिरी कीनी तांकरी कल्यानक करतां गुन भरी॥ ४९॥ अष्ट द्रव्य जल आदि कलेय जिनवर आगे अर्घ धरेय भक्ति करी जुत देवनि जिती॥ उपमा वर्णि सके जिह्वा किती॥ ५०॥ पीछे मनुज लेय जिनवर आगे अर्घ धरेय वेदि मुनी सुनी भुत बोली॥ वर्धक पुन्य पाप की हानि॥ ५१॥ बहु विधि सुने धर्म उपदेश॥ पीउ राज लधि आयु परवान॥ शुभ लेश्या वरतित महाना॥ ५२॥ दोहा॥ तुरीय भवनि पर्यंत लौ वसु चउ जाति तहीं लौ है विक्रिया कृधि तनो परवान॥ ५३॥ चरस सहस सोड़ श पये लेहि सुधा आहर॥ आठ मास संभव पहि गंध उसास विचार॥ ५४॥ पूरव तप फल जानि येहि दिव्य देह रत देव॥ बहु विभूति संजुगत सुख करें अपसरा सेव॥ ५५॥ गीताछंद॥ इहि भांति सुख विपाक फल करि रा[illegible] दुरभेग भुगतें नपर पती॥ तप चरन सो फिरि यह कृधि वसु मंडित सुरेंद्र सम वंशि वपट वाह जिनि के चरम धरनु धावरी॥ ५६॥ धर्म बहु विधि कहि उपरेव॥ धर्म तत चरन रत हे॥ धर्म नमि पहि तजे॥ धर्म तजि अपरकी ई॥ धर्म सरन सहाय है॥ धर्म भक्त भव करहि रोग॥ धर्म शिव सुखदाय है॥ ५७॥ ॥ [illegible] ॥

दोहा॥ वीर वीरगन रुद्र भट जिन हन्यो कर्म संग्रान॥ रौद्र परीसह जीति यो वीर सहायक तान॥ ॥ सेय ई सरा मग वसु रेष साम रमोहिति ए दवलेंगे उ सनाहि॥ उपमा रहित मसुज ई लोक धर्म ध्यान पालें तजि शोक॥ ५८॥ इति श्री धातकी खंड पूर्व दिशा दिपेपरा चंड पूर्व विदेह सुजित मथान देश पुष्कलावती वर्णन॥ ३॥ पुंडरीक वत दरसन सुद्ध श्रावक व्रत धारी कनकश्री सुभ्रान सहाया सती अति विस्तार॥ वरनेत कोन लहे सुध्यार॥ ५॥ दोहा॥ कातत चतुर्थ सरातहां॥ इजुकुलहे इ वरत्न श्रावक कोटि पूरव तनी दे ह धनुष शत पंच श्रावक कोटि पूरव तनी दे ह धनुष शत पंच॥ ६॥ चोपरी॥ पति सुमित्र भूपति नरई राना नेव इनरद्र वासी सनाम सुः व्रत परणी तास॥ शील वंत इते श्रोक नजासा॥ ६॥ एक दिनानि शी पश्चिम भाग॥ पंच सुपन तिय अभिराम॥ भेद दिवाकर मेउ तंग सुजल सरोवर सिंधु तरंग॥ ६७॥ उठी प्रात आई विय पासराति सुपन फूल पूछे तासतन वर नेरंद बोल्यो विहसंत॥ तुम सुत हे जगत महंत॥ ६८॥ नेरुरूप फल नि धि ख्यात॥ सूरज नेज हंवज अरि घात मेरु सपान गरिपू सुरोय॥ सजल सरोवर वहु गतु सोय॥ २॥ सागर सम गंभीर अपारा वहु [illegible] नाय॥ आज शिव धार सुते सुपन फल हिय विहसन्यो॥ निज मंदिर फिरि गइ तात॥ ७॥ महा रुके सुर चयु करि सोय॥ गर्भ वा

शलि न्योत हा जोय॥ नवम मास जब पूरन भयो सुभ दिन लगन जनत सुठयो॥ ११॥ नाम दियो प्रिय मित्र कुमार॥ सब जन कों प्रिय कर तासा र॥ मात पिता अति आनंद कियो बंदीजन दे दान बहु दियो॥ १२॥ जब हि महंग ताल कंशाल॥ पटह आदि बाजित्र रसाल॥ बन वा ए जिन सदन अनेक॥ कीनी पूजा महाभिषेक॥ १३॥ कल्यान कर ता सुख दाय॥ बहु विधि कियो महोत्सव राय॥ दितीय चंद समहि पि कराय॥ जन आ नंद कर सुरसुख दाय॥ १४॥ पय जल अन्न वस्तु प्रत्येक॥ सुगंध अति शय रूप अनेक॥ क्रम सो कुवर सयानो भयो॥ जस की रति जग वा र तभ यो॥ १५॥ दिपे काय सहजनवुत इसी॥ दिग कुमारि की उपमा जिसी॥ सब सुत कहं अध्यापक राज॥ दीन्यो कुल को शेष दा बनक॥ १६॥ पटि सारवा नी जिनवनी॥ विद्या पूरम भ्रम थ सुचनी॥ जोवन समै पिता पद पाय॥ महा मंडलेश्वर नृप पराय॥ लक्ष्मी वहु तता सके येह॥ सुख समुद्र मुग तेधरि नेह॥ १७॥ पूरव पुन्य उदै सब थाय॥ बहु विधि भूति यहु उपजी आय॥ चक्र आदि सब रतन महान॥ नव निधि सुख दायक परवान॥ १८॥ भूचर खेचर व्यंतर देव॥ छहों खंड साधे स्वयमेव॥ कन्या रतन वरे कुल जोसार॥ तिनि दिनि पद सोलसि धार॥ १९॥ अमर राज वव कीडा करी॥ सुर पुर सम सुख भोगा धरे॥ स्वर्ग थकी ते सराय सुता॥ परनी परम पुन्य संजुता॥ २०॥ सहस छ्यानवे रूप अपार॥ नाटक नीवनी॥ सहजार॥ परम विभूति अधिक निरमुग॥ सेना हे वत षंडग॥ २१॥ आठ जाति के भूपति सवे॥ तिनि के भेद सुनो कहुं अवे॥ कोटि गाउ को भूपति होय॥ मुकुट बंध कहिये पहु हे सोय॥ २२॥ तेभूपा चसे राजा जास॥ अधराजा ता सो पर गास॥ सहस राय नावे जासीस॥ महाराज कहिये अवनीस॥ २३॥ दोय सहस नृपन सेपाय॥ कहिये अर्ध मंडली राय॥ चारि सहस जासेवा करें॥ सोई मंडली क पद धरें॥ २४॥ आठस हस्र नृप सेवे जास॥ महा मंडली कहिये ता स॥ सोरह सहस नवे नृपसी स॥ अधच की नारायन ई स॥ २५॥ अचरवर राजा सार॥ मुकुट बंध धवती सहजार॥ चक्रपती कि आज्ञा धरे॥ नृपा इ सब सेवा करे॥ २६॥ लक्ष खंड वसुधा धिपजान सहस सुलोरह सेपरवान॥ सबे चर न कमल धरी नेह॥ चकी तनो पुन्य फल तेह॥ २७॥ गत वसाधि देव महान॥ सोरा सहस नमैत जिमान॥ नर विद्याधर अमर अनेक॥ चक्री पद पूजे मन एक॥ २८॥ हस्ती तुरग मनो हर साष॥ हे प्रमान चौसठ्ठ लाष॥ तिनू ने हीर थल जे जोड॥ चल पल तुरंग अठारा कोड॥ २९॥ आ तुरगा मी पय दल जान॥ चउ रासी ति को डि पर वान॥ प्रन मैं नित चक्रे सुर पाय॥ यह वर न न जानो समुदाय॥ ३०॥ दोहा॥ संपुरन सुष भोगवे चक्री नित प्रिय मीत॥ तसु विभूति वर वरन उ यथा शक्ती सुहचित॥ ३१॥ अथ चौदा हरतन वर्णन॥ चक्र चर्म मनि काकनी दंड

स्त्रग्रामिनाम॥ एअजीवस्त्रनोरत्नचक्रवर्तिके धाम॥३२॥ सेनापतिवनिवाथपतिग्रहपतिनामतुरंग॥ प्रोहितमिलसातोरतननएसजी॥
वसरवंग॥३३॥ चक्रदंडअशिछत्रए आवधशालाहोत॥ चक्रमर्मकाकिनीमनिरतनश्रीग्रहलहेउदोत॥३५॥ वनीतायजहत्यतीनि
एवृषाचलपरजांन॥ सेनापतिग्रहपतिथपतिप्रोहितनिजपुरथांन॥३५॥ छप्पया॥ प्रथमसुदर्शनचक्ररवेउछत्रसाधनसमरथ॥चरम
दुसरोजानंदमयवीरसेदपथ॥ मनिकाकिनिरतनचेइरजसमदाइ॥ लिखिवेकंगुफामठारजायसो॥धननृपसोईखुलेदंडसोद्वारगि
रिसनजोतिअधिकाय॥ चंद्रहांसआदिदेपतनवेरिगनभंजिजा॥३६॥ सेनापति अतिसूरा॥करतजादिगविजयनिरंतर॥ वनिताचूरतरतन
मंहावलधारति अंतर॥ थापितभद्रमुषनामकलाके॥विदअधिकाई॥हकमपाइग्रहपातितुरतग्रहदेनबनाई॥ गजरतनसेजपकोकरो॥हय
चढिगुनाउधारि॥ प्रोहितवरविद्याधनीयहरतनरतनविचारि॥३७॥ दोहा॥ अवप्रत्येकनवनिधितनेक होनागुनरूप॥ जैनीविनुजा
नेनहीइनिकोंसहजस्वरूप॥३८॥ प्रथमकालनिधिजानीये॥महाकालपुनिदोपने॥सर्प्पिकपांडुकपदममानवपिंगलसोय॥३९॥अ
ष्टमशंखनिधान निधिसर्वरतननवमेह कही जिनागमकेविषैवरनौगुनछतेह॥४०॥ पद्धडीछंद॥ अवप्रथमकालनिधिगुनअपारपुस्त
कअनेकदातारसा॥ निधिमहाकालदूजीमनोग आशिभांशिसाधनेसामग्रिजोग॥४१॥ तीजीनेसर्प्पिजुनिधिमाहान॥ नानाविधिभा
जनतनीषान॥ चौथीनिधिपांडुकनामहोय॥रसधान्यसमर्प्यासकलसोय॥४२॥ निधिपरमपंचमी॥सुहतषांन॥मनछंछितदेइसुव
सनदांन॥ मानवनिधिषष्टमपुरमहेत॥सो आवजाति अनेकदेत॥४३॥सप्तमनिधिपिंगलेसुसअनूपसवभूषनदायकसहजरूप॥
निधिसंषअष्टमसिद्धपुनीत॥ बाजिनसवैदायकसुमीत॥४४॥ निधिसर्वरतननवमीबषान॥सोसवरतनपुरनिदान॥निधिएकए
किपनिसहस्रएकरषवारे यहप्रतापनेक॥४५॥ दोहा॥ एनवनिधिकेनामके सकटाहतसंतान॥ आठचक्रसंयुगतरुमचौपुरीसव
जान॥४६॥ पद्धतीछंद॥ सातसतेसहसवतीसदेश॥धनकनकंवरनपूएनविशेस॥वेढ्योचऊंवोरजुविपुलखांडि॥तेकोडिछानवेगाव
मंडि॥४७॥ हेकोटजागिरदोचारिहार॥छहीससहसपुरपट्टनसार॥जिनिलगहिपंचसौग्रामभूर॥वेच्यरिहजारअठंवपूर॥४८॥गि
रिनदीपेटसारहहजार॥वेषेटकहेजिनमतमकार॥कवलिगिरिवेउवैकूओरा॥डंबरदहजारचौविसजोर॥४९॥पट्टहजारअठसाल
जानि उपजेतहांवडूविधिरातनषानिहकला॥सिंघनसुषसतसहसाछि॥वेवसतसमुदतटुरवकाठि॥५०॥गिरिउपरसंवाहनवषांन॥वि
दाहनारसमहरनषांन॥ अवदीसहजारदुरंगमाहि॥५१॥उपसमुदमध्यजानोसुहांन॥तहां अंतदीपछपनप्रमान॥रत्नाकरपुर

वरीसहजार॥षटुसारवस्त्रकोसोभधार॥५२॥रूपभवसकुछदांतसाल॥लेषिजांरांखुनधरुंओरदेषिएपुरराजेसवश्रापजोग॥जि
नपरमिजनतनहांकरेभोग॥५३॥ दोहा॥ प्रथमचतुरसंस्थानसवकुलसुषसनाराच॥रेमवरनव्यंजनसहितननिरोधमनवाच॥५४॥एक
कोटिहलसीरा॥केषेतिकरतिकेशान॥कामधेनुगोकलविविधितिनिकोटिपुरवांना॥५५॥कोटिथालकंचुनतनेचक्रीरत्नकेगेह॥छ
दोखंडभूपतिसकलनिनितेअतिबलदेह॥५६॥ मधवलवर्णन॥ चौपही॥ अवसुविधकोभेद॥ततेनासेमकोषेद॥ बारहमनषग्रहेवल
जितो॥ एकरषमेकुरुतेतितो॥५८॥ जोबलबारहरुषभसमदार॥तितनोएकतुरंगमधार॥जातुरंगबारहबलुलियो॥सावतुरंगमहिधकेहियें
॥५९॥ महिपपांचसेजोबलधरै॥सोगजराजनुसाहकरै॥जोबलसोगयंदसरवंगसोई॥एकसिंघकेअंग॥६०॥सिंघपंचसेजोबलवांन
सोवलिभद्रएकमेजानि॥दोबलिभद्रकेबलसोय॥सोनारायनकेवनहोय॥६१॥ननानारायनबलधारंत॥सोचक्रीतनहोइतुरंग॥च
क्रीकोटिहोइबलजितो॥सोईएकदेवपरतितो॥६२॥जोबलकोटिदेवसरवंग॥तितनोएकइंद्रकेअंग॥तीर्थंकरअदभुतबलकही॥तनप
रमानूउतनीवही॥६३॥दोहा॥ सहसज्ञानवेविक्रियाधारतचक्रीअंगमतिश्रुतअवधिनिज्ञानजुतपूरवधरमगा॥६४॥चा
रिश्रवमुष्यसंपदाजोइ॥ओभेसुनियोमतिजोइ॥सिंहवाहमितेजमतोग॥आरूढचक्रपतिजोग॥६५॥अतिआसनवृषवषानो
प्रमाणिजालनदितपरमानो॥सुरदारतचमरअछपगगजलहरेरूप॥६६॥विद्युतमणिकुंडलसोहेइंतिदेषनसुरनरमोहवरा॥चक्र
वचअभेदमहाना॥जामैनविधेसिधाना॥६७॥विषसोचनिपाइकहोईपदपदविषमुचतिसोई॥अजितनजयरथमुषदाई॥जलपर
सोथलवतजाई॥६८॥वज्रकाडचक्रीधरुपचद्रावतनरपतिआपा॥अमोघबानकरलेई॥रनमेजयकोसोदेई॥६९॥तुंगअति
विकटमहांनरिपुरवउनशकतीजाना॥सिंघाटकवरसासोहे॥ताकोनरदूषनदोहे॥७०॥छुरीलाहवारनीजानो॥दामिनिगनच
मकतिमानो॥जेवरुसवेभूथांना॥चक्रनजिहोतिनहीआन॥७१॥दलमेकेसवगिरदाईवारहविधिअनदभारी॥वारहजोजनधुनि
घेरी॥७२॥ हेवजचोषजिसनामवारहपटनपकेधाम॥गंभीरावर्तगरीसुरावरुपमनरूपचौवीस॥७३॥रमनीकभुजावडुदीस॥
मितकोटिजुअडतालीस॥इत्यादिकवस्त्रअपार॥अवरमतलहियनपार॥७४॥ अथपंचेंद्रीविषय॥ चौपही॥ रविविमानहेजेसो
अषै॥सोचक्रीनिजदृगसोलषै॥राईदकगहदलहोयततषिनसनेसुबदकरिसोय॥७५॥रलसुगंधडुरगंधडुरगंधाजितो॥नाकविष
यसोजानेतितो॥षटूरसभोजनइकठेकरे॥रसनास्वादजुदेनुदेषरे॥७६॥सहसध्यानवेनाहीग्रह॥तितनोधरेविक्रियादेहमूलशरीर॥

आउखमातनसोगजगतपसिनसंसुखसवलोग॥२२॥भमुभ्रमुयहसंसारमहावनभटकटठोरनआयो॥योचौगनवटाधरिडोलेहाथक
छानदिपायो॥२३॥कबहूंजायनरकदुषभूजैछेदनभेदनहोई॥कबहूंपसुपरजायप्रायनिबंधबंधनऊजोद्॥२४॥सुरपदमेंसु
रसंपतिलषिकैरागउरै दुषपावै॥मानुषननमसुषीवाहिकोईविपतिअनेकउरावै॥२५॥येचकीपदभोगिघनेरे सुगतैनेपतिनहो
ई॥जैसें अग्निमलितेलसोंडारतशांतिनहोई॥२६॥दरसनज्ञानविनविनजियकेभवदधिपारनपावै॥तातेदीक्षामहनभवरधि
पारनपावै॥तातेदीक्षाग्रहनभलो अवतपकरिकर्मखिपावै॥२७॥सकलसंपराजीरथतनवतछोडीनृपअवरागी॥सहसछा
नवेनारिपियारीमनवचकरमकरित्यागी॥२८॥सर्वमिनसुतप्रथमअनोपमराजभारतसुरीलेयो॥आपुनऋषभसमवसरनारे॥जिन
मुद्रानपलिन्यो॥२९॥एकहजारनृपतिसंगचकिपंचममातघरे॥ग्रहतजिवनमेंवनमेंवसहिनिरंतरचिनिपदहृमशिरधरे॥३०॥
॥दोहा॥छहोखंडसंपतिसुनी छंडतनीनिवार॥धनिमुनेहप्रियमित्रचिनसुरुवसुबुधिअपार॥३१॥चौपई॥दुविधितपकारकरे
तपघनो॥पंचबीसभावनपवनमनो ध्यानध्ययनमध्येवडलीने॥तजिप्रमादचौदहमदहीना॥३२॥मूलोतरगुन आदिकजोय संम्यकद
रसनपालेसोया॥तीनिकाल सुनजोगमगीरा॥तीनिगुप्तिकोसदाविचार॥३३॥सबेसुनीज होयविरजनआन॥अटवीगिरीपरगुफा
सान॥तिहदेवीयापथसगदैने॥देशग्रामसबोधनहेत॥३४॥षोषमासउपवासकराय॥चरजाहिनसुनिपुभेजाय॥अंतरायपालेध
रीनेह॥रूपथजहारनेइसुनिमेह॥३५॥तहाधर्मउपदेशजुकरे॥परभावना अंगकेसरे॥जिनसासनमहात्मअपारा॥नरसुरपूजदे
जगमेसार॥३६॥ईहूं आदिजेपरमअचार॥पालेसंयमरहितविकार॥बहुतकालवपकीन्योसार॥अंतसमाधिधरीसुषकार॥
३७॥चारिमुकासनमनो चोहारा॥परमारथपदप्रापतिकार॥अंगीकारकियोसंन्यास॥धरयोजोगप्रतिमासमजासा॥३८॥तीनिष
रिसादो॥मरुवीस॥इक्यासआदिकमुनिईसै॥तपतपियोकरिकर्मविहिन॥आयुवीषकोधरगटकीन॥३९॥आराधनआ
राधीचार॥मुक्तितनीसाधकसुषकार॥तजेप्राननतेपरजीवे॥जिनसासनध्यायकरुनलीवा॥४०॥दोहा॥तहातेचयप्रियमि
त्रमुनिमुनउदोतसोसोई॥सहस्रारवरस्वर्गमसूर्यप्रभेसुरहोय॥४१॥चौपही॥जबउपादशिलामेंहोया॥नवयौवनतनउपन्योसो
यततषिना॥अवधिज्ञानकीपाय॥जान्योपषफलपूरबआय॥४२॥फलप्रतक्षदेषतठयो॥धर्मसाकसोरतबऊमयो॥उठिकेपऊ
योजिआगारा॥देवनरवंदनविधिवरसप्रकार॥४३॥सबपरिवारसहितनरदेव॥करीजायजिनवरकीसेव॥अष्टप्रकारीपूजाकरी

CC-0. BHAU DAJI LIBRARY, MUMBAI. MEMORIAL

सवअनिषुतपनेंपरिहरी॥४४॥करेकल्पनामनमेंजोइ॥आनिवस्तुसोपरगटहोइ॥यहीकल्पनाइष्यहीआन॥कीन्योसुरस्तोत्रविधा
न॥४५॥चैत्यरषजिनगेहअभंग॥तेपजैसुरनिरमलअंगमेरुआदिनदीसरथान॥मध्यलोकबंदेभगवान॥४६॥केवलज्ञानमुनी
जिनराय॥जहांजायसुरसहितसमाज॥शिरनवाइकेवंदनकरी॥बहुभक्तिभावभूमाविस्तरे॥४७॥बहुविधिधर्मतत्वआचार॥सुनै
तहांश्रीमुषरूषकार॥सबविभूतिसोनहातेदेव॥आयोनिजआश्रमसुषलेवा॥४८॥पुन्यसेंतलक्ष्मिकीपाई॥मनिविमानआ
दिकसुषदाई॥परमभोगउपभोगअपार॥भुगतेत्रपतिहोयसुविचार॥४९॥अषयदशासागरकीआव॥नेत्रदोषवर्जितअनुराव
सतधनुमलरहितजुसोइ॥सादेतीनिहाथतनुसोई॥५०॥सहससअठरावरसवितीत॥लेइकधाआहारसुनीत॥पषिअठारापूरन
जाइ॥स्वासातननेतबसुकलाइ॥५१॥तुरीयपृथ्वीमेंपरजंतविचार॥इव्यचराचरजानेसार॥ऋधिविकयातहांलोकीक ही॥क्षेत्रप्र
भावजानियेसही॥५२॥देशग्रामआरन्यपहार॥सागरदीपअसंष्यप्रकार॥इहांपूर्वकविदेरेसोइ॥देविनिसोक्रीडाजुतहोय॥
॥५३॥कबहूंवीनादिकधुनिसुने॥कबहूंगीतसुपेहरगुने॥कबहूंरिदिविनिकेसंग॥देषेसबविसिंगारअंगा॥५४॥कबहूंधर्मगोष्टि
आदरै॥कबहूंकेवलपूजाकरेकबहूं॥श्रीतीर्थंकरतनेंपंचकल्यानकउत्सवटनै॥५५॥इत्यादिकसबकर्मसंयोग॥करेसुष्यसागरमे
भोग॥कालनजान्योजातनदेव॥धर्मवंतसुनउत्तमभव॥५६॥गीता छंद॥यहभांतिसुषभपरिपाककरिकै चकपदपायोजबै॥सार
सुंदरसुषबनिरूपमभोगभुगतेवहुतबै॥विमलचारितयोगकरिकै देवपदतिनपामियो॥भजिधर्मजिनवरमोक्षदायनबलसाहि
प्रनामियो॥५७॥ ॥इतिश्रीवीरवर्धमानपुराणेभाषायांचक्रवर्तिस्वर्गगमनंनाहितीयसर्ववर्णनंनामपंचमाधिकारः॥ ॥
॥ ॥५८॥दोहा॥श्रीहरिषतसकरहव्योधविजनरसकेदेवज्ञानधर्मकुरता॥अरथकरोगीजिनसेव॥१॥चोपई॥याहीजंबूदीपवि
षविष्यातभरतक्षेत्रतामेंअवदात॥क्षत्राकानगरसहाजावि॥निवसैधरमीजनसुषपावि॥२॥नरीवर्धनभूपावि॥अवनीसआनं
दवर्धकगुनगनसीसरानीवीरमती॥अतिरूपपुंन्यसाविनीशीलसनूप॥३॥चयोस्वर्गतेदेवपुनीततिनी॥पुत्रभयोकरिश्री
ति॥नंदनामअतिरूपविशाजगआनंदकरनसुकुमाल॥४॥वरिजनेदियोबहुदान॥पुत्रमहोत्सवकियो॥महानयोग्यअन्नपय
षोषकराय॥वाटेगुनसंपूरकाय॥५॥स्वाध्यायकीपढायोतबै॥भारतशास्त्रशास्त्रकोसबै॥कलाविवेकरूपअंतघनो॥सोहे
स्वरगदेवयरुमनो॥६॥क्रमसोकुवरपिताषड्पाय॥राजविभूतिसमाअधिकाया॥दिव्यभोगभुगतेसंसारा॥सदाधरमकोकरै
विचार॥७॥निःशंकादिकगुनपालनदरसनसुधकरैमनसंत॥द्वादशव्रतश्रावगकेजानकरैजतनसोतेपरधान॥८॥निरारंभउपवा

सुनीत ॥ सकलपर्वमेंकरेसुरीत॥दानमुनिकोहरषताय॥देयथानिपिसुषअधिकाय॥९॥श्रीजिनेशकेमंदिरजाय॥महा
तिपूजनाठांकराय॥यात्राकरैधरमकेकाज॥वरैनधरमुनिजिनराज॥१०॥होयधरमरथअरूढताकरिबैठेसुध्यस
रूप॥अधुत्योगेयावेनिरबांनसंसारा॥स्वतोश्रविचलथाना॥११॥बऊविधिकरैधर्मगुणमरऊ॥दिनदिनदूठेसुध्यअनुक
ल॥यहिजानिभविधर्महिगहो॥इहभवपरभवकेउपकर्ह॥१२॥ताफलमहाभोगउपभोगा॥भुगतेराजसंपराजोग॥निश्चि
दिनकालगमावेसार॥सुषसागरकीकेनिमसार॥१३॥एकदिसारथकाज॥गएभव्यजनसहितसमाज॥प्रोषलयोगीश्व
रपरवीन॥वंदेजिनकेपगुनलीन॥१४॥आएद्रव्यलेपूजाकरी॥पथआरणकेमुनिथुनिविस्तरी॥भक्तिसहितश्रीनाथमहीप॥वै
ठ्योफिरिगुरुपाइसमीप॥१५॥तांहिनपरमारथमुनिराय॥भाष्योजतिधरमसमुदाय॥तबपरारथआदिकसारा॥शिव
प्रापतिकरतुअविकार॥१७॥मारूथलसमयहसंसार॥तामेंदुःखअनंतअपार॥दोषअनतेरहितसदीव॥कैसेतहांकैसे
सविजीव॥१८॥अरुनोदुःखसंसारन होय॥बऊसंपूरनसुषतहांजोय॥तोपुनिसुनपगहोकिमिकाजाजिनवरआदिसकल
मुनिराज॥१९॥एकधाप्यासकामादिकक्रोध॥मनचलितनिशिदिनजियचितलोभ॥तहांकुटिलतानतधारंत॥धीरजकरैतहां
बुधिवंत॥२०॥इहविधिहितकरसर्वजाय॥धरमपरारथचीरतशोय॥यहसेतहांएकाकीवीर॥चितअडोलतनसाहसधीर॥
२१॥पराधीनचलमोगीजीन॥तांकोंसेवैभविजनकीन॥दुःखअनंतपरिपूरनसोय॥भवसागरकोवर्धकहोय॥२२॥य
हिप्रकारवचसुनिबडभाग॥मनमेवाद्योपरमविराग॥तबकुटिमुनिकोनायोसीस॥तजोपरिग्रहचउअरुवीश॥२३॥दो
हा॥परमपरायअनंतभवपायोसंयमजोर॥परमरुतआचरसोसाधकशिवकीठोर॥२५॥द्वादशाांवाणिअगमगुरु
उपदेशाजिहाज॥भयोपारपरवीनमुनिरहितप्रमादअकाज॥२५॥चौपही॥आपवीर्यकोपररागटकरयो॥द्वादशविधितपन
आरयो॥पापमासउपवासहिधारा॥पंचेंद्रियोषेनिरधार॥२६॥बसेगुफागिरिकंदरधान॥एकाकीवनसिंहसमांना॥सहपरि
सहादोअरुवीस॥क्षुधातृषाआदिकदुखसीस॥२७॥दोहानेरमुनीश्वरभावेनुप्रेक्षाउशभावनसार॥भावेनिर्मलचितधे
सकलसिधिदातार॥२८॥चौपई॥संम्यकदरसनप्रथमविरुध॥अष्टअंगताकेअतिरुधमलपचीसरहितजबहोय॥
यप्रथमभावनाकहिवेसोय॥२९॥दरसनज्ञानचरनउपदेशजोमुनियथथारथवेशताकीविनकरैनकुसंत॥द्वितीय
भावनायाहविरतंत॥३०॥सहसअष्टठारहशीलहिअंगअतीचारटालैतजिसंगनिरतीचारकहावेसोय॥तृतीयभावना
अतिमहाय॥३१॥षठेअंगपूरवगुनज्ञान॥मतअज्ञानकरैनिरमान॥कालपटनविस्तारैसोय॥ज्ञानअभीक्ष्णभावनाजोइ॥

॥२२॥भोगअंगसुतमित्रसमेत॥धनकंचनकुलबलकोहेत॥जबइनितेजियहोयउदासतबसंवेगतनोपरगास॥२३॥चारित्र
कारसंचसमुदाय॥दीजेदानचारिविधिआयथा॥शक्तिनिजभावसमेत॥शक्तिस्यागभावनाहेत॥२४॥इनेकमरिपुकोसंता
न॥बारहविधितपकरहिदान॥जोनिजशक्तिआतमाहे॥शक्तिरूपसोजानोवहे॥२५॥श्रीमुनिवरगुणआगयकनेह॥रोगशोगम
यपीडितदेह॥तासुसमाधिकरेसमुदाय॥सोधसमाधियहेकथराय॥२६॥वायपितकफसूअनेक॥अरुडरांधउपतननटेक॥ना
सुनिकीसरधूपाकरै॥वैयावृततवहतिमधरै॥२७॥श्रीअरहंतदेवसुषसया॥मनवचकायासेवकराय॥धर्मअर्थशिवकामसही
व॥दायकएहइनकिपुनीत॥२८॥वंदेआचारजमलहीना॥पंचाचारकरनपरवीना॥गुनछत्तीसतनेधरतार॥अहआचारजभक्तिवि
चार॥२९॥कृतःज्ञानउदोतकमुनी॥मतआरतानहरनगुनी॥तिनिकीभक्तिकरैउरजोय॥बऊश्रुतभक्तिकहावेसोय॥३०॥मोह
संहारमनारतभोन॥श्रीजिनवरवानिसुषखानिताके बऊविधिवर्णनकरै॥प्रवचनभक्तिकहांविस्तरै॥३१॥प्रतिक्रमनशुभ
प्रत्यष्यान॥अरुव्युतसर्गसुमतिनाना॥तीनिकालसाधैस्वाध्याय॥यहआवाशिकपरिहानाय॥३२॥जोपुमत्तकलिरिवओरदे
य॥भूरिषतेंपंडितकरिलेय॥जिनपूजामनवचतनकरै॥मार्गप्रभावनाठकिमधरै॥३३॥सम्यकदृष्टिनैनेरहाय॥करिसनमानबु
लावेसोय॥धर्मकथाभाषेतासु॥तातसल्ययहअंगप्रकाश॥३४॥दोहा॥इहविधिषोडशभावनाभाईनेदमुनेश॥तीर्थंक
रपदबांधियोगुणअनंतपरमेश॥३५॥महिमातीन्योलोकमेंइहउपदेशअसार॥मुक्तिरूपीसुखसीमीवांछेवरहितकार॥३६॥
॥चौपई॥मरुप्रजतदकियोतपघोरा॥त्योसंयमआतमजोर॥वपुआहारकियापरिहरी॥अलपआवसोपुरनकरी॥३७॥इत
साफल्यकियोभवपार॥तीनिजगतसुषकोकरतार॥श्रीजिनसयनमः॥परमविरुद्धसोसंन्यास॥दायकसोसहरतनउपकार
सा॥३८॥दरसनज्ञानचरतपलहो॥समताभावआतमाहे॥आसंधआराधेचारिवोछेहियेमोक्षवरनारी॥३९॥मनविकलप
सबकीनेदूरि॥आतमध्यानहियेपरिपूरि॥सबजीवनिसोक्षिमाकराय॥तजेसमाधिध्यानमुनिराय॥४०॥दोहा॥यहतपफलव
तोपाविओसुरगशोपलहे वास॥अनुक्रमइहपुनीमपदवतमेंपदजास॥४१॥चौपही॥संपुटशिलारतनमयसही॥मनोक
मलयहरूपधरसे॥औतमुहूरतजोबनलयो संपूरनतबआपतिभयो॥४२॥आभूषनभूषितसरवंगा॥सहजरूपसमनानारंगा॥
तहांतेउठिदेवोसबभेसा॥अतिरमनीकमनोहरदेसा॥४३॥ऋधिसिधिदेवीसबवण्या॥सरविमानआदिकसमुदाया॥सुषनसमा
नलीयेपरधाना॥मनवांछितकछुनेदनगाता॥४४॥कोमेकवनपुन्यहेकियो॥कवनदेसधरहकहांआवियोकोप्रवीनएबोलैवैनकोसुर
सबैमनधरिचैन॥४५॥कनतनदेवीगुनमाल॥रूपलतासुतशीलविशाल॥रतनमइप्रभारउतंगा॥कवनतनेयहनानारंगा॥४६॥

दल सभांग कवनको एहा॥ अतिमनोज्ञ सुरम्य सुकरेहा॥ रिपे सभा मंडफ मनमोहपार उतंग वसेय हको॥ ५७॥ रतनवरन वफ्र द
रानि विमान॥ तामे कवनव सेपरधाना॥ कीयहस्त्य करमनलाय सकलविभूति कहीन जाय॥ ५८॥ मोक्ष रेषे देवीदेवा॥ मनआ
नंदधरे सबसेवकारन कवननजान्यो जाय॥ त्यों त्यों मनचिंता अधिकाय॥ ५९॥ इहिप्रकार बफ्र चिंता करी॥ मनमेसुरपति विकल्प
धरे॥ सेरा भेदन जान्यो एहा॥ जानेनसेंपरमसंदेहा॥ ६०॥ तावतमंत्रीपरम प्रवीन॥ प्रनम्यो चरन कमल मदहीन॥ अवधिज्ञान करि
जान्यो एहा॥ नाथहिये हृदयो संदेहा॥ ६१॥ संस्कृतिकरी नायनिजेभाल॥ भो स्वामी तुम दीनदयाल॥ पुन्य आजु देषेतुमनेनं जीवन
सफल भयो मुफ नैंन॥ ६२॥ देहपवित्र आजुमो भई॥ आजु हिमनकी उरमती गई॥ हस्त कमल फिरि जोरदेवा॥ शिरनवाइ बोल्यो
करिसेवा॥ ६३॥ अवस्कनियेभो कृपानिधाना॥ जासे मनविकलपको हान सुरगमहा अच्युत यहजोन॥ ऋद्धिसिधिको सागरसो
ई॥ ६४॥ सकलस्वरग केफ्र परवसे॥ त्यों माथे चूडामनिलसे॥ चंफ्र कोतिमुगामणि मनई॥ नानावरन भूमि वरनई॥ ६५॥ राति दिवश
कोभेदन कहा॥ रतनन्हो तिसेंउद्दिनसदा॥ तीनिलोकमें उद्दितसोई॥ एकधरम सोफ्र करलमहाया॥ ६६॥ क्षपसागरमे निवसेजो
युगदालिद्र न व्यापेकोय॥ कामधेनगोउ अपारा॥ कल्पवृक्षदशविधि दातारा॥ ६७॥ चिंतामनि सेरत्न अनूप॥ औरवस्फ को
कहो स्वरूपा॥ सुरगवागतरुना नाजाति॥ चैत्यवृक्ष आदिक सुभपांति॥ ६८॥ फूलेलतहां अधिकार॥ दशहं दिशिफेलीमह
कार॥ इहानवरतेंदुषकोहेतु॥ सुषसमूह सबहीविधिदेतु॥ ६९॥ दीनदलिद्री रोगीदुषीनिरगुननिरज्ञानीदरमुषी दुरभा
षी॥ दुरवचनीजितेसुपुननिमाहिनदीसेइते॥ ७०॥ जिनपूजावरतें अंगा॥ सुनेकेवलीवचन उतंगा॥ दिषेंस्त्यमहारमनीक॥ और
नमनमेंविकलपलीक॥ ७१॥ इकसेंउनसटि सकलविमान॥ श्रेणिबध्ध प्रकीरणक जान॥ तिनेअसंष्य संष्यविस्तार॥ सबे सुष्य
सागर अविकारा॥ ७२॥ दशसहस्र सामानिक देवा॥ तुमसमान दीसेंकरीसेवा॥ उतिमसुरतेंतीसहजार॥ सुतसमान वरतेंसुष
कारा॥ ७३॥ सुरचलीस सहस परमान॥ तेतुमतनरक्षककुणवान॥ पीसवांनसबदेवउतंगा॥ कहे आइसेनिरभंगा॥ ७४॥ दिवपंच
सेपरमप्रवीन॥ तुमआज्ञामे तनपरलीन॥ लोकपाल चारोचतुरंगा॥ पालेलोकधरासरवंगा॥ ७५॥ दशदिगपालनाथपगधरे
॥ दशोदिशासबउज्जलकरे॥ नफ्रे आसुरसेवैघने॥ अवसुभदसुनिदेवनिनने॥ ७६॥ गानदेवतिसवधाना॥ नाटकसुष्य
करनगुनवाना॥ अष्टमहादेवीगुनरूपा॥ प्रभुआदेशगुरुसरूपा॥ ७७॥ एकएकप्रतिहे परिवारा॥ कहीं आइसेनिरधा
र॥ तीनिज्ञानमंडितमनरंगा॥ ऋद्धिविक्रियाजुतसरवंगा॥ ७८॥ वलुभिकादेविसुतिनाथहो॥ त्रैसवइनिको साथा॥ तुम

चिंतहरेकरेपदसेव॥ महतीरुपसंपदाएव॥ ७९॥ कहीपडितादेवीसाष॥ दोसहस्रइकहतरिभाष॥ अरुदशलाषसहस
चोवीस॥ दिव्यजोषिता रूपगरीस॥ ८०॥ पासवानिहे त्रिविधिहिदेविगीतनृत्यकरितुमपदसेवि॥ प्रथमपचीसहितीयपंचास
हृतीयपरधिशतज्ञानप्रकाप्र॥ ८१॥ सबमेंपदवरनासचीवसुंधरानामा॥ किनषविजिनपूरपूजामेलवलीस्यायकसमकित
वहभवहीन॥ ८२॥ ललितवचनवफ्र लीलाबंधु॥ रूपमगसुलक्षनसहजसुगंधा॥ शीलरूपलावन्यहिलीन॥ हावभावबरसक
लप्रवीन॥ ८३॥ सबदेविनिकी आउप्रमान॥ त्यों सुमुद्रउठिलहरीविलाय॥ पचपुनपल्यक रीभगवान॥ विनसेहोयबफ्र तसमु
दाय॥ ज्योसमुद्रउठिलहरीविलाय॥ ८४॥ हस्तीघोडारथपरएवा॥ रूपगंधर्वनृत्यकीदेवा॥ सप्तअनिकाठिकबहकही॥ ओप्रभुदि
वसुनोकछुयहा॥ ८५॥ एकएककेहिलेदेवसातोंकेसा॥ तोसुनिलेवऋद्धिविक्रीया कोविरनंत॥ ऊंकमुषाइसाजिदेइतुरंता॥ ८६॥
प्रथमअनिगजराजवषांन सोहेवीससहसपरवान॥ यातेदुगुनदुनविस्तार॥ सेनानायकलक्षजानिनिरधार॥ ८७॥ सबदलल
क्षपचीस॥ सुनेहअरुचालीससहस॥ अधिकेहसेवाकरैसबेमनुलाय॥ भक्तिसहितप्रनमेतुमपाय॥ ८८॥ निजनगरीहोगिर
दाकार॥ जोजनविशसहसविस्तार॥ कोटअसीजोजनसुउतंग॥ अठाईसअवगाहनरंग॥ ८९॥ कनककगूरेहेप्रकार॥ षाईअ
तिभंगभीरविचार॥ तोरनतुंगरतनछविदाय॥ सबउपमानहि वरनीजाय॥ ९०॥ चारोदिशिदरवाजेचारि॥ सोजोजनऊंचेनिरधा
र॥ नगरीचौपथसघनीपाति॥ तामेवीथीनानाभांति॥ ९१॥ तासेप्रभुनिजसुरनअगुहे जोजनदूसेउतंग॥ जोजनसीसतास
विस्तार॥ अरुआयामइगुनसुषकार॥ ९२॥ यहविभूतिवरतीसमुदाय॥ औरविविधिकोकहेवराय॥ अहोनाथतुमपुन्यअ
पार॥ सोसनमुषआयोअधिकार॥ ९३॥ दोहा॥ अविनामहिमायुनरिसवृधिसुखस्वरूपदेव॥ कामुकामिखजुगुनिगुणसुरग
रधिवफ्रएव॥ ९४॥ सुरगराजलक्षीमीविविधिसंपूरनसुषराय॥ अरुभरतषंण्डसूरेसतुमप्रभुतोनिजमनुलाय॥ ९५॥ तो
पही॥ इहिप्रकारमंत्रीवचफ्रने तावतअवधिज्ञानमुनगुने॥ पूर्वभवमे व्रतआदरयो॥ सोअबआनिपरापतिभरयो॥ ९६॥
जिवनवरकथितधर्ममेंकियो॥ अष्टकर्मविध्वंसनकियो॥ मेपूरवतपकीन्यो घोरध्यानअध्ययनसयना ज्ञानढोर॥ ९७॥ पंचपरमगुरुजि
भुवनतार॥ आराधेमनवचनसार॥ रत्नत्रयधास्योअविरुधा परमभावसोआतमशुधा॥ ९८॥ विषयकषायकामबनघार॥ दियोज
लायध्यानकेजोर सहिपरिसादोअरुवीसा॥ तिनिकीविजयकरीअबनीसा॥ ९९॥ दशलाषिनीधर्मसुखदाय॥ मेपूरवकीन्योमनुलो
या॥ ताफलस्वरग शोलहे गंमा॥ राजविभूतिभरेनिजधाम॥ १००॥ धर्मसमानजुबांधवजोई॥ तीनिलोकमेंऔरनकोय॥ सबसागरमे

रक्षधर्म करैधर्ममर्वारथसर्म॥१॥धर्मजीवकोसुगतिसुधारी॥धर्मपाप अरिनासन हार॥सुरगमुकति कोदायकधर्मा॥अ
रुजगकोसेटनसबभर्वा॥२॥औसिजांनिधर्मनितकरै॥मिथ्यामनसबहीपरिहरीकरै॥औरकोटिक आचार॥धर्मसमान
नपूरेसार॥३॥दरसनरुधअरथअरुकाम॥श्रीजिनवरबंदेरुषधाम॥अतिनिकोपूजेगुनरूसा॥होयधरमकीसिधि
अनुपा॥४॥यहविचारिउटिटाढ्यो॥भयोदेवनिसहितवापिकागयो॥सदासास्वती अतिगंभीर॥मानोक्षीसोदधिकोनीर
॥५॥अमृतजलपरिपूरनजोय॥घटेवढेकछुनाहीसोय॥फाटिकमणिमयपेडीसास॥सबबंधावरत्ननिरधार॥६॥तहां
सुरपतिकीन्योअस्थान॥यहिरेभूषननसनमहान॥देवनिसहितगयोकिरितहा॥अकृत्यमजिननेरिजहा॥७॥सोजोजनहीर
घपरचांन॥अरुविमारपचासप्रमान॥पचहतरिलोजगउतंगा॥जोजनआठ द्रुममनरंगा॥८॥तिनिमाप्रतिमासोअरुआठ
कायाधनुषपांचसेबाठ॥वसुप्रतिहारिजमंडितईसवीपरे मनोनिसरिस॥९॥नमस्कारकीन्योहरिजाम॥तुमषेमबंतपर
मसुषदाय॥तुमविनुसदाजीवदुखलहै॥तुमविनुकोनुमोषपदयहै॥१०॥तुमविनुसटकैभवसागर॥तुमविनुमोरकोनआ
धार॥भोजिनेशातुमदीनदयालु तुमविनुगहै कुमतिकोजाल॥११॥इहविधिथुतिकनिआपिकाय॥बंद्योनिजकोठांचितल्पा
य॥बहुप्रकारपूजाविस्तरी॥अष्टद्रव्यलेआगेधरी॥१२॥उठिकैबहुरिनम्योजिनपाय॥बारबारथुतिसीसलगाय॥त
होंतेफिरिनरलोकेआया॥बंदेतीर्थंकरमुनिराय॥१३॥नमस्कारकरिवेदद्योतहा॥मनमेगुनेमंडपरमहा॥तलपदारथबेरउत
गो॥सुमेधर्मस्वकसबसंयो॥१४॥तहांतेउठिनिजस्थानकआपसचविभक्तिदेवीमनुलाय॥तहांसभामंडपनिरभंग॥दिपेचारि
हूरिशाउतंग॥१५॥सुरअवनिकरिषचितमहान॥देषतराजेकोटिकमान॥आगेमानसथंभविशाल॥मानीमदहरवतनका
ल॥१६॥दशविधिसभानहांसबराया॥बैठेसबदेवमनुलाय॥ताकेमध्यजगिरदाकार॥रत्नमईसिंघासनसार॥१७॥तापै
बैठ्योइंद्रपुनीतसकलअपसरागवेगीत॥सुरगंधर्वनचैवफेसइःखचिताध्यैपनहिलेस॥१८॥सबकोदेइधरमउपरेस
॥होयधरमसोंमोषमहेस॥धरमविनापविदुषकूपलहै॥धरमसोसुष्यसरूप॥१९॥ईहप्रकारसुषभुगतैघने॥सोसबहीं
विधिकहतनबनै॥सोहोतनसमचतुरसथान॥विपुलैक्रियकसकलछिनवान॥२०॥अस्तिचरममनुष्यननकोय॥शुक्रकरुधि
रैअरुसेरनहोय॥एहिसप्तधातुनहिभंग॥निरारहितनानिरभंग॥३१॥षटनारककीअवनिप्रजंत॥वसुचराचरदेषेसंत॥
तितनीधरैविक्रयासोय॥बाइससागरआवजु होय॥२२॥बरसैसहसबाईसप्रजंतु॥मनसाहारलेइगुणवंत॥जदबी

तेएकादशमास॥तबसुगंधमयलेइउसास॥२३॥कबहूंसुनैगीतरसपांन॥कबहूंदेषैनृत्यमहांन॥कबहूंबनकीउाकोजा
य॥इहविधिभोगकरैसुरराय॥२४॥तीर्थंकरकल्यानपंच॥तबपरतहोजायमनसंच॥शेषकेवलीमुकतिमहेश॥दो
कल्यानककरैसुरेश॥२५॥मेरुकुलाचलजिनअहजहां॥भावसहितहरिवंदेतहां॥दीपसमुद्र असंष्यमकार॥मनइछाध
रिकरैविहार॥२६॥पूजेश्रीजिनवरकेपाय॥बंदेनिजकरसीसलगाय॥करैमहोत्सवतहांअधिकाय॥२७॥इहविधिभुग
तेपरमानें॥सुषसागरमेंमग्नसुरिंद॥सकलअमरतिहिसेवाकरैं॥आज्ञाबिनानकहूंपगधरैं॥२८॥दोहा॥सुरगलोककी
संपदाचरननहैअधिकार॥कहिकिमपिलघुरूपमें॥श्रीजिनजानननहार॥२९॥गीताछंद॥यहभांतिसषपरिपाककरिकै॥सु
रराजसुपाइयो॥भईसंपूरनविभवसबविधिदिव्यभोगकराइयो॥यहजानिभविजनभजहुधरमैंधरसएकसहायहै॥धर
मवहूभवहरनजियकोधरमशिवसुषदायहै॥३०॥ ॥इतिश्रीवर्धमानपुराणेभाषायांनंदनृपतिअच्युतेंद्रपदविभू
तिवर्णनोनामषष्टमोधिकारः समाप्तः॥ ॥६॥दोहा॥विघनहरआनंदकरनसेवैविजगतपाय॥वंदोपारसपदकम
लतिमिरनीवारोसुषदाय॥१॥कहोवीरजिनराजके आगेचरितरसाल॥पंचकल्यानकविधिमिथ्यातमषयकाल॥२॥चौपई
याहिजंबूदीपमहांन॥जोजनलाषतासपरवांन॥कंचकोटहैगिरदाकार॥वसुयोजनअवगहनधार॥३॥तीनिलाषशोलहजार
दोसेसताइसविचार॥इतनैजोजनहैपरधांना॥ऊपरकोशतीनिपहिचांन॥४॥धनुषएकसौअठाईस॥साठेतेरुअंगुलदीस
यहै॥परधिकोसबविस्तारबिष्योजंबुदीपसलाग॥५॥लवनसमुद्रवहैचहूंओरा॥जोजनदोयलाषसबठौर॥बउबानलतहांअ
धिकप्रचंड॥वटैनीरशोषैबलवंड॥६॥चहूंविधिचारीपेटपरवांन॥बिदिशाचारोमध्यमवांन॥सबासेअंतरओर॥एकसह
सबरुहैसकजोर॥७॥जलचरजीवअनेकप्रकार॥पीवनजोग्यनहीजलक्षार॥दीपहिमध्यपरमपरधान॥मेरुसुदरसनशोभा
वांन॥८॥जोजनलाषमहाउतंगा॥थूलसहसदशमूलअभंगा॥ताकीरचनासुरनरुआनंद॥एकसहसजोजनकोकंद॥९॥
तापरभद्रशालबनसारा॥तहांजिनभवनअकृतमचारा॥बिदिशाचारिचारिगजदंता॥नीलनिषधपरवतलौं अंता॥१०॥अति
उतंगकंचनसमपगेतिनिपरइक॥इकजिनयहलगेबनसबशोभितनानाभांतिकल्पद्रुमनिकीसघनीपांति॥११॥करुद्रु
मदक्षिनउत्तरदोयजंबशालमलीअवलोय॥इकइकतरुकीशाषाचारि॥चारोंदिशिलीजोअवधारी॥१२॥पूरबशारवी
त्रिनयहबसे॥सरासासतेहिममलसे॥तहांतेपंचसयजोजनजांना॥नंदनबनसोकह्योबषान॥१३॥बारिचैत्यालेवरनेसही॥

रचनाता सुपूर्ववतु कही॥ तहांतेसाढे बीसठि सहस॥ हेउतंग जोजन सौमनस॥ १४॥ जहां भवन जिन चारिमनोग॥ पूरवमय
वारोदधि सिसार॥ ताके मध्य चूलका दीस॥ मुकुटसमान जोजन चालीस॥ १५॥ बारह जोजन मूलविथार॥ आठमध्य अरु ऊरध
चार॥ ताके ऊपर जो सुरथान॥ बारांतर है रुनकविमान॥ १७॥ अवदछिन उरविस्तार॥ जंबूदीपहि भागविचार॥ इकसय नवे
कीजे वेत्र॥ एकभाग को सुरत हि सेत्र॥ १८॥ सो कहिये जो जनसे पांच॥ ऊपर छबीस यधरि सांच॥ कलाषष्ट अधिकी है ओर॥
करिउनीश इक जोजन दोर॥ १९॥ लंबो तीनि भागपरवीन॥ धनुषअटाईसे करि हीन॥ हिमवनगिरिके पासजु सोय॥ पूरव
अपर दिशाअवलोय॥ २०॥ धनुषकारताहि अवलोय॥ छहो खंडमंडित सोया॥ पंचमलेछ आर्य इकजांनि॥ क्षेत्रहि मध्यर
जितगिरिमानि॥ २१॥ षट् जोजनउतसुकंदगिरीसा॥ ऊंचो है जोनपचीस॥ अरुपचासविस्तारजुहोय॥ तापर इक जिनग्रह अ
वलोय॥ २२॥ चवसुकूट है सबरे जोय॥ पूरवकूटहि उत्तरकूट सोय॥ अष्टकूटपरलघुजिनग्रेह॥ प्रतिमाएकविराजैतेह॥ २३॥
दशजोजनपरश्रेणी दोय॥ पुरपचास दक्षिनदिशिसोय॥ उत्तरनगरीसाठि जुजोडि॥ एकएकप्रतिगाऊं जोडि॥ २४॥ दोयभागहि
भवनगिरिसार॥ कंदपचीसहि जोजन धार॥ सोजोजन उन्नतपरवाना अंतभाग छहलंबोजा॥ २५॥ तापरपदम द्रह इक रू
पा॥ दशजोजनगहरो जलपूरा॥ लंबो है जोजन हजारा अरुशतपांचजस विस्तार॥ २६॥ इकजोजनतहांकमलप्रकाश॥ ता
परश्रीदेवी को वास॥ शोरहसतासपरिवार॥ थितिइकपल्यशचीवतसार॥ २७॥ तिनितैनिकसीसरितातीनिताको से
द्रस्रवोपरवीन॥ गंगासिंधुरोहिनाचंग॥ सवाछहजोजनपाट अभंग॥ २८॥ नदीमूलहै देवीजेहा॥ तिनिनामांकितसरिता
तेह॥ प्रथमहि गंगासरतैचली॥ मूलसवाछहजोजन भली॥ २९॥ भरतक्षेत्रविजयारधधकोर॥ पूरवमिलीलवनदधिजो
र॥ साढेबासठिजोजनताहि॥ जलचजीवनउपजैमाहि॥ ३०॥ गालेजलबनलेकुविचारी॥ चौदहसहसतासपरिवार॥ डु
जीसिंधुतिहिवतचली॥ मुफाफोरिपश्चिमदिशिमिलि॥ ३१॥ तीजीनदीरोहितामूलसाढेबारहजोजनमूलक्षेत्रहे मव
तमेरो॥ आइपूरवमिलीउरधीकीजाइ॥ ३२॥ जोजनशतपचीसविस्तार॥ सहसअठाइसहैपरिवार॥ भागचारिक्षेत्रहिअ
वधारा॥ भोगभूमिलघुसवव्योहार॥ ३३॥ अंतहिलंबोबारहभाग॥ तामहि आधकोशघटिलाग॥ महाहिमवनवसुभा
गविस्तार॥ चौविसलंबघटिकोशहि धार॥ ३४॥ कंदपचासहि जोजन होइ॥ अरुउनतजोजनसेदोइ॥ एकभवनूजिनति
नपरलही॥ अष्टोत्तरशतप्रतिमासही॥ ३५॥ महापद्मद्रहतापरलह्यो॥ जोजनसहस्रदूलंबो॥ कह्योसहसएककोचकस्वो

वन्यो बीसगहीरकमलदोतन्यो॥ ३६॥ दूजीह्रीदेवीतहांवासपथमहिभवतसमत्रीजास॥ तहांतेनिकसीसरितादोयरोहितक्षेत्र
हिमवतहोय॥ ३७॥ पश्चिममिलीउदधिकेद्वार॥ ताहि रोहितावतसुविचार॥ हरिकांताहरीक्षेत्रहि दोश॥ मूलकहीजोजनप
चीस॥ ३८॥ पूरमिलीलवनदधिद्वार॥ तहांअढाईसेविस्तार॥ छप्पनसहसकंदोपरिवार॥ निर्मलजलगालेवतधार॥
॥ ३९॥ सोराखागक्षेत्रविस्तार॥ भोगभूमिमध्यमसुविचार॥ लंबोभागजु अठातालिका॥ दोयकोशघटिनषधनजीक
॥ ४०॥ वतिसभागनिषधगिरिथाय॥ जोजनघटिछ्यानवलवाई॥ सोजोजनतसुकंदसम्हार॥ उन्नतहैजोजनसेचार॥
॥ ४१॥ तापरइकजिनभवनमनोगा॥ वसुप्रतिहारिजप्रतिमाजोगा॥ इहतिगछसोहोगिरिसीस॥ सोगहरोजोजनचालीस॥
॥ ४२॥ लंबोचारिसहसपुनिकह्यो॥ दोयसहसकोचोखोलह्यो॥ जोजनचारिकमलतहांवसै॥ तामेधृतिदेवियहलसै॥
॥ ४३॥ प्रथमहिभवतसामत्रीजोय॥ द्रहतैनिकसीसरितादोय॥ हरिकांताहरिक्षेत्रमकार॥ पश्चिममिलीसमुद्रकेद्वार॥
॥ ४४॥ ॰५॰ हरिकांतातत्वजानोसही॥ अवसीतासुनिजिहिविधिकही॥ मूलपचासहिजोजनसेत॥ मेरुनिकटफासवोगजदंत
॥ ४५॥ पूर्वविदेहहोयदधिमिली॥ महापांचसैजोजनरली॥ सहसचौरासीसबपरिवार॥ जलचरजीवनतिहिसार॥
॥ ४६॥ अर्धमेरुलौवतिसभाग॥ भोगभूमिउत्तमसुहाग॥ अर्धमेरुतेनीलप्रजंत॥ वतिसभागसोगभूसंत॥ ४७॥
मेरुसहितसीतासीतोद॥ लंबाईसवमध्यप्रमोद॥ भागएकसैनवैहोय॥ जोजनलक्षपूर्वपरसोय॥ ४८॥ भागवतीसनी
लविस्तार॥ तापरइकजिनभवविचार॥ निषधसमानभेदसबकह्यो॥ मध्यकेशरीद्रहतहांलह्यो॥ ४९॥ सोतिगंछवतक
हिएजासदेविकीर्तिकमलमेवासतहांतैनिकसितरंगनिदोय॥ शीतोदापश्चिमदिशिजोय॥ ५०॥ मेरुनिकटगजदंत॥
विदारम॥ सवरत्नवाशीतावतधार॥ नारीसरितारम्यकक्षेत्र॥ पूरवमिलिसमुद्रहिजेत्र॥ ५१॥ मध्यमभोगभूमियूसही॥
बोइशभागविथारजुमही॥ पर्वतरुक्मभागवसुलीन॥ जिनबैचैत्यालयएकप्रवीन॥ ५२॥ महापुंडरीकद्रहसीस॥ ता
मेकमलप्रफुल्लितदीस॥ तहांबुधिदेवीकोवास॥ नदीदोयनिकसीसरजास॥ ५३॥ नरकांतारम्यकमधिहोय॥ पश्चिममी
लिसमुद्रहिसोय॥ रक्तवरणाकूलासरिताकहिहै॥ रण्यहिपूरवकोलही॥ ५४॥ चारिभागक्षेत्रहिविस्तार॥ भोगभूमिलघु
युगलविचार॥ शिखरीपर्वतभागजुदोय॥ तहांएकश्रीजिनग्रेह होय॥ ५५॥ पुंडरीकद्रहतापरलसै॥ लक्ष्मीदेवीकमलहिव
सै॥ तीनिनदितिनिकसीसरमन्य॥ पश्चिमरूपकूलहैरण्या॥ ५६॥ रकापुनि ओरावतजाय॥ पूरममिलिलवणादधिमाय॥ र

लोदायपश्चिमदिलही॥सेत्रभागइजानोसही॥५७॥ताकेमध्यरजितगिरिमेक।तापरजिनचैत्यालयएक॥जैसोदक्षि
नदिशिद्वोदार॥मेरुहसोसोउतरधार॥५८॥हेमवरनशिषरनिहिमवन्ना॥रजतरुकलमरुमहीहिमवन्ना॥नीलनी
लमणिकीउनहार॥निषधमहांकंचनवतधार॥५९॥वज्रकोटठिगकुलगिरिछाइ॥तहांकुभोगभूचोविसजोडी॥अ
नूपूरवपश्चिमविस्तार॥नीलनिषधकेवीचमकार॥६०॥कोटहेडपूरवदिशिजात॥देवारण्यसुवननिष्यात॥जोजनदोयस
हसूपरवांन॥नवसेवाइसऊपरजांन॥६१॥फुनिविदेहइकसोहेतहां॥दोयसहसजोजनधरजहां॥ऊपरदोसेवारहजो
य॥सादेतीनिकोशजुतहोय॥६२॥तामेसरितादोयपुनीत॥गंगासिंध्यावतसवरीति॥निषधनिकटडुहतेंनिकसाय॥
॥जायमिलीसीतासरीमाय॥६३॥षटखंडिममंडितपरवांन॥तामधिइकविजयारधजान॥तिनिपरइकजिनभवन
अकुकाल॥चतुर्थमसदाप्रवर्त्य॥६४॥फुनिवक्षारपर्वतपहिचांन॥नीलहितेसीतालगमांन॥पंचसयाजोजनविस्तार॥
तापरजिनमहएकसवार॥६५॥अवविदेहदूजीपहिचांन॥पूरववतविधिलीजोजांन॥फिरिविभंगासरिताएक॥कहीसवा
सोजोजनटेक॥६६॥रोहितवनसामग्रीभली॥निकसितीलद्रहसीतहिमिली॥तृतीयदेहपूर्ववतजोयदक्षियवक्षारग्रथ
मुसमहोय॥६७॥तुरियविदेहजानिअवसही॥द्वितीयविभंगासरितालही॥फेरिविदेहपंचमीजाना॥गिरिवक्षारती
जोपहिचांना॥६८॥छठीविदेहजांनिअवओर॥तृतियविभंगासरितादोर॥विदेहसप्तमीथांनगनेह॥गिरिवक्षारतु
रियुअवलेह॥६९॥विदेहअष्टमीतहांतेलही॥दक्षिनतटसववरननयही॥एहिविधिउतरतटजाना॥बसुविदेह
तहांसोभाथांना॥७०॥तहांतेंभद्रशालबनसार॥हेजोजनबावीसहजार॥ताकीरचनाहेबकुफेर॥पंचसहसलहिआ
धोमेर॥७१॥यहपूरवदिशिशोभावांना॥जोजनसहपचासप्रवांन॥ताहिविधिपश्चिमविरतंत॥भूतारन्यबहिलोअंत॥
॥७२॥सबविदेहबनीसबधांना॥तितनेहेविजयारधथांन॥अरुषोडशवक्षारमहांना॥सबपरइककजिनग्रहजांन॥
॥७३॥एपर्वतइकसंठिपरवांन॥सबजिनभवनअटतरीथांन॥अवसामान्यहिभूधरदीस॥एषभाचलहेसवचो
तीस॥७४॥हेमलेक्षखंडनिकेमाहि॥तहांचक्रवर्तिनामलिषांहि॥मेरुनिकटहेदिगाजआठ॥दोसेकंचनगिरिकोटा
ठा॥७५॥सीतासीतोदातटजेह॥कंचनवरनजानिसबलेह॥अधन्यभोगभूमिमेकहे॥नाभिगिरीसचादिसरदेह॥७६
चारिजमकगिरिकुरुभूमाहि॥नीलनिषधकेनिकटजुआंहि॥एपरवतसवहीबरनए॥ग्यारहअधिकतीनिसेमए॥७७

सरवरसबइकसेछेतीस॥तिनिकिसंख्यासुनिअवनीस॥पंचआठषटभूधरसीस॥सीतासीतोदामधिवीस॥७८॥
नीलनिकटअठतीसजुओर॥तितनिहेहानिषभनगओर॥उदधसमुद्रसबहेचौतीस॥आरिजखंडहिइकइकीस॥
॥७९॥महानदीनवेसवकही॥गंगाआदिचतुर्दशलही॥चौसठीसबैविदेहमकार॥बारहविपुलविभंगासार॥८०॥सत्र
हलाषसवै॥परीवारऊपरसहसबानवै॥धारपरवतनदीकुंडघुधने॥सोसबसदकहतनहिभनै॥८१॥दोहा॥
महिमाजंबूदीपकीकोकविवरननहार॥कहीकिमधिसंक्षेपविधिजिनमतके अनुसार॥८२॥चौपही॥अवयह
आरजषंडमहांन॥देशसहबुतीसप्रमान॥तामेंदक्षिनदिशिगुनमाल॥महाविदेहादेशारसाल॥८३॥सोविदेहबतहै
समुदाय॥सबसोभाकोकहेवदाय॥कोईतपकेफलकेपरभाय॥उपजेवरदेहमेंजाय॥८४॥उतिमपरतहांपावेको
य॥सार्थनामशिवगामिहोय॥कोईषोडशभावनभाइ॥बांधेतीर्थंकरपदराय॥८५॥कोईपंचोत्तरपदलहै॥निज
सतासातमचितगहै॥कोईदानसुपात्रेदेई॥ताफलभोगभूमिपदलेइ॥८६॥कोईधर्मतनेपरभाव॥लहेइंद्रपदउति
मठाव॥जहांनिर्वाणभूमिमनरंग॥पदपदपरदीसेसुरवंग॥८७॥नरपदसकरपदफनेनरेश॥वंदेआयकेबलीजोस
॥वनपरवतगिरिगुफामसांन॥तहांदेइमुनिउतिमध्यांन॥८८॥विहरेयतिसमूहसमचेत॥धर्मवृधिकेकारनहेत॥च्यारि
प्रकारसंघसुखदाय॥संबोधेभवियनमनलाय॥८९॥दिशतनोवरणनबकुएह॥कहनग्रंथवाटेअधिकेहा॥ताकेमध्यना
भिवतजांन॥कुंडलपुरनगरीसुषभान॥९०॥तुंगकोटतेसुगोपुरचार॥षाईभातिमंनीरविचार॥रिपुकुलतहांनपावेजो
ग॥वरननसाकेतापरवांन॥९१॥तीर्थंकरकल्यानकजान॥हहेसहाइहांगुनषान॥यहिजानिसुरयात्राकरै॥परमोत्स
रयात्राकरै॥९२॥परमोत्सवनिजहिरदेधरै॥अतिइल्लतजहांजिनआगा॥रहेमरतनमयरहितविकारबकुप्रकारदीसैनिर
भंगा॥९३॥वाद्यसालजयनंदसमांन॥गीतनृत्यसुभवादहिथांन॥ताहीमेंजिनविंबअनेक॥हेमरतनउपकर्णमनेक॥९४
तेवंदेभविजिनगुनगांन॥दिव्यरूपकोमलपरिनाम॥मनोदेवगनइतिमएह॥पूजाकरैरहितसंदेह॥९५॥कोईनिजग्रहद्वारे
षडे॥बारंबारभक्तिमनवडे॥देषिजतिपरगाहनकरै॥मरमतत्परतनवतेपरिहरै॥९६॥देईसुपात्रेउतिमदान॥रतनवृष्टिसु
रकरहिनिदांन॥तिनिकोदेषीमध्यनरकोय॥हानदेयसोततपुरहोय॥९७॥तापरभरिरसघपांति॥तुंगधुजादीसेवकु
भांति॥आंछेइंद्रलेनअवतार॥यानेलहेऊचपदसार॥९८॥पुरजनबकुथरमीदातार॥ततमेसूरशीलगुनधार जि

नपनिगुनज्ञानवंतगुरुपाय ॥ भक्तिसहितसंवेसमुदाय ॥ ९ ॥ मारगनीतिगहेअरबीन ॥ हितमितबचनकहेमदहीना ॥ बुधिवंत
सवरहितविकार ॥ अरुमिथ्यामतकेषयकार ॥ १० ॥ दिव्यरूपनरनारीसवै ॥ कोमलकमलगातमनफवै ॥ तुंगसदननिवसै
मतिवांन ॥ मनोदेवयेसहितविमान ॥ ९ ॥ पुरपतिमहीपालमतिवांन ॥ श्रीसिद्धारथनाममहांन ॥ कास्यपगोत्रपरमसुष
वास ॥ नाथवज्ञानसकिरविप्रकाश ॥ २ ॥ तीनिज्ञानधारीबुधिवंत ॥ नीतिमार्गरतउरमतिसंत ॥ जिनवरभक्तमहादा
तार ॥ दिव्यसुलक्षनमंडितसार ॥ ३ ॥ कर्ममहाअरिनाशनबीर ॥ रुकमदुतीवरवचनगहीरा ॥ कलाज्ञानचातुर्यबि
वेक ॥ धर्मवंतगुणासहितअनेक ॥ ४ ॥ शीलदृष्टिरुकभध्यानप्रवीन ॥ भावनादिमेनिशिदिनलीन ॥ भूचरखेचरव्यंतर
सवै ॥ रूपकेचरनकमल कौनवै ॥ ५ ॥ दीप्ति कांतितनअधिकप्रताप ॥ दिव्यरूपसूरजसमआपा ॥ नेमिवंशयुगाज्ञाय
कसत ॥ एकधरमकोमूलमहंत ॥ ६ ॥ दोहा ॥ तिनहिभवनदेवीमहा प्रीयकारीनिवरनाम ॥ गुणासमूहउपमारहितज
गप्रियकरतावाम ॥ ७ ॥ कंलाज्ञानचातुर्यअतियथाभारती आप ॥ त्रिशलात्रिज्ञातैरक्षाकरनरूपअधिकपरता
प ॥ ८ ॥ अथस्वरूपवर्णनं ॥ सवैया ॥ २२ ॥ अंबुजसेजुगपाइबनेनषरेषिनषः ॥ त्रभयेभयकारी ॥ नूपूरकीकनकर
सुनेरिगशोरभयोदृगहंदिशाभारि ॥ केरतिथंभवनेजुगजंघसुचालचलै गजकीपियप्यारी क्षीरनवन्योकटिकेहरि
कौतनदामिनिदेषिरहीलजिहारी ॥ ९ ॥ नाभिनिबोरियसीनिकसीपटहावत पेटसुकंचनधरीकामकपिछकियो ॥
पटअंतरशीलसोधीरधरै ॥ अधिकारि ॥ भूषनबारहभांतिनिके अतिकंठमैमोतिलसै अधिकारि ॥ देषतस्वरजचंदछि
यैमुषदाडिमदंतमहाछविकारी ॥ १० ॥ कपोअभषणदीपै अतिसुंदरनाकसुबासमचोचिसम्हारी ॥ नैननकुरंगसमानव
नैवरअलभिइंदुललाटनिहारी ॥ मस्तककेशमनोफनिनायकरूपअनूपसवैसुषकारी ॥ तीनिहलोकनियानहि
तासमनिर्मितसोइसतीसरदारी ॥ ११ ॥ दोहा ॥ षटगुणरत्ननिधानअतिनवनिधिसंपतिगेह ॥ बकुदेवीसेवाकरै
धैरधरनसौनेह ॥ १२ ॥ कुंडलपुरअमरावतीअपसुरपतिसुषराय ॥ आपमनकुइंद्रियनीरहेभूमिअवछाइ ॥ १३ ॥ चौ
पई ॥ दैपतिआपिकपुंन्यपरताप उदितमनहुभानयहआप ॥ जगतभोगउपभोगअनेक भुगतैएकधरमसोट ॥ १४ ॥ इ
हिविधिनृपनिवसैसुहथांन ॥ औरकथाअवसुनहनिरान ॥ धर्मतरोवरपूरववयो सोफलआनिपरापतिभयो ॥ १५ ॥
छंदपयगाम ॥ सौधर्मइंद्रइमकहिउग्रेन ॥ तुमधनरसुनकुमुकतनहिवैन ॥ अच्युतसुरेशशोलभ्भवाम ॥ तसुआव

JAIN BHAU DAJI MEMORIAL

रहीछहुमासजाम ॥ १५ ॥ हेभरतक्षेत्रकंडलपुरेश ॥ सिद्धारथनृपमंडलमहेश ॥ श्रीवर्धमानअंतिमजिनेश ॥ तिनी
केसुतहुंहैजगमहेश ॥ १७ ॥ तहांरचहुनयनानाप्रकार ॥ अरुकरकरुलवषाअपार ॥ सवजीवटिकतावहुपमनिजअ
न्यसुष्यदीकतेमा ॥ १८ ॥ आदेशसुन्योजवयक्षरईस ॥ लैकुकमतुरतनायोजुसीस ॥ मनभावउपुनहिकियविलंब ॥ नर
लाकआयपहुंच्योसुलंब ॥ १९ ॥ नववारहजोजनरचिउनग्र ॥ सवहेमसहूनमणिचित्रअग्रवहकोटजुगिरदाकारजोई ॥
चकुदिशिदरवाजेचारिसोहु ॥ २० ॥ तहांगोपुरकीछविअधिकजास ॥ आईगंभीरजलभरीतास ॥ वनउपवनकीशोभा
अपार ॥ सोबरनतहोइसुअतिअपार ॥ २१ ॥ जानेनरावअरुरंककोय ॥ जयकारशब्दचहुंओरहोय ॥ रूपभवनरलवरषा
करंत ॥ मानोजलधारउलंघयंत ॥ २२ ॥ नितप्रतिकुसाढेतीनिकोडि ॥ षटमासअग्रनवअंतजोडि ॥ उद्योतताहिलाजैसुमा
ना ॥ उपमाअनूपवरनैमहाना ॥ २३ ॥ यहमंदिरजितातितरत्नराशि ॥ दुरवविपतिउईपुरतेनिकाशि ॥ नृपअंगनकल्पद्रुमवि
शाल ॥ तहांपुहपवृष्टिवरषैरसाल ॥ २४ ॥ महकलैरहीदशदिशिसुगंध ॥ बकुपुरजनमनआनंदयोआनंद ॥ नरनारितुंगमणी
सुरनदेषि ॥ धनकंचनपूरनअतिविशेष ॥ २५ ॥ मनविस्मयघरघरसबनिहारि ॥ यहकवनपुंन्यपुरसोविचार ॥ तवकहइभ
व्यआचर्यकोय ॥ अंतिमजिनयहअवतारहोय ॥ २६ ॥ कीन्योकुवेरमेप्रकाश ॥ उनिरचेहेमकुंचेअवास ॥ जिनराजगम
सुजानि ॥ इनिकियोमहोत्सवसुष्यषानि ॥ २७ ॥ मिथ्यामतरतजसबैमूढ ॥ जिनधर्मदीकाताहीगूढ ॥ जैसैरजनीतमउदित
भांन ॥ नासिजायएकछिनमेमहांन ॥ २८ ॥ चौपही ॥ धर्मरतनसबसुषदातार ॥ गजमैप्रगटकरनभवपार ॥ धर्मसफलनाहिदि
सैकोय ॥ रायकमैक्षपंथनरलोय ॥ २९ ॥ हीइधर्मसोपुत्रसुपुत्र ॥ तीनिलोकपूजितपरभूत ॥ तीर्थंकरपदप्रापतिहोय ॥
महासंपदानिजग्रहजोय ॥ ३० ॥ सुषसोसदारहेजिनमात ॥ कारिजधविचारेगानआदि ॥ आहिंसालक्षिनलेहो ॥ पंचअ
नोव्रतानिहचैगह ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ बकुविधिसुषसबभोगवैनृपपुरजनसमुदाय ॥ छहोमासपूरनभएधर्मकरतदिन
जाय ॥ ३२ ॥ महिमाश्रीजिनदेवकीतीनिलोकसुषदाय ॥ देषतभविजनधर्मधराजिनपरसेदासदाय ॥ ३३ ॥ चौपही ॥ एकसमे
रानिनिजधाम ॥ कोमलसेजकरेविश्रामा ॥ निशापाछिलेप्रहरनिदान ॥ सावैसुषसुतनीदप्रमान ॥ ३४ ॥ पुंन्यपाकफलजानो
सोय ॥ धर्महितैंभविक्यानहिहोय ॥ गजप्रसिद्धसुपनेनिरसंग ॥ देषेषोडशविधिसरवंग ॥ ३५ ॥ प्रथमहिगजदीठ्यो मदजा
त ॥ श्वेतावत समउजलगात ॥ दूजेवृषभधवलनिरमला ॥ दीसेमनोचंदकीकला ॥ ३६ ॥ रक्तवरनदेष्यो मृगराय ॥ अति

॥पत्र॥

विकरालमहाभयदाय ॥कमलादेवीद्रुवनकरतादिमकलसऊपरजदुरंत॥२७॥दिषीदोयदामनिरधार। महासुगं
धपद्रुपमयसार॥षोडशकलासाहितशशिगेह॥तारागणजुतदेष्योतेह॥२८॥पुनिरेष्योतमनासनभान। उदया
चलऊपरसंमहांन। कनककलस अतिसंदरदोय॥रमासीस अवलोके सोय॥२९॥युगमीनतहांकरतजुकेल
॥जलभीतरदेषेल॥पूरनजकरिसरवरवन्यो॥फूल्योकमलतहांअतिघन्यो॥४०॥दिष्यो सागर अतिगंभीर॥लह
रानिसोमकमोरैनीर॥फिरिरेष्योसिंहासनसंत॥अतिउतंगमयसोभंत॥४१॥सुरविमानआवत आकासदेष्योरता
॥नजटितपरगासभवनयतीरथदेष्योजोया॥पृथ्वीधसतजानहेसोया॥४२॥वसुरतभोतिरत्ननिकीरासी॥देषीअति
उद्योतप्रकास॥अग्निशिखाकुनिदेषजवे॥धूमरहितवऊदीपतिसवै॥४३॥इहविधिशोलहस्वनूप॥जिनमातादे
वेसरिरुप॥पीछेगजदेषशोभावंत॥निजमुखमेरीदयोप्रतिसंत॥४५॥दोहा॥इहिअंतरनिसितमगधो भयोभानद्योत
॥पठनपाविधिआदरिचदेधरमकपोत॥४८॥चौपही॥उहिप्रभातभविसमताबंत॥सामायकविधिकरतमहंत॥कर्म
महाअरिचूरनकरै॥जिनपदजापहियेमेधरै॥४७॥कोईउठेसयनरतेसोय॥पंचपरमपदसुमिरेजोय॥धर्मध्यानधा
रेनिजअंग॥कर्मशत्रुनासैसरवंग॥४८॥कोईभविजनधीरजवंता॥धरेध्यानव्युतसर्गमहंत॥इत्यादिकआचारसु
कर्म॥करेप्रभातध्यानअरुधर्म॥४९॥जिनसूरजजबउदोकराया॥षद्योतासमदुरमतिजाया॥चोरकुलंगीतुरतपलाय
॥अतिभयभीतनृधर्मधराय॥५०॥ज्योरजनीसकलाबुधसो॥भानुग्रेहमेप्रभुतानसो॥जिनवचकीरनप्रगटवभयो॥
तमविकलपसबमनकोगयो॥५१॥इहभारगशुभवचनसुनाना॥शुभपरार्थकिरनाजिनभाना॥भव्यकमलविगसा
वनहार॥यापकमोदिनीसकुचनधार॥५२॥इहअंतरजिनमाताजाना॥उठीप्रातसुषसिंधुसमाना॥धर्मध्यानसाध्योव
हभेद॥सामायकदीन्योतजिषेदा॥५३॥मजनभवनकियोततकाल॥आभूषनहरेसुविशाल॥सषिनिसहितफुनिपहची
तहां॥सभामध्यनृपबैठ्योभजहां॥५४॥नृपआवतिदेषीवरनारी॥मधुरबचनबोलेहितकारी॥अतिहिसनेहबुलाऊ
तास॥दियोअर्धसिंहासनपास॥५५॥हरषबंतबोलीकरजारी॥मोबचसुनिस्वामिमुषप्यारी॥आजुरेनिकेपिछे
जाम॥देषेषोडशस्वपनसुभाम॥५६॥हस्तीआदिअगिनिपरजंता॥यहआश्चर्यभयोमुहिकंत॥तुरेजुफलकहिएतास
॥जातैमनविकलपकोनास॥५७॥तीनिज्ञानधरमजहिविचारी॥तबनृपबोल्योसुनिवरनारी॥एकचितदेफलसु

निएहा॥मैभाषतहोंसबसुषनेह॥५८॥ ॥पद्धडिछंद॥ प्रथमहिगजसुषनेफलसुएह॥तीर्थंकरसुततुमउरवसे
हा॥हैरषमतनौफलपुष्पषानि॥जगज्येष्ठधर्मरथपरिप्रधान॥५९॥अवसिघसुपनषयकरहिकर्महहो॥अनंतवीरजसु
सही॥लक्ष्मीअभिषेकफलमेरुसीस॥अस्तापनकरिहैअमरईस॥६०॥अरुपफुपरामफलसुनकंतेहा॥अतिऊहैसहज
सुगंधरेह॥ससिपूरनरेष्योतुमविशाला॥सोधर्मसुधावानीविशाला॥६१॥रविसुपनतनौफलयहप्रकार॥अज्ञान
महांतमहरनहारजुगकुंतनो॥फलउहैविशालसोज्ञानध्यानअमृतविशाल॥६२॥युगमीनसुपनफलयहप्रमान॥
संपूरनसुपनफलयहप्रमान॥संपूरनसुषकरतामहांनसरकमलसहितफलसुनकंजोगा॥लछनव्यंजनयुततनमानो
गा॥६३॥कलनिसिंधुसुपनफलकोमहंत॥केकेवलज्ञानप्रकाशवंत॥सिंघासनफलइमकहतराय॥त्रयजगतरमासे
वैसुपाय॥६४॥अवसुरविमानफलसुपनाय॥सुरलोकछोडितुमगर्भआय॥नागेंद्रभवनफलहोइ॥जाससोमतिश्रुति
अवधिनिज्ञानभास॥६५॥तुमरत्नराशिदेषिविशाल॥फलदर्शनज्ञानचरित्रमाल॥अवअग्निशिषाफलसुनहए
हो॥वसुकर्मजारिशिवसेहा॥६६॥दोहा॥गजप्रवेशमुषमेंकियोसोफलसुनिअनगारी॥अतिमजिनतुमगर्भमेंलि
योआयअवतार॥६८॥अगअंगहर्षितभईसुनी॥तुपनफलसारसीसनाई॥नृपकोमुदितमारगर्भसवारा॥६७॥चौप
ई॥॥तवैप्रथमसोधर्मसुरेसं॥घटदेविनिकोदियआदेशं॥षप्रआदिइहवासिनिसोइ॥आईकुंडलपुरअवलोइ॥६९॥जि
नमाताकेलागीपाइ॥तुमसेवापठईसुरराइ॥तुगर्भसोधनाकीनीआ॥आज्ञाधरेसवैमनोनुईं॥६९॥श्रीदेवीश्रीकरेबदा
व॥ह्रीदेवीलज्यासोचाव॥धृतिधीरजधारेशिवंकाज॥कीर्तिविठावेकीरतिसाज॥७०॥बुधि बुधिकोकरेअपार॥लक्ष्मी
लक्ष्मीकोभंडार॥प्रभुआज्ञाअंगाचितधरी॥दिनदिनप्रीतिषटावेषरी॥७१॥माताजिमलसहजसुभाइ॥वैसोधै
निजकारपाइ॥कटिकसमाउदरनिरेदोष॥त्रिवलीसाहितहृदयसंतोष॥७२॥मासअषाढसुकलछठिजान॥नषतउनरा
अंतप्रवान॥अच्युतपतिचयधर्मसनेह॥प्रियकारनिउरगर्भधरेह॥७३॥चतुरनिकायदेवधरतषैं॥अनहदघाद्य भयो
अतिजबै॥कल्पवासिघरघंटावजे॥सिंधनादज्योतिषग्रहगजो॥७४॥भवनपतीसंषध्वनिभई॥व्यंतरधामभेरिगही॥व
ऊविधिभएश्चर्यअनेक॥सुरपतिआसनकप्योटेक॥७५॥तोनिज्ञानधारीसुरराजा॥त्योंगर्भधस्योप्रभुआय॥तवैजिद
वापतिमनहरषियो॥आपआपबोहनचदिलियो॥७६॥आभूषनपहरेनिजसबै॥ज्योतिदशोद्योफैलीतबै॥धजास

व्रजतसहितविमान॥छायरह्योनभमंडलजोना॥७७॥जयजयशब्दकरतमनुलाय॥आये कुंडलपुरसमुराय॥देवि
देवविमानअपार॥दशोदिशारुंध्योपुरसार॥७८॥राजभवनआयोसुरराय॥जिनपितुमातभक्तिउरल्याय॥सिंहा
सनबैठास्वोराय॥हेमकलसअभिषेककराय॥७९॥पूजाकरीइंद्रमनलाय॥भूषनवसनसबैपहराय गर्भमाहिप्रभु
कांतिकीन॥भक्तिसहितबहआनंदलीन॥८०॥इत्यादिकअतिशयबहुकस्यो॥गर्भमहत्यमहागुणभर्यो॥तिरम
हीयरुचिकरिदिजास॥छप्पननदेवीकीतहांवास॥८१॥तेजिनमातसेवाकाज॥राखीदिगकुमारिकासाज॥प्रथमइंद्र
कीआवाना॥रहसिसदासोआवैथांना॥८२॥बारबारफिरिकरीपरिनाम॥गएस्वर्गपतिनिजनिथांना॥परमपुन्यकीह
दयबढाय॥सोउपमाबरनीनहिजाय॥८३॥अबजिनमातासेवैपाया॥देवीअपनीबुधिउपाय॥कोईहरषबढावै
अंग॥कोईमृषाहिंसाबैरंग॥८४॥कोईजिनमज्जनविधिकरै॥काईलैतांबूलजुधरै॥कोईसेजरचैअविकारा॥की
ईवस्त्रछालेसार॥८५॥कोईदिव्यवसनपहिरावै॥काईकेशसम्हारनधावै॥हेमरतनमयअभरनकोई॥अंग अंगप
हिरावतिसोई॥८६॥कोईकज्जलदेयनिहारी॥कोईतलकीकरैसम्हारी॥रुचिआहारकरावैकोई॥कोईप्रासुकजलसु
धार॥८७॥कोईचकुपमालगुहिदेई॥कोईचंदनघोरिकरेशरतनचुरीकोहुरैचोका॥वकुलिधिरंगकरैकोईनोक
॥८८॥तुंगसरनजबनिशितभोई॥मनिदीपकउजियारैकोश॥इहविधिसुषसंधानबढाय॥सेवैसबैपरसपरआइ॥
॥८९॥कबहुंबनकीडाकोजाय॥गावैमधुरबचनसमुराय॥कबहुंनृत्यकरैसुषपाय॥काव्यकथाकबहुंकरैबनाई
॥९०॥इत्यादिकबहुकरैउपाय॥मातिबकियाकेपरभाय॥जिनमाताकेहर्षबढाय॥करैरंगदेवीमनुलाय॥९१॥इहि
बिधिनिशिवासरबहुजाय॥नवमासतबलाग्योआय॥अष्टप्रकर्षनदेवीकरी॥मातासीषसीसपरधरी॥९२॥गर
भअर्थशब्दादिकक्रिया॥नानाप्रश्नकरैसुरत्रिया॥कहतप्रहेलीओर॥निरोष्ठकाव्यश्लोककर्मकागोष्ठ॥९३॥अ
थप्रहेलिकामहागुनिकोगुरुहैकोथ॥जोगीश्वरजगजाहिरसोय॥जोअतिसेमंडितचौतीस॥गुनअनंतधारैजिनईश
॥९४॥वचनप्रमानकहैकोमाय॥जगसर्वज्ञकहावैआयरोष॥अठारहरहितशरीरा॥वीतरागहैसोजगदीशा॥९५॥सु
धासिंधुकहियतुहैकाहि॥जन्ममरणउपाधिदोबहाय॥जिनवरकथबहुज्ञानप्रकाश॥सोअमृतउमतिविषनाश॥
॥९६॥आयबंतबुधकोजगमांहि॥कोनध्यानपरमेष्ठीजपांहि॥सप्ततत्वकीश्रधाकरै॥धर्मशुक्लजोध्यानहिधरै॥९७॥

तुरतहीकरताकोन॥पूरवकर्मविपावैतोन॥जोअनंतदर्शनअरुज्ञान॥दिढचारित्रधरैमतिवांन॥९८॥सहगामीजि
यकोकोहोय॥दयाधर्मबंधवहैसोय॥पापमहाअरिनासैजोय॥सर्वदिशारक्षकहैसोय॥९९॥व्रतअरुशीलसर्व
आदरै॥उतिमक्षिमाआदिदशधरै॥धर्मतनोफललोकमकार॥होयविश्वतिइंद्रपदसार॥२००॥सुषलहितीर्थक
रहोय॥फिरिशिवपुरकोपहुचैसोय॥१॥लक्षिनकोनधर्मकेकहै॥शांतिभावअतिरुचिलक्षलहै॥निरहंकारजुरहै
सरीव॥क्रुधक्रियातनपुरसोजीव॥२॥कहोपापकोकहापरवांन॥पंचमिथ्यातदुःखकीषान॥क्रोधआदिषोडश
जुकषाय॥षट्अनायतनसदाधराय॥३॥पापवृक्षफलकहियेमाय॥दुषकारनदुरगतिलेजाय॥रोगकलेश
अधिकुतहांसहै॥निंघाहोयभवभवमेंवहै॥४॥पापीलक्षिनकोसोहोय॥तीव्रषकायधरैनरजोय॥परनिं
दाकैकरतोरहै॥आरतिरोद्रध्यानसररहै॥५॥लोभीकोनसर्वदागहै॥धर्मबुधिजोदिढगहिरहै॥निर्मलक
रैसेवआचार॥कबिनजोगतपतनमनधार॥६॥कोविवेकहैजगमश्रेष्ठदेहवस्तुजनेजुअनिष्ट॥देवशास्त्रगुरु
नमैनओर॥जैनधर्मपालैदिशमोर॥७॥धर्मकोकहियेजगमांही॥क्षमाआदिपालैदशधाहि॥जिनवरभाषितआ
गालहै॥ज्ञानीरतीबुधिसररहै॥८॥संवरकोनसुपंथहिचहै॥निर्मलपुन्यपापदलमलै॥पूजादानपवासजुधरै॥व्रत
अरुशीलनियमयमकरै॥९॥सकलजनमकिहिकोजगलो इउतिमज्ञान॥प्राप्तिजिहिहोय॥मुक्तिपुरिवांछेउरहेत॥श्रो
रनभवसुषवितधरेत॥१०॥तृषिकोनजगमेपरधान॥नोउपाधिवर्जितगुणवांन॥ज्ञानध्यान्यअमृतकोस्वाद॥बनबा
स्तीनजेकेपरमाद॥११॥चिंताकोनयहेजगमांही॥जोलोकर्मशत्रुक्षयनांहि॥साधनमुक्तिलक्षिमीहोय॥श्रोरक्रोध
कोकामुनजोय॥१२॥वेओपुरुषहैकोजगथांना॥जाकेसदामोक्षिकोध्यान॥रत्नत्रयतपजोगजुलहै॥ज्ञानसंपदासोनिर
वहै॥१३॥परमपुरुषकोजगमेंमिति जोधरमीहैसहजपवीत॥तपअरुदानदृतादिकधरै॥डरावारकोनहिंसचरै॥१४॥को
हश्रापुजगतविष्यात॥तपसुरानदीस्थानगहात॥हितअनहितदीऊपरिछेद॥धरैकुबुधिस्वपरबहुषेद॥१५॥कोदानीहैज
गशिरमोर॥क्षेत्रउलंघिधरैनहिओर॥तपकरिदबलअंगकरेय॥तेअमोलगुणकोजुधरेय॥१६॥तुमसमानजगमेंनिय
कोय॥तीर्थकरसुतजाकेहोय॥तीनिभुवनमेंतारकसोय॥दुरमतकोषयकारकसोय॥१७॥पंडितकोनजगतमेंमाय॥शु
तकोजाननहारसुभाय॥डरावारनहिबांधेअंग॥पापक्रियातैरहितप्रसंग॥१८॥सूरषकोकहियेजगमांहि॥यतअरुक्रिया
रागहीनांहि॥तपअरुधर्मधरैमनलेशापापबुधिलहिकुगतिप्रवेश॥१९॥डरधरचोरजगतमेंकौन॥धर्मरतनकेहरतातोन॥इं
द्रीपंचदईमुकला॥इहितत्यागेअनहितजुरुहाइ॥२०॥सूरवीरकोजगमेंहोय॥सहेपरिसाजोभटलोइ॥धीरजअसि

कषायअरिनास॥मोहारिकनजिन्यौरिवास॥२१॥कोहेअषिलेखनादिव॥दोषअठारहकीकीन्योछेवा॥गुनअनंतजगमेंविख्यात॥परउपगारधर्मसिष्यात॥२२॥उतिमगुरुयाजगमेंकोय॥दुबिधिपरिग्रहवर्जितसोय॥भव्यनिप्रतिउपदेशहिसार॥भवरधिपारउतारनहार॥२३॥यापरकारअकृपथ्थेकरी॥दिगकुमारिकामनगहभरी॥अतिशयगर्भमाहिप्रभुजाने॥माताउतरियोमहांन॥२४॥उरमांहिअतिमजिनराया॥तीनिज्ञानधरेनिजकाजा॥जैसेंसीपमध्यहेवास॥मुक्ताफलकोहोइनत्रास॥२५॥त्रिवली भंगरुरीसेनाही॥माताकछूनसैकष्पाही॥अधिकरीतिबाढीसुशरीर॥गर्भरतनकीजोतिगहिर॥२६॥इहविधिदेवीकरीउत्साह॥मनरंजेदिनदिनअतिचाह॥नवमासपूरनभएजबै॥मनआनंदभयोनृपतबै॥॥२७॥दोहा॥देवीवहुभक्तिकरिमाताकीन्योजावशक्तसागरकाकेलिमैमनोसरस्वतीआप॥२८॥तबसुरपंचाचर्यकरिरत्नपहुपवहुवर्ष॥गंधोदकपुहपमिमपरजयजयबोलेहर्ष॥२९॥ ॥गीताछंदः॥ ॥इहिभांतिचरनसुधर्मकरिकोभोगभुगतेशक्रने॥पुनिजयतहांतेगर्भ॥आयोवीरजिनअतिभगने॥धर्मक्षेत्रनपिनमातहिदूषनसेवतभए॥धृतिकरिमनअकुवचनतनधरी॥आपनिजलोकहिगए॥३०॥धर्मफलकरिचित्रमातापुत्रतीर्थंकरलहे॥धर्मसोभवकछूटे॥धर्मशिवपदवीगहे॥यहजानिभविजधर्मधरिदृढधर्मसुपथहिठानिये॥नवतत्वसोहिप्रनामधर्महि॥धर्महितजगजानिये॥३१॥॥दोहा॥महिमागुरुत्यांनकी कोवुधवरनेआय॥कहीसकलसंक्षेपकरिजिननामनिपरताप॥३२॥तीरधीरगंभीरअतिवीरकर्मअरि॥जितवीरसुभटगुनवीरहेवीरसुगनधरिप्रीत॥३३॥ ॥इति श्री [illegible] ॥ ॥दोहा॥ वंदोवीरजिनेंद्रपदतीनिजगतश्रियदेन॥पंचकल्यानकभोगतानामोल्सिचैन॥१॥ ॥चौपई॥चैत्रमासउतिमशशिपक्ष॥त्रयोदशीउतरांप्रतक्ष॥मातासुषमेंसोवतिथान॥जनमेप्रभुज्योपूरबभान॥२॥तनदीपतिउद्योतअपार॥निशिमिथ्यातमकेषयकार॥तीनिज्ञानभूषितउरहयो॥तीनिजगतपूजितपदलयो॥३॥जनमसमहभयोअतिसायसकलरिशानिर्मलतथाय॥तनसुगंधकेलीचहुंवीर॥नभमेंउपन्योजयजयसार॥४॥निर्मलपहुपवृष्टिकीनहांकरे॥निजनिजटेवबुंन्यहियधरे॥चतुरनिकायसुदेवनिभूप॥आसनकंपभएनिजरूपा॥५॥अनहदशंदवज्योसुरलोका॥संघघोषनाज्योतिषथोक॥शंखभवनवासिनिकेगेहा॥भेरीरवव्यंतरकरिनेह॥॥६॥सोधर्मइंद्रआदिकचउदेवा॥जन्मजिनेशजानिकरिभेव॥कल्यानकप्रकीजेजाय॥लीजेनिजपरपुंन्यउपाय॥७॥दलसाजनआलाकियइंद॥सप्तअनीकोस्योअनंद॥हस्तीप्रथमद्वितीयरथजोना॥रथगंधर्वनृतकपयदाना॥८॥इषभसातमींव

संचरे॥ जन्माभिषेक करनको सोंइ, गगन ययान किये अवलोय॥३०॥ डुंदभि संकल बजे वऊध्वांन॥ किन्नर गावे गीत सक
हांन॥ नृत्यति देवीलाधरे॥ जिनके गुणा रतिरति निजगरे॥३१॥ सौधर्म इंद्र निज कांठेथाय॥ तरु ईशान क्षत्रिय त्राय॥ ॥
सनतकुमार महेंद्र जदोय॥ चमर अती हर्षित होय॥३२॥ सकल देव जय घोष कराय॥ इहि बिधि धिवहुत भयो कर ह
राय॥ जोतिय लोक उलंघे जाय॥ क्रम क्रम मेरु ऊर्ध पहुचाय॥३३॥ पांडुक बन तहां शोभा वोन॥ कल मद्रु मदीसें सव
यांन॥ चहुं दिशि चारि जिनालय धार॥ विदिशा डुक शिला जुचार॥३४॥ ईशान दिशि की शिला नियोग॥ भरत क्षेत्र ती
र्थंकर जोग॥ सो जोजन है दीरघ सोय॥ अरु पचास विस्तार जु होय॥३५॥ जोजन आठ उंचाई धार॥ अर्ध मि चंद्रता
सु आकार॥ सिंघपीठि तिहि मध्य जु लीन॥ वैडूरज मणि शोभित तीन॥३६॥ पाठको शा पहिलो उनमान॥ आधो ता सदू
सरो जान॥ ताते अर्ध उर्ध मुख ओर॥ मंडफ इंद्र रच्यो शिर मोर॥३७॥ ॥ दूहा॥ ॥ क्षत्र चमध्वज ताल जुत कलश आर्व
रत्नंगार॥ सुपतिष्ठक दर्पन सहित मंगल द्रव्य सुसार॥३८॥ एच सुद्रव्य तहां सदो उपमा दि जे काय॥ देव रचित मंगल कनधरि
सवे समुदाय॥३९॥ चौपई॥ सिंहपीठ उपर हरि आय॥ दक्षिन दिशा सिंघासन थाप॥ तापर पूरव दिशि मुष करयो॥ कमला
सन अद्भुत वल धरयो॥४०॥ सौधर्म इंद्र दक्षिन दिशि वार॥ अरु उत्तर ईशान कुमार॥ दशदिगपाल दशौ दिशि षडे॥ सुरवी
द्याधर आनंद डे॥४१॥ कलप द्रुमय पुष्प नि की माल॥ प्रभु के कंठ धरी तत काल॥ गीत नृत्य वाजित्र वजाय॥ जय जय शब्द
करे हरषाय॥४२॥ इंद्र वीआदिक सव देवि॥ दिव्य कंठ गावे प्रभु सेवि॥ सहस अठोतर कलश वषानि॥ जोजन
एकता समुषा जानि॥४३॥ जोजन आठ महागंभीर॥ उदर चारि हाटक मय तीर॥ अवकवेर रत्न निकरि षचि॥ ना
नावर्ण पडिकार ची॥४४॥ मेरु शिखरिते शी हे पंत॥ पंचम सागर के पर जंत॥ सकल सुरासुर तहां तै ढाट॥ इक्का इक
क्षीरोदधि घांट॥४५॥ सेनी बांधी देव नि सवे॥ हथा हाथ कलश ले॥ सर्वे सो क्षीरोदधि जल भरी ल्याइ॥ जनमभि
षेक करे अति साइ॥४६॥ प्रथम सौधर्म इंद्र के हाथ॥ कलश दये देव नि सव साथ॥ एक सहस व सु भुजा कराय॥
पहिरे सव आभूषण गाय॥४७॥ अष्ट सुगंध कलश आचरचियो॥ मज्जन प्रथम इंद्र तव कियो॥ फुनि ईशान इंद्र कर
लाय सकल सकश टारे हरषाय॥४८॥ शेष शक्र अरु शकल सुदेव॥ ठारे कलश करि वह सेव॥ तीनि धारके

शिर पर टरी॥ मानो त्रिबिधा मिलि सुर सरी॥४९॥ जो धारा सोंगिरिवर खंड॥ सो प्रभु सही महावल वंड॥ वीरनाथ
अति वीरज शक्ति॥ उपमा कोन करो करि भक्ति॥५०॥ प्रभु को पर शि छटा उपराय॥ पाय मुक्ति इक ऊरध जाय॥ प्रभु व
ल अद्भुत वरनो कहा॥ फूल माल सम धार महा॥५१॥ लघु इक हाथ शरीर प्रमान॥ नर रूप प्रभु वल अविरजवा
ना॥ जय जय शब्द करे सुर सवे॥ कल कहरा वभये वहु जये॥५२॥ सुरव अवलोके दिगाकुमार॥ मुक्ता गन जल वृति
श्रम धार॥ पांडुक वन अति शोभित मयो॥ निर्मल वहु विचित्र ता थयो॥५३॥ पद्मराग मणि आ सासोय॥ जन्म स्ना
नम गन सुर होया॥ उमगि चल्यो क्षीरोदधि नीर॥ मानो गंगा वृटी समीस॥५४॥ सामग्री सव गंधग हीर॥ सुधा
समान रत्नपन को नीर॥ श्री तर्थेशा द्भव न अति साया॥ गंधोदक वंदे हरषाय॥५५॥ जो धारा प्रभु पर सि मुच्च
ली॥ सो सुर निज निज मा थेर ली॥ पाप अनेक गए भजि दूरी॥ दिह पवित्र करी गुण भूरी॥५६॥ अमृत
धार वत धारा राज॥ सहित सकल सुर मुक्ति हि काज॥ अमृत समधारा निजग्रही॥ विषमल घो यनिर्मल
ता मही॥५७॥ पुन्य अनेक उपाजे सोय॥ लक्ष्मी मुक्ती स्वरूपी होय॥ सकल सिधि की करता सवे॥ अभीष्ट स
पदा लि नीजवै॥५८॥ इहि प्रकार गंधो दिक वंदी॥ शांति रूप सव देव अनंदी॥ फिरि पूजा की नी सुर राय
॥ अष्ट द्रव्य ले हर्ष वटाय॥५९॥ ॥ जल सुगंध अक्षित वरु स्वक्ष॥ कल्प मद्रु के पद्रु प सुमुक्ष॥ लै नैवेद्य क
रो पक वांन॥ दीप मयी मणी मयी धूप मान॥६०॥ कल्प तरो वर फल ले सार॥ अर्घ करे को कु सुमांजल धा
र॥ सकल सुरासुर पहु पनि वृष्टि॥ पंचाश्चर्य करे मुनि तुष्टि॥६१॥ इहीप्रकार प्रभु जन्म भिषे
क॥ इंद्र ओर सुर असुर नेक॥ कियो महा आनंदित जांम॥ तीनि प्रदक्षिना दे शिर नांम॥६२॥ अं
गश्रा गो छिलि ए सुर राय॥ फिरि सिंहासन पर वे ठाय॥ इंद्राणी आदिक वदेव कोतु करे अग्र जि
नसेव॥६३॥ सव आभर्णा धिरे तहां आनी॥ हे नि योग तीर्थंकर जानि॥ तिलक दये चंदन के सा
र॥ तीनि जगत पती को त्रि प्रकार॥६४॥ अंजननै ननि दियो सुढार॥ शीस मुकट चूडाम

नि धार ॥ वज्रमई प्रभुचरम शरीर ॥ बिधे कर्ण गर्भहि के वीर ॥ ६५ ॥ इंद्रानी कुंडल पहराय ॥ रत्नजडित जुति दामिनि जाय ॥ कंठ माहि पहि रायेहार ॥ मणिमय मोह तिमिरीहरता ॥ ॥ ६६ ॥ युगल बाऊ युगपद्म चीवनी ॥ नानारत्न जडि सुषसनी ॥ अगु रिनि मुदरी दीनि अनेक ॥ किंकिनि कटि पहराइ एक ॥ ६७ ॥ युगपद मनिमय शांकलि दोय ॥ ताकी उपमा अति छवि होय ॥ इतने साधारन आभर्न मंडित महादीप्ति जगकर्न ॥ ६८ ॥ भवनरूपदेषि सुरराय ॥ आनंद्योमन अंगन माय ॥ सहसनेत्र करित्र पतिन होय ॥ पलसोपलन ल गावेसोय ॥ ६९ ॥ अतिप्रमोद उमगो जुशरीर ॥ रोमांचितज्यो सागरनीर ॥ तुवतीर्थंकर तीथरराय ॥ अघनाशन भविजीवन काज ॥ ७० ॥ प्रसंस्नान करैहादेव ॥ तुमपवित्र स हज हि बझ देह भेद ॥ भक्तिहे तपैहामक छुकस्वो ॥ पुन्यल होपूरव अघटस्वो ॥ ७१ ॥ तीनि जगतमंडित तुमभक्ति ॥ मैं अपनैव सकरि कछुशक्ति ॥ प्रभुकल्यानक देषनकाज ॥ ॥ तीनि लोकजिय आएसाज ॥ ७२ ॥ तिनिझूंकौकल्यानकएव ॥ अपिथ पुन्य संचयक रि सेव ॥ तुमदरसनकी वैठि जिहाज ॥ उतरै भव वारधिकरि काज ॥ ७३ ॥ तुमदरसनस्र रजपरकाश ॥ भव्यजीव अघ तिमिरि विनाश ॥ रतनअमोल लक्षिमीपाय ॥ फुनि शिवपुर सुषलै हैजाय ॥ ७४ ॥ तुमदरसेप्रभुमनवचकाय ॥ सुरगलोक फल पावेजाय ॥ सुरगलोकफलपावैजाय ॥ तुम्हे गुपालै जो अनुसरै ॥

डाक्टर भाऊदाजी दृश्याभ्यस्य स्मारकम्
DR BHAU DAJI
MEMORIAL

क्रमकरिमुकतिरमनिकोवरै ॥ ७५ ॥ मोहमल्लजीतेतुमदशी ॥ तुमरक्षिकुभमविजीवनुशर्स ॥ मोहअंधकपहितेंका दिमरन ॥ गतरागेसुकमाडि ॥ ७६ ॥ प्रभुकोजन्मभिषेककरेव ॥ मेरुकर्मनाशकरिदेव ॥ तुम्हरेगुणजोसुमिरनकरै ॥ मातुम्हरेगुणकोभुविस्तरै ॥ ७७ ॥ तुमसंस्तुतिमुखतेउच्चरै ॥ सोनिजवृक्षन्नसफलताकरै ॥ तुमंधोदकुवंदनकरे ॥ अंगर्यविघ्नभयोतिहिथरी ॥ ७८ ॥ तीनिजगतस्वामीभगवान ॥ तुमजगबंधनहथनकुवांन ॥ तुमपरमातमजगतप्रका श ॥ परमानंदलोकशिखांश ॥ ७९ ॥ तीर्थंकरगुणसागरतट्टे ॥ अघमलदरिकरनसुविदहु ॥ तुमदर्शननिर्वाणमहेश ॥ अष्टकर्मनाशनजगदिश ॥ ८० ॥ पांचोइंद्रीजीत्योलोभ ॥ पंचकल्यानककीनीशोभ ॥ नमोमुक्तिअंगनाभरतार ॥ लोकैलोकप्रकाशनहार ॥ ८१ ॥ नमैत्रिजगतलक्ष्मीनाथ ॥ शकमुक्तिसामयीसाथ ॥ बारबारप्रनमोकरजोरि ॥ दीजेमोहिपरमपदवोर ॥ ८२ ॥ दुहा ॥ दर्शनकरिसुरराजभनिसनमतिसार्थ ॥ कनाम ॥ कर्मनिकंदनबीरहैवर्ध ॥ मानगुणधाम ॥ ८३ ॥ एरावैनामप्रसिद्धकरिथरीउत्साहशारीरै ॥ ऐरापतीआरुढकैकंधलीएजिनईश ॥ ८४ ॥ चोपही सकलविभूतिलईनिजसाथ ॥ जयजयकरैनमैनिजमाथ ॥ आयगगनेरूध्यो आकाशपर्वअनिकासुरतियवास ॥ ८५ ॥ शेषकार्यकरिवेकोइंद्र ॥ पुरमेंगमहितनिजवृंदचतुरनिकायदेववहुसंग ॥ नृपआगारकरेबहुरंग ॥ ८६ ॥ मणिमयसिंहासनधरिताहांथापेजिनकुवारकोजहां ॥ दिव्यकांतिकोवर्णनहार ॥ गुणअनंतकेवलसुषधार ॥ ८७ ॥ जननीजहासोयतिसुषभारी ॥ शचीजगायगोदजिनथरी ॥ हरषवंतसुतदेषतजोय ॥ भूषनभूषितदुतिबहुहोय ॥ ८८ ॥ इंद्राणीतवसंस्तुतिकरी ॥ जीवनसुफलधन्ययहथरी ॥ तीनिलोकपतिजनमहांन ॥ तुमसमत्रियजगमेंनहिआ

न ८९ नैननसुफलतुमदेषतभए तमदेषनसवविकलपगए तुमउपमाअवरीनेकाही तीनिलोकतुमसम
कवुनाहि ९० श्रीसिद्धारथबंधुसमव हर्षसहितबंदेजिनदेव प्रथमइंद्रअवईशान नृपथिरकरिसिंघास
नथान ९१ देपतिकीपूजाहरिकरी मणिमयआभूषणअंगधरी पाटबरबहुवस्त्र अनेक पहुपमालपहाराई
एक ९२ फिरिसंस्तुतिकरिशिरनाइ आजुधन्यतुमररसनपाय जिनवरमातपिताधनितोहि तुमसमऔर
नतिहुंजगहोहि ९३ लोकविषेगुरुहोजुगरिष्ट मातपितामेवडेसरिष्ट तीनिजगतमेपुरुषनऔर तुमसमानदं
पतिशिरमोर ९४ जन्माभिषेककियोगियोस सोसबवरनिकह्योसुरईसा तवबहुइषध्योरपरानि अति
आनंदमहासवदानि ९५ फिरसुरपतिश्रीजिनवरगेह पूजाकरीअष्टविधिनेह प्रभुजुतमातपितापदनए
नानाभांतिष्यालतहावए ९६ अद्भुतलीलाहरिकरतकरी देपतिनरनारीपुरजुरी स्वजनआदिसवपुरजन
तेह आएसुतंहिमहोसवलेह ९७ तोरनधुजअरुवंदनवार गावेगीतनृत्यसुषकार अतिआनंदकरि
नाटकरंभ देषीसहितइंद्रमनथंभ ९८ प्रथमसुरेशकियोसमतार नेत्रसुषीधरिएकहजार एकहजा
जुतसोय मणिमयभूषणभूषीतजोय ९९ फुनिबहुरूपनटनिकोटयो जिनउद्भवकरी भक्तिहिलयो निर्त
करेऊंजिऊंजितसवलोक कल्पवासिनीदेवीथोक १०० शकलदिव्यआभर्नजुलहे मानोदामीनिकीदुतिग
हे क्रमिविन्यासकीयोतहांरंग भवरिलेतदुपेभुवअंग १ करेपहुपअंजुलिकीवषे बहुआडंबरजिनव
रहर्ष वीनाआदिकधुनिवांजंत अरुसमतारगीतअरुतंत २ जिनवरकेगुणधारीगायंत भवभवकेअघ

नाशकरंत जोकछरंगमेरपरकह्यो तानेइहां अधिकविस्तर्यो ३ नृपआपदिकसवकोंसुषकार ऋद्धि
विक्रियाकेअनुसार अतिविचित्रकाढ्योदसुरेस कंठहाथआश्रितबहुभेस ४ धारनचरनचपलगतिच
लें छितिकंपेगिरिवरसवलेहे भ्रमेंमुकुटचक्रफेरीलेवं वलयाकृतकुंडलछविदेवं ५ भुजकनमणिशो
भाहेत मनोनषतगिरीफेरीदेत सहसंपायनूपुरकेसोर सववाजित्रलजेचहुवोर ६ विहवलहोकरिभ्र
मीभ्रमिसोय छिनमेंएककछिनकबहुजोय छिनमेंउन्नतदीयमान छिनमेंसूक्ष्मवपुकरिमान ७ छिनमे
निकटधरेवहुभेक छिनमेंदूरिजायकरिटेक छिनमेंभूमिछिनहिनभसार छिनमेंदीकरछिनकहजार ८
इहिविधिहरषेवगायोइंद्र इंद्राजालसामर्थ्योवृंद फुनिजगरलेरंगविथार भुजप्रतिनाटनटावेसार ९
वटेछिनकछिनलघुताधरे सुरलोंगनप्रवेशवहुकरी लीलाओरकरीइकतवे हस्तअंगुलिनिऊपरसवै
१० शचआदिदेवकवारी अंगुलिपरनाचेमनधार आपुनुइंद्रमध्यजिमिमेर पक्तिमरालतलेसेचहुफेर ११
छिनमेंऊर्धउछालेतवे छिनमेंअगुरीनियेलेसवै छिनमेंसकलआलोपितहोय फिरछिनमेंदेषेसवकोय
१२ असीविधिबहुलीलाकरी गूढनकाहूपरगटधरी भुवमेंरहेकरेनरप्याल उपमारहितमहेंद्रसुजाल १३
जयजयघोषकरेआकाश देवओरविद्याधरजास इहिविधिदिव्यनृत्यकरिइंद्र विक्रयउद्भवमनआनंद १४
उत्सवहाव भावकरिसवें पिताआदिपुरजनसुपवें जिनवरसरबुषाकरिइंद्र सेवाराषिधनदसुरवृंद
१५ धर्ममहातमदान्यो भाषि तीनिलोकजियकीने साषि चतुरदेवविद्याधरराज निजनिजलोक

गएसवमाज १६॥ सिद्धारथनृपसवपरिवार जन्ममहोत्सवकोतुकधार। देष्योपुत्रतनोफलपाय पुन्यवृक्ष
पूरवसुषदाय १७ वहंसकलपुरजनकेवृंद करीषधाइमनभानंद घरघरवांदनवारवधाइ॥ रत्नजटितकंचनसम
दाय १८ मंगनजकोदीन्योदान हयगयरत्नषंवूरत्नन जन्ममहोत्सवकरिमनरंग वहुवाजित्रवजेइकसंग
१९ गावगीतसकलपुरनारि सोवरनतलागेवहुवार जन्मकल्यानकअतिउसाह प्रभुकीसेवाकरेसवचाह॥२०
गीताछंद॥ यहभुक्तपुंन्यविपाकफलसवस्नानश्रीजनवरभयो इंद्रशतअरुदेवचउविधिषेचरमिलिउत्सवरयो
मेरुसीसजुनाइकेप्रभुथापिसिंहासनधरे क्षीरसागरजलजुभरिवहुकलशलेशिरपरटरे॥२१ धर्मसोसुरइंद्रसु
षलहि धर्मगुनवोरधिभरे धर्महिततिहो लोकजीवा निधर्मतेशिवपधरे २२ धर्मवहुदुस्वनाशकरताधर्मजग
मातापिता॥धर्मपडितवुद्धिउजेधर्मतारनतरनता २३॥ धर्मत्रयजगवीरहैवहुधर्मतीर्थंकरधेनी धर्मगुनसर
वज्ञनिर्मलवेंस्वजगचूडामनी॥ कल्पानेसुषउपमारहितवृषकेमशत्रुविनोग्रही नेवलज्ञाहियनामधर्महिमनय
चनधारही॥२४॥ इतिश्रीवर्धमानपुराणभाषावचनिकायां गर्भकल्याणक वर्णनोनाम प्रथमोधिकारः १ ॥ अथ॥ श्री
वर्धमानपदकमलनमियुगकरारधरिनिजसीस॥ गुणसमुद्रगंभीरअतिसोगुणहैवकृपसम १ वालचरि
तआगमकोकहिवेसामर्थ। अल्पबुद्धिसंक्षेपकहिसकलभक्तिकेअर्थ २॥ चौपई॥ श्रीसनमतिप्रभुशो
मितएव॥मतिश्रुतिअवधिसुज्ञानसमेव॥मातापद्मनहिपीवैकरा॥हास्तअंगुष्टोमृतचषिसदा॥३॥इहिविधि
रिनरहिकराय॥होयजचंरनवतजिमिजाय॥वस्त्राभारणपहुपकीमाल॥पहिरावतसुरमुदितविशाल॥४

३०

के

वनकरावैजलशुचिअंग दिगकुमारिवीमनरंग नाक्रीडाकरिजिनषोय अतिआनंदरमावेजोय ५ कलस
वुजजुपमारेदोय प्रभुहिषलावैंवहुविधिजोय वालचंद्रप्रभीकेमंही अतिउविधिरिसवकोंहरषाही ६ माता
दरासिकरेअहलाद पिताअंनदिनमैंदय दिनकरछिपेदेहकीक्रांति आननचंद्रलजेथरिशांति ७ अतिसं
तोषपितापरीवार सुधासिंधुसुतपोयोमार सनेसनेपद्मारेदेव मणिमयधरासूर्यसुएव ८ षेलेरेवनिसहि
तजिनेश तहारतनमयधूलिविशेष सोनिजशिरपरिडारैंनि धूलिदेइसुरमुदितेहि ९ क्रमक्रमकहैकम
लमुषवैन सारदइवसोहेमुषदैन हसिविगसेसुषकमलकुमार सुंदरदेहलसेअधिकार १० हरषिकरैक्रीडावहुसो
य वांधवममजनमुषअतिहोय इहिविधिवालकुमारसुहात मातहिआगेवचतुतरात ११ स्वेदरहितमलव
र्जितदेहदुधसमानरुधिरहैतेह वजुवृषभनाराचसंघान सोहैसमचतुरससंठान १२ अतिसुगंधवपुरश
दिशिवास उपमारहितरूपहैजास लक्षिनएकसहसअरुआठ अद्भुतवलप्रभुकोनिजघाट १३ जगतपिया
रीवानाकहै धमपदेशसदानिरवहै एदशअतिशयसहजहिअंग गुनअनंतधोरकसरवंग १४ दोहा ए
कसहसवसुभलक्षिक जेलक्षिनजिनवरदेह प्रथकप्रथककहुवरनऊंआगमं अरथसनेह १५ पदडीछंद
श्रीवृक्षशंखस्वस्तिकसरोज वनशक्वचकदलनीलवाज सरवरतुरंगेधुजचवरछत्रतोरनगोपुरआतपत्र १६
नरनारीसागरकामधैंन सरथनषवज्रकमलासुजैन तहंकल्पवृक्षकलपसुसुंग भूमहलवैनुवीनामृदंग १७ के
हरीकलपफुनिवृषभस्वेत कपिगरुडमीनमालासुहेत अंकशपाटंवरलडो पसोवर्णवीजनाजहिसमीप १८

गजभवनपतीग्यसुरविमानमिद्धारथजंचरक्षमान चूडामनिसागरगिरिसुमेर गेडावराहमृगमहिषफेर ९९ भूषनसेईजम
गरजान सुभमालिषेतकुंडलवषांनरविशशिआरिकनवग्रहसुहेत सततीनषतनवधिसमेत २० दुहा प्रतिहारजमंगलदरव
ग्रामुषहिलक्षिनटोर ओषेतरशतप्रति तइतिनवमयव्यंजनऔर २१ परहिकेवलीदृष्टितेसुरनरलषहिनऋद्धि सऊद्र
ष्टिप्रथमहिलसेसोलक्षिनसुषप्रसिद्ध २२ वर्धमानभगवांनकेदाहिनपरशोभंतलक्षीनकेहरिहर सुवरसोत्रयज
गजुयवंत २३ चौपाई सोमकांतिदिसेप्रभुअंगकनवर्णसमदीप्तिअभंग कवहूंदेवसंघधीरजवे कथापरस्परा
षेसवे २४ कालज्ञानचतुर्थविवेक धर्मविचारकरेसभुदेक क्रमसोशुद्धध्यानसंचरे क्षायकसम्यकदिट्आदरे २५
जषप्रभुआदवरषकेए श्रावगवतदादशपरिनेये नरसुरसभामध्यजिमिभांन अद्भुतवीरजापरमप्रधांन २६ वीर
नाथप्रभवालकुमारू धीरवीरसूराअधिकार दिव्यरूपगुणहेसाधार कीडावत्यकरेअधिकार २७ देवसहितप्र
भुजाइउद्यान द्रुमछहीशोभेतिहिथांन बालकरूपदेषिपिताभात पीछोथरीचालेप्रभुसाथ २८ देवविक्रिया
मयगजकस्वो अतिभरमंततुंगतनधस्वो दूरिपलायगएजनसबे भयआतुरदेछोवहुनवे २९ गजआवतदेष्यो
जिनराय भयविनुपकरिलयोजिनधाय प्रभुनिराशानिरशंकप्रधान गजआरूढभयेउद्यान ३० तबकुटंबमिलि
अरूसवदेव थुतिआरंभकरीप्रभुसेव तीनिजगतजियव्रणवतसबें महावलीनदेषेअवें ३१ इनिधीरजसमकोजग
मांही अधिरजकीनभएसबताहि प्रभुकेगुनतोअपरंपार यहकहिकहिहरषेपरवार ३२ तुमस्वामीत्रिजगतधीरधीर
कर्मशत्रुकेहंतावीर तुम्हरीथुतिकेतेजप्रताप छिनमेंचंद्रसुर्यीकिरनाय ३३ तुम्हरोनामसुमिरिजपरेसुर अरीमइसुष

विस्तरे नमोस्तुस्यमूरतिप्रभुतोहि नमोमुक्तिभरताअवलोही ३४ इहिप्रकारसंस्कृतिकरिदेव सारथनामधरेउ
रसेव वारवारप्रनमोशिरनाम अपनेथांनगएविसराम ३५ प्रभुहिवचनअमृतसमजैन विश्वलोकबोधतसुषदेन
अन्यदिवससुरइंद्रहिआय नानारूपरचेप्रभुपाय ३६ किंनरगीतसुकंठहिकरे अतिआनंदसवहिमनोहरे आ
नरतांडरत्योवहुइंद्र सकलदेवलेलीलाकंर ३७ देषेवहुविधलीलाष्याल मातापिताउरस्काविशालभूषनवशनमालपहु
राय फुनीसुरेंद्रजियांनकजाय ३८ कवहुंसुरहर्षितभुपाय जलक्रीडावनक्रीडाजाय नितप्रतिदेवविनोदहि
धरे धर्महिलहिसुषवांछाकरे ३९ फिरिसुरेंद्रसुषकरिवेकाज आयोसकलविभूतहिसाज अतिचित्रनाटकविस्त
रे वाजेगीतमानमहरे ४० स्वर्गजतीतसववस्तुअनेक पहिरावेप्रभुकोंथुतिटेक काव्यपटेगुनगोष्टिजुकरे धर्महियेलहि
वचउच्चरे ४१ इहिप्रकारवहुपुंन्यउपाय सुषसागरअमृतजलपाइ क्रमक्रमसोंप्रभुजोवनभए नितप्रतिसुरनसेवकट
ए ४२ मनिमयमुकटसीसपरलसे भालतिलकशोभाकरिवसैकंठमालमुकतागनएम मेरुप्रदक्षिनाउडनजेम ४३ मु
षकपोलशोहेनिजनेह अमिइंदुलसेरुतिजेह नयनकमलरलशोभाधार भृकुटीचढीधनुषआकार ४४ मणिकुंडलयुगशो
भितकर्ण अरुमुखेंदुरजसमकिर्ण कीरनासिकादामिनिदशन विंबोष्टीदोटीकोसरन ४५ आधरकमलकीसोभासजै
वचनकोकिलावांनी लजैवजैस्थलमनिहारविराज भुजादंडसमकोमलराज ४६ मुद्रितभूषनअंगुलीचंग पोंहोचकं
कनमंडितरंग नषसूरजकिरनावलिधरे कोवुधशोभावरननकरे ४७ अंगअंगवहुदीपतिवान नाभिवतुलाकारप्रवांन
वाग्रेवीद्रमवचनगहीर लक्ष्मीकोदानिलयसुधिर ४८ मेषलकटिमेंशोभागहे जुगलजंधकदलीसमवहे पादकमलयु
गहेसुगर महादीप्तिनखदेअधिकार ४९ इहिप्रकारभूषनशृंगार केशनागिनीसुतआकार तिनीजगतमेंश्रेष्ठसरू

प अतिपवित्रसुरगंधअनूप ५० तीर्थंकरपुरपुलवरगना औरनयहितनविना सातहाथउन्नततनसार वीनाथज
गतारनहार ५१ दोहा अतिचित्रसुंदरसुरभपरमेदारिकदेह अद्भुतबलतीर्थेशकोरुपवाक्यगुनगेह ५२ चालि
मनवचनरतकोंलान्यो धर्मध्यंनमुकतिसुषभीन्यौ लीलवालकुमारजुलीन्यो पितमातहरषसुपरिनो ५३ सुखभु
जेसनरसषमे सुपनेसमतेअनुरागे द्वेतीसवैरससंयोग लहित्रपतिभएनहिभोग ५४ अवकाललब्धिकोंपाइ ह्याथ
कसम्यक्कसुहाई चारितमनमेंअविधास्यो सममतिप्रभुबुद्धिविचास्यो ५५ वहपूरवप्रेक्षादीन्यो भवकोटिभ्रमनभ्रमकी
न्यो उत्तकीएभाववैराग विसभोगसकलअनुराग ५६ अवरतनत्रपलीजे मोहादिकरमक्षयकीजे एवथांसकलरिनही
जा रतदुलभसवजगमाही ५७ प्रभआदिनथतेहाई इकवीसजिसुरसोई वहुअवलाभोगुजकीन्यो आषरितपुकरी
शिनलीन्यो ५८ नेमीपारसधन्यजुहोई घटिजाववालतपुहोई तपसाध्योमुक्तिहिजाई सोअवहमछिननसुहाई ५९
वेकालरहेअवनाही त्रयपल्पआवसुषमाही सवआववहत्तरिवरस तहतीसगईवैसरस ६० थोरीआयुषाजग
रूर रमयतितीनज्ञानजुतनेन थितिग्रहवृथासुषचे ६१ किमज्ञनसाधर नइछेमुक्तीश्रीकोज्ञहीवछेहेनाद्यसफल
तहीको चारिततपधरिजेहीको ६२ वहज्ञनविफलकरिकेश जोगप्रगटकरेनहिलेश चक्षुरेपवछहिजुकूप तेच
क्षुवृथाधरिरूप ६३ परेमोहकूपमेंजाई धरिज्ञानवृथाजगमाही कहातीनिज्ञानधरिलीन्यो संसारवढानकीन्यो
दोहा अज्ञानहितेपापकरिज्ञानलहेघटिजा यज्ञानपायपापेगहेसोक्योंछूटेभाय ६५ चोपई ज्ञानिपापकरिजनक
रेई सोभितज्ञानवंतपुरषेइप्रानगयेकोसंसेनाही निंयकरममोहारिकहि ६५ रागदोषदुहरिचिरकाल दुरगतिघोर

दुःखकोसाल भ्रमनकरैप्रानीपरवीन सुखनहिरंचप्रगटवहुदीन ६७ तातेज्ञानीमोहजुशत्र हनैज्ञानकेषडगजगत्र
शक्तिपायजोहनैनताहि तोफिरिदावनपावैकाहि ६८ वालपनेतपसाधेसुधीजोवनलहेहोयमनकुधी तातेअवकी
जेतपकाज मुक्तिपुरीकेलीजैराज ६९ जोवनभूपकामकीफोज पंचेंद्रीहैतिनिमेमोज जीतेजहदुरगतीकेल
दश धरेमोहजोधाआदेष ७० जोवनगयेंजरातआय वलअरुदीप्तिसवैजरिजाय नयनकांनकरिरोषमंद
तवपछितायपरैजमकंर ७१ अवतपलेविनानसुहाय विषयशत्रुकोंरेहवहाय यहचिंतवनकस्वोप्रभुसोय राजमो
गनिस्पृहमनहोय ७२ ग्रहआगारराजश्रितज्यो तपश्चरणकरिमुक्तिहिभज्यो काललब्धियहदुर्लभपाय सुषनिधानसंवेगउपा
इ ७३ दोहा श्रीसन्मतित्रयज्ञानमयद्वादशप्रेक्षाचिंत संवेगादिकभावधरीआतमकार्यलहंत ७४ हेअनित्यवस्त्वा
दिजगसरननहींसेतेह संसारहिभ्रमणकरिएकलोअन्यजीवअरुदेह ७५ अशुचिअपावनपूतराआश्रवकर्मअपार संवरकरिनिर्जर
करैतिन्योलोकमझार ७६ दुर्लभदुर्लभपाइयोनुजन्मजिहाजधर्महिलहिपारहिलगे अवरभवोदधिमाझ ७७ दालयोगीरासेको
काललब्धिश्रीवीरजीनेश्वरआपुनुमनहिधीरागे राजसमाजभोगइत्यादिकतेसववैरसलागे आवकालकेमुषमेंपेलैजोवनघटहिजरासों
रोगअनेकदेहमेंव्यापकछिनभंगुरसवयासें ७९ तीनिलोकमेंवस्तुजुसुंदरदेषतविनसैसोई अतिदुर्लभगतिकोटिनिधरिनरभव
थिरनहिहोई कोइगर्भहिमेंपिरीजाईपापउदैजवआवे कोईबालतरुनूहुईविनसैकोईजरहसतावे ८१ कोईपुन्यउदैजोवनत्रहिध
र्महिसाधिसुधास्यो कोईपुत्रकलित्रमाहवशग्रहवंदीपनेवंध्यो ८० हयगयरथदलदेषोविनस्वर अभ्रपटलसमसोइलक्ष्मी

आदिचक्रनि आदिकथिरनभईतहांकोईसोजानंतसुधाखिनभंगुरतकरिमुक्तिहिसाधौनितअनंतेसुः षहिभंजोनित्यगुननिअ
वधारौ ८९ इतिअध्रुवानुप्रेक्षाः १ ज्योंवनभीतरहिरनइत्यादिकसीघकवलकोंनाषे जैसेयाजगजीवनमानी कालगहतको
रषे इंद्रचक्रहलिहरिवियाधररापिथीनकनहिसकै आपुनसकलमरनकीचींताओरसरनकहातकै ८२ मंत्रयंत्रतंत्रादिक
औषधिओरउपायवनेखो जवहीमनसु

डाक्टर भाऊदाजी दत्तात्रय समारक
MEMORIAL

षकालदिषान्यो भएवृथासवहेरचो तातैभविजनसरनधरौनिजपंथपरमगुरुचरना हेरक्षकदुरगतितैरोषत
सुभगतिसाथीसरना ८३ तपश्चरुदानजिनेस्वरपूजाजपघृत आदिकभावैविस्वअनिष्टहिहनिकरि
सरनहिसुभगतिपहचावै चंडिकक्षेत्रपालबहुआदिकसुरनमूठजेवाढैरोगकेशवदुःषहिलेकरिनर
कूपरेकृतपाळे ८४ जेभविअसरनजानिनुतमेकुगुरुकदेवनकोई हैपरमेष्टिधरमत्रय आदिकदेह
दुःषक्षयहोई जेरत्नत्रयआदीचरनलहिमुक्तिपुरीकोंजावे नाहिअनंतेसुषयुनपूरनसोचोसरन
जुपावै ८५ इतिअशरनानुप्रेक्षा द्रव्यक्षेत्रअरुकालअुभावहिभवसंसारहिपांचो ताकोआदि
अनंतनकोई भ्रमिभ्रमिजियदुषनाचो सुषदुषभयजडआनमतिन्योकेवलिदुःषहिभुंज्यो प
चप्रकारवनांतरभूमेसिंधव्याघ्रहुइभुंज्यो ८६ औदारिकअरुविक्रयआदिकपंचशरीरधरंतो
तीनिलोकमेंजेतेपुदगलपरतन अनुक्रमजंतो इहिविधिवार अंतीधरिभ्रमियोकर्मनिद्येस्चो
द्रव्यपरावर्तहवैतैद्रव्यसंसारसुडेस्चो ८७ मेरुसुदर्शनकेनहिहेदे अष्टगोथनसोहे तहांतेअष्ट
दिशाननुधरिधरिअधऊरधक्रमजोहे चौदहराजूलोकप्रमाने ताकेशक्लप्रदेश श्रेनीवद्धमरनज
नुमानरुक्षेत्रसंसारहिभरु ८८ उत्सर्पिणिअवसर्पिणिडोईकोडीबीसकालचक्रसरजादेई
दाईतनीतिनिकेसमयनदीशसमयसमयधरिजनुममरनजीयअंतहिउपजनलेषे अनुक्रमसकल
संपूरनकालसंपूरनकीन्योकालसंसारहिभमे ८९ चारिहुगतिकीआषविचारोडतकृष्टजघनि
जुभेद तिनिकेसमयसमयप्रीविधारेगतीगतिपूरनषेद नारकदेवमनुषपसुकेसंवविमानचतुर्दशन्पारे

मिथ्यामत धरिलषचौरासीजोइनिभमिसंसारे ९० मिथ्यादिकस्ताउनबंधनेअशुभनामनिसाधे सोव
सुकर्मप्रकृतिअठतनिसोचौरीबधनबांधे, आवागवणनहिकबहुतावेकरिजहो भावसुसरजुइहिविधिलहि
जेजीवआनाहीजुसोई ९१ विषयनिभेजवसुखकरिमानेवेदुख अदिकजुलीमें ज्योघृतनेलअगि
निसमकिजे अधिकप्रचंडहिकीने प्रानिजिषभ्रमनचिरकालहि अंतनपायोक्योहीरतनत्रयआ
दिकवृतधरिके भवविजयपारलहेही ९२ औरअमरहनातेंजियविषयभवभवहेविरक्यता कबहूपित्रापु
त्रहुदकदबहूकबहुवियकीमाता धर्मविनाप्राणीबहुभ्रामियोकालअनादिअज्ञान धर्मसहितसुषदुष
दरिकरिजतनलहेनिरवाना ९३ इतिसंसारअनुपेक्षा जनुमुहोयएकाकीजगमेमृत्यकएकहिसोई एक
त्रमनभवकेवनमेंतहाएकहीसुषमयहोइ एकहिरोगग्रसोवहुव्याधिनि एकहिवेदनिभारी एकहिदेषिपरनु
तेननिसमएकहिअधअधारी ९४ जमअरुनेमवृतेगहिसुरगवसेरोमाई एकहिकृतयमाधिशिरोम
निमुक्तिपुरीकोजाई एकहियापकेरेसोई भुजेदुरगतीदुःखलहानो सावदिहिंसानिद्यआदिकरिनर
कहिदेइपयानो ९५ मातपिताअरुपुत्रकलत्रहिस्वजनशफलनहिसतो एकचिदातमकोमनध्यावे
वे तिनहूगुनकोनातें तावेअष्टकरमशत्रुनिकोरत्नत्रयअहिहंतो मुक्तिस्वरूपीसुंदरीसंगहभुग
तसुष्पअनंतो ९६ इतिएकत्वानप्रेक्षा ४ अन्यजुआतमपुदगलअन्यजुजनममृत्युकहसोई कर्म
संयोगेसुषदषभुगत्योअंतकालजुदाहोईअन्यहिमातपिताअरुबांधवास्त्रीपुत्रहसंवअन्यहाअस्तावसंवेजरिआ
एकाजसरैनरमन्य ९७ सहजहिवपुअरुआतमजानोपृथकपृथककरिलेषो साक्षातमृत्यादिकसमयेलषिआ

पुनुगहिनहिदेषो जवपुदगलकैजीवत्यागकरिअंतहिथितिकोकीवो मनवचकर्मसंगहीचलेंफेरिरिनवपुकोलीवो
९८ कर्मकार्यकरिवेलोंसाथीसुषदुषगतिपरिनांषे जनयहिकर्मरसभोगकरनिजआतमज्ञानचितांवे इंद्रिसकल
पदार्थहिनत्वनिआतमज्ञानहिजानें यहुपरभिन्नजुदोजडनामयएकहिक्योकमांमें ९९ इहअंतरबहुसाधिपृथकक
रिज्ञानगुनहिचानो वपुएकायकबूनहिजानेंकर्मशुभशुभठानें अमध्यानकरेयोगीश्वरकायहनकेकाजे रहहिचि
दानंदसुष्यअनंतेमुक्तिपुरीमेराजे १०० इतिअनित्यानुपेक्षा ५ चोपही शुक्ररुधिरअरुमासजुचाम अ
स्थीसहितमलभूत्रकुधाम सप्तधातुकोपुतरासोय अशुचिभंडवुधभजैनकोय १ क्षुधात्रपावहुजरजुरोग
अग्निसमानज्वलितसंयोग असीकायकुटीमेवास ज्ञानवंततहाहोयउदास २ रागद्वेषअरुसकलकषाय
मोहमरोरवहैमदकाय ज्ञानीपुरुषकहोकिमिरमे पापीदेहयहैजगवमे ३ झरीस्वेदसोंवहतविकार अनेक
सुगंधलगैनहिसार चरमहिमाहिरूपहैसोय तासोरम्यकहैवुधकोय ४ ऐसीदेहमोषनहिकरे रोगलहेदु
रगतिसंचरै तपकरिषोषितज्ञानिजीव स्वरगसुःषलहिमुक्तिजुपीव ५ कर्मआदिमलवपुअपवित्रसंपू
रनदुषकरिरहित जगत्रतपरूपीजलकरिअरना आतमपवित्रकरैबुधिवांन ६ इतिअशुचित्वानुप्रेक्षा
६ रागादिकपुदिगलसुषदेय कर्मरूपआश्रवदुषलेय ज्योसाछिद्रनोकाजलभरे बूडेवारिधनहिकरे ७
ऐसोलहीकर्माश्रवजीव भवसागरमेलसदीव पंचमिथ्यतदुःखकीषानि आवोरहभ्रमतहिवषांनि
८ पुनिकहिएपच्चीसकषाय पंद्रहयोगदुईरसमुद यइतेनकर्माश्रवबंधाय भ्रमैचतुरगतिमेदुःखपाय ९
कर्माश्रवनोकाकेछिद्र रूधेनाहिंसिमादिसमिद्र तपकरिचूरनकर्मविराय मुक्तिरमनिकोसोपरनाय १०
जेसज्जनकरमाश्रवरो ध्यानध्ययनसंयमकेथोक तिनिपुरुषनिकोवांछैसिद्धि अवरवृथाकायाकीवृद्धि

११ जहांलोकर्माश्रवकोजे चंचलआत्मविषयनिभोग जावनमोक्षिनपावेजीव भवसागरकीलहेनसीवे
१२ जानवंसकरिजतनप्रवांन रूधिअश्रुवकेथान रतनत्रयआदिकसुभध्यान प्राप्तिचिदातमकोसुषथान
१३ विकलपरहितध्यानसरदहे शुभआश्रवको आतमगदे कर्मशत्रुकोकोधानुहितवै मुक्तिपायसुपशुजे
जवे १४ इतिआश्रवानुपेक्षा ७ धीरवंतसंवरअनुसरे कर्माश्रवकोरोधनकरे षृतअरुसुमतिगुप्ति
त्रयथोक तेरहविधिचारित्रहिलोक १५ दशविधिधर्मजगतविष्णात अनुप्रेक्षाद्वादशचिंतानवाईस
परीसहजीतेसोय सामायकआदिकसुखजोय १६ धर्मसुकलध्यानहिअभ्यास मननिरोधकर्माश्रवनास सोसं
वरसरसवदायकमुक्ष जतनराषिधीरजनजिदुःष १७ कर्महिसंवरकरहिसुजान निर्जरतपकर्मनिहान
एकेससेदुष्कठिननिदान निर्मलमुक्तिसुष्यबहुमान १८ इतिसंवरानुपेक्षा पुरवसकलअवस्थाकहेां
संवरकरितपसा निजुलही सोनिर्जरकर्महिमडिजान जोगीश्वरशिवकोसुषदान १९ कर्मउदयकोभो
गहिसोय आतमस्वभावषिगवैजोय अनेकर्मशिथिलकरिरहे सोसविपाकनिर्जरायहे २० उग्रतपसाधहि
जं वेश्रीमुनेशकर्मनिहनिनवेमुक्तिरिस्त्रीवाटेवरसोय निर्जरहेअविपाकेजोय २१ जवपूर्णनिर्जरसचरे सपूरन
कर्मनिषयकरे तपहिसाधियोगेश्वरवीर मुक्तिअंगनासंगमधिर २२ विश्वपूणिसुषकरतासोम्य मुक्तिरमाकी
कहेजो ताहिअनंतेगुणकोंचहेपदतीर्थकरगणधरलहे २३ सकलभोगत्यागेजेसुद्धि कर्मनिनवादेमनवुद्धी निर्जर
जगतपुज्यजमाहि भवनाषनव्यनिसुषदाहि २४ इहिप्रकारनिर्जरकोध्याय जीतीपरीसाधीरमहाय भवसागरतुद्ध ३५
रहिजसोय शिवप्राप्तिकेकारनहाय २५ इतिनिर्जरानुपेक्षा ८ सर्वअनंतानंतअकाश तामेलोकनषतवतवाश
अनादिसास्वतोवहुगुनस्वो हरिहरआदीनकाहूकरवो २६ अधोलोकचौषूंटोथान मध्यमलोकमध्यरिसम

जान ऊरधलोकमृदंगाकार तीनीलोकसवपुरुषाकार २७ चौदहराजूसवेउतंग वातत्रयवेमोसरवंग प्रथमहितनवा
तहिकोनाम पचीसहसजोजनअभिराम २८ दूजोवातवलयघनकह्यो वीससहसजोजनकोलह्यो त्रतियघनोदधिमोटो
सोय पंद्रहसहजजोजनअवलोय २९ मूलहिंइकराजूउंतग सातसातचारोदिशिसंग तामेपणगोलकहेजेह तिनिकभेदक
होकछुएह ३० प्रथमहिघंधरनामहिभेव जंबूरीपसमानगनेव दूजोअंडरनामवषान भरथक्षेत्रवतहैउनमान ३१ तीजो
गोलकनामअवास कोशलदेशसमानसुवास चौथीपुतलिनामहेकही नगरअयोध्यावतसोसही ३२ पंचमिहेहनामसहिसो
य चक्रवर्तिमंदिरवतहोय सवमेनित्यनिगोदहिजीव उपजेमरिरहेसदीव ३३ तहांतैत्रसनाडिसुनिभेव तेरहराजूऊंचीलेवता
मधिइकराजूविस्तार तामेत्रशउपजेसंसार ३४ छहराजूमेनरकजुसाव अरुतिहिअंतभवनदशजात सवहीपूरवपरविस्तार
राजइकइकहीनविचार ३५ रष्णिनउतसवहीसास अवसुनिपृथकथकसवघात घम्मावंशमहितेरहपटल रतनप्रभारीसेपूजट
त ३६ विलेतहांहैलाषबुतीस उपजैतहांनारकदुषरीस दुजोवंशानरहिनाम पृथ्वीपृभाशर्करीगांम ३७ ग्यारहपटलतहांदुषखानि
विलेपचीसलाषउनमानमेघावृतीयनरकपहिचांन भारूवतआभासवषांन ३८ विलजूअंदहलषवांन नवपटलनिमेदुरवमाहांन चौथोअंज
नरकवषांन पंकप्रभारीसेबहुगलाग ३९ पटलसातहैताकेलीय विलेलाषदशउपजेजीय पंचमरेअरिष्टदुरवधाम धूमनरनरीसेअभिराम ४०
पटलपंचपुनिताकेकहे विद्धेतानिलाषसरदहे छटमोमघवीनारकजेह अंधकारपृथिवीसमतेह ४१ पटलतीनिताकेदुरवजून विद्धेएकलाषप
णऊण सत्तमनरकमाधमीनाम महाअंधकारदुषधाम ४२ पटलएकहैदुषकीषांनपंचविलेजीयउपजप्रमान सातमतेपरलोजोहोय पंकवहु
लजलपृथ्वीसोय ४३ असुरकुमारप्रथमभवमे चोसटिलाषविमानगनेव तितनेहीजिनमंदिरलमे अष्टोतरप्रतिमाजुतवसे ४४

परपृथ्वीमेदशभवनाम नागकुमारद्वितियहैंनाम विमानलाषचौरासीतहां जिनमंदिरइकइकलहिजाहा ४६ विद्युतकुमारतृतीयस
रदहे आषछिहत्तरिमंदिरलहे सुपर्णकुमारतुरियहैरेव बहत्तरिलाषविमानकहेव ४५ वातकुमारपंचमेजान लक्षिस्थानवैतहांविमान
स्तनितकुमारछठोसुनिमेय लक्षिछिहत्तरियहगतिलेव ४० उदधिकुमारससमेहोय लाषछिहत्तरिमंदिरसोय दीयकुमारअष्टमजांन
लाषछिहत्तरिताहिवीमान ४९ अग्निकुमारनवगुनधार लक्षिछिहात्तरियहअवधार दिगकुमारदशमेभवनेव लक्षिछिहत्तरियहगनिलेव ४८
सर्वभवनदशकोकरिजोर बहत्तरिलाषजुसातकिरोइ इकइकजिनमंदिरतहावसे प्रतिमाइकशयआवजुलसे ५० अष्टमनिहारिजुजुतसवें
तिनिकोबंदनकीजेअवै मेरुतरेतेजानासोय अधोलोकमरजारजुहोय ५१ राजूसातउचाईलेव ताकोघनाकारमुनिभेव भवनसमेतन
रकइकजांन दशराजकोलह्योनिदान ५२ दूजोसारहराजुह्यो तीजोवाइसलोंधरनयो चोथोअष्टावीसवषान पंचमचौंतीसहिउनमान
५३ छठामसातराजूचाल गोलकमलछ्यालीससनाल इहिविधिक्रमसोलीजोजोरी जहांथानकोघनगे ५४ दुहा अधो
लोकघनघनकार सवइकसयध्यांनवेतेह राजूसोंगनिलीजियै भ्रमनाशनसवएह ५५ चोपई मध्यलोकअवसुनहवषान पू
रवपश्चिमराजूजान दक्षिउतरसातगनेह तीनितिनिदुइदिशिसोनेह ५६ तिसनाडिभीतरउनमान राजूएकसवेपरषांन दीय
मुद्रअसंष्यजुनाम जंबूदीपमध्यअभिराम ५७ ताकेमध्यसुदरसनमेर लवनसमुद्रवसेहुफेर सोवरननपूरवबरनयो पुन
रुकतिसोफिरिनहिभयो ५८ ताकोंधिरिधातकीदीप चारिलाषजोजनजुमहीप तामेपूरवपश्चिमजोइ विजयअचलहे
मेरुजुदोइ ५९ ताकोकछुबरननकोलहै बिनबानीजैसैस

रदसे॥पूरवदिसिप्रथ्वीहैजितीलवननिधिकालोदधिसुतीई॥ चारिलाखचौरिउनमानता के मध्यविजयगिरिजान। सर
कोमुसिउकोसोय।सेवविभूतिप्रथविवनहोय॥६१॥ऐरतेतहांविदेहदुरसवे।पुरवअपरदोयदिशिहैवे॥दक्षिएउत्तर
इस्वाकार।दोयमेरुकेमंडनजोरे॥६२॥मेरुथकेयश्रीशवतदोयो।ताकेमध्यहिइकइकसोयु॥तेंबेचारिजोरवपूरय
न॥उचितविथारनिछिप्रिसमजोन॥तापरइकूर्कजिननरगेह॥अठोधारशतप्रतिमातेह॥दक्षिएइस्वाकारहिनि
कूट॥तेंथक्षेत्रखटखंडहिविकट॥६४॥तेंतोपूरवपश्चिमधार॥चारिलाखदेईउकार॥क्षेत्रमध्यविस्तारगनत॥सौ
तसहजोजननिवसंतहै॥उपरएकसयजोजनपोंच गंभीरा पांचसयधनुरवेदिसांचो॥दुगुनदुगुनकीजेअवगाता॥अटप
रनतभरुक्षेत्रजुसात॥६५॥गंगासरिताकेदुनिनैवो॥मूलचौरासिजोजननेव॥सतुदरिनिलेदशगुनीहोय॥दोय
लाखपरिवारहुसोय॥ऐसीसिंधानदीप्रवानु॥क्षेत्रक्षेत्रमेंतिदुगुनीजान॥भरतक्षेत्रवेतूढेराबता॥तहांरआनगउ
चरजुता॥६६॥करेंविदेहकिमृपिसोर॥जेहोपंचतेंगुनिधार॥लवाईकोकरेचैरवानु॥बेलनसमुद्रतेहसुनहुजान
॥६७॥एकलाखसैबावनजारु॥तीनतेंकमकमकठतीधार॥तेरहिकठकीवरतीदेह॥दोयलाखअरुसरगनेह॥७०॥व
तुसरिताकोपरजान॥इकसयसाठअरसठिजाव॥इतनेजोजननगनियेसोय॥अवकालोहैधितरकीजोय॥७१॥मे
मेरुनिकटनैपैतेंगुन॥गरिवेछारविनंगावरन॥परिविभूतिपूरवबहवरि॥सिलेयपश्चिमेकामरि॥७२॥पर्वत
नदिकुरुद्रुमगेह॥उपसमुद्रजुतजानोतेह॥नदिचुतुरशलवननिधिलि॥कालोदधिजेतिरेरलि॥७३॥जिनमंदिरुक
एहिसवी॥इकसएअठावनकोजोइ॥धातुकीदीपवरनमौहोइ॥७४॥ताकोधेरिसमुद्रसोनहे॥अवलारवकालोदधिजो
तासेजलचतुरनीवसमान॥जलमीठोपीवतकोजान॥७५॥ताकोकरजुपोतेरकरीप॥सोरहलाषजुजोजनदीय॥ताके
मध्यभुवलयाकार॥मनसोत्रहिमुयतपाहार॥७६॥मूलचारिसयजोजनवीस॥एककोशउपरजानुसे॥चौरोनपरएक
हजारबारहसजोजनअधिकसुसार॥७७॥एकसएसतसयएकबीस॥जोजनमाउत्तगजुदीस॥तेबीएवकोडपरवान॥
लाखपनतीसपरहुतमुध्यान॥७८॥शतसयचौबिसगुनोविथार॥हेमवरननोशोभासार॥चौदहहारगुफारिचुतं॥नरी
चतुहदशनिकसिजात॥७९॥चारिदिसाजिनमंदिरुचारि॥विदिसामेंजुजिनगेहअधिकारु॥मानुषलोकमझारअगाध॥

DR BHAU DAJI
डाक्टर भाऊदाजीइत्याख्यस्यस्मारकम्
MEMORIAL

गश्रुतज्ञान राय ॥२५॥ शतसंयम अरु चारित विधान॥ तेविनु उपदेशहि लहइ ज्ञान॥ इंद्रादिमिलन पद्मोरा तिघोर ॥ यहबुद्धि प्रनेरूपं
द्र महिजोर ॥२६॥ अवधोड शर्मीहेवादबुद्धि ॥ बहुवादनकरन आवेत्रिशुद्धनेइंद्र आदिविद्याप्रधाने॥ इकउनरसबकोमदगि
लान ॥२७॥ बुधिप्रज्ञासप्रमरूनहुतस्त ॥ सचतत्वपदारथासंयमतत्तनि निभेदथूलसूक्षम अनंत॥ जिनहादशांगवोनिकहे
न॥२८॥ अगरमबुद्धिनेमित अन्तनिनिकेगुनआयप्रकार॥ भत्रस्रश्रोतरिक्ष भूमंडछिन्नव्यंजनलक्षन अरुपत्तभिन्न॥२९॥
स्वगवोपदकीषा अजीत ॥ प्रगटेमुहियधरिसहजप्रीत ॥ तिनिकोजुकथू भावायकाल ॥ दुखरूखवरनेउरअंग भाल॥३०॥ रवि
सोम आदिग्रहनपत शस्त ॥ रूप अरूनासफलउदय अस्त ॥ तहातीतनागवर्तमान ॥ वरनेजु अंतरिक्ष अंगवान॥३१॥ पिथोली
जुवस्त्रकथुभूमेका ॥ द्रव्यादिकसवनानाप्रकार ॥ अरुभूमिकंपवरनेजुसोइ ॥ वरनेभू अंगहीत्रिनिय ॥ जोइतपरूरूषदुषसव
कोजनायवद्यकरासमुद्रिकंकेरूभाय ॥ कुरुनाजुत भापमुनिप्रसंग ॥ प्रगटेउपसारजुमंड अंग ॥३३॥ तहो वस्त्र शस्त्रसेनादि
यत्र ॥ आगन अवस्त्रकटक अशस्त्र ॥ षषसरूरमुपअंसकार ॥ गोमयअरु अगिनिविनाशहार ॥३४॥ रूप अथुभउमाप
तिफलजुहोय ॥ प्रगटवपानीसंसेनकोय ॥ यहस्थित्र अगपंचम अनंतबुधिनेमितकीमुनिवर मेनंत ॥३५॥ तिलमसेजुत
नलहसनहि आदि ॥ हैसामुद्रकतेजुनआनादि ॥ तिनिकेफलवर्णेपूर्वज्ञान ॥ यहव्यंजन अंगहिगुणनिधान॥३६॥ लक्षिनश्रीवृ
क्षादिकमनीक ॥ अष्टोतरशतनिकोजुगीक ॥ करपगनरशुअरुअरूभजेम ॥ वरनेसोलक्षिन अंगतेम ॥३७॥ जगमांहिपदारथ
सकलहोय॥३८॥ तेरूपनेविंपेदेषेजुकोइ ॥ तिनीकोफलकहिसंसोमिटाइ ॥ यहरूपन अंग आगमरूभाइ ॥३८॥ दोहा ॥ य
ह अष्टादशभेदजुतबुद्धिऋद्धिगुनगेह ॥ विमलरूप प्रगटेसदा आयतपोधनलेह ॥३९॥ इतिबुद्धिरुद्धिं ॥ ऋद्धिओषधीभे
दवरूधिरमलआमउजल्लरूल्लसर्वद्रष्टीविषयअसनविमुषगुनमल्ल ॥४०॥ गीताछंद ॥ धिरऋद्धिमुनिविजुलेपहिसक
लरोगनिकोंहरे ॥ निर्मलनिरोग शरीरनिवसे ॥ अंगपरनापधेरे ॥ लहिमेलजुदंतजुकांननाशाशोभनरूदेषनटरे ॥ धा

तुसकल कल्यानकारा मलरहियह गुनविस्तरे ॥४१॥ रोग सोग ग्रसि सकै न दालिद्र भाग्य हीन जु चिंतवे ॥ हाथ चुवत जु सकल
माना आम अंग हि गुनसनवेसु मुनि श्रम जुल्लादि ले ननलगावहि होयरूप दुरयहि यवमे ॥ नागा असानादह परमन अंगउज्जलयनमे ॥४२॥ मूत्र
थूक पकारमु ॥ निकोव्याधिहरिधातु हिरवमनकमनोरयपूरिराये शुल्लगुनसव ॥ श्रमषवेमुनि अंगपरसिजु पवन औषकरहिरूपननदुषहरे ॥
मेजु अध आनापजियकमर्व अंगजुयहरे ॥४३॥ सर्वकायोहयकाईतथाकाहाधिपयियो ॥ दृष्टिपरत आनापनाहीद्रष्टिविषगुनयहलिखे
॥ दुष्टजनमुनिराजकोंविषदयतोव्यापेनही ॥ वचनयोगरूआरकोविषहरे विषनाशनसही ॥४४॥ दुहा ॥ इहिविधि आम्रकार जुतऋद्धि औ
षधीसार ॥ प्रगटश्रीमुनिराजकोंनपवत्लयहनिरधार ॥४५॥ इतिओषधीऋद्धि ॥ अवरूनिक्षत्रजुऋद्धकीवरनो शारवादाय ॥ प्रथम अ
छिन्नमहानसा ॥ क्षेत्रमाहावलहाय ॥४६॥ गीताछंदा ॥ जोकेजुमुनीजवलइभोज ॥ नयहीदिनफलयहलहे ॥ चक्रवर्त्तीदलसववहुर ॥ सो
ईपानहीं अधिकारहे ॥ क्षयनहींप्रगटेतिलाभांतरायीतथाउपसमकउदे ॥ नपवत्लहिप्रगटेगुनहिअसनाम ॥ आक्षीनमहानंद ॥४७
जहामुनिवरकर्मनासोचारिहाथ ॥ जुरूविपरेकोटिनरसूरसवसवहीनिरावाधकतनधरेक ॥ एमुनिको ॥ कवन्हेनाहियह ॥ मा
यहाथलवही ॥ अवछिन्नमहालय ॥ अंगहूजोकहो आगमलहिसही ॥४८॥ दोहा क्षेत्रऋद्धियहगुनविमलसोहे नपमुनिईस ॥
देवनिकोंदुल्ल ॥ भयदा भार्षाश्रीजगदिश ॥४९॥ इतिक्षेत्रऋ ॥३॥ चोपही ॥ अवतुमरूनोऋद्धिवलुसार ॥ मनवचकायात्रिवि
धिपरकार ॥ भिन्नभिन्नगुनतिनिकहो ॥ जेसेजिसाशनमेलहो ॥५०॥ शत आवणकर्मप्रधान ॥ नासेकेयउपसमनेजोन ॥ अंतमु
हूरनविषेसमर्थ ॥ द्वादशांगवानीको अर्थ ॥५१॥ तिनिकेमनमंकरेविलास ॥ एहकहिएमनवलपरगास ॥ द्वादशांगवानीम अर्थ्ये
न ॥ कहतमहामहारूखउपजेचेन ॥५२॥ तिनिकोकृष्टनहोयलगार ॥ वचन अंगदलकेअनुसार ॥ धानीपठतदहश्रमनाहि ॥प
रेरूअंतमहूरतमाहि ॥५३॥ कायअखंडितवलकोकरे ॥ अतुलअखंडमहावलधरे ॥ सोहेजिनकोशूभगशरीर ॥ कायअंग
जोनवरवीर ॥५४॥ दुहा ॥ यहवलऋद्धिगेभीरगुण प्रगटवषानीदेव ॥ उदेहायनापयोगमेजिनवानीलही भेव ॥५५॥ इतिवलऋ
द्धि ॥६॥ पद्धडीछंदः ॥ अवरूनहुभव्यनपराद्धिसार ॥ तामेंगुणवरनोसप्तधा कार ॥ नेघोरमहतउग्रहिभनंत ॥ अरुभनतसधोरह
गुणंत ॥५६॥ फुनिब्रह्मघोरससमवषान ॥ अवतिनिक ॥ गुनरूनिभविरूजान ॥ धनभूमिमरोनजुजहाहोय ॥ योगासनरुचिरो

करेसोय ॥५७॥ नाहासंहउपद्रवकानेनसंग ॥ याहिसोंकहिएघोरअंग ॥ सिंहनिक्रीडितव्रत आदिनाम ॥ अशेतरूनक्रमिक्रमिभिराम ॥५८
॥ सोकरेउपासजुदासे ॥ कालअरूमानभहित ॥ अंत्रानिपातजोयाधिधिरसोतपनहित्रास ॥ सोमहूतअंगजानोप्रकास ॥५९॥ पुनिवेदका
दयरूवासमास ॥ यहआदिकरेबहुनेउपास ॥ नीवाहनहा अतियोगरूह ॥ यहउग्रेअंगकोगुनअगूर ॥६०॥ करिघोरवीरनपवत्ल
भानि ॥ निानघटनकवहूंदेहकांनि ॥ उपजेनदुर्गेधामुनिशरीर ॥ यहदोनिअनेकोंगुनगहीर ॥६१॥ सोकरिअहारनहिंहेनिहार ॥ ज्यों
तपतलोहपरनीरछार ॥ सोपेरूनिरनहिसहइपीर ॥ इहतनुअंगजानोजुवीर ॥६२॥ नेअनाचारविनुमुरहाय ॥ यहघोरतपगुनअ
गआय ॥ दुरवकमादिकमुनिनहिधरेइ ॥ सोघोरब्रह्मचारीकहेइ ॥६३॥ दोहा तपजुऋद्धिकेसानगुण ॥ अल्पारसोनेराज ॥ अनुक्रम
तातेजानीपंकवत्लज्ञानसमाज ॥६४॥ इतितपरिद्धि ॥५॥ तपकेवत्लतेयहपदलहाय ॥ सोमरनसमेजवहोयआय ॥ तहांनिसंदेह
प्राननिविनाश ॥ यहआसनविषगुनकोप्रकाश ॥६६॥ चितवेजाहीतनक्रोधहोय ॥ सोप्रानीतंतपरमरसोय ॥ यहयद्यपिमुनिहैदयासिंधु ॥ यहदृष्टि
विषापरतापलिनु ॥६७॥ कोइभोजनमुनिकोंरूखदेइ ॥ धरिकरपरसोइअहारलेइ ॥ परसतरूहस्तरूतनचुवतजाइ ॥ यहरूतआषिकगुनकोरूभाइ ॥६८॥
अरूदुग्धचुवोवाहीप्रकार ॥ षयश्रावीअंगप्रतापधार ॥ यहपूर्वरीतिरसमधुरजान ॥ सोमधुरश्राविकोफलवषानइ ॥६९॥ अतिअमृतमुनिकरश्रवैसो
य ॥ तहाक्षुधातृषाकोइ ॥ रनहोययहअंमृतश्राविजुफलकहेइ ॥ नुतरूतपस्याधरिलहेइ ॥७०॥ दोहा ॥ यहवरनीरसरिधि दिशापुनीतअनुत
पतिनिकें प्रगटतिहैसवाजेमुनिमुक्तिसरूप ॥ ७१॥ इतिरसरिद्धि ॥६॥ कहोविक्रियारूधिके ॥ एकादशगुनसोइ ॥ अणिमामहिमालघिमा
गरिमाप्राप्तिहोई ॥ ७२॥ प्रकामतईशत्वतावसित्वसाधताइ ॥ अंतरध्यानजुदशमहैकामरूपत्वतथाइ ॥७३॥ चोपइ ॥ एकएककोवर ॥ ननरूसेरू
रूपुरोभवस्मागरउवरो ॥ अनूमात्रकरिदेहीभेस ॥ कमलनालिकेछिद्रप्रवेश ॥७४॥ सोइनहोंचितपूरेसूत ॥ चक्रवर्त्तिवतरचेविभूमि ॥ सो
सर्वानिजपुमेलेधरे ॥ अनुमाप्रथमचरितयहकरे ॥७५॥ जोजनएकलाषलोतुंग ॥ मेरसमानसरीरअभंग ॥ जवचाहेतवरचेवनाय ॥
महिमातेयहगुनअधिकाय ॥७६॥ पवनसमानदेषीसवगेर ॥ यहजगमेहलकोनहिओर ॥ ताहीतेलघुसेसरीर ॥ लघुमानेगुणसोमभीर ॥
७७॥ ग्रजकहावेभारीमहा ॥ यहतेओरवषानेकहा ॥ ताहीसमतनधारे ॥ सोयगरिमाकोगुनअसोहोय ॥७८॥ वेठोआपुधरापरलसे ॥

मेरु अग्र अंगुलिमां। धरै सूरजआदि गरिमा को गुन ऐसो होय। ज्योतिषीदेव। सबकों पर से प्रापतिएव।।७१।। जलपरगमन भूमिवत करे। भूतें अंतरिक्षपग धरे। निजतनतें सेनादिकरचे। प्राकृमत्तय हगुनकोषचे।।८०।। जेजियमें करिविधिहलास। जगकी प्रभुता कोपरगास। तीनिलोकपतिमानेआप।। यहईसन्वतनोपरताप।।८१।। नरतिरजंचरअमरदेआदि।। सकलजीवपरतेंऋआनादि। सबकोनिजवसकरि मुनिगव। यहवर्सीतअमलपरव।।८२।। दुर्गमविषमपहाडउनग।। जिनपरचलिवेकोंमुनिपंग।। निनिगिरिगमनअकाससमान।। अमघात गुनऐसेजान।।८३।। सबकोदोषेवेनलषाहि।। अदरसरूपमदादेहजोहिअंतरध्यानतनोवलुजोई।। नृपबलकहूनरेपेगटहोई।।८४।। मरनरषगतिरपंचविचार।। तिनिकोरूपविविधीपरकार। धरैजोसकोचाहरूप। कामरूपतगुनयहेअनुप।।८५।। दोहा।। वरनी विक्रियऋधियहएकादशगुनवांनु।। मूटकेवलीकोसकगमभाषीश्रीभगवांन।।८६।। इति विक्रियारिद्धिः।। ७।। क्रियाऋधिअं तिमरुनेवरनोसाषादोय।। चारनपुनिनभगामिनीताकोगुनअवलोय।।८७।। चारनऋधिअंतिमरुऊर्धगतीगुनलजंघपहुपफलपत्त। शयनतंतुअग्नियशिषाकहोंसवनिकोजत।८८।। अडिलू।। फूवनजलपरकरिविहारतपजोयहे। होइन जलहिलगारुजलचारिक हे।। धरतीसोंचतुरंगुलपदमासनचलै। जंघाचारीअंगप्रगटतपवलभलै।।८९।। पहुपचारिमुनिराजफूलपरगमनहे।। फलचारीफ लऊपरचलिअतिअयनहे।। पत्रचारकोगमनपातहालेनहिचलैवेलिपरसोयसयनेचारिसही।।९०।। सूक्षमकलाजुदारतंतचारीप हे। अग्निशिरथापरशंकतचितनवंकहे। देहनपरसेअग्निअग्निशिषाचारिकोंयहतपसापर। भावरिधिवरुधारके।९१।। अवभ काशकरिगमनचलेधरिध्यानजू।। ऊर्धोअरुपदमासनदोइ। प्रजामानजू।। नभगामीयहअंगहितियपुरोभयो। क्रियाऋधिमुराज गनमूरोथपो।।९२।। दोहा।। क्रियाऋधिहैगुनकहेहिसारहितससोहे। श्रीमुनिराजकोग्यानरुधकी सीध।।९३।। इतिक्रियाऋ धि।।८।। समऋधिअठतालगुनविक्रियगोरहअंग। क्रियाऋधिगर्भीतयुगमसंतावनसरवंग।।९४।। आठऋधिउतिमविमलवसूम लहारीजोर। सिधिभईजिनराजकोंकरतपस्याघोर।।९५।। समाधावनिवरतेसदाराकाकीवनडोर। सहपरिसावीसधेनेवरनो कछुऔर।।९६।। अथवाईसपरिसावर्णनं।। सवैया।।३१।। क्षुधाधाविषाशीतउष्णादंसमसकनग्न्यारतिस्त्रीचर्यानिषद्यसज्याक्रोशक हिये।। वधयाचनाअलाभरोगतृणस्पर्शमलसत्कारपुरस्कारप्रज्ञाज्ञानसहिणेअदर्सनसहिनवाईसपरिसाजानिताकेभेद

निर्जय या शक्तिसहिये।। मुनिकेसरा आय आनेहीकतेशदायक्षिमाभावसोधिलाइमोषपंथगहिये।।९७।। अथाक्षुधापरीसा।। गीताछंदः।। पाप मासइपासासाधतध्यानधरिकालहिहनें जाय।। भोजननिमित्तग्रामहितविविधीकछुनहिवैनै।। वेदउरतकृस्करतनाहिपरम समताथिररहै क्षुधाइहिविधिसहतजेमुनिति नहिकेहमपदगहे।।९८।। अथत्रिषापरीसा।। करतप्यासअवास अतिहीग्रामउरच्यापेधनो।। करमुषजव सूषिआवेपितज्वरको प्योमनोध्यान।। अमृतसीचिकेतवत्रिषांतीक्षनासही।। चलेचितनकिमपिमनिकोचरननिनिकेलागही।।९९।। अ थसीतपरीसा।। सीतसोभतिकपतजगनतरुनुसारहिसोंडहे।। वहतिमंमाघाउनिशिदिनमेघवरषारीतुगहे।। तहोधीरतरजुचोहटतालपाल कृतरुतले।। सहतसीतंमुनीसउतिमतरनतारनहेंभले।।१००।। अथउष्णापरीसा।। अगिनिसमहे धूपग्रीषमतपति अतिज्वालापनी ।। तपेप्रवलप्रहार आरिकनीरसरसूषतगनी।। नथयसूसवचलिस्योंहथिलमतकदेलोचनजायहे।। धरतमुनितध्यानगरीशिरउ ष्णापरसजुआयहे।।१।। अथदशकपरीसा।। करतजुतनमेंडंसमाषीव्यालबीछूविषभरे।। सिंघव्याघ्रजुस्यालसूंडतअतिषरे।। क ष्टइहविधिसहसजेमुनिभावसमताउर।। लियें।। डंसमशकपरीसवीजयीवसहुतेमेरेहिये।।२।। अथनग्नपरीसा।। लोकला नभयतिकेकछुनगनतनविहरतमही।। धरीरिगंवरजैनमुद्राध्यानउरधारतसही।। शीलवतदृढधरेतनमननिरविकारसुहावनें महामुनीपदनगविजयीनमहुत्रिभुवनभावनें।।३।। अथरतिपरीसा।। देशमेकहुकालउपजहीअधिकसुषकोंदुषतहां।। षी नतनजेहोंहिविहवलधरतधीरजनाहिजहां।। करतकोलाहघनेरोअरतिअतिउपजावहीसाधुधीरजगहतउतहीअरतिविजयकहाव हि।।४।। अथस्त्रीपरीसा।। जेहतेसूरप्रधानवुहुविधिपकरीकेहरिकेह।। रिकोरेहदषिजिनिकीमोहवांकीकोटिजोधाभयगहे हूपसंद रजोपितानुतकरतक्रीडामनुरमे।। तेसाधूमेरुसमाननिवसेंसदातिनिकेपदनमे।।५।। अथचर्यापरीसा।। चारिहाथप्रमानसो धतदृष्टीइतनुतनहीकरे।। चलतकोमत्तपायीजिनिकेकविनधरतिपगधरे।। चउतनेगजपालकीपरतासुयादिनेअनही।।६।। अथनिषद्यापरीसा।। सेतसासनसमानकाननगुफाथिरवसेसदा।। धारवारनकरतआसनरहतनिहचलतननतदामनुषसुर पशुअरुअचेतनिधिपतिभनिसतायहि।। घोरतजहिणभजहीधीरपदनीषधविजयकहावही।।७।। अथशय्यापरीसा ।। सदनमहलसुचिनसारिसेजकोमत्तसोवतेथिकटवनमेंयेकलेसेकारनसुवनहिजोवते।। गडतपाहनषंडअतिहि

नामकोकायरनहीं।णमोपरीसासायनजीततनमोतिनिकेपदनहीं॥८॥अथआक्रोशपरीसा॥जगनजियमुनिदषिकोईकहतदुवदुरवचनजे।षापंडि
तगहचोरकाईमारबुकहतजे।वचनएसकतनजिनिकेछिमाबलमुओरही।सोआक्रोसपरीसविजयीति।नहिपदकरजोहही॥९॥अथवधबंधपरीसा।
सदाममतागहेसवसोंदृष्टिमिलितिनिमारहींषचिवे।धर्णभसोंपुनिअगिनिमेपरजारहींकापनहींमुनिकरतनाहीपूर्वकर्मविचारहींबंधबंधनादिसहेपरी
सातिनहीपदधिरधारही॥१०॥अथयाचनापरीसा॥अथोजाकेचुराआईदहअतिविहयलभई।नसाजालजुरधिरसूक्योअस्थिचामविलागई।महत
अतिहिकलेशदारुनमहादुषरहतघरे।असनआषापषनआदिकजाचनामुनिनहिकरे॥११॥अथअलाभपरीसा॥कैएकवारअहारवरियोमौनलेवस
तीधसंजोगभिक्षावनें।जोनहिपदतोउरनहिवसइमिथ्यमनवहुदिनबीतीजाहीविरथभावनभावहीसोअलाभपरीसविजयीसाधुगुनतरुगा
यहीं॥१२॥अथरोगपरीसा॥वातपित्तजुकफहिश्रोणितचारि।एजवतननदे।।रोगभोगभनेकदहिविधिजीव+कायरलाचहे।सहेवदनिव्याधिदा
रुनचाह।नहिउपचारकी।आनमथारदेहविरकतजैनमुद्धारकी॥१३॥अथतृणस्पर्शपरीसा॥लगतकोरेगडतकंकरषाइअतिछिदनाभए।उ
डहिअनरजपरहिओंषिनिपीरसोंअतिदुषठये।परसहायनचाहेनआपकरकाटतनहीसाधुतेत्रनपरीसविजयिकषाहमपरकरितहीं॥१४॥
अथमलस्पर्शपरीसावर्णन।चलतअतिहिषसेवग्रीषमधुलिलडितनषेपरे।मलिनदेहजुदेषिमुनिवरमलिनतासुरनहिधरे।चारिषपमल
तहींधोवहि।जनितमलपरीसानिवारसाधुतेहमजोवहीं॥१५॥अथसत्कारपुरस्कारपरीसा॥महाविघोनिधिमनोहरपरमतपरीसगुनगुरु।
यचनहितकहतसवसोंअनमापदथिरथरू।विनयकोइउकरइतिनकीअरुप्रनामनभापहीं।देषीमुनिकबुकरतनाहीभावसमतारापहीं॥१६॥
अथप्रज्ञापरीसा॥तरकछंदजुव्याकरनगुनकलाआगमसवथ्योदेषिजाकीरुमतिवादीलाजअतिउरमवक्योरुनतजैसेनादकेहरिवनगय
दनुभाजहीं।महामुमिइमिप्राइभाजनरंचमदनहिछाहीं॥१७॥अथअज्ञानपरीसा॥कल्पादीरघकालमंतपकष्टवहुचिंतनसस्यो।तौनिगु
प्तिमकारिनिसरिनचिंतनहिरह्योअवधिमनपर्जयजुकेवलिज्ञानअजहूंनहिजग्योतेजेहिविधिसाधुविकलपसोआज्ञानीपरिषह्यो॥१८॥
अथअदर्शनपरीसा॥कालवहुसंयमजुपाल्योंनेमवृतकीनघने॥द्रोहितपसोसिद्धिसतीकीवेलूउसीलागतीमनें।जोमाषेउरसेंनआनेपरमसमताधि
रमे॥साधिसोइअदर्शविजईनवतुतिनिकेपदनमे॥१९॥अथघातियाकर्मपरीसावर्णने॥सवैया॥३१॥ज्ञानावरनीकर्मउदेमज्ञाअज्ञानदोयदरस
नावरनते अदरसनवषानिये॥अंतरायकेप्रकासउपजे अलाभजववरनोचारित्रमोहस्मतोटाकठानिये॥नगनविषवरतिस्त्रीकोशया
वनासत्कारपुरस्कारग्यारहीकठानिये॥ग्यारहोंकोकीधोकारहीवेदनीउदोतकहिवाई सपरीसासवेंऐसीविधिमानिये॥२०॥अथको
नअवस्थामेंकितनीउदेआवे॥सवैया॥३१॥वीतरागदेवछदमस्तपनेयोगअरुसूक्ष्मसापरायगुनस्थानथासीजतीहै॥क्षुधात्रीषा
सीतउष्णदंसमसकचर्याशेष्यासनवधनअलाभरोगसहीहै॥त्रणस्पर्शप्रज्ञाअज्ञानएई चतुर्दशपरीसाकाहू कर्मयोगलहीहै॥सवैमु
निउपसमगुनस्थाननोईएगिवाईएगिवाईसपरीसाउदेचारितनेकहिये॥२१॥दोहा॥जोकाहूमुनिराजकोउदेहोयसवआय॥

ओसवाल जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक श्री संघ जोधपुर
OSWAL JAIN SHWETAMBAR MURTIPUJAK SHREE SANGH JODHPUR

स्वोसिंघसमरूपभयान॥४३॥तुरतरागजेअधिकार॥मानोमत्तयमघकोभार॥कुनिकुनेंद्रकोरूपधराय॥जिननि
नभ्यातरहेफनथाव॥४४॥पुनिकीनीसेनाअधिकार॥निजनिजहस्तशस्त्रधिकार॥मारमारमुषतेंचरैकातरनदेषतहीमरै॥
४५॥प्रभुनिजभातमनलषलीन॥पापीपापआपकोकीन॥पापीपापआपकोकीन।प्रलयपवन जोअतिवलकरै॥मेरुमहीनहि
टाहिटेरिरै॥४६॥दोहा॥धनेन्यवीरजानराजजगतनमनबलिउनरंच।अचलध्यानधुरिमूरसमजीतीइंद्रीपंच॥४७॥चलेजा
नवाकोवलकनूलंपटभयोमलीनचरनकमलप्रभूनमिफुनि।वहुविधिथुतिकीन॥४८॥पंचोइ॥जुमप्रभुजगमेरुगुरुसुजान
तुमवीरनिमेवीरमहाननुमससमतेजनजगमेआरे।जीतोदुसहपरिसमठोपरि॥४९॥संगरहीतविहरनजिमवाउ॥चलतह
नापरवतेराउ॥छिमावंतपृथिवीसमदेव।गुनगंभीरसागरजिमएव॥५०॥भविउपदेशकसूधासमान।कर्ममहावनअगिनि
प्रवीन॥वर्धमानजसवर्धकमान।सनमतिरूभमतिदाताजान॥५१॥नमोमेरूसमअचलजिनेश।नमोआतमाथितपरमसन
मोजोगप्रतिमासमचिंतनमोंएकसमउर्रिअरुमित्त॥५२॥दोहाइहिप्रकारथुतिकीनवहफुनिफुनिप्रणमेपाय।क्षिमाकरो
मुझदीनपरमहावीरजिनराय॥५३॥क्षमासहितनृत्यतभयोअतिआनदउरनहे।चारितहीनजुरुद्रवहगयोआपनेगेह॥५४॥
धीरजकोधरिसनपुरषटेरविषतिअंकूरसनमतिप्रभुउपसर्गसहिदुर्जनकेमुषधूर॥५५॥पार्षकियोसटआयकोप्रभुवाध
नहिलेस।सोथासनमतिग्रहभुक्तमेभवभवसरनमहेस॥५६॥अरिहंतहोसर्पिनिकालदोषअपूनाकरै॥तीर्थंकरउपसर्गमानचक्रीहु
ए॥त्रेसठिपरनुहोनजीवउनयहिधरै॥होपितपापेडधिप्रकुलआदरे॥५७॥चौपई॥वनवासीहरतभगवान॥कथाओरअवस
नहुजाना॥सिद्धदेशधिशालपुरसार॥चेटकनामनृपतिगुणभार॥५८॥तिनकैसातसुताअपनी॥प्रथमहिंत्रिसलासुता
जनी॥दूजिजेष्टाकहिमाय॥तृतीयचेलनाश्रेनिकराय॥५९॥चौथीमृगकुरजननीय॥पंचमसुताचंदनाप्रिय॥रूपवं
नरतिहे अधिकार॥शिलशिरोमणिगुणअविकार॥६०॥सोसवजोमेवरनानकरो॥होइअवारपारनहिधरो॥एक
समेवनक्रीडागई॥कामातुररषगपरलिहरिलई॥६१॥तापिथेंचितोसटसोय॥निजत्रियकीभयकंपितहोय॥ताको
थोडिमहाउद्यान॥षगपतिगयोभायनेथान॥६२॥वनमेसोसूदरिएकलिपूरवकर्मभंजेमनरलि॥मन

पंचपरमगुरुआन॥धरमध्याननीहचेपरवान॥६३॥इहअवसरश्रेयकनवरआय॥अवरीकाकेरीकीआयरूपवंतदरशीनसै
षु॥तवहीआयोसोताहिकरत॥६४॥कोशंबिपुरनगरमाहान॥धृषभसेनितहासेदिसजान॥तिनिकोआयदइनरताहि॥अतिप्रमो
दकरीलीनीबाहि॥६५॥ताकेमोहसूभद्रानारी॥देषिचदनामनहिधिचारि॥रूपवतीवनजोवनजान॥मनमेसोतिशंकअतिमान
॥६६॥रूपहरनकेउद्यमकीयोंकरचंदनाकौतिहिदियोअरी॥रूपवतीकोहोवीज॥स्वारथहितमनमेंसोषीज॥६७॥तकसहि
नभूतिभानमोहि॥सोदिन्योदुरबुद्धिनिताहि॥कायनहीरावेजचपीरा॥पापिनिभोरउपायजुकरी॥६८॥वंधनबांधश्रेखलमेरी॥चहुतभा
तिवहसंकटपरी॥भगतेभावीकरमजुधार॥धर्मध्याननहितहीशरीर॥६९॥तिहिऔसरयाहिपुरमाहि॥चरजाहितआएजिन
राय॥देषिचंदनप्रभुकोंतवेवंधनदुहियएवपुसवे॥७०॥तनकेसकलशोगनसिगए॥परमहुलासचितमेभये॥सनमतिप्रभुपदप्र
नमेआय॥हस्तजोरिभुविशीसनलगाय॥७१॥परगाहेविधिपूर्वकलीय॥भक्तिभावअतिउरमेजोय॥शीलमहासतीयहजानि।
पायेप्रभुकोकृपानिधान॥७२॥सोवहतकोंदचयमनमोद॥तंदुरक्षीरभयोअनुमोद॥माटीपात्रहेममयसोय॥धर्मतनेफल
क्यानहिहोय॥७३॥वहीअन्नप्रभुकोविधिसार॥दिन्योप्रभुकोपरमअहारभक्तिभावताकेउरभयो।नवप्रकारविधिपुन्यपु
लयो॥७४॥पंचाचर्यकिलेसूरआय॥रत्नादिकवरषाअधिकाय॥लेअहारप्रभुवनकोंगए॥ध्यानारूढआतमाभये॥७५॥ऋ
षभसेनिग्रहमेप्रभुयोजी॥तुमहोसीतिसिरोमनिमाय॥अरुयहुअसूतिकीनीसेवे॥हमअपराधक्षिमाकरीअवे॥७६॥होर
हनसोसूपअधिकाय॥संकटोवकटसवेमिटीजाय॥छिंनभंगुरजान्योसंसार॥प्रभूपरतयोमहावैराग्य॥७७॥दोहा॥तत्योचंदना
दानफलजगमेंजसअधिकाय॥सीलसहितरीक्षालईअर्जीकाजाय॥७८॥चालि॥प्रभूविहरेवनवहुग्राम॥उरध्यानधरेंअभिरा
म॥सोनीथरमस्थमहानहरिद्रुशवरसप्रमान॥७९॥अवज्झंभिकग्रामसूथान॥वाहिरवनशूभगमहान॥रुजुकूलशारिलार
नहारतनशिलागेसार॥८०॥उपरतरुशालवषानों॥शास्त्रवागेभीरजुजानोश्रीसनमतिप्रभूनहाआई॥प्रतिमासमध्यान
धराई॥८१॥प्रभूजिहिवनधारेयोगषटरितुफलफूलमनोग॥सिंघगायरहेइकथान॥सबैमेत्रीभावनिदोन॥८२॥शीलस
हजानो॥ताकोतनवषतरमानो॥ताकेअवसूनियोगेहजानेसवनासेपद॥८३॥दोहा॥देवमनुषतिरयंचनीनातिविनोद
त्यागेमनवचकायासोवतकारितअनमोद॥८४॥पंचइंद्रीसोगुनेंसंज्ञाचारिवषानि॥दर्वितभावितदोइगुनिषोडकषा

न्योनास॥४४॥येहीविधिगजमवषांन॥ओसेरीपयदलजुगवन्त॥सातअनीअतिहिरवन्त॥४५॥दिव्यगी
तगावेगंधर्व॥सातअनिकाकरिकेंसर्व॥नृत्यकिसुरवाजित्रवजाय॥सातअनीकाजानोभाय॥४६॥दोहा॥
वृषभआदिसमसागरदलदुगनगुमविस्तार॥एकएकप्रतिसातभनिसवउनचासप्रकार॥४७॥सातअर
बपहिचानिये॥ओरस्यिनियालिसकोउिलाषछिहत्तरिअधिकसउनचासअनिदलजोइ॥४८॥वृहविधी
सुरराजोविभवकोबुधवरननहार॥हरषभावसबहीवढे॥जयजयकरनअपार॥४९॥चौपाई॥सोसोध
मेंइंद्रमनरंग॥सकलविघ्ननिलेइनिजसंग॥इंद्राजानेसुरधिपधरिधर्म॥अस्वारूढभयोगुनपर्म॥५०॥कै
मृगेंद्रकलकेपैनाथवाहनसुरराज॥सनत्कुमारसकलकरीसाज॥वृषभमहेंद्रकलपकेनाथ॥चार्सोनेप
रिवारदिसाथ॥५१॥ब्रह्मसुरगपतिसारसरूढहंसचढ्योलांनवधिपगूढ॥शुक्रहीइंद्रगरुउजसवा
र॥सामानिकसंगसवपरिवार॥५२॥सुरगसनारनाहिआधीस॥चढिमयूरवाहननमिसीस॥आननआदिइं
द्रचत्वारि॥पुष्पविमानभणअसवार॥५३॥इहिप्रकारइंद्राइसुरराज॥सवविघ्ननिलीनीदलसाज॥अरुप्रते
इंद्रवारहसमउक्त॥अपनेंअपनेंवाहनयुक्त॥५४॥पटहवजेअतिगाढ गंभीर॥दशदिशिधुनिपूरितवरवीर॥
क्षत्रधुजाछायोनभमा॥जयजयकरेदेवउभाग॥५५॥गीननृत्यवाद्यादिकधरें॥जिनवरज्ञानमहोत्सव
करें॥मानोरिनुनशांतसोभंन॥कोकिलमधुरवचनघोषंत॥५६॥जोतिषपरलदेवसभार॥चंद्रसूर्यग्रहनषत
जुतार॥अपनेंअपनेवाहनसाज॥मंडितसकलविघ्ननिविराज॥५७॥असंख्यातसवसहितजुदेव॥धर्मरा
गरसअसंकितव॥जिनवरकल्यानकवंदन॥चलेदेवअरुदेवांगना॥५८॥भवनासुरअतिआतुरचले॥दशो
दिशानिदलसाजिसुमेलि॥असुरकुमारइंद्रदुरठांन॥चांवरअवरविरोचन जान॥५९॥नागकुमारशेइगुन॥धा
माधरनंद्रहिअरुआनदमाम॥विद्युतकुमारशेइविपनपन्न॥हरसिंघटकांनरवन्न॥६०॥सुपर्णकुमारशेइ

सोभीस॥ वेनु मिद्रवेनुनालीस॥ अग्निकुमारइंद्रदोसुगं॥ अग्निवाहनपीतवाहनयुग्म॥ ६३॥ वानकुमारइंद्रदुरतो
र॥ वलअंजनप्रभअंजन॥ सोरसनिननकुमार॥ भवनकेराज। घोषमहाघोषदुरसाष॥ ६४॥ उदधिकुमारइंद्रदुद
जा॥ उत्कांनाजप्रभावमान॥ दीपकुमारइंद्रदोसोय॥ पूरवप्रथमवसिष्ठजसोया॥ ६५॥ दिगकुमारदोइंद्रमहान॥
जमनगतिजमनवाहनठान॥ एरशइंद्रभवनगनिवीस॥ अमृतनेंद्रमिलिसवचालीस॥ ६४॥ श्रीराम॥ ॥

वृषभ	८४०००००	१६८०००००	३३६०००००	६७२०००००	१३४४०००००	२६८८०००००	५३७६००००
घोटे	१६०००००	[illegible]	६७२०००००	१३४४०००००	२६८८०००००	५३७६००००	८४०००००
रथ	३३६०००००	६७२००००	१३४४०००००	२६८८०००००	५३७६०००००	८४०००००	१६०००००
हस्ती	६७२०००००	१३४४००००	२६८८००००	५३७६००००	८४०००००	१६८०००००	३३८०००००
पायक	१४४००००	२६८८००००	५३७६००००	८४०००००	१६८०००००	३३६०००००	६७२०००००
गंधर्व	२६८८००००	५३७६००००	८४०००००	१६८०००००	३३६०००००	६७२०००००	१३४४००००
नृत्यकी	५३७६००००	१०८०००००	१६८०००००	३३६०००००	६७२०००००	१३४४००००	२६८८००००

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नवएकलनजोड़ ६७२०००

श्रीजिन ज्ञानकल्यानक सेव॥ देविनिसहितसाजिसवदेव॥ हरख सहित मनवचतन प्रिति॥ करेमहोत्सवधर्मसुरि
ति॥ ६९॥ व्यंतरदेवअष्टप्रकार॥ तिनिके भेदकछुसार॥ किंन्नरप्रथमइंद्रदोहोय॥ किन्नरप्रभकिन्नरमतिजोई॥
॥ ६६॥ अरुकिंपुरुषइंदुरजान॥ महापुरुषसतपुरुषप्रमाण॥ महोरगइंद्रअतिदुरसही॥ अतिकायमहाकायसुपही॥
॥ ६७॥ गंधर्वहिदोइंद्रमहान॥ गीतरतीजसगीतसुजान॥ अश्वइंद्रदुरनामप्रनाप॥ पूर्णभद्रमणिभद्रमिलाप॥ ६८॥ रा
क्षसइंद्रनहेसुवपान॥ भीमप्रथममहाभीमप्रवान॥ इतरेइंद्रदस होय॥ अप्रतिरुपतिरापजुहोय॥ ६९॥ पिशाचज
क्षमहाज्ञ॥ कालप्रथममहाकालवर्पांन॥ एयंनरहेषोउराइंद्र॥ अरुणप्रतेइमिलिवतिसवृंद॥ ७०॥ अपुनि
सवसामग्री जोय॥ केवलज्ञानजांनिप्रभुसोय॥ चलेभवनतेंअतिहरखाय॥ पूजाकेउरभानवाय॥ ७१॥ होहोस
इंद्रिप्रकारचउदेनपतिमचिस॥ हितआनंदजिनपूजाअस्तुतिकर॥ वाटेआनंदकंद॥ ७२॥ नरनारीजुतनरपनी
अरुमृगेंद्रपशुएव॥ ७३॥ अथसमोसरएवचनावर्णनं॥ चौपाई॥ सुरपतिलीन्योधनदबुलाय॥ केवलिउ
त्पन्नसकलसुनाय॥ ७४॥ आरजखंउजाहुअनेगि॥ समवसरणविधिरचहुअनेग॥ ७४॥ हरखवंतइंदना
योमाथ॥ आयोजहांत्रिलोकीनाथ॥ प्रथमहिमनमस्कारप्रभुकियो॥ समाधानकरिअपनोहियो॥ ७५॥ स
मासरनरचियोजुअपार॥ कोवुधिवंतलहेकहिपार॥ औसरपारधर्ममनध्यान॥ किमपिलिखोआनंदउरआ
न॥ ७६॥ कोसअढाईऊंचअकाश॥ एथीनिउहोलोप्रभुवास॥ इंद्रनीलमणिमयपीठका॥ तिनिलोककीउपमानि
का॥ ७७॥ जोजनएकतानिविस्तार॥ आउउदिशिसोगिरदाका॥ जाकोचहुदिशिमणिमयसार॥ लगीपेडिकावि
सतजार॥ ७८॥ हाथहाथपरऊंचीमले॥ भूमिभागतेप्रभुजहांवसे॥ वहीपीठकेऊपरअंत॥ धूलिसालकोइ
सोभंत॥ ७९॥ पंचरतनमयरजसरवंग॥ विविधिवरनसोभैमनरंग॥ अतिउतंगसोवलयाकार॥ कलकेंद्रेर
धनुषआकार॥ ८०॥ कहुविद्रुमवनदीसेसोय॥ कहूंकंचनमयआभाहोय॥ कहूंअंजनमयशोभाजोन॥

कहूंद्र जिलक्कूतरितप्रमान॥९४॥ममोमरलक्षमाकोधेरा॥मनोजराऊकुंडिलफेरचारोदिसिरखवाजेचारा॥
धरेकगुरानकनकमूटार॥९५॥तहांनेचारोधैदिशिकोंगलीग॥मनहेतभीतरकोचली॥ताकेअंतरकछूपवां
न॥मानभूमिसोहैनिधिथान॥९६॥तिनीकीप्रथमपीठकावनी॥सोरहपैडीसंयुतघनी॥इकसंबंधीतीनि
जुकोट॥चामिचारिदरवाजेजोट॥९८॥भीतरपीठत्रिमेलखजान॥तापरमानथंभपहिचांन॥कंचनमयसो
भैउतंगमध्यभागमहिमानिरभंग॥९९॥धजछत्रतापरसोहै॥अगनजीवमनलीनैमोहि॥मानीकरमानवकु
कांय॥देषेमानथंभमदषोइ॥१००॥मूलभागजिनप्रतिमाधरी॥क्षत्रचमरजुतराजेषरी॥इंद्रादिकआनंदव
यट॥पूजानहांकरैमनुलाय॥१०१॥अरुअनेकशोभातिहिथांन॥रत्नदीसिलाजेराशिमान॥विदिशामानथंभ
एचारी॥सकलविभूतिएकसीवारी॥१०२॥थंभपकदिशिचारोजान॥सजलवापिकाकमलनिधान॥नंदादि
कतिनितेनाम॥चारोदिशिसोरहसुषधाम॥१०३॥तिनिकेनरइककुंडमहांन॥चारिहदिशिचारोपरवांन॥प्रगपक्ष
लिकेंभविजनजतां॥आगैंमनकरैशुचिलहां॥१०४॥तहांनेवीथीचारिजुचली॥कछुअंतरइकशोभाभली॥खाई
गिरदाकारहिषरी॥अतिगंभीरजलनिर्मलभरी॥१०५॥कमलसहितभ्रमरागुंजरै॥हंसकलापसोरवहुकरै॥म
णिमयतटदोऊराजंत॥गंगावतशोभापरजंत॥१०६॥आंगेनाटिपहुपकोवाग॥तहांसुगंधमधुरअनुराग॥सघ
नछायाफरितफला॥फूलविहरैवजोषिताकुला॥१०७॥वनकेमध्यशिलारमनीक॥चंद्रकांतिमणिआभाटिक॥तहा
सुरपतिकीनैविश्राम॥शीतछायासुरवकोधाम॥१०८॥तहांनेकछुअंतरदुनिधार॥कंचनकोटजुवलमाकार॥मानुषो
त्तरपरवतयहमनो॥अतिउतंगबहुवानिकनग्यो॥१०९॥चोरोदिशिगोपुरहैचारी॥रजितमइतिषनैअगार॥रतनमइक
साजगमगैं॥लालवरनअतिसहलिलगैं॥११०॥अरुनाथऊंचेकरिसोय॥जगलक्ष्मीपहनाचोकोय॥जहांरहै
नवधिकरिवास॥पिंगलादितिनिमविलास॥१११॥प्रभुकेमनकछचाहनआ॥वेमचलीसेवैजिनपाय॥मंगलद्रव्यम
नाहरदाढगोपुर॥प्रतिहिकएकसोआठ॥११२॥गावैगीतसुरनिकीत्रिया॥जिनगुनलीनतरपीकरितिया॥व्यंतरइ

वदुवारषंड॥विनयहीनकोंरोकतअंड॥११३॥यहगो॥भापहिगजानि॥औरसनोआगेपरवांन॥गोपुरतेवीथीदिशिचा
रि॥चलीफरीभीनरविस्तार॥११४॥कुहूओरनृतशालानाम॥चारिकुदिशिकीवीथिनिभास॥कंचनथंभरनकरिपचे
दुचाक्षात्रकुपारथ॥११५॥नाचैदेवकुमारीएममानो॥उदधितरंगिनिजेम॥मंदमंदमुषविगसेजवो॥निजगुणगानउच्चरे
सवे॥११६॥वाजेमधुरवीनामुरी॥तालमदंगमधुरधुनिजुरी॥अबकहूंवीथीअंतरजान॥धरेधूपघटदुहूंदिशिमांना॥३॥
॥दोहा॥धूपधूवांनभकौं॥चलेयोस्यामवरनअतिजोनि॥मानोंपांतिकभागि॥चलेपुंन्यतनोउरमांनि॥४॥चौपई॥
विदिशिनिजोरसनोभविसार॥वागचारिनंदनवनवार॥प्रथमअशोकसप्तपणोरहि॥चपकआम्रमहीरुजाहि॥५॥
सर्वरितुकेफफूलअपार॥वृक्षवेलिसोंमंडितसार॥चारिचारिवापीजुमनोगसोभैनंदादिकजलजोग॥६॥हैत्रि
कोणकोऊचउकोन॥वेऊगिरदाकारहिजोंन॥तहांआवैभविजनमनहर्ष॥कारनधर्ममनोगहिपर्ष॥७॥कोईकी
डाकाऊआया॥कोईअंगप्रछालनजाय॥अशोकवागकेमध्यमभाग॥पीठत्रिमेषलहैवऊभाग॥८॥जुदेजुदेना
परउनंग॥नीनिकोटरात्नाढ्यमयरंग॥चारादिशिगोपुरसंबध॥नवक्षत्रधुजमंडितरंग॥९॥मंगलद्रव्यधरीसमुदाय
अरुनहांरहैदेवना॥आयचैत्यवृक्षनामध्यप्रमान॥जंबूवृक्षतनैउनमान॥१०॥ताकेमूलचहूंदिशिचार॥श्रीजिवर
प्रतिमाभवतार॥वागमध्यचास्योदिशिजानू॥वनवेदीहेचामहांन॥११॥कणकमइमणीखचितप्रकाश॥वरवाजे
उन्नतचोपाश॥ताउपजिनप्रतिमाराज॥क्षत्रचवरआदिकसवसाज॥१२॥तहांइंद्रपूजाविस्तरै॥महांपुंन्यकोपरग
टकरै॥अमेंहीभववनवनमाहि॥सकविभूतिचैत्यद्रुमपाहि॥१३॥अववनवेदीतेकछुमांही॥रजितकोउलोंजा
नासहीं॥ताहांनेधुजापंक्तिफहरांय॥कंचनथंभगीलतरांय॥१४॥दशाप्रकारहेतिनिआकार॥तिनिकेनदसुनो
निरधार॥मालभुकमयूरउरावंद॥हंसगरुडमृगपतिसृग॥१५॥वृषभचिह्नदशभांतिमनोग॥धुजादुकूलनिकोसं
योग॥एकजातिकीसोअरुआठदशासेअसीसवेमिलिठाढ॥१६॥चारोदिशिकीसवपरिवांन॥सयतालवीसअ
धिकांन॥धुजापवनहराहालैसचै॥जिनपूजनभविआएजवै॥१७॥पंथरवदभविजीवनधरै॥सप्तधांतिनि

कंचकंरा॥ धुजावधानीपरमितयदा॥ नानानरनशोभअतिलहा१८॥ आगेरजितमयीहेकोर॥ धवलमहाअतिउन्नमा
ट॥ श्वेतमऊजसप्रभुकोचक्रंपासा॥ फेरीहेकरिरह्योप्रकाशा॥१९॥ पूरववतदरवाजेचार॥ नानावर्णरत्नछविधारा॥ नव
निमंगलसमन॥ तोरनप्रमुखसकलसोभन॥२०॥ हेमकोटवतचरननमवें॥ भवनपतिदरवांनीजवें॥ दरवाजिनितेवी
थाचले॥ चारोंनरफटकमाभाले॥२१॥ हेराधूपघनेघटजहां॥ पूरववतवरनसवतहां॥ रहिविधिचारों॥ दृजम
हो॥ नाट्यशालपूरववतकहा॥२२॥ नाट्यशालदोउहिशजान गीतनृत्यसुरकरें प्रवान॥ तहांतेकछुअंतबनलह्यो॥ क
ल्पवृक्षनामोकिनकह्यो॥२३॥ इहाविधितहांकल्पतरुढीका॥ अतिउतंगछायारमनीक॥ फूलेफलेअधिमनरं
ग॥ वस्त्राभूषणआदिकअंग॥२४॥ इहाविधिदानहेनसयोग॥ मनवंछिपूरवेवहुभोग॥ पूरववतचउवापीहउ
॥२५॥ तिनिकोटहेगिरिहाकार॥ कोटकोटप्रतिगोपुरचार॥ मुकतावदनवारअपार॥ घंटतोरनमालहार॥२६॥
मध्यभागसिंहासनरत्न॥ तांकिशोभासकोप्रतक्ष॥ चारोंदिशावृक्षकेमूल॥ सिद्धसमानविंबजिनथूल॥२७॥ क्षत्र
चवाधुजमंउनसोय॥ पूजाहेंद्रकरेतहांजोय॥ जोरशाकलशोभाकोजान॥ चैत्यवृक्षपूरववतमान॥२८॥ वनप्र
वनवेदिहेचारि॥ चामीकरमयवनीसुठारि॥ तामरतनखचेवहफेर॥ मानोमानथंभउदेशशिघेरा॥२९॥ ताउपरप्रति
माजिनराय॥ सुरपतिपूजेउरहरषाय॥ इहविधिचहुविधिहिशाश्वतजान॥ पूरववतवहवरननाजांना॥३०॥ फुनि
धुजथंभीपंक्तिजुसार॥ पूरववतजानोसुविचार॥ सकलसंघदाकोहेवासा॥ कोबुधकहेलहेनहिमासा॥३१॥ जवनि
तिकेकछओगेजानि॥ फटिककोटलोकहेप्रवांना॥ अतिविचित्रहेभलमनोग॥ रतनकूटतिनिकूपरजोग॥३२॥ चंद्रकां
तिमणिआभाकह्यो॥ सीवनमईथतहालह्यो॥ वीथीजंतरसभागसरूप॥ पद्मरागमणिमयतवरूप॥३३॥ धुजा
छत्रघंटाछविधार॥ जिनसमुद्रशोभाअविकार॥ वाजेसारवारहकोडी॥ वजेमधुरनिदुंदभिजोडी॥३४॥ दोहा॥
मानथंभधुजभंभकढवेदीतोरननूप॥ जिनतननेवारहगुणे॥ महलवृक्षजुरूप॥३५॥ चौपई॥ आगेत्रितियको
टजवधारा॥ फटिकमयीनिर्मलनभवार॥ अतिउतंगसोगिरदाकार॥ अरुनवरनमनिनिर्मितसार॥३६॥ चारोदि
शिगोपुरबनिरहे॥ चवरछत्रघराजुतकहे॥ सर्वशोभापूरववतजांना॥ ढंढेस्वरगदेवदरवांन॥३७॥ देरवतजादि

सफलद्रगजबें॥ उपमारहिनजुदिससवा॥ अवरकनिमध्यभूमीकीकथा॥ पटिककोटकेभीतरयथा॥३८॥ गढतेप्रथम
पीठसोलगी॥ फटिकभीतिशोलहजगमगी॥ रतनथंभनिहिपरछवियांन॥ तिनिकीहीपतीतेंनमतांन॥३९॥ ति
हांपरश्रीमंउपदरीरचे॥ फटिकमयीमानोनभषचे॥ भीतिनिर्वाचजुकोठाजेह॥ वारसभातहांकनिलेह॥४०॥
चहुदिशिश्रवाजेपथरहे॥ वीचवीचत्रयत्रयतहाकहे॥ कोठाप्रथममुनीश्वरसंघि॥ दूजेकलपवासिनीदेवी॥४१
तीजेअर्जिकाश्राविकाजांनि॥ चौथोजोतिषत्रियानषानि॥ पंचमव्यंतरकहेविशेषा॥ भववासिनीछठेलही॥४२॥
सप्तममवनपतीसरेलप॥ अष्टमव्यंतरनीत्रियकही॥ नवमेकोठाज्योतिषदेव॥ दशमेकल्पकसिसुरतेव॥४३॥
एकादशममनुषपरवान॥ द्वादशमेपशुसकलवषांनि॥ निरावाधतिहजकेजीनधीर॥ नहींतहांहोहोंहोयअधीरं
॥४४॥ त्रिभुवनपतियहजानिसयजानि॥ आगेओरकनोमतिवांना॥ तिनतेप्रथमपीठगुनधीर॥ वेदुरजमनिमय
अविकार॥४५॥ नीलवरनमणिमयीविशाल॥ सोरहयेंउचहुंशिहिसाल॥ वारतसोभागलेजेचारि॥ तिनिकोंणसो
लहंपथधारि॥४६॥ तहांधरिवसकमंगदेवा॥ सेवकपक्षदेनहैसर्व॥ धर्मचक्रनिजमाथेतिये॥ देषिभानुसिलाजेहि
ये॥४७॥ तहांतेदुतियपीठकादीसहैममा॥ पीशोभाजिहिसीस॥ मेरुशिखरिमानोउतंगा॥ जगमयासूरजसमर
रंग॥४८॥ आठधुजाआठोदिशिजाना॥ तिनिकोशोभाअधिकवषांन॥ तिनिमेंआठचिह्नवरनना॥ चक्रगयंदु
वृषभफुनिटणे॥४९॥ कमलवसनमृगपतिजसरूपा॥ गरुडमालवसचिह्नअनूरूपा॥ सूक्ष्मपाटंवरसंयुक्त॥ मद
नहालेअघमुक्त॥५०॥ तृतियपीठजोतिशोभासे॥ पंचवरनमनिमयझलकंत॥ कीरनजोतिहतिदशाहिशिफलं
त॥५१॥ नापरगंधकुटीनिम॥ यसिर्वरतनकीछविवरनयी॥ चहुदिशिशोचारिदुवारअनूप॥ अरुनवरनमनिम
यविराजरूप॥५२॥ तीनिपीठापरशोभालसे॥ कैधोंतीनजगतशिरवसे॥ परसुगंधवहेजहांवाय॥ शिखिरिमनोग
धुजापहराय॥५३॥ तहांहेमसिंघासनधरयो॥ तितिप्रकाशाकरिअघतमहरयो॥ वहुविधिरतनजोतिफलम
लेमानोजगलक्षिमीमनरले॥५४॥ दोहा॥ चतुरंगलतहांतेरहेअंतरीक्षभगवान॥ त्रिभुवनपूजितवीरजि
न॥ जगशिरसिद्धसमान॥५५॥ समासरनमहिमाअगमरचनाबहुविस्तार॥ तिनिलोककीसंपदाकोकहिपावेपार॥

॥५६॥ मुनिविहंगउद्यमकरेपउडिपारनलो॥ श्रीजीनभवरीभाकथनकोनकरैनरहीन॥५७॥ अथाष्टप्रातिहार्य वर्णन॥पद्धडिछंद॥ राजतअशोकतरवरउतंग॥सोमंदपवनथरहरतअंग॥प्रभुपाइनिकटनाटककरंत॥तसुपहु पगंधषटपदरमंत॥५८॥ प्रभुगरेषिदरप्योसुकाम॥जगदूढयोसरननराषितास॥फिरिआयगिसोप्रभुरसन पाद॥वरषेजुपहुपहुइकहेहार॥५९॥ प्रभुकोतननिभवनगिरिसरीस॥मुखवचनगंगनिकसिगरीस॥॥श्रुतज्ञा नउदधिमिलीआय॥सतसंगनगलहरनिसमाय॥६०॥ प्रभुऊपरचौसठाचवरसार॥ठारंतयक्षनायकजपार॥ क्षीरसमुद्रजलकसलेय॥शिरधारप्रावोछविधरेय॥६१॥ चामीकररतननिमचितजास॥सिंघासनउन्ननअतिप्र कास॥तापरप्रभुराजतउदयभांन॥विगसावतभविजनकमलज्ञान॥प्रभुदिव्यउरांसकततमनोज्ञ॥तहांकोटिभांन दुतिलतियजोग्य॥शशितेंअतिशीतलशांतिरूपा॥भामंडलछविकहिएअनूप॥६३॥तेमाहजगतजोधामांन॥प्रभु जीतयोसुकलकवांनठाम॥तसविजयवजपटशांनिशांन॥तहांशाकालदुंदभीमधुरध्यान॥६४॥ प्रभुछत्रतिनिभुव नउरेन॥सोधवलवरनमुक्तासमेत॥शाहेशिरउपरअतिअनूप॥शशिनियतसहितमनुविविधिरुपा॥६५॥दोहा॥ दूतिप्रकारचनाविविधिकरिसुरेरमनत्याय॥लोकोत्तरलक्ष्मीसकलसमोससरननीछाय॥६६॥ चोपई॥अबसर्वदेवआ गामभयो॥जोजेघोघनरषउरढयो॥वरषायहुपिनिकीबहुकरे॥अतिप्रमत्ततामनमेंधरे॥६७॥तीनिपदक्षिणादी नांमदे॥धूलीसालप्रवेशेलदे॥समांसनकीरचनारेपि॥चक्रितभयोइंद्रमनेषि॥६८॥ मानथंभचेत्यद्रुमतम॥ जहांजिनेस्वरविंनअनूप॥पूजातहांकरीमनुलाय॥अष्टद्रजुतहर्षवढाय॥६९॥फिरिसुरराजसवदेवहिसाथ॥आयो जहांत्रलोकीनाथ॥वर्धमानजिनदृगभरिरूपि॥अपनोजन्मसुफलकरिलेपि॥७०॥अतिउतगसनरीस॥तुंगकाय जनजयोंम॥चारिवदनचहुंदिपरगास॥चतुरंगुलअंतरनभवास॥७१॥फैलिरह्योतनकिरनप्रकास॥कोटिभांन दुतिलोलेजास॥तीनिपदक्षिनादेमिरुनाई॥भक्तभावनतिअंगमझाई॥७२॥सचीआदिसवदेवीसग॥जोअपसरा बहुविधिरंग॥अमरसमूतसवैसमुदाय॥तनपंचांगभूमिसिरनाय॥७३॥अथस्तुति॥दोहा॥रतनजटितसरपति

DR BHAU DAJI MEMORIAL

मुकटजिनस्वदुतिदेतनमतमोलिछबिलजित॥अतिजोसमिरविग्यहहन॥७४॥तहासुरराजिनभक्ति॥वससस्तुतिक रतअलपि॥ज्योनाथनकेहेतवोलेवचनकलापि॥७५॥चोपई॥जैजैसमोसनजाधीरा॥जैजैचतुरानजगदीरा॥जैजे मुकतिकामिनीकंत॥जैजैनंचतृष्यवंत॥जैतीर्थंकरत्रिभुवनईसा॥जैजैधर्मधराधरनीस॥जैजैसुसगमकृतिदाताग॥जैर तनत्रय निधिभांडार॥७७॥जैजैगुणअनंतपर॥धनजैजैनिरविकारभगवान॥जैजैकमकुलाचलचूर॥जैजैशिवतरुवर अंकुर॥७८॥जैजैजगन्नाथतुमदेव॥जैजैसुरअसुराधिपसेव॥जैजैमहागुरुनिगुरुराज॥पूज्यपुरुषपूजिनजिनराज॥७९ तुमयोगिनिमेजोगीजान॥महाव्रतनिमेवतिमहान॥तुमध्यानिनिमेध्यानामहातु॥मज्ञाननिमेज्ञानिकहा॥८०॥अति निविधेतुमजवरसोय॥स्वामिपरस्वामीअवलोय॥तुमजिनउत्तममुनिगईस॥ध्यावंतध्यावहिनिसिदीस॥८१॥धर्मवंतमे धर्मनिधान॥हीनकारनहोतुमहितवान॥तुमत्राताभवभंजनहार॥हंतास्वपरकर्मदुढभार॥८२॥तुमप्रभुअमरनसर नअर्तावा॥सारथवाहीशिवपदसीव॥तुमजगबांधवतुमजगतात॥तुमकरुणानिधिहोविख्यात॥८३॥तुमलोभीप्रभु होअधिकार॥तीनिलोकेराजधार॥तुमरागीउपरमविवेक॥मुक्तिकधूकोलागीटेक॥८४॥जैतपत्रभएजीतेकर्म॥ तीनिजगतमेंजोधापर्म॥तीनिजगतलक्ष्मिपदहसेव॥अरुअतिशयअलखनदेव॥८५॥कीरतिवेलिवदीतुमतनी॥ छाईजगमंडपमैघनी॥औरकुदेवजमिहिकोचाहि॥तुमनिरिशसेवेसुरपाहि॥८६॥कल्पतरुवरचित्रावेलि॥कामधे नुचिंतामनिपेलि॥एसएवएकजनमसुषदाय॥तुमसेवासोभवदुखजाय॥८७॥आजुधन्यवासरयहभयो॥जिवन फलदरसजिनलयो॥आजुपापरुमभएपवित॥प्रभुजात्राकीनिरुकचित॥८८॥सफलहस्तमेरेअभव॥तुह्मरेरचनकम लकोनए॥नेत्रसफलभानेहमआजा॥८९॥अमपवित्रभयोमेरोगात॥तुमचरनाबुजसेवतनात॥वानीसफलभईमु जलआजा॥तुमगुनगायेजलधिजिहाज॥९०॥मेरोमनसफलीवनभयो॥प्रभुकीभक्तिहृदयभरिलो॥पोचारिआधा रीमुनिराय॥तुमगुनपारनअंतलहाय॥९१॥हमगरीशक्तिउनतेंसेतुह्मरीभक्तिकरतउपदेस॥जैसेआम्रकलीपरी वना॥कोकलशब्दकरेहरषाव॥९२॥गीताछंद॥नमोतारनरतनजिवरन मोगुनवारधिनही॥नमोविश्वविभूतिमंडिन॥ नमोगुरुमंत्रतंत्रमही॥नमोपरमातमविराजत नमोलोकोतमसदा॥नमोकेवलज्ञानलक्ष्मी॥अगभूषिनहेतदा॥९३॥

नमोऽर्हद्भ्यो जिनेभ्यो ऽन्तिमकेवलिभ्यो नमोऽस्तु नमस्तिकरा॥ शुभमतिवर्धमान प्रणामेना। नमो तीनिजगत्रनाथ दिग्या॥ तन
मयपापमोहनियं॥ ४॥ दोहा॥ इति विधिवद्रुमस्तुतिकरीनम्योभक्तिउरा॥ तुमप्रशादप्रभुपामियेधर्मसुफलसुदाय॥ ५॥
कालल्धिनियउिनहीभवगतिलद्योनअंत॥ तोलाप्रभुहिदिजीये॥ अपनीभक्तिअनंत॥ ६॥ इतिदर्शन॥ अथाष्टकं॥ छंद
त्रभंगी॥ कंचनमयकरत्ननिर्झीरसमुजललेभरीयं॥ शीतलहिमकारंचर्चिनसारंउारतअनुपमधारत्रयं॥ पूजिनसूर
राजतंदर्पसमाजंजिनवरचनकमलजगमं॥ जगदुःखनिवारंसर्वसुखकारंदायकसरशिवपदपरमं॥ १॥ जलं॥ केशरिकर
पूरंघसिमलयारिसुरभिसुभं॥ सुभगंधमनोगंउपमाजोगंतासुविलेपनकरनत्रभुं॥ पूजिनसूरराजतदर्पसमाजं
निंजवरचरनकमलयुगमं॥ जगदुःखनिवारंसर्वसुपकारंदायकसर शिववपदपदमं॥ गंधा॥ अक्षिनगुमंडिनधवलअखं
डितमुक्तापलसन्निअधिकधरं॥ तिहिपंचहिपुंजकनसुगंजमानकुरतनउदोधरा॥ पूजितं॥ अक्षितं॥ ३॥ मालतिअर
विंदचंपककुंदवेलुगुलाबसिगारतवरकेवरा॥ कनारकेलुकिभारंषुज्जहिपाउरजुहियपरं॥ पूजितं॥ ४॥ पुष्पं॥ नानाप
कवानंघेरसमानंमोदिकलाडुमघरं॥ रत्ननिमयथारीशोभितभारीउपमालारीजगधरं॥ पूजितं॥ नैवेद्यं॥ ५॥ रत्न
निमयदीपंधरतसमीपं॥ अतिउद्योतंजायकरं॥ सवजगतप्रकाअघतमहना॥ राधूमरहितछविताहितहं॥ पूजितं॥
दीपं॥ ६॥ सुगंधागारपूरंतरकपूरंकेशरीचरंमयगिरं॥ इतिआदिदसंगंधूपतरंगंवेषतधूमअकाशभरं॥ पूजितं॥ धूपं॥ ७॥
दाउमनारंगीआम्रविजोरेनिंबवरं॥ तानियरभारंएलासारंइत्यादिकफलमुद्धरनं॥ पूजितं॥ फलं॥ ८॥ जलंगंधसुमा
अक्षितारंपुष्पसुतिनवेद्यभरं॥ दीपादिअपारंधूमबारफलकलपद्रुमशुद्धवरंकंचनमयथारीस्वस्तिकधारीलेसुरना
यसुखकरं॥ पदुजलिछिपहीकर्मनिषिपहीश्रीजिनपदआगेर्घधरं॥ अर्घं॥ ९॥ दोहा॥ इहि विधिपूजास्तुतिकरीप्रण
म्योवारंवार॥ अमरसहितअमरेशनतांधर्मउपायोसार॥ १०॥ वर्धमानभगवानकोसबमुपदृष्टिलगाय॥ इंद्रआदि
द्वादशशवेठेनिजनिजठाय॥ गीता छंद॥ श्रीवीरनाथजिनेशअंतिमचरननवंदितामुनिगनी॥ परमपावनसुधनमितप्र
भुजयुगचूडामी॥ मुखअसुरजिनकीभक्तीआगेगुणअनंतसुजानियो॥ समोसरणविभूनिरुपमअधिकाहिवषानि
यो॥ ११॥ जोत्रिजगमविजिवनसुतारकधर्मअरिताज्ञानकहि॥ द्वादशसभातेअग्रथितहोधर्मउपदेशाकसही॥ विश्व

५८

PAGE(S) MISSING
NOT AVAILABLE

FOLIO NO:.
59

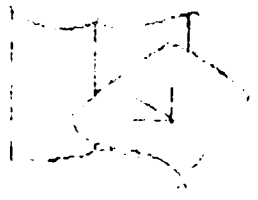

हिकोइ ५५ तोलोंसमोसरनवहुरंग दीठरोमानस्यंभउनंग गलिलितमहचिंताजुअपार मानपहारभयोपुनिछार
५६ भएभावभुभसुषकोधाम अविकोमलमार्दवपरिमान किन्योतहांभवीजुआय दिव्यविभूतिदेषिद्विजरा
५७ दोहा. श्रीजिनवरकेदरसतेंकहानभापतिहोइ गोतममिथ्यामतत्यागेयोपियोसुधारस सोय ५८ द्विजगौत
प्रभुगु नगुरुवसिंघासनपरदेषि चारिज्ञानकलकेतुरतज्योदरपनभुषेषि ५९ तीनिप्रदक्षिनादेप्रभादिनिजकर
डोहाकार चरनकमलकोप्रनमिकेअष्टजभुविधार ६० भक्तिसहितसंस्कृतिकरोतुमजगगुरुगुनपाठ सार्थनामभृषित
सदासहस्रएकअरुआठ ६१ एकनामकेहुअरथजोवधलेहसम्हारि सोक्रमसोंतुमसमरहे नामसुपदविस्तार ६२
युहीजानिप्रभुभक्तिजुतकिमपिकहोतुवनाय अष्टोत्तरशतप्रभुपदधरिस्तवनकरोअभिराम ६३ अष्टोत्तरशतनाम
चौपई धर्मराजेतुमच्चत्रीधर्मे धर्मामहाधर्मेक्रियधर्म धर्मतीर्थअरुकरताधर्म धर्मदेवउपदेशकधर्मे ६४ धर्मकरावन
धर्मसहित स्वामीधर्मधर्मवितनीत धर्मअराधकधर्मसुहृश धर्ममेहवाधर्मीस ६५ धर्मज्येष्टधर्मातानीत धर्मपवतार
धर्मसोभीत धर्मभाजधर्मभसुजान धर्माधिपधीधर्मवषान ६६ महाधर्मतुममहासुदेव माहानदनमहाइस्वरभेव
महातेजअरुमानीमहा महापवित्रमहातपलहा ६७ महाआतमादानीमहा योगीमाहामहावृतगहा महाज्ञानमहाध्या
नीसोइ महाकरमहाकोविदजो ६८ महाधिरमाहावीरसुजान महाअर्चमाहाईसवषान महादावमहारक्षकक
होमहाकर्ममाहीधलरहो ६९ जगनाथजगकर्तादेव जगकर्ताजगपविगुनसेव जगतज्यएजगमान्यजुवसे जगतसे
व्यक्तयनमितनवे ७० जगतपूज्यजगस्वामीधार जगवासीजगगुरुअविकार जगवांधवजगजीतजपार जगनेता
जगप्रभुअवधार ७१ तीर्थकृततीरथभूतमा तीरथनाथतिर्थवितमा तीर्थंकरतीर्थआतमा तीर्थइशतीर्थकरनम
७२ तीरथनेतसुतीरथज्ञान तीरथहृदयतीरथपतिजान तीर्थराजतीर्थोकितसार बोधवतीर्थतीर्थकरतार
७३ मुनविश्वज्ञविश्वतत्वज्ञ व्यापीविश्वविश्ववितभाजविश्वअर्चिविश्वेपतिनमा विश्वनाथविश्वाद्भवषानि विश्वध
त्यविश्वःकृतजानि विश्वआराधिविश्वकेईश विश्वालोकपितामाहाधीश ७४ विश्वअग्नीग्ने विश्वआतमा वि
श्वअर्चिविश्वेपतिनमा विश्वनाथविश्वाद्भवषानि विश्वधत्यविश्वःकृतजानि ७५ होसर्वज्ञसर्वलोकज्ञ दर्शीसर्व
सर्ववितपज्ञ सर्वआत्मासवधर्मेश सर्वेःसर्वबुद्धिउपदेश ७६ सर्वदेवधिपसवलोकीश सर्वकर्महृतहोजगदिश सवदि

याकेईश्वरपूर्म सर्वधर्मवक्तसर्मसुसर्म ७७ दोहाइत्यादिकतुमनामसुभकहेमनोसवषानि शिववांछानामावलीदीजेमुहिसुनषानि
७८ चोपई भोप्रभुतुमप्रतिबिंबसुथान रुतिमऔरअकृतिमजान हेमरतनमयत्रयजगमांहि नमोचनअमुलनसाहि ७९
तुमप्रतिमाजिनवरदेव जेपूज्येथुतिकरिनितसेव भक्तिसहितप्रनमैंशिरनाइ तेत्रिलोकअधिपतिपदपाइ ८० तुमप्रतक्ष
पापभोदेव पूजास्तुतिनुतिकरिपदसेव निसदिनजोप्रनजोप्रनमैतुमपाइ रुहिअसंष्यफलकहीनजाय ८१ तुमतनिरुपम
राजतसार तीनिजगतजनप्रियकरतार कोटिभानतेंदुतिअतिहोइ व्यापितमइदेशादिशिसोय ८२ हेप्रभुदीपतिसम
तिसरूप विक्रियरहितचतुर्मुखरूप अंतरहितगुणनिर्मलसोध वानीषिरेसभासंबोध ८३ तुम्हरेचनरपरेजिहिथांन
सोइसफलभूमिपरवान जगमेंतीरथउतिमसोय वंदनीकमुनिसुरनरहोय ८४ गभजन्मदीक्षाकल्यान जहांहोय
प्रभनिर्मलथांन पूजनीकसोसेत्रपवित्र तीरथपरमजगतमेंमित्र ८५ केवलज्ञानअनंतप्रकाश विश्वदीपउद्योतहिजा
स लोकालोकजुव्यापितलयो अरुभव्यनिप्रतिमुषदेकह्यो ८६ तुमप्रभुतीनिजगतकेस्वामि सर्वतत्ववेदीतशिवगामि
विश्वव्यापिजगनायकदेव प्रणमिपदसुरअसुरजुसेव ८७ केवलदर्शनव्यापितभयो अंतातीतजगन्नुतजयो लोकालो
कदेषिनिजनैन ८८ तुमअनंतवीरजभवांन अंतरहितकोलहैप्रवांन सकलदोषकरिरहितजुठये उपमातितविरा
जितभये ८९ सुषअनंतप्रभुप्रापतिभयो निरावाधतननिमरुठयो नरसुरअसुरप्रगटनहिहोय सोसुसर्मअक्षयतुमजो
य ९० जोषुसुविषपहतेजगमांहि सोतुमकीअतिसेभएआंहि अरुप्रतिहार्यसुअष्ट सहीत साहैंप्रभतनपरमपवी
त ९१ इत्यादिकतुमगुणअधिकार बुधजनवरनिनपार तुमअस्तुतिजुकथामेंकहो हौअशक्यउपमानहिल्हो
९२ भोप्रभुनमौजोरिजुगपांननमौदिव्यमूरतिगुनभांन जिनसर्वज्ञनमोशिरनाय नमौअनंतगुणानिकेराय
९३ नमोदोषहताजिनदेव नमोदोषहर्ताजिनदेव नमोजगतबांधवकरिसेव मंगलभूतनमोपददोय लोको
तमप्रणमोफुनिसोय ९४ नमोविश्वसरमागतदृश नमोविश्वमूरतिजगदीश प्रणमोवर्धमानजिनराय प्रणमौ
वीरस्वामिगुणगाय ९५ प्रणमौंसनमतिमतिजुगेंदो दातार नमोविश्वहितकरतासार नमोजिगगरुचरनमहेश
नमोअनंतसुषवारधितेस ९६ इहविधितुम्हरोस्तवनवषांनी किन्होभक्तिरागउरआनि तुमसुषदायकश्री
पविसेव जाचेतीनिलोककभविजीव ९७ एकजनमसुषकेतककयो सदासासतोपदतुमलह्यो सुषअंत

तप्रापतिमरआय तीनिजगतजिपप्रनमेपाय ९८ गीताछंद त्रिपदशपतिसुवचरनपूजतधर्मतीरथउद्धरें कर्मजु
अरिजुनाशकिन्यो सुभटपूदतवउदरें तुमप्र।तिनत्रिलोकतारकगुणनिधिकरिलेषिये संसारसागररुलतजे
जियवुमेंजिहाजविशषिये ९९ ज्ञानदर्सनरत्नपायोवुधपतिसेवाकरे कुमतशत्रुनिवारिकेप्रभुधर्ममारगकोंधरें
कह्योगौतमस्तवजिनकोचरनकमलनिकोगह्यो नवलइमकरजोरिविनवैभक्तिजुतुमबलह्यो १०० दोहा इत्यादि
कप्रभुस्तनवकरि पूजावसुविधिधारि निजकोठामेंथिरभसनमुषहिनिहनिहारि १ चौपई अवश्रीगौतमप्र
भुकरेव प्रभुकोफेरिनभ्योकरिसेव भोस्वामीतुमजगतमहेश कहिएसभाधर्मउपदेश २ जीवतत्वकहिएप्रभुजादि
ताकेलक्षिनकहाअनादि कहाअवस्थाकहिएसोय सुनअरुभेदवतावोदोय ३ तिनिकीकहाकहियरजाय थितिसं
सारमोषकोंपाय अजीवतत्वहैकेपरकार सैवकेसुनकहिएविस्तार ४ आस्रवआदितत्वजेऔर केसुषकरताके
दुखठोर तत्वकौनफललक्षीतकौनकरताकौनकहोप्रभुतौन ५ कौनतत्वसोंसाधेमोष कौनकरमनारकदुख
पोष कौनकरमतिरजंचजुहोय कौनक्रियाकरिस्वर्गसजोइ ६ किंसुभकर्मभनुषगतिलहै कौनहानतेभोगजुलु
लहै स्त्रीलिंगछीनकिमहोय सोजाचारूनतावोमोहि ७ पुरुषवेदतेनारीहोथी दूराचारभषोप्रभुसोइ
पंगुबहिरोपुनिकोय विकलमूर्तिमूकाकिमहोय ८ एगीकोयनिरागीजीव रूपवंतनिनुरूपअतीवदुभगसुभग
कौनविधिजानि सुधीकुधीमूरिषकिमिमानि ९ अशुभचित्तसुभचित्तीकैम क्योंभोगीअनभोगीजैम
धर्मवंतअरुपापीकहै धनीनिर्धनीकिहिविधिलहो १० कौनकर्मजिपल हैवियोगकौन धर्मतेंसजनसंयोग
किंदाताकिंकृपनजुहोय किंसगुणवंतविनागुणकोय ११ परधाकरनरकिहिविधिहोय अरुस्वामिसलहैकि
मिकोय कौनपापतिपुत्रनजिये अरुवंध्यानारीकहाकिये १२ केसेपुत्रहोयचिरजीव किमकातरकिमधीर
अतीव कौनकर्मतेंनिंद्यअपार किमिआचरनलहैजसभार १३ शीलवंतनरकैसेहोय अरुकुशिलकिमिपा
पहिजोय क्योंकरिसतसंगतिकोपाय लहैकुसंगतिकिहिविधिआय १४ न्यायविवेकीकिहिपरकार मूढ
होयनरकिमिसंसार लहैश्रेष्ठकुलकहाकरिजीव कौनपापकुलनिंद्यअतीव १५ मिथ्यामारगमेंअनुरा
ग जिनवर धर्मरहितगुनत्याग दुष्टकार्यअशक्तकहेव कौनकर्मयहकहिएदेव १६ मोक्षमार्गकोफल

प्रभुकहो कौनवासकहालसिनगहो जतिधर्मकहिएउतकृष्ट श्रावगतनोभाषियेइष्ट १७ सर्पिनिषटकाल ताके
भेदकहोसवहाल तीनिलोकविवरनअवभासि औरसलाषापुरुषप्रकासि १८ भूतभविष्यतवर्तजुमान तीनि
कालकहिएभगवान वहुतउर्कोकहेवढाय द्वादशांगसवभेदकहाय १९ सोमवक्रपानाथउच्चारि दिव्य
ध्वनिवानीसुषकारि भव्यनिकोंउपकारकसोय सुरगमुकृतिपदप्रापतिहोय २० गीताछंद यहभांतिगौतम
प्रश्नकरिवहुतलआदिजनेकही सभाद्वादशहरषउपन्योरंकमानोनिधिलही इकृतभविधनिधन्यव्यास
दितुमहितुमहिउतिमजसलह्यो विश्वहितउपगारकरतावचन अमृतपरिठयो २१ इतिश्रीवर्धमानपुरा
णेभाषायांगोगमनरूक्तिकरणेप्रश्नकरनीपकथावर्णानोनामद्वादशमोअधिकार १२ दोहाश्रीसनमतिकेव
वलिउदयनास्योतमअज्ञान विश्वनाथप्रणमोसदाविश्वप्रकाशनभान १ अवप्रभुदिव्यध्वनिभई सुरगुनमि
तसुषदाय चवुरवदनआरंभकियसघसंगसमुदाय २ तालुहोठसपरसविनाअस्खिररहितसुगंभीर सव
भाषामयदिव्यध्वनिसींधुगरजसमधीर ३ चौपई प्रथमहि स्यातआस्तजानियेदूजो स्यातनास्तिमानिये
दूजो स्यातनास्तिमानिये तिजे स्यातआस्तिअरुनास्ति चौथे स्यातअवक्तव्यप्रशस्ति ४ पंचमेस्यात्अस्तिव्य
नास्ति क्तव्य अठम स्यातनास्तिअक्तव्य स्यातअस्तिजुतजानि अव्यक्तव्यसातपरवानि ५ अवइनिकोकछु
वरननकहो यथाशक्तिआगमवुधिलहोस्यात्कथंचितकहियेसोय आपुचतुष्टयकोअवलोय ६ द्रव्य
क्षेत्रअरुकालजुभाव तिनिकेभेदसुनोउहराव जोकछवस्तुद्रव्यसोजानि द्रव्यवगाहनक्षेत्रप्रवानि ७ दव्यप्र
जायकालमजूरजाद्र द्रव्यस्वरूपभावउनमाद सोयहभावचतुष्टयधार घटद्रष्टांतअस्तिहेसार ८ जो
परचतुष्टयप्रेक्षाजानिस्यातनास्तितकोपरवान जैसेघटापर घटकोधार घटकीनास्तिहोयतिहिवार ९
ज्योंघटरूपपटहिमेदेषि घटपटएकहिवस्तुलेषि परअरुआपुचतुष्टयसाथ आस्तिनास्तितीजोसुतगाथ १०
आस्तिनास्तियोवचनक्रमंत कहोनजायद्रव्यपरजंत अव्यक्तव्यसुचौथोभेद असेहीत्रयभेदनिषेद ११ आस्ति
अव्यक्तव्यपंचमोजानि नास्तिअव्यछटमपरवान आस्तिनास्तिअव्यक्तसातमोस्यात्सवहिथांनकवर्तमां १२

यहसंक्षेपकहेगुनजास अवकछभेदधरोंयहपासहेराव हिप्रथमहिजानियेे नाहिद्वितियभेदठानियेे १३ हैनाहि
जोसुनिभवहैनाही अव्यक्तचौथेव हैकरिहैहैनाहींकरिहै परअव्यक्तपंचमगुनेधरिहै १४ नाहिकरिनाहीहैना
हीकरिनाही अव्यक्तछठोही हैनाहींहैनाहीअव्यक्त व्याही १५ दोहा इहविधिसातोभंगयहएकएकभ्रमहर्न
स्यादवादकरलसाकरणजगतमनासहिकर्न १६ चौपई सुनिगौतमअवमनवचकाय प्रश्नतनौउतर सुषदो
यसप्ततत्वसववरनोभेद जातेंतुममननासैषेद १७ जीवअजीवआश्रवरुबंध संवरनिर्जरमोषप्रबंध एहीसप्त
तत्वपहिचानि पापपुंण्यमिलिनषपद जानि १८ अथजीवतत्वनिरूपण अवसुनिजीवतत्वनिरधार ताकेहैन
वभेदअपार जीवअवरउपयोगप्रमांन मूरतिविनुकर्तापुनिजान १९ भुगतादेहप्रमांनि संवे थितिसंसारमोहि
हैजवै उरधगामीसिद्धिसरूप सुनितिकोविवरनगुनरूप २० अथप्रथमजीवभेदः दोहा चारिप्रानव्यवहारनयनि
हैचेचेतनि एकइनिसोजोजीवतरहैसोई जीवविवेक २१ चौपई इंद्रीपंचप्रानअवधार वलदूजोजानो निर
धार आवतीसरोकहिपप्रान स्वासउस्वासतुरिथपरवान २२ मूलप्रानएचास्वोजांन एकेंद्रीकेकहेसमान जि
भ्याप्रानसोयजुतसोय हैइंद्रीषटप्रानजुहोइ २३ नाशामिलेसोसातएजांन तेइंद्रीकोंलहोसुजान चक्षुसहि
तआठोगनिलेव चौरेंद्रीकेंप्रानलहेव २४ काननिजुतनवप्रानविशेषि पंचेंद्रीयअसैनीलषि मषहीतहै
सवदशप्रान सैनीपंचेंद्रीपरवांन २५ दोहा पाचप्रानइंद्रीजनितमनवचवलएतीन आयुस्वासउस्वासग
निएदशसुनहुप्रवीन २६ सोरठा इहविधिजीवैजीव तीनिकालजगमेंप्रगट जवशिवलहेसदीव सुष
साताचितवोधमय २७ अथउपयोगः पद्धडीछंदः उपयोगभेददोविधिवषांनि हैदरसनचौरो आठज्ञान
चक्षुहिअचक्षुऔरुअवधिधारकेवलजुतदरसनइहिप्रकार २८ मतिश्रुतजुअवधिपुनित्रयअज्ञान मनपर्यय
केवलजुएहनांन मतिश्रुतपदोयपरोक्षभेस अवधिमनपर्जयप्रतक्षदेस २९ अवकेवलज्ञानप्रतक्षसर्व सोलोका
लोकविलोकीपर्व जहांअनंतदर्विपजांयहोय कलकेसवएकहिवार जोय ३० दोहा दर्शनचदवसुज्ञानसवए
व्योहारसरूपनिहचैचेतनिसुद्धमयदरसनज्ञानअजनरूप ३१ अथअमूर्तीक चोपई वर्णापचरसपंचदुगंध

आठफासगुणवीसप्रबंध पुद्गलीकगुण सबैं अतीन इनमेंमूरतिवंतसुजीव ३२ यहव्योहाररूपमानिये निहचै
ओर भेंदजानिये जबइनहीकोत्यागकरै अमूरतीकपदतबजियधरै ३३ अथकर्तापुद्गलसंबंधीजवजी
व नोकर्मकौंकरेसदीव यहअशुद्धनयकरिव्योहार रागदोषउपजावनहार ३४ दोहा निश्चयकरिकेजीवजव
धरैशुद्धयहभाव चेतनिपदप्रगटैतबैमुक्तिहोयशिवठाव ३५ अथमोक्षका चौपइ प्रानिसुषदुषयाजगमांहि भुगतैआ
पकर्मफलपांहि सोव्योहाररूपेपइवांन निश्चयसुषभुगतैशिवकथान ३६ अथदेहप्रमानदोहा देहमात्रव्योहारनय
कहोवीरजिनराय निश्चयनयकीदृष्टिसोंलोकप्रदेशीथाय ३७ चौपइ धरैथूलजबयहेशरि तबविस्तारकरैगुन
धीर सूक्ष्मदेहपायकरि जीव संकोचनतिहिमात्रसदीव ३८ जैसेदीयअधिकछविधरै भाजनमानउदोतसु
करै समुद्घातविनुयहपरवान ताकोभेदसुनोगुनवान ३९ असमुद्घातवर्णनं दोहा कारमानतेजसद्वि
थिवाहिरनिकशिप्रदेश आवैवेहीमूलतनसमुद्घातइहिभेश ४० सातमेदताकेकहे प्रथमवेदनानाम द्वी
तीयकषायविकुर्वत्रयमारनांतअभिराम ४१ पंचमतेजसछठमपुनि आहारकनुधाम केवलसप्तमसातो कहे समु
द्घातकेनाम ४२ अथवेदनासमुद्घात अडिल्ल दुसहवेदनापीर होयकहु आयकै कढैजीवपरदेशमन हि अ
कुलाइके औषधितनिपरसिफेरितनआयही समुद्घातयहप्रथमवेदनानामही ४३ अथकषायसमुद्घात१
काहूरिपुकोकरैविध्वंसनयकै बिहिरनिकसैअंसजीवकेआयकै अतिकषायबलहोय अशुभभावनिवहे
समुद्घातयहद्वितीयकगतिकोपथगहैं ४४ अथविक्रियसमुद्घात २ धरैविक्रियारूपविधिपरकारसोनिक
सैब्रह्मप्रदेशसवेदनिभारसो देवनारकीमनुषलहैपशुनाहिहै समुद्घातयहवेदनियभेदपहिचानिहे ४५
अथमरणांतकसमुद्घात ३ काहु जियकैमरणसमैउपजैसही बाहिरनिकसैआयजीवपरदेशही बांधीग
तिकोपरशिआयनिजथांनही समुद्घातघातमहकह्योनुरियतसुजानही ४६ अथतेजससमुद्घात४
काहमुनिकोंआयक्रोधउपजैअनो प्रगटैबांयेकंधपुतरतेजसतनो ज्वालताहिविकराल सिंदूरअकार
है बारहजोजदीर्घनवजुविस्तारहै ४७ द्वारावतिसमप्रलयभसममुनियुतकरै तेजसअशुभानन

कषायनिस्तरै शुभतेजससुनिभेददयामुनिवर वदैदुरभिक्षादिकयेषिशुभहिआकृतिचदै ४८ कंधदाहिनेनिक
सिपूर्ववतपोतरा रोगशोगदुषसकलनिवारिसुषोतराफुनिनिजथांनकआय अंगुमुनिसुषकरै समुद्घातदुइभे
दपंचमोंअनुसरो ४९

DR BHAU DAJI
डाक्टर भाऊदाजी इत्यारक्यस्मारकम्
MEMORIAL

अथ आहारकसमुद्घात ॥५॥ करतसाधश्रुत अरविचार आवही ॥ तहांसंसैअतिहोयचित्तमांवही ॥ निकटभूमिकेमांहिके वलीहोनही । कीजेकौनउपायधर्मनासेकही ॥५०॥ तबमुनि मस्तकप्रगटि आहारकतनधस्यौ एकहाथउतमानजिनेसरउच्चस्यौ ॥ फटिकवरनमनहरनजाइजहांकेवली ॥ सबसंदेहमिटाइथानआवैवली ॥५१॥ अथकेवलसमुद्घात । ५॥ तेरमगुनके अंतकेवलीनाहकौं रह्यौपूर्वसंसारभ्रमनकछुताहकौं वाहिरनिकसिप्रदेशअसंषसोजानिये दंडकपाटसमानत्रिलोकप्रमानिये ॥५२॥ दोहा । प्रथमसमयमेंदंडकरिदूजेकरैकपाट तीजैप्रतरचतुर्थभरिपूरलोकसंपाट । ५३। पंचमसमयविवर्णकरि षंटमंथानवतेह ॥ कपाटसप्तमैअष्टमैंदंडप्रथमतनजेह ॥५४। मारणांत आहारपुनिएकदिशागमनेह समुद्घातपर्याप्तको अवरदशहूदिशिगततेह ॥५५॥ अथसंसारी ॥ भ्रमतजीवसंसारयह-चौविसथानकमांहितेवरनौसंक्षेपकरि श्रीजिनआगमपोहि ॥५६॥ गतिइंद्रीअरुकायपुनियोगहिवेदकषाय । ज्ञानसुसंयमदरसनौलेस्याभविधाय ॥५७॥ समकितसैंनिआहारएमा रगनादशधारि गुनस्थान-चौदा अवरजियसमासकुनिधार ॥५८॥ परजापतिप्रांननिसहितसंज्ञाअरुउपयोग ॥ध्यानजुप्रत्यय जातिकुलसबचौवीसनियोग । ५९॥ अथगतिवर्णनं ॥ चौपई ॥ चारौगतिभेमटकैजीव ॥ षपैकर्मनारकगतिलीव ॥ पुनितिरयंचसहैविषभूष । मनुषकोबहुदुषसुषऊष । ६०। सुभभावनितैसुरगतिपाय इहविधिभ्रमैंजगतमेंजाय । अब नारकगतिकोसुनिभेद ॥ जिमिभविजननासैभ्रमषेद । ६१॥ अथनरकगतिवर्णनं । अधोलोकमेंनरकजुसात तहांनारकीजिवउतपात प्रथमहिमातनरकतनलहै । दोनैं आठधनुअंगुलछहै । ६२ सागरएकआयुउतकृष्टदशहाजारकीजिमउतपात प्रथमहिमातनरकतनलंहे ॥ दोनैं आठधनुअंगुलछीहशहजारलौंकहीकनिष्टउष्णसुभारहैतिहिथान । सहे वेदवेपरवांन । ६३ ॥ महाकालदूजौतनधार । साटपंद्रधनुअंगुलचार । सागरतीनिआयुगनिलेया । उष्णसुभावसदादुष देय । ६४। तीसरयनरकअतियदुषएह । सबाअधिकविंशतधनुतेह । सागरसातआयुपरवांनउष्णमहाहैदुषकीषांन । ६५। तुरियमहारौरवदुषसहै । साठेबासहिधनुतनलहै ॥ महाउष्णताकहियनजाय । सागरदशथितिहैअधिकाय

॥ ५५। सातमी कपंचम दुषमनो धनुष सवासै तनुतहांनमो सत्रह सागर की थिति है ॥ उष्ण सीत दोऊ विधि सहै। ५७॥ असि कपत्र छ
म दुषदेय। धनुष अढाई सैतनु लेय। बाइस सागर आयुल हाय। शीतत हांथ्यापे अधिकाय। ६८ कुंभी पाक सप्तमो भनो ॥
धनुष पांचसै तनु हा बन्यो। तिस सागर की थिति तिजा हांशीतम बहातन पीडै महा। ५९ सप्त मनरक नरकि याजीव तिजि की सरग्ग
संख्य गमीव। तिनितै छठ मनरक गनेव ॥ संख्य गुनैसव जांनी तेव ॥ ७०॥ तिनितै पंचम भूमि प्रवांन। संख्य गुनैं तीजे पहिचांन। चौथे
तृति पहू तिय षहि लेव। ऐसैं हीमव तिय गुनितेव ॥७१॥ प्रथम नरक मैंजे दुमरहे तिहितै दुगन गुनगनि कहे ॥ सकल भेद पूरव
वरनयो। पुनरुक्ती तै नाहि भयो ॥७२॥ दोहा। सातनर कके जानियै पटल सकल गुन-चास तिनिमैं उपजैनारकी थिति लेलाष
चोरास ॥७३॥ अथ तिर्यंचगति वर्णन ॥ चोपई ॥ अब सब मुगति के मुनी भेव ॥ ज्यों भाष्यो है श्रीजिन देव। दोऊ सम
द्रव्य भूषांहि। क्षेत्र एक सैसतरि माहि। ७४॥ आधे चरम दीप के अंत। संभूरमन उदधि पर। जंत सैनी पंचेंद्री तिरयंच ॥
और सैनी मन नहिरंच ॥७५। जलचर थलचर नभचर होय। अरु विकलत्रय उपजै सोय पृथिवी पानी तेज रु वाय ॥ वनस
ती दुइ भेद लहाय ॥ ७६ प्रत्येक हि साधारन सोइ तिनि के भेद सुनो अब लोय। सुप्रतिष्ठित उपतिष्ठित जान ॥ सुप्रतिष्ठित
उपजै तिहिथांन ॥७७॥ तिनिमैं साधि निगोद जु होय सुप्रतिष्ठित जानो तरु सोय। साधारन निगोद दोजान। इतर सूक्ष्म
बादर सब थाय ॥७८ नित्य निगोद गोलक निपंचजीव राशि जानो सब संच ॥ अब सुनि भोग भूमि पशु कहे ॥ और कुभो
ग भूमि मैं लहे ॥७९ मनुष्य अर्ध मैं बाहिर जांन। दीप अढ़ाई संख्य सबै पर जांन ॥ सैनी पंचेंद्री तिरयंच ॥ थलचर नभचर होहि
सदंच ॥८०॥ जलचर इति थान कहि कहीं ॥ विकलत्रय नहिं उपजै सही। वनस्पती अप्रतिष्ठित होय ॥ नित्य नि गो
दतरु कहि सजोय ।८१॥ सूक्ष्म पांचथावर जेह। तीनिलोक सब थांकहते हसब की थिति उनकृष्ट बषानि। तीनि पल्य पंचेंद्री जा
न।८२ चौरेंद्री छह मास जु कही तेंद्री दिन उनचास जु सही ॥ बारह वरष छिइंद्रि लहै ॥ अब एकेंद्री थिति को कहै ८३॥ इक्कासस हस्स वर
ष पृथवीय सात हजार जलहि को लेय ॥ तिनिहि नाहे अग्नि जु आवति नि हजार खाउ को थाव ॥ ८४॥ वनस्पती प्रत्येक वषांनि। दश
हजार वर षैं थिति जांनिय हउतकृष्ट आयु परमान। अब जघन्य सब को उनमांन। ८५। अंतमुहूरत लौं थिति रंच ॥ पृथीचर साधा
रन पंच बादर सूक्ष्म दस पर वांन प्रत्येक हि गेरमपहि चानि ८५ छ हजार बारह धरि सीम छ्यासठि सहस्र इक सय वतीस ॥
विकलत्रय जु असैनी दीस। असी साठि चालिस चौबीस ॥८७॥ छ्यासठि सहस्र इक सय बतीस ॥ जनममरन भाष्यो जगदीस। का
यभेद अब सुनहु मुजान। नवसहस जोजन परवांन ८८ ॥ योजन एक भ्रमर तउ क्रूरती निकोश को कारन षजूर ॥ बारह जोज
न सप्त हि धार ॥ अब एकेंद्री काय विचार ८९॥ प्रथवी जल प्रत्येक मुदोय ॥ असंख्यात जोजन अवलोय ॥ अग्नि पवन की देह
जु कही किंचत ऊन देह भरि लही ९० यहउतकृष्ट काय पर वांन ॥ अब जघन्य को करौं बषान शाठि सीत मक्षि हिलघु रू
प। मक्षिकादि चौंदुंद्री नूप ९१ कुंथु आदि ते इंद्री जानि ॥ अब धरु बाहै इंद्री मानि अंगुल एक असंख्य जु भाग पृथी-चौ कय नस्य
ति सा। ९२॥ पृथ्वी जीव मसूर अकार जल को रूप बूंद समधार ॥ सूई तत तेज हि की काय जु आकार शरीर जु वाय ९३ तरु प्र
त्येक हि भेद अनेक साधारन सूक्ष्म सब पुसेक ॥ अब सब जीव नि संख्या जांन जै सो जिन मासन पहिचान ९४ असंख्यात पचेंद्री पस
ति नि मैं संख्य असैनी लख्म तिन हीतैं चौरेंद्री जीव ॥ संख्य गुनै ता को करिलीय ९५ ति नतै तै संख्य गुनै तेय लख। ति नतै संख्य गुनै ते यलख। ति
नतै संख्य गुनै येपलख। एकेंद्री की पृथिवी-चौ क संख्य संख्य गुन क्रम कहि थोक ९६ वनस्पति प्रत्येक थांन सब देव नि सम थ्या जांन
ति नितै गुनै गुनै पहि चान। साधारन इतर नित्य जान। ९७। सिद्ध सर्व अनंता नंत। लो है तीनि लोक के अनंत। ति नाहि अनं
तानंत गुनेय। नित्य गोदए क नवुतेय। ९८। इक बपुतै सब गोलु क जीव। नतानंत तहां जु सदीव। तिनि के भाग अनंतानंत
॥ थिति सिंसार अभव्य बसंत ॥९९॥ तिनहि अनंत भाग मैं जान। भव्य जीव राशि वलहै निदान ॥ सिद्ध नंत तावठैन कदा।
राशि निगोद घटै नहि सदा। १००। अथ मनुष्य गति वर्णन ॥ नरगति भेद कहो कहुतेह दीप अढ़ाई मैं उपजेह ॥ भोग
भूमि उतकिष्ट बषांनि ॥ उपजै युगल सदाति हिथान ॥१॥ तीनि को श की काय धरेह ॥ तिनि पल्य की आवु गनेह ॥ ती
निदि वस मैं लेय अहारव। दी फल वत नहीं निहार ॥२॥ प्रथम भोग भूमि नर सबै ॥ दोय को श को वपु धरितबै ॥ दोय प

सजीवन तसु आव। दोयदिनागत भोजन भाव ३ अधन्य भोगभूके सब नरा। एक कोश को तनुज हा धरा। एक पल्य की थिति धरितेह। नित प्रति भोजन कल्पद्रुम देह। ४॥ और कुभोग भूमि नर कहे॥ पशु यतमुष सब केसर दहे॥ भोगभूमि वत आवरु काय। मति का भोजन लहै सदाय। ५॥ स्वादु शर्क रा वत तसु जान॥ अधि के की हिर दे न हि सान वि देह सकल कर्म हि भूषान। काय पंच शत धनुष प्रमान। ६॥ यहा सास ते मंदिर वसै॥ धन कन पूरन सब सुख लसै दिन प्रति भोजन षट रस महै॥ आयु कोटि पूरव की लहै ॥ ५॥ दोहा॥ सततरि लष छप्पन सहस्र तीकोटि गत वर्ष पूरव इक संख्या यही अंक चतुर्दश पर्ष। ८॥ सतरि लष छप्पन सहस्र तने कोडा कोडि॥ एक कोटि पूरव यही अंक इकीस हि जो डि ॥ ९॥ चौपई॥ आरज खंड काल षट महै॥ सुख दुख करि पूरित निरवहै॥ एक को श उत्तम कुल हि देह॥ एक हाथ को जो धि न भनेह॥ १०॥ तीन पल्य आयु उत किद्द॥ षोडश वर्ष हि काहि क निष्ट॥ सक द्वय उ मले क्षानि मैं नर होय धर्म विना हिं ऐ नर जोय। ११॥ आयु काय को यह परिधान॥ भरधै राव त आर्य समान मले क्षत्रि दे हानि मैं जलेषि॥ आयु काय उत ही सम पेषि॥ १२॥ दोहा। भोगभूमि त्रय काल त्रय चतुर थ काल विदेह॥ पंचम काल मले क्ष सब छठम नारक तेह ॥ १३॥ आरज दश सब सब मांहि मैं बरतैं षट हू काल घटिय ति वृद्धि धरि देह। थिति लहै बहु तन जंजाल। १४॥ चौपई॥ व्याल सब नर जीव नि सुनो गर्भ सम्मूर्छन दुइ भौं॥ गर्भज सरस सब र धान पल्य भाग सौं ति हि उनमान। १५॥ ताके अंक उ नीस हि जोय ताम ैं तीरी भाग जु दोय। एक भाग है पुरुष नि दान॥ ताही मैं जुनपुंसक जान। १६॥ उक्तंच॥ गाथा सप्ता दिन दिदो॥ अट्ठ कं छक्क हो णिपंचकं॥ चदु दुग छक्कं च दुरो॥ तयत थ छक्कं च तहा मणुस्स रासी पमाणं तु १८॥ अंका॥ ७६२२ ८१५२५१४२५४ ३३५५८३५४ ३९५० ३३५ चौपई॥ सम्मूर्छन नर कौ उनमान॥ कहे जिनागम संख्य प्रमाण ॥ महा संक्षेप मनुषगति जान अब देवनि को करौ बखान। १९॥ अथ देवगति वर्णनं॥ भावन वासी दश विधि धान असुर कुमार त्र थम पहि-चान। काय धनुष पच्चीस तंग। तुरिय नरक लौ विक्रिय अंग। २०॥ अवधि भवन त

सुनि भेव। काय धनुष दश उत्तम लेव॥ तीनि पल्य सब उत हि आउ॥ और जघन्य सहस्र दश आउ॥ २१॥ सोठे बार हू दिन ज व जाहि॥ मन सा हार लैं हि सुख चाहि॥ नेत्र विषय जोजन नर कोडि॥ देखै मेरु जूलिं का जोडि॥ २२॥ तिन्हि देव निजिय रा शि वखानि। असंख्यात गुन कोरपै बान। अब अंतर है अष्ट प्रकार॥ विमान असंख्य नि हि निरधार ॥ २३॥ प्रथम हि सुख परिवार भोजन॥ साठे-चारि जाति पर जान॥ किं नर किं पुरुष जु दोय। महोरग गंधर्व हि सोइ॥ २४॥ आ धे पक्ष सबै सुभ कहे॥ अशुभ भूत नामी॥ आधे लहै। राक्षस भूत पिशाच हि सर्व॥ यहै अष्ट विधि व्यंतर गर्वे॥ २५॥ एक पल्य उत कि ष्टी आव॥ दश सहस्र है जघ नि लषाव॥ दश धनुष हि सब व्यंतर काय विक्रिय करैं॥ भवन द शजाय॥ २६॥ नेत्र विषय जोजन पच्चीस॥ सात दिवस मुदिन भोजन की श॥ असंख्यान शिय राशि प्रमान॥ अब ज्योतिष देव नि पहि-चान॥ २७॥ सूर चंद्र यह न ष त जु तार सम धनुष की काय विचार॥ आयु पल्य चतुर्थ है उत कृष्ट। वर्ष सहस्र क हिए क नि ष्ट॥ २८॥ साठि सात दिवस गत जबै॥ मन सा हार लहैं तासबै॥ नेत्र विषय जोजन संख्यात॥ अधऊरध स यंतैं गात॥ २९॥ ज्योतिष देव जीव का राशि॥ असंख्यात गुन जिन वर भाशि॥ दे वति सहित भोगवै भोग॥ भवन त्रिक को यह संयोग॥ ३०॥ अथ कल्पवासी देव वर्णनं॥ सौधर्म द्वशान जुदोय कल्प प्रमान सप्त कर होय॥ अब दोय सागर उत्कृष्ट॥ सागर एक हि छोजु क नि ष्ट॥ ३१॥ काय सोसुर्वै मुगते जास॥ दोय पक्ष गत लेहै उसास॥ दोय सहस्र वर्ष हि जब जाहि॥ मान सीक आहार क रहि॥ ३२॥ प्रथम नरक लौं विक्रिय लहै॥ तद्वि प्रमा ने अव धि सर दहै॥ सन त कुमार म हेंद्र वखान॥ द्वै कर उन्नत तन उन मान॥ ३३॥ सागर सात जु आव लहैव॥ अस्पर्श त सुष काम भनेव॥ सात पक्षि बीते उस्सास सात हू॥ सात वर्ष गत जास॥ ३४॥ मान सी क त वेले इ आहार॥ तीनें नरक विक्रिया धार॥ ब्रह्म और ब्रह्मोत्तर देव॥ दश सागर की थीति लहिए व ॥ ३५॥ साठि पांच हात की देह रूपदेषि मां नैं सुष नेह॥ पांच मास पर लेइ उसास॥ वर्ष सहस दश भोजन को आस॥ ३६॥ चौथे नरक विक्रि या गहै॥ उत ही लौं जु अवधि कैं लहै॥ लांतव अरु कांपि हि संत॥ चौदह सागर आयु धरंत॥ ३७॥ पांच हाथ थ को थरे शरीर॥ रूपदेषी सुष मानै वीर॥ सात मास गले इ उसास॥ चौदह सहस वर्ष भुंचजास॥ ३९॥ पंचम भूमि अवधि क रिशे॥

षधरेवैक्रियातांहिविशेष॥ शक्रमहाशुक्रसुरईस॥ सोरहसागरआयुसमिस॥३५॥सातेचारिहाथतनधार॥शतारशतनैकसिसुषअनुसार॥सोरहपक्षिउसासहिभार॥सोरहसहस
वर्षआहार॥४०॥पंचमनरकप्रसंतावित्रिया॥तिनहीलेंजु अवधिकरिलिया॥सतावसहस्रसागरदुइजान॥अष्टादशसागरथितिमान॥४१॥शष्ठसप्तकोससहालहेन॥चारिहाथतनधरेसुदेव॥
नवमहीमासउसासहिभाषि॥सहसअष्टदशवर्षआहार॥४२॥षष्टमनरकविक्रियाकही॥अवधीसहितदेपेसबमही॥आलंतप्रानतसुरदुइसार॥सागरपीस आयुतहांभार॥४३॥साढेति-
नीहाथवपुलेह॥सहसुकीउमगसुषकोनेह॥बीसपक्षागतन्वासाधेहे॥बीससहस्रवर्षभोजनलहे॥४४॥षष्टमनरकविक्रियाभालहे॥तिहिप्रमान अवधिकोगहे॥आरनअच्युतकल्पहिजान॥बा
इससागरआयुप्रमान॥४५॥तीनिहाथवपुसोहैतेह॥मनसहितसुध्यधैंकरिनेह॥बाईसपक्षिगतहि॥उच्छ्वासबाइससहस्रवर्षजनभास॥४६॥मनसहाभोजनलेईसुसोइ॥षष्टमनर
कपिछियाजोई॥उतरलोंजु अवधिकोजान॥अवरदेवनिधिसुनहुप्रमान॥४७॥सौधर्मसुरदेविनिकीआव॥पंचपलउतकिष्टहिठाव॥ईसानहिकीसातहिपल्य॥सनतकुमारलब
हिकोसल्य॥४८॥इहविधिछोवरतीलेष॥सहस्रसारलोलहोविशेष॥आलंततेवाटेसागरनेव॥षोडशतोंलिजोसंवभेव॥४९॥पंचपलपल्यतहाटहराव॥अवहुरधकोसुनियेभा
व॥मैवेक अधोदेव आहमिंद्र॥कायअढाईहाथप्रबंध॥५०॥सागरतेईस आवजधन्य॥पच्चीसउतकिष्टगनन्य॥देविनिपजोंतिसोहैसोई॥सुषअसंष्यगुनेअवलेइ॥मध्यमग्रैवेषक
त्रीकररेहु॥अठाविसलसागरथितिलेई॥उरधग्रैवेषकरउठ॥५२॥नवनवषोडशदेवजुकाय॥सवाहाथसोहैसुषदाय॥बत्तिससागरआयुप्रमान॥अवपंचोत्तरसुनहुषखान॥५३॥
एकहाथतनउच्चतईस॥सागरआउलहैनेतीस॥सर्वसमभूमिमरकेंकीदेषी॥अवधिविक्रियातहांलोपेषि॥५४॥तेतिसपल्यिलेइउरेंसास॥तेतिससहस्रवर्षगतआस॥मान
सीकसोलेइआहार॥हैंएका अंकाअषतारीसार॥५५॥अहमिंद्रनिकैसुःषभुंजनौ॥भागअसंष्यकसुरगनौ॥पंचोत्तरकेदेवविशेषि॥तिनितेंसंष्यसंष्युगुनलेषि॥५६॥सो
सौधर्मसुरगपरजंत॥याहीविधियनिलीजोसंत॥अवधउदेवनिसंष्यजोडि॥साढेबारहकोडाकोडि॥५७॥इनतीअद्धापल्यबषानि॥तिनिकेरोमगनोबुधिजान॥तितनेहैंस
देवनिसंक॥अठासषदैएकसेअंक॥५८॥इहविधिचैचरीगतिकोसीवे॥दुःषसुःषलहिभरेकेजीव॥अवगतिवंधतनोसुनिभेद॥जिमिनासैभविजिनमनहेषे॥५९॥जितनींआ
लीकेपेरे॥पैंसठीसेंइकसहीदलकरे॥आवभागकरीगतिकोलेहे॥ताकोभेदसुनोअषयहे॥६०॥दोहा॥दीयसहस्रअरुएकसौ औरसतासीलीय॥प्रथमभागदलतर
हैंतवगतिवांधैजीय॥६१॥द्वितियभागमेंसातसैं अंरुईपचउनतीस॥दोसैंतेतालिसजातियचतुरीयइक्यासीदीसे॥६२॥रहैपांचमैंभागमेंस्तसतालइस आव॥भ्रमनवससस
ममन्तत्रय॥६३॥सुभभावनिसुभगतिवधै॥असुभहिदुरगतिजाई॥सोभावीछूटैनहीकीजैकोटिउपाई॥६४॥अथइंद्रि॥चोपाई॥अवपंचेंद्रीकोसुनिभेव॥जुदेवजुदेवी
षयनिकसेव॥चापचारीसेंइंद्रीपलस॥बीसअधीजनाकसोसरस॥६५॥इनतीनोंतेंगुनियेसंत॥दुगनेदुगुनअसेभीजंत॥चतुरेंद्रीकोंचस्रप्रमानं॥उंतीससेंउचनउनमांन॥६६

मद्द आरंभेय॥ ताउपग्गविषमदुषदेव॥९३॥ प्रांणवधहेजीवसंघार॥ चोरजीतिजोचोरनहार॥ शीलरहितजोमैथुननाम॥ परिग्रहबहुतजोग्रंथोदाम॥९२॥ बहुउद्यमकोजहांविस्तार॥ सोआरंभतनोअधिकार॥ षष्टिसुष्टिकरिमारनलहै॥ तासुनअंगकहांवेबहै॥९३॥ जोकादुडरपावैसही॥ तासोकहैउग्गहेउग्गविषयहै॥ इनिविनुजोतप-साधैघनो॥ कायदंडकैत्यागीभनो॥९४॥ इतिसंयम॥ द्वितीय असंयमसुनोप्रमाण॥ त्रसथावरजीवनिरहितषांन॥ सोउतीनियोगकरिडेव॥ संरंभसमारंभमारंभ॥९५॥जी ववधकोकारनजहं॥ जीवभावकोआयुधजाण॥ समरंभयासोपहिचान॥९६॥ प्रानीजहांजारियेमारिसं॥ आरंभभेदनिरवारि॥ जवमनवरतेरोसेभाव॥ तहीअसं यमकोठहराव॥९७॥ इतिअसंयम॥ संयमधारिसमतावंत॥ आरतिरौद्रनिकंदमसंत॥ श्रावगकर्मजुपहिलेकरै॥ सोप्रायश्चित्तषलकरिहरै॥९८॥छहोकालसाधीथी रध्यान॥ सोसामायकवंतबषान॥ दोविधिसंयमकोप्रतिपाल॥ अपनेव्रतकीकरैसम्हाल॥९९॥इतिसामायक॥ जहाप्रमत्तसथावरकोसंहार॥ भयोप्रमादतनोअधिकार॥ अथषामभयोहोइसुनभंगा॥ करैविलापधरैदुषअंगा॥१००॥ तिनिचित्तसंयमप्रतिपाल॥ अपनेव्रतकीकरैसम्हाल॥ बहुहिनजीवविरोधैसोई॥ जहाछेदोपस्थापनहोई॥१॥इतिछेदोपस्थापनं॥ तीसवरसकोमुनिवरराय॥ सर्वेश्रीतीर्थंकरपाय॥ नवमोपूरवप्रत्याष्यांन॥ रहितप्रमादपंडेबुधिवांन॥२॥ सिरवदंतपतिकालप्रमान जन्मजोन अरुदेशवषांन॥ द्रव्यसुभावगुनजितै॥ जोमुनिभेदवतावैतिते॥३॥ कर्मनिर्जरावहुविधिकरै॥ घोरवीरतपकोआदरै॥ त्रयसंध्याकेअंतरचलै॥ उद्वेगा मारणदलमलै॥४॥ पंचसुमतिकोपालनहार॥ तीनिगुप्तिमैंकरैविहार॥ हिंसारहिततजैदुर्बुधि॥ यहकहियेपरिहारविशुधि॥५॥ इतिपरिहारविशुधि॥ सूक्षमरूप जीवप्रतिपाल॥ तपअखंडधारीगुणमाल॥ दरसनज्ञानसमीस्वतंत्राय॥ प्रज्वलितकरीअग्निशमजाय॥६॥ कर्मरूपसवईधनजितो॥ इहोजरायसुनीश्वर तितो ध्यानकुठारहिकरमेंल्याय॥ तरुकषायकोंलियोंदुहाय॥७॥ सूक्षमरत्योमोहकोजोर॥ तासयकारनद्यनओत॥ तत्क्षांतपकरीछीजैमुनिंद॥ सूक्षमसंप रायगुनएह॥८॥इतिसूक्षमसंपराय॥ तपकरिनासैशकलकषाय॥ अंशमात्रकोउनदिषाय॥ वीतरागविचरितरसपियै॥ आतमअनभोवरतोहियै॥९॥ यथा-रव्याततहीकोनाम॥ सातोसंयमएगुनधामजीवधरैयेसातोरूप॥ तवसंयमंधारीजुअनूप॥१०॥ इतियथाख्यात॥ इतिसप्तमसंयम॥ चक्षुअचक्षुअवधी सुततीनि॥ केवलदरसनचोथोलीन॥ एईचारोदरसनजान॥ दरसेवस्तुत्रेकअवस्थान॥११॥ इतिदरसन॥ अथलेस्था॥ प्रथमकृष्णधरिनरकलहं॥ तदूजो नीलहिभावरजंत॥ तीजेकापोतहितिरयंच॥ चोथेपीतमनुषपदसंच॥१२॥ पंचमपदमसुरगगतिलहैषष्टम॥ शुकललभावशिवशिवगहै॥ एछहलेश्यास्याभेद विचार॥ सुनहुभव्यमिथ्यातनिवार॥१३॥ आरतिरौद्रनतागैकटा॥ धर्मविवर्जीतक्रीधीसदा॥ क्यारहितपरपंच॥ होयतेरयाकृष्णजासअंगजोय॥१४॥ ॥

मंदबुधिपरमादीगुनी॥ निठुरवचनबोलैबहुधनी॥ हैपरपंचीकामीघोरलेस्यानीलतासकीओर॥१५॥शोककरैअरुदुषस्वभाव॥ परनिंदानिजकरैबडाव॥ इछाबुधिकु गुरुकीसेव॥ यहकापोतधनीकीभेव॥१६॥ विद्यावंतरयापरिनाम॥ कार्यअकार्यविचारतजाम॥ ज्ञानअज्ञानसमलिआचरै॥ लेस्यामीतजहाउरधरै॥१७॥ क्षमा वंतदयावुधिवानकरैदेव॥ पूजाथुतिध्यानसकजी॥ धनिसोसमताभाव॥ यहेपद्मलेस्याठहराषा॥१८॥रागदेषजिनिरेषोय॥ निद्राशोकमदीसेकोय॥ उतिमभावधरै जवजीव॥ तासोंलेस्यासुकललविधिषा॥१९॥ सुनिद्रुनिकोंरिष्टांतविचार॥ गणपुरुषषटचमहिमत्थार॥ तहांआम्रतरुपलज्युतदेषि॥ वेठैनिर्मलछायापेषि॥२०॥ फलअछनकोइछाधारी॥ बोलैनिजनिजभाव॥समहारि॥ कृष्णधनीकहिजरकाठिए॥ पीछेयाकेफलवाढिए॥२१॥ तवबोल्योजाकेअंगनील॥ षेडोकाठतकरोमठील ॥अवकापोतधनीरूमिकही॥ याकीडारैकाटोसही॥२२॥ कहैपीतपतिओसोभेव॥ घुंचापुंचातोमैजुलेव॥ बोल्योपन्नधनीयहबात॥ पकेपकेफलटोवोभात ॥२३॥ कहैशुकललवारोपहगाअ॥ गिरेलेडुमतिल्यावोहात॥ वरिषटलेस्यासंगअनूप॥ नाचतफिरैजीवचिद्रूप॥२४॥ इतिषटूलेस्या॥ भव्यअभव्यराशिदोजानि॥ इनिहीकेसुनिभेदवषान॥ गुरुमुतदेषतनीपरतीत॥ याकेउरअद्धाषीरिति॥२५॥आरिजपरिनामीबुधिवान्॥ अरुगनतीमैंआयोजान॥ जोकर्मनिवशजाइनि गोद॥ फिरिनिकसैनैजिनवचनविनोद॥२६॥ काललब्धिपत्तहिद्योवपुरजाय॥ भव्यराशिकोयहैसुभाय॥ जाहानगुरुकेवचनप्रीतीत॥ गहलरूपनहिईरिजीत॥२७॥तपवलजोमैंपकठोजाय॥ फिरिछांतोनिगोदठहराय॥ सदाकालजगभ्रमतारहै॥ अभव्यराशिकहिसोकहै॥२८॥ इतिअभव्य॥ अथसंयक्त्व प्रथमभितसमयमिथ्यात॥ तीज्योसमयप्रकृतिमिथ्यात॥ उपसमवेदकक्षायकतीन॥ एसमकितषटभेदप्रवीन॥२९॥ प्रथमिथ्यातनोगुनरूप॥ गुणस्थानमैंएक त्यौ अनूप॥ उपसमवेदकक्षायकगहु॥ तिनिकोकथनसुनोधरिनेह॥३०॥दोहा॥ क्षयउपसमवरतोविधिवेदकचारिप्रकार॥ क्यारूकउपसमजुगलजुतनविधिसम कितधार॥३१॥ चारिप्रकृतिनिक्षिपहिदुइउपसमइकवेद॥ षयउपसमवेदकदसातासुप्रथमयहभेद॥३२॥पंचचषिपइइकउपसमइइकवेदेजिहिठोर॥ सोक्षयउप समवेदकीदशाहुतियइहठोर॥३३॥ षेषटवेदेएकजोष्यायकवेदकजोय॥ षटठपसमइकप्रकृतिवेदेठपसमवेदकहोइ॥३५॥ षटूउपसमवाधिषइजोउपसमक्ष्याय कसोय॥ सातमप्रकृतिउद्योतसोंवेदकसमकितहोय॥३६॥ पपउपसमवेदकक्षिपकउपसमसमकितचार॥ तीनिचारइकइकमिलतसवनभेदविचार॥३७ सोरठा॥ अथनिश्चैषेथोहार॥ अरुसामान्यविशेषता॥ करौंहीचारिपरकार॥ महिनासमकितरतनकी॥३८॥उक्तंच॥३॥ कतीसा॥ मिथ्यातगठिभेदि

अगीनीरमलजोगसोंअतितसोतोविश्रयभमानिये ॥ बहेदूदृदृशसोंवृद्धाषेयोगमुद्रा॥ धरेमतिश्रुतज्ञानभेदेभ्योहातमोनियेहो॥ चेतनिहनपहिचानिआपायरागेद्वेषोरुषअलपता तेसमान्यवपांनियेहो॥ करभेदृग्भेदकोविचारविस्ताररूपुहेयगोयउपादेयसोविशेषजानियेहो॥ ६१॥ अथसेनीअसेनी॥ चौपाई॥सेनीमनकरीसाहितवषान॥ द्वितियअसैनि अमनामांन॥इहविधिधरैजातमारूपकरैजगतमेंमृत्यअनूप॥ ४०॥ अथआहारअनाहार॥ आहारकजहांभोजनधर॥ अनाहारजहांप्रकृतिजहार॥ जौलोइनितेषु टबुनाहि॥तौलोअमनजगतकेमाहि॥ ४१॥ अथगुणस्थान॥ प्रथममिथ्यातसास्वादनदोइ॥ मिश्रबहुरिअवतपुनीहोय॥देशव्रतीपंचमगुणथान॥षष्ठमप्रमतनामतिहि-जान॥ ४२॥ अप्रमतसातमजानियो॥अष्टमअपूर्वकरनमानियेहो॥अनिवृत्तकरननवमपुनिसोय॥सूक्षमसांपरायदशमोय॥ ४३॥ गेरमहेउपशांतिकषायही॥ नमोहद्वादश्गुनथाय॥ तेरमकरद्योसयोगकेवली॥पुनिअयोगचौदहमोवली॥ ४४॥ दोहा॥ वरनेसबगुनथानकेनामचतुरदशा॥ अबवरनोमिथ्यातकेभेदपंचपरकार॥ ४५॥ एकांतहिविपरीतिजोविनयविथ्यातससयअरुअज्ञानजुतएपांचोमिथ्यात॥ ४६॥ चौपही॥ करिएकांतपक्षिमनशोय॥नयअनेककोभेदनकोय॥ मृषावंतजेदुसकदाय मायममिथ्यातकोयहेसुभाय॥ ४७॥ श्रीजिनआगमबानीसही॥ गवधरदेवप्रगटजगकहीतिही॥ ३॥ आपिनोतनरचिकहे॥विपरीतीमिथ्यातीवहे॥ ४८॥ देवकुदेवव रोवरिमानो॥सगुरुकुगुरुएकहिसमजानें॥ भक्तिसहितसबहिकोनमे॥ विनयमिथ्यातितेजगरमें॥ ४९॥ जेनरमनविकलपकोगहे॥तत्व अथनहिश्रधातलहे॥ममभेसें सयरागेषघनो॥ तेसंसयमिथ्यातिभनो॥ ५०॥ निजसुषदुषकारनजेजीव॥परकोपीडाकरतअतीव॥ अपनेस्वारथओरहिनेते अज्ञानमिथ्यातीजनेते॥ ५१॥ अथसादि मिथीती॥ दोहा॥ जोमिथ्यातहिउपसमेंहे॥ जिनभारगगतहोय॥फिरिजोमेमिथ्यातमेंसादिमिथ्यातीसोय॥ ५२॥ अथअनादिमिथ्याती॥ उपशमभावनहीभराअमियोका लअनंत॥ सोअनादिमिथ्यातमेंममगनरहंत॥ ५३॥ इतिमिथ्यातगुणस्थान॥ १॥ चौपई॥ चढेछटैतोंप्रानीजाम॥उपशमवलफीरिउदैकषाय॥ रकसमेंछहआवलिरहे॥ तहातोंगीरिमिथ्यातहिगहे॥ ५४॥ इतिसासादन॥ दरसनमोहप्रकृतितियसार॥अनंतानबंधीकीचार॥ अबहिमिश्रगुणथानलषाव॥ ५५॥ इतिमिश्रगुस्थान॥ ३॥ समकितनोंजहांउघोत॥सातप्रकृतिकोनाशजुहोत॥ वृतसोरहितभावउरसुध्दसोवृतगुनथांनकबुध॥ ५६॥ इतिव्रतगुणस्थान॥ ४॥अनेनविधिव्रतश्रावगतनें॥ अरुअक्षत्यागीतिहिगनें॥ द्वैमहपरिगुनिहिसमान॥ देशव्रतीकहिरागुणस्थान॥ ५७॥ इतिदेशवृतगुणस्थान॥ ५॥ होरो॥ पंचप्रमादद्दशाधरेरेगुणअगदुसधाम॥ थपिरकल्पजिनकल्पजुतपुलाकादिमुनिनाम॥ ५८॥ चौपई॥ धर्मरागविकथाश्वरोग॥निद्राविषयकषायनिधेरे॥ एकहिपांचौपरमाद॥ द्वनिजुतमुनिवरसहित विषाद॥ ५९॥ पंचमहावृतपालनहार॥ पंचसुमतिगुनसाधनधार॥ तपकरिपांचौइंद्रिजीती॥ आवेषटआवस्यकरिति॥ ६०॥ त्रासुकभूमिकरेआस्थान॥लुचेकेके

शंनेकेअन्हानवस्त्रमरहितइंतोनिमकरे॥ ठाढेडग्गासआहारलुधरे॥ ६१॥ एकपारतघुभोजनकरे॥ एकअठवीसमूलगुलगुधरे॥ मुनिकेसंगशिष्यजोरहे॥ थविरकल्पयाहीसोकहे ६२॥ एकाकीमुनिपरनप्रधान॥ तपोधनीजिनकल्पीजान॥पुलाकबकुशकुशीलनिरगंथ॥स्नातकद्युतसुनिइनिकेपंथ॥ ६३॥ यथानकेपूलाजां॥सोपुलाककहिएपरवान॥ धान्यतुसा दिकसबतामाही॥बकुशपरिग्रहधूलोमाही॥ ६४॥ म्हीशिष्यरोपेनिजपास॥बगरिसमानकुशीलप्रकाश॥ जोनिरगंथतपस्वीघोरज्योंचांवरछरिनिर्मलजोर॥ ६५॥ ज हातुषमात्रपरिग्रहनही॥ एकाकीषनविहरतसही॥सोअस्नातकमुनिवरसंत॥राधेतूंदुतसमजुभनंत॥ ६६॥ सहेपरीसासमतावान्॥हेप्रभतनागुणनेथो॥ जाति कीक्रियासकलयामाहि॥मुनिपदसहितप्रमादविपाहीं॥ ६७॥ इतिप्रमादगुणस्थान॥ जहाआहारनिहारनहोय॥ पंचप्रमादनहीसेकोय॥ धर्मध्यानथिरता अधिकाय॥ अप्रमथगुणथानकहाय॥ ६८॥ इति अप्रमत्तगुण॥ कछुकमोहउपसमजहांकरे॥ अथवाकिंचितक्षयकरिधरे॥ होहिभएकबहुनप्रनाम॥ अपूर्वकरणजाको गुनधाम॥ ६९॥ इति अपूर्वकरणगुणस्थान॥ भावतनीथिरताअतिहोय॥ चंचलतानहादिसेकोय॥ जहानउलटेअथकेभाव॥सोअनिवृत्तकरनगुणठाव॥ ७० इति अनिवृत्तकरणगुण०॥ सूक्षमलोभदशाजहाहोय॥ शिवअभिलाषाथोडीजोय॥ तैसेंजहांहोहिपरिनाम॥ सूक्षमसांपरायकेथाम॥ ७१॥ यथाख्यातचरित्रउदो त॥मोहउपशांतोउपसमहोत॥ह्यांतेगिरेकेरेगुनहांन॥ यहउपशांतमोहगुनथान॥ ७२॥ इतिउपशांतमोहगुण०॥ यथाख्यातचरितकेजोर॥ ताकरिमोहक्षीन घोर॥ केवलिरिधिनिकटतबआवे॥ क्षीनमोहगुणथानकहावे॥ ७३॥ इतिक्षीणमोहगुण॥जहाघातियनिकीभयीहान॥दोषअठारहरहितबखानिअनंतचतु ष्टयप्रगटेसही॥संयोगीगुणथानकवही॥ ७४॥ इतिसंयोगिगुण॥पुरनयथाख्यातजहांहोय॥ कर्मअघातीदीनेषायू॥ पंचरघुह्रस्वतनैप्रमान॥प्रगटअ योगीयहगुणथान॥ ७५॥ अथअयोगगुणस्थान॥ दोहा॥ बहिरातमप्रथमहिकत्योंअंतरआत्मद्वितीय॥ परमातमातीजोसुनोत्रिविधिभेदसबजीय॥ ७६॥ चौपाई॥ तत्वअतत्वजानीसमएक॥गुनअनिरगुनकोनाहीविवेक॥सुगुरुकुगुरुकोभेदनकरे॥ धर्मपापमनइकसमधरे॥ ७७॥शुभअरुअशुभबराबरिलेषि॥शा स्त्रअशास्त्रएक॥हीपेषिदेवअदेवविचारेनाही॥ हेयाहेयनतनमनमांहि॥ ७८॥ हालाहालपीयतसुषचहे॥महामूढमिथ्यामतगहे॥ अरुचेतनिजानेसमस्त सोबहिरातमुदररगतिकूप॥ ७९॥ जोजिनसूत्रविवेकीहोय॥सकलविचारचेदतासोय॥ पत्वअतशुभजानेदेवअदेवभेदकरिमाने॥ ८०॥ अनरथसकलजगत मेंजेह॥ हालाहलविषजानेतेह॥ इतिकोजबजियथीयत्रहावे॥ अंतरात्मतबप्रगटकहावे॥ ८१॥ कर्महतनकोउद्यतमकरे॥रागद्वेषइंद्रीपरिहरे॥ सिथसमां

नध्यानतनधार॥ आभ्यंतरनिर्मलकारिसार॥ ९२॥ आतमद्रव्यदेहकरिभिन्न॥ जानेइहविधिभेदप्रवन्न॥ यथाकसोटीसोनोकसै॥ तेसैंजंतरातमालसै॥ ९३॥
परवस्तसरआसिधिप्रजंत॥ फिरिपावैपदश्रीअरहंत॥ अंतरातमदिढजबहोय॥ तबपरमातमकोअवलोय॥ ९४॥ परमातमहेदोविधिजेव॥ प्रथमसकलपुनि
निःकलतेह॥ दिव्यदेहसोसंकलवषांनि॥ निःकलदेहविषजितजांनि॥ ९५॥ घातिकरमजिनिकीनैंचूरी॥ नवकेवलिलब्धेभरिपूरि॥ नरसुरसबसेवैतिनीपाय
अरुध्यावैगुनचिंतलगाय॥ ९६॥ सबहितकहैधर्मउपदेश॥ भव्यनिकोंतारतपरमेश॥ दिव्योदारिकतनथिरथाय॥ अरुआतिशयमंडितदेहकाय॥ ९७॥ धर्मा
मृतवर्षावतसोय॥ भव्यनिकोंसुषकरताहोय॥ ताकरिसुरगमुकतिफलफरै॥ प्रथमसकलपरमातधरै॥ ९८॥ अष्टकर्मनिरमुक्तप्रधान॥ मूरतिहीनज्ञानगुन
षांन॥ तीनिजगतशिरनिवसैसदा॥ महा अष्टगुणभूषिततदा॥ ९९॥ तीनिलोकातिप्रणमैपाय॥ मुक्तितनोंकारनउरल्याय॥ जगचूडामनिनिर्मलनाम॥ निःक
लपरमातमगुनधाम॥ १००॥ अवरहिरातमठतकिष्टजांन॥ गुनस्थानप्रथमोंतिहिमान॥ मध्यमलहेद्वातियगुणथान॥ अरुजघन्यतीजोपरमांन॥ १०१॥ जो
जघन्यअंतरआत्मा॥ गुणस्थानचौथेंवहरमानध्यमकोसातमलोवास॥ द्वादशलौंउतकिष्टीभास॥ १०२॥ परमातमगुनधामकहोयतेरमचौदमजानोसोय॥
गुनस्थानतजिशिवपदरमैं॥ परमसिद्धयतीनिकेपदनमैं॥ १०३॥ सोहा॥ षष्टमतेंद्वादशमलोंउकतेजेपरधांन॥ अंतमुहुरतथितिसबेइनिआगेगुनथान॥ १०४
चतुरयसागरतीसत्रयपंचमतेरसअष्ट॥ कोटिपूर्ववसुवर्षयुतिप्रथमअनादिअनिष्ट॥ १०५॥ सासादनगुनकीघट आवलिपरधानपंचलघुसरजानियैं॥ थि
तिचौदहगुनथान॥ १०६॥ इतिगुणस्थान॥ १४॥ अथजीवसमासः॥ सबैजीवसंसारमेंचौदहभेदप्रधान॥ ताकोकछुविवरनलिषैभाष्योश्रीभागवान्॥ १०७॥
चौपाई॥ जगमेंजियेंजीवएकलो॥ प्रथमभेदयहजानोंभलो॥ थावर अरुत्रसकहैवषांन॥ द्वितीयभेदयहजानप्रधान॥ १०८॥ थावर अरुविकलत्रयहोय॥
पंचेंद्रीयतृतीययहजोय॥ चारोगतिमेंरुलैसदीवचौथोभेदजानियेंजीव॥ १०९॥ एकेंद्रीदोइंद्रिजानितेरैंद्रीचतुरेंद्रीमांनि॥ पंचेंद्रीहैजगतविष्यातपंचमभेदय
हैसुनिभ्रात॥ ११०॥ थावरपंचएकत्रसजांन॥ षटकायीयहभेदवषान॥ थावरपंचविकलइकसोय॥ पंचेंद्रीजुतसातोहोय॥ १११॥ थावरपंचविकलइककथाइ॥
सेणीओरअसेनीआदि॥ पांचोथावरविकलजुतीनि॥ पंचेंद्रीजुतनगुनठीना॥ ११२॥ पृथ्वीचौवृवनस्पतिहोय॥ प्रत्येकहिसाधारनसोय॥ तीनिविकलपंचेंद्रीए
क॥ एदशभेदएहजगटेक॥ ११३॥ थावरपंचसूक्षम अरुथूल॥ त्रसजुतएएकादशमूल॥ सोदसयाथरविकलजुएक॥ पंचेंद्रीमिलिद्वादशभेक॥ ११४॥ बेहिविधि
थावरदशजानि॥ अरुविकलत्रयएकवषानीं॥ संगिअसंगिपंचेंद्रीजोयतेरहभेदप्रगटएसोय॥ ११५॥ एकेंद्रीसूक्षमअरुथूलतीनिविकलपंचेंद्रीमल॥ सं

डाक्टर भाऊ दाजी देवारत्न यस्मारकम्
DR BHAU DAJI
MEMORIAL

गिअसंगिजुतसबसमान॥ प्रजापतेअप्रजापतिगात॥ १२॥ बहिविधिचौदहभेदप्रवांन॥ सोसंक्षेपकहैगुनथान॥ औरभेदअवसुनियोमित॥ जिमिनासैसंदायभविचि
त॥ १३॥ दोहा॥ पांचोथावरविकलत्रय अरुनिगोदइयजांन॥ नरसुरनारकपसहितचौदहभूतसुथान॥ १४॥ चौपई॥ अवउनषीसजुफनदुसमास॥ पृथ्वीचौ
कुनिगोगहिभास॥ एकभेदसूक्षमअरुथूल॥ ताकेनारविधिगुनमूल॥ १५॥ वनस्पतीद्वयभेदप्रधान॥ रूपतिष्ठतअपतिष्ठितजान॥ विकलत्रयभाषेविधितीन॥
पंचेंद्रीसमनामनहीन॥ १६॥ एउनीसपरजापतिजानि॥ फेरिअपर्याप्तेवषांनि॥ कहैअलब्धिप्रजापतिसोय॥ सबसमासमनभावनजोय॥ ११७॥ अवसमासअ
ट्ठानवैकेहोयथाप्रतिदेषि॥ बयालीसथाथरसबैसुरहोनारकलेषि॥ ११८॥ विकलत्रयनवभेदगनिनवमानुषपरजंततिरजंचहि॥ चौंतीसभानिलिषौतिनहिविरतंत॥
॥ ११९॥ चौपई॥ पृथ्वीचोकुनिगोदजुहोय॥ सूक्षमबादरहहोयवनस्पतिद्वयभेदषांन॥ सुप्रतिष्ठितअप्रतिष्ठितजाजान॥ १२०॥ चौदहप्रजापतेएकहे॥ अः प्रजापतेचौ
दाकहे॥ चौदाअलब्धिपः प्रजापतिएह॥ थावरकहेव्यालिसतेह॥ १२१॥ सुरगनारकिदोयप्रकार॥ प्रजापतिअप्रजापतिसार॥ बेंद्रीतेंद्रीजान॥ चुतुरेंद्रीविकरतभय
मान॥ १२२॥ प्रजापतेअप्रजापतिसोय॥ अलब्धिप्रजापतिएनवहोय॥ अवतिरयंचसुनोचौंतीस॥ पंचेंद्रीतेकहेजिनीश॥ १२३॥ आरजखंडीगभजतीन॥ जलथलन
भचरएकसुनिलीन॥ सैनीओरअसैनीतेयह॥ प्रजापतेअप्रजापतिलेहु॥ १२४॥ सनमूछीनथलनभजानसैनीओरअसैनीठांन॥ परजापतेअपरजापते॥ अरुअल
ब्धिदेतेपरमिते॥ १२५॥ दोयभोकएगीसवषांन॥ गर्भजसनसूछिनकेथान॥ भोगभूमियांदोयप्रकार॥ थलचरनभचरगर्भजधार॥ १२६॥ प्रजापतेअप्रजापतिकहे॥ ॥
चारिमिलेचौंतीसवकहे॥ अवसमासनवमानुषभनो॥ भोगभूमियांप्रथमहिगनो॥ १२७॥ द्वितीयभुभोगभूमिनरजोय॥ म्लेछखंडकेतीजाहोय॥ प्रजापतेतेईपहिचा
न॥ अःप्रजापतेकहेप्रवान॥ १२८॥ आरजखंडजमनुषपरमिते॥ अलब्धिसहितत्रयपरजापते॥ एहिनवधिमानुषजानि॥ सवमिलिअलिअठानवतिवषांनि॥ १२९॥ दोहा॥
अवसमासमुनिधिभाषे॥ गोमटसार॥ तिनहिभेदसबवरनउषटउतरसयचार॥ १३०॥ सोरठा॥ पक्कइकसेतेईसनरकमाहिअठानवो॥ नरतेरहविधिदीस॥ शातक
पहतरिदेवगति॥ १३१॥ पृथ्वीकायहिभेदवषांन॥ कोमलमाटीकठिनपषान॥ पानीपावकपवनजोहोय॥ वनस्पतीसाधारनहोय॥ १३२॥ नित्यनिगोदइतर-
निजान॥ सबैभएजातोपस्थान॥ सूक्षमथूलचतुर्गतिएह॥ अवप्रत्येकवनस्पतिकेह॥ १३३॥ रूपतिष्ठितअपतिष्ठितदोय॥ तांकेभेदकहोअवलोय॥ दूतबेलि
अरुछोयवृक्ष॥ नरवरओरकंदपरतक्ष॥ १३४॥ पंचभेदरूपतिष्ठवषांनि॥ यहीरीतीअपरिति अपतिष्ठप्रवान॥ यहप्रत्येकवनस्पतिवास॥ सबैभएदशभेदरस

मास॥३७॥ दोहा॥ अवरनिमाहिनिगोदहैतवरूपतितिष्ठजांनि॥जहांनिगोदनहीपाईयेसोअपतिएकहांन॥३८ जातिदशौप्रत्येककीवेचौदाहाचौबीस॥परज अप
र्ज अलब्धिसोसबहिबहुतरिहास॥३९॥चौपाई॥वितिचउरेंद्रीषिकलत्रिकान॥पर्ज अपर्ज अलब्धसमान॥एनवभेदसबेपरनएहनतिमिलिइक्यासीभए४०
करमभूमितिरजंचविष्यात॥गर्भजसनसूर्छनदोजात॥गर्भजपर्ज अपर्ज प्रवीन॥अलबधिछूसनछनतीन॥४१॥सैनपंच असैपंचेंद्रशौभेदजलचरतिरपंचेंद्रशौ
नेदथलचरपशुकाय॥इशौचौभानचरउडैसुभाय॥४२॥एसपतिसकर्मभूदोर॥भोगभूमिनियकेअवछोर॥थलचरनचरसोछहुठए॥परज अपरजइहांभाग
ए॥४३॥सबहिवयातिसकहेविचारी॥बेइक्यासीप्रथमहिधार॥इकभयउपरतेइसजान॥पशुगतिमेंसबयहेप्रमान॥४४॥दोहा॥नरकसातकेजानियेप
टूलसकलउनचास॥परज अपरज अवानवेजीवसमासप्रकाश॥४५॥चौपाई॥भोगभूमियांतिनिविधान॥इतिनमध्यमजघन्यवषांन॥चौथोकुभोगभू
मिनरनरथान॥पांचोम्लेंछउरवंउपहिचांन॥४६॥ पर्ज अपर्ज इशौछहराय॥आरजखंडसुनौअवभाय॥पर्ज अपर्ज अलब्धिजुतीन॥एतेरहनरगतिमें-
लीन॥४७॥चदोहा॥गर्भजपर्ज अपर्जदुहीसनमूर्छनहिलब्धि॥तिनिउतपतिसबीजनसुनौंयहसंसारभवब्धि॥४८॥अडिल्ल॥नारिजौंनिकुचकांषिनाभि
मेंपाइये॥नरनारीकेमुखमाहीछहाराइये॥मुरदामेंसनमूर्छअसैनीजीयरा॥अलबधिपरजापतेदयाधारीहीयरा॥४९॥दोहा॥त्रैसठिपलजुकरगकेभवनप
तीदशजानी॥व्यंतर आठप्रकारकेज्योतिषपंचप्रमान॥५०॥नवेउयालिसथोकसबपर्य अपर्यगनेह॥शतकबहुतविस्तर अकरजीवसमासभनेह॥५१॥॥
इकसयउश्वासीपर्यगनितनेंअपरजसोय॥अलबधिजियचौंतीसहैंच॥उसयपटसबहोय॥५२॥नियतएकचोतानिमैंभेदसबबयोहार॥निश्चय अकयो
हारकेंजानभनहारासार॥५३॥इतिजीवसमाससंपूर्ण॥चौपाई॥परजापतिषबइंद्रीकहिनाम॥आहारप्रथमपायोअभिराम॥पुनिशरीरधारेजबजीव॥दु-
जीपरजापतिभनिलीव॥५४॥ फिरिइंद्रीकेभेदजोगहैतिजीपरजापतिसंग्रहै॥स्वासउस्वासअवरै॥पुनितह॥चौथीपरजापतिसोगहै॥५५॥मनुपावेजब
जीवजान॥परजापतिपंचमपरभांन॥आउलहेभरिपूरजसोषछठमप्रजापतितबहोय॥५६॥एपरजापतिकहेमुनीस॥इहिबीनुअपरजमुनीगनेस॥-
औपरजापतिपाइविनासै॥सोअलधिपरजापतिभासो॥५९॥इतिपरजापति॥इंद्रीपंचबलमनवचकाय॥स्वासउस्वासजुथलपुनिआय॥इनहीसोंकहि
एइशप्रानजानोजीवतनोंसंस्थान॥५८॥इतिप्रान॥अबसुनिसंज्ञाचारिप्रकार॥भयमैथुनपरिग्रहआहार॥इनसोंजीवरह्योंहेमूल॥आतमशक्ति
विनाजगतूल॥५१॥इतिसंज्ञा॥आठज्ञानअरुदरसनचारीएबारहउपयोगविचारि॥सोपूरबबरन्योसबभेद॥बहुयोगथानाविनुषेद॥५२॥ ॥

॥इतिउपयोग॥ध्यानअधिकार॥आरतिरौद्रधर्मअरुशुक्ल॥चारिध्यानएनामजुउक्त॥तिनिकीहेसबरोगरहंडार॥अबवक्तानिआर्तिध्यानकीविधिचारी॥५३॥
भलीवस्तुकोहोयवियोग॥इष्टवियोगीप्रथमनियोग॥सहाविकलतामेंमनरहे॥द्वितियअनिष्टसयोगीयहे॥५४॥पीडाचिंतनजीतोजानीदुःखवि-

लाप करेरुद्र ध्यान॥ अग्नि के भोजनि मां चतुरेरे॥ निदान बंध धर्मो भोसं चेरे ५५ रुद्र ध्यान अनसुन हु जुमित॥ चारि अंगता कि त जिनि त। हिंसा करन भरे आनंद। हिंसानंदी प्रथम कुबंध॥ ५६॥ मृषा नंद दूजो अवलोय॥ बोलन मूढ षीच हु होय॥ चोरी सा। धनम भरी प्रीन॥ चौथो नंद तृतीये अनीत। ५७। संवत विषय हु लासी जोय। विषयानंद चतुर्थ यह होय॥ अचसुनि धर्म ध्या नंके चार। एक एक ने सुष अचसुनि। धर्म ध्यानके चार॥ एक एक ने सुष अभिकार। ५८॥ के वल उक्त जीव सरदेहे। आ ज्ञा विचय पहिलो स्वर्ग लेहे। अपाय विचय। दूजो गुन थांन। कर्म नाश उद्यम अभिधान। ५९॥ पहिले कर्म उदय पहिचा नी। विपाक विचय नी जो सुष षांनि। तीन लोक नर आकृति मांनि। संस्थान कर्यो थो यह ध्यान ६०॥ शुक्ल ध्यान चौरोप द्यकहे तहां मोह की प्रीति नरहे। योगा रूढ पैदे सिद्धांत॥ आतम गुन सुविचारे शांत॥ ६१ उपसम षिपाक श्रेनि विश्राम॥ प्रथ मित र्क आदी पद नाम। उपशम छोडी षीपचक चढी जाय। लोकालोक प्रकाशक राय। ६२॥ प्रकृती तिरेसठी नासे सही॥ वांकीर ही पचासी तही। प्रगट्यो के वली गुन कुजसो॥ अंग वित र्क नाम दूसरे॥ ६३॥ जबही यह तरि प्रकृ ती न साय। जिनवर आवनियट निराय। हैमन वल सूक्ष्मनि हि नाम। सूक्ष्मक्रिय तृतीय द नाम॥ ६४॥ अंनत चतुष्टय को परकाश॥ तेरह प्रकृ ति क रीजब नाश। पंचल घु अरपरमित सेवे॥ अष्ट कर्म वसि रीरचै दे ६५॥ चेतनि भए मुकि के राय विपरीति क्रिया निवर्तक हाय। चारि ध्यानके शोरहे पाय। सोवरनें संक्षेप हि स्याय। ६६॥ इति आर्त रौद्र धर्म शुक्ल ध्यान॥ दोहा॥ प्रथम ध्यान पिंड स्थ हे द्वितीय पद स्थ च बांन॥ रूपस्थ तीसरो तुरीय रूपा तीत प्रवान। ६७॥ चोपई॥ अरहनि के सुनि भेद भेद। प्रन विरो थ नहि आतम भेद। प्रथम ध्यान पिंड स्थ अनूप। सो वरनौं थरि पो चस रूप॥ ६८॥ पृथ्वी जल अरु अग्नी जुवाय॥ नभ एयं च तत्व थिर करि भाय। जो मुनि ध्यान अरा धन धेरो॥ पद्मा सन नी श्चल चित करो। ६९॥ अध पृथ्वी तत्व॥ मध्य लोक जो गिरद आकार। क्षीर समुद्र वन केरवि चार। शुद्ध तरंग रहित थिर रूप। नाभी चिंते कमनु लेसे। चित्त लअनूप। ७०। हेम वरन द ल केरे हजार॥ केशरी अवर पराग सुसार। जंबुदीप सम कमल जु लेसे चिंत मेरु तालु पर वस॥ ७१॥ कमल

किरन काचिंतेइ ही। मेरु ऊंचाई के परमिती। तापर इक सिंहासन थापि।। चंद्रकांतिनि सम किरनाप। ७२।। निजसत रूप ना पर
येगरि। शांतिरूप आकलै तीजरी।। रागादीक परनामहि त्याग।। करनलिपन हीत जन भेराग। ७३।। पृथ्वीतत्वतनीयहरीति।।
साधेमुनीवर परमपवीत। यहपिंडस्थ प्रथमहेअंग। मनसमुद्र जलरहित तरंग। ७४।। अथजलतत्व कथिमनेअभ्यासरूप
कोध्यान। जिनिसोजलधर कहे प्रमान। वरसा मनेअतिभयरहिताय अरु प्रचंड रागिनि घहराय।। ७५।। घोर निरंतर मुषरसि
संयो। इंद्र धनुष जूत पावसठयो।। पवना कुर वरषत जल बूंद। मुक्ताफल वत जल चंद्र।। ७६ जलधारा कवहूं अतिघोर
कवहूं भूल महावर जोर।। इहि विधि वरसि रहे जसदा। शुचि अमृत जल श्रवैतदा। ७७। ताजलकर्म धूलि चहिजाय। अमृत
शीत इहि विधि भाय। वारितत्व याहि सौं कहे। कर्म रापइस शिवलारहे।। ७८।। अथअग्नितत्वा।। चिंते एक कमलदल शो
लशो। नाभी स्थलजल केरे कलोलदल दल प्रतिसुर माला थंपे।। अइ कुल प्रमान महांन भये।। ७९।। सकलदलनिपरफे
रनुपाय। अंतररहित महामुनिराय। फिरियाक मलतनीकर्णिका।। अर्हं मंत्र मेरे गुनथाका।। ८०।। अर्हं।। रेफ बिंदु करिदी
पितपतिसाया। आकृत वंतवंतपरमेअवलोया। ध्यानकरत बोरफ मकार। निकसे शिरवा धूमनिरधार।। ८१।। फिरिपुलिंग
दूंद ताप्रहि।। वहुरि अग्निज्वाला अधिकाहिं। हृदयकमलकोदहे सुआगी। अधोवदन सोचसुदल लागि।। ८२।। वसुदलअ
ष्टकर्म प्रजानि। जरिनरिभस्महोयतिहि थांन। फिरियहे अग्नि वाहिरी होय।। ताकोतपेकोन अवलोया। ८३।। स्वस्तिक वर्ण
कार चौफेरा। कंचनसम प्रज्वलित घनेरा। मंत्रअनाहतते प्रगटायदी।। धगधगती सोआगनि चलाय। ८४।। कमलअष्टदल
असमकराया फिरि स्योभय शांतिवेहे जाय। यहपिंडस्थ तृतियपुन वार। अग्नितत्व कहिकेरउचार।। ८५।। अथमारुततत्वाजहारेचे
मनअमरविमान।। तोमेयेरिकर मुनिध्यान।। चैसेपवनतत हांअतिगंभीर।। तिरछीयहे हलीचे धीर।। ८६।। घनघनगरजे
अतिभयभीत।। ओघेजहाकमेरजशीत। सकलछारम हेदेइ उडाय फिरि सोव्यारिशांतिजाय।। ८७।। अथआकाशतत्व।। आ
तुरहितम निर्मलजू शरीर।। कर्मकलंकतनीन हीपीर।। अविकारीअनरूपी सोय।। सिद्धसमानआतमा होय।। ८८।।

चिंतधेरेअसनिजकाय।। सिंहासनबैगरेध्याय।। अतिसेअरु प्रातिहारिज हेंा। पुन्यप्रकृतिफलसिगरेतहा।। ८९।।
इंद्रसहकलेसवसकरनारि।। जयजयकार होनचहूं वोर।। यहपिंडस्थपंचमीरिति। सोसाधेतेमनकीजीति।। ९०।। मनचंच
लताजवसिद्धिगे। पंचमगतिकीप्रापति भई। जोनहोयमनकीगतिठोर। वृथासकलध्याननिकी शेर। ९१।। दोहा।। मनानिरो
धजाहापंचविधिकहो ध्यानपिंडस्थ। जोतेशिवमारगसुगम। ओगेमुक्तपदपदस्था। ९२।। अथपदस्थध्यान।। चौपई।।
अबसुनिसकलपदस्थविचार। साधेशिवपथकरेविहार। मात्रा वांचनअक्षरतनी।। आदिसिद्धसवशोभा गुनी।। ९३।। तिनि
कोध्यानवृतमुनिराय। यथायुगतिसोथेरकहाथ।। वोड़सदल कोकमलअनूपचिंतेनाभिमध्यतारूप।। ९४।। दलदल
प्रतिजहांरचेविचित्रा। सोरहसोहे सोरहपरमपवित्र।। अआइइउऊऋॠ। ऌॡएऐओऔअंअः जा
न।। एसोरहसुरजेपरवान। फिरिचिंतेवेकमलइक औरसजाको हैहिरदेमेझोर।। ९६।। नाकेदलगनिविसरचारि। मध्यकर्णि
कारपअपार। कुंभुरतुपुहेवरनपरीम।। तापररेथेध्यानकोईस।। ९७।। वदनकमलवयसुदलवरर्चे। जरलषआदिव
र्णमेंवसुवर्चे। अनुक्रमसकलप्रदक्षिणकरे।। दलदलप्रतिअक्षरअनुसरे।। ९८।। मंत्रराजअवलंवेजीवा। हिंकार धरि
हृदेसदीवा। इहिविधिवर्णमालहुरे। द्वादशांगवानीकलकरे।। ९९।। श्रुतसमुद्रतरिलीगेतीरा। ज्ञानतनीतहांदीसेभीरा।स
वयंत्रसुउदरसमेत।। जोध्यावेजोगीचित्तदेत।। १००।। जपिजापसुपुत्तआनंद। प्रगटेतीव्रअगिहनिजोमंद। कुस्वरहेसदर
विकार काशस्वासकीआने हार।। या भवभूजनीकजवकरे। आगेकोशिवसुखविस्तरे।। सकलपदनिकोराजा जानि।। स
वतत्वनिको हंसे यथानि।। ऐसेमंत्रअनाहतरूप। सुनोनासकोपरमसमय।। अधलकरुधरेफतासीम। मध्यबिंदुरेषारज
नीस।। ३।। जोनवर्णतपूर्वहिनने। तेनिमिलिमंत्रा। अनाहतभने।। मंत्रराजाथाहीकोनाम। चंद्रकलासमहेअभिराम।। ४।। सवह
कमलकर्णिकामाहि।। धरेकेजेपेनकर्मरहांहि। जिनस्वरूपतेचीलतजैन। विमलभाषतमहिमाचैन।। ५।। याहीमंत्रतनोंकारे
ध्यान।। भयेसर्वज्ञसर्वयत ज्ञान।। ज्ञानजीजगत्रयकरि चहिमंत्रमहेस्वरूपसुखकंद।। ६।। जन्मअग्निकीयहनपाता।जहुध

रसमम करतासुनि पात॥ जिली न्योतो मुखनेइक वार॥ लयोशिवपंथपयो यसवार॥७॥ जन्महीतरू हकोविस्तार॥ तिनिघात
सबमूल तेंदयोउपार॥ मंत्रराज केसोनरपा॥ वरनिसुनाऊविमलअनूप॥८॥ मभ्यस्यनाताफलज्ञान॥ तासरूपकोकरि
हांध्यान॥ त्याबैमुखपंकजफिरिजाहि॥ नालुरंध्रमुनिविनिकसतजाहि॥९॥ अमृतंयोंदुतहांवर्षाया॥ नेत्रपत्रफिरिद्रसैआ
य॥ अलषबादब्रम्हांडविदारि ज्योतिषमल्यकरैंवहरि॥१०॥ शशिताकोसरवरनहि होया॥ कच्छुकतहारहिउछलै सोया॥
कर्मफलुकतनोतमजाय॥ भवकोभ्रमनाशकनिर्वान॥११॥ फिरिआवैषहपरमसथान॥ जुगभुवलतातुभाषीजान॥ पूरक
कुंभरेचकतीन॥ पवनभ्यासहेत्रिविधिप्रवीन॥१२॥ पूरवकजहांपवनपैचाय॥ कुंभकक्रिचिंत॥ अर्हंवाचसुनोविरतंत॥ सक
सकलत्यागिइहिविधियहजपैसपनेहूंनदृष्टिछिपै॥१४ करहेअ॥ चलतनछाय॥ रेचकरीजैजवनिरकार॥ ध्यानअंतमार
तनिरधार॥१३॥ वामंत्रहिकुंभककरिचिंत॥ अर्हंवाचसुनोविरतंत॥ सकलत्यागिइहिविधियहजपैसपनेहूंनदृष्टिछिपै॥१४॥
जा॥ कीआदिअकारस्वरूप॥ मध्यबिंदुजतरेफणनूप॥ अंतहकारदियेगुनवान॥ परमतत्वयाहीकोजान॥१५॥ पहिलैं चित्तैंसब
करियुक्त॥ करै॥ ध्यानफिरउनतेमुक्त॥ फिरिचित्तैंजिमिचिंदारेष॥ ताकीदुतिसूरजसमपेषी॥१६॥ मंत्रराजचिंतनगुन
सार॥ जन्ममरनभवसागरपार॥ बालअयसमफिरि चिंतनैं॥ निहचैंहैइकचिंतसभवै॥१७॥ महिमाआदिअष्टजोसिद्धी॥
होईप्रगटबहुलक्षमीरिद्धि॥ सकलसुरासुरचरननिनमैं॥ त्रिवपदलहिचारोंगतिवमै॥१८॥ ह्रींकारमंत्र॥ कमलकर्णिका
चहुंदिदिचंग॥ षोडशारविहाटकवतरंग॥ मध्यकीर्णिकाकेओस्थान॥ मंत्रअनाहतराषैमान॥१९॥ ह्रींनामस्तकसोहैविं
द॥ जैसेनिर्मलपूणीमचंद॥ तामुषतेंअमृतवरषाय॥ ध्यानीमुनिताकोंनितषाय॥२०॥ फेरिकमलजहांध्यानिलेई॥
अबुजलेदेपरदक्षनदेय॥ बहुरिउछोरेगगनमकार॥ चितभूमिकोमिटिधियार॥२१॥ तबतांहांवर्षाअमृतहोय॥ बहुरि
कमलमुखरांषैसोयं॥ तालुरंध्रतेफिरिनिकसाय॥ जुगभुवलतविराजैआय॥२२॥ अधिकजोतितांकीप्रगटाय॥ बुद्धिन
सकेताहिवरनाइ॥ शकलसुरासुरनावशीस॥ विश्वतत्वकोदीपगनीश॥२३॥ विद्याजलनिधितारनकाज॥ हेयहमं

त्रप्रतक्षजिहाज॥ अरुषीषसर्वव्यालकोहरै॥ नागरमनिसमजोचित्तधरै॥२४॥ जोध्यानिध्योवेइहीरीति॥ ध्यानकरतछ
हमासव्यपीत॥ धूम्रविस्वामुषतेंनिकसाय॥ देषेप्रगटध्यानकोराय॥२५॥ जेवेरसवीतेंइहिभांति॥ तवदीजेज्वालाकी
क्रांत॥ तापिछेप्रगटेअवदातनवदेषैजिनमतसाक्षात॥२६॥ सर्वअनंदमयिसोहोई॥ पंचकल्यानदरसीसोइ॥ प्रभापुं
जकोसूरजयान॥ भव्यकमलजातेंकषरवषान॥२७॥ प्रगटस्वयंभूज्ञानविलास॥ निद्रामोहतनोक्षियनास॥ भवसा
गरकेपारपहुंचे॥ बैठेमुक्तिशिलापरकंचे॥२८॥ ह्रींकार॥ इतिअनाहत्तमंत्रध्यानं॥ प्रणवमंत्रस्मिरोफिरिमित्त॥ ई
कारजोपरमपवित्र॥ दुरवदावानलकोज्योंमेह॥ ज्ञानदीपपहुपनिकोग्रेह॥२९॥ परमेष्ठीसमइहवेंजाजान॥ बीचकबीच्च
तनैउनमान॥ हृदयेकंजकर्णिकारहै॥ स्वरव्यंजनवेष्टितलहलहै॥३०॥ राकलसुरासुरपूजितपाय॥ चंद्रसमनदिपे
सुषदाय॥ महातत्वमहाबीरजनाम॥ कुंभकध्यानकरौअभिराम॥३१॥ ज्योंचिंतेवहश्रुकूस्वरूप॥ कर्मनिर्जरावमेअनू
प॥ जोकोऊंसैंदवरनमनधरै॥ सर्वजगतचितक्षोभितकरै॥३२॥ जंबुवरनवतजोध्यावही॥ स्तंभनऋद्धिविमलपाव
ही॥ जोकोऊचिंतेकजलरंग॥ द्वेषतजैविद्यावलअंग॥३३॥ अरुनवरननतेंसववज्ञाजानऊंकारगुनकहेवषान॥ यासमान
नहिदूजोइष्ट॥ युगफलदाताइष्टअनिष्ट॥३४॥ ऊंकार॥ इतिप्रणवमंत्र॥ सुमिरैविद्याविभवनसार॥ ऋद्धिसिद्धीकोहैदातार
॥ रेप्रसन्नगंभीरवषान॥ हिमकरवतअमृतकीषान॥३५॥ अविचलचितलीलाटस्थान॥ ज्योध्यावेतांकोकल्यान॥ सकलका
मनापुरैसोय॥ याहनमोक्षनयोंतैंहोय॥३६॥ ह्रीं॥ इतिसिद्धमंत्रंसुधासिंधुतेंनिकसैआय॥ चद्रेरवसमतासप्रतापकेज्ञानिहे
टभालकेठौर॥ ज्योध्यावेध्यानीसीरमोर॥३७॥ अमृतवरषावेचहुओर॥ मैठैजनमतनोजुरजोर॥ कर्मतापसमनेघनमा
ल॥ कर्मजलावनविखीरज्वाल॥३८॥ चंद्रेषा॥ इतिज्ञांतिमंत्रः॥ फिरिगुरुपंचहिकरिचितनो॥ नमस्कारलक्षनजाभनो॥
जाहिस्मिरिसवजीवहोंहिपवित्रजुअंगसदीव॥३९॥ चित्तेसेतकमलदलआठ॥ तासकर्णिकाअस्थिरठाठ॥ नमोअरहंता
नंजिननाम॥ अरुचतुष्टदिगदलकेधाम॥॥४०॥ सिद्धाचार्यउपाध्यासाधुचारि॥ विदिगलरचोअगाधरसदन॥ ज्ञानचरनंत

पजास॥ चिंतेमंत्राजितअपराज॥४९॥ ज्याकेध्यानमुक्तिपदवास॥ भाएकेवलीधरिस्वासजा गुनकहिनसकेजोगेंद्रा॥ औरकहे नेचायद्राभेंद्रा॥५०॥ पापपंकजेप्रानीपरे॥ यासुमिरनतेसमउहरे॥ विसनननगरकेवरकेंहूसमान॥ भ्रामसासनमेंकृपानिधान॥ ५१॥ जिनिमरकोनेपापहजार॥ जीवतनीहीसोजुअपार॥ याहिमंत्रउारधेसोय॥ जोतिरयंचनऊतरहोय॥५२॥ इकउनआठ बारजेजपें॥ प्रभुताकरिसबजगमेंदिपें॥ प्रभुताकरिसब एकउपासतनोफलहोय॥ कर्मकालिमाडारेधोय॥ ५३॥ णमोअरहंताणं णमोसिद्धाणं॥ णमोआयरियाणं॥ णमोउवझायाणं॥ णमोलोएसव्वसाहूणं॥५४॥ इतिअपराजितमंत्रः॥ यातेशकलविघनटलि जाय॥ कर्मनाशिशिवपदजिलहाय॥ ताकेवरनसकलहेसात॥ ध्यावतहीउपजेअवदात॥५५॥ णमोअरहंताणं॥ इतिअनादिमं त्र॥ पूरवकृतहियकंजमलार॥ चिंतेषोडशअक्षरसार॥ षोडशाक्षराविद्यानाम॥ लेपहुचावेशिवकेधाम॥ ५६॥ पंचगुरुनिकेनाम प्रधान॥ हूंवातवारपदेबुधिवान॥ करिएकाग्रचितधरिप्रीति॥ होयउपाशाएकफलमीत॥५७॥ अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यपसर्वसाधु भ्योनमः॥ इतिषोडशाक्षरमंत्रः॥ फुनिषडाक्षरीविद्यासुनो॥ हृदेकमलधरिताकोमुनो॥ जोयेहजपैतिनिसेबार॥ होयउपास तनोफलसार॥५८॥ पुन्यउदावनिधिकर्मविनाश॥ लेपहुचावेअविचलवास॥ सकलसिद्धिसाधनकोएहयाकेगुनकोकहोनछेह॥ ५९॥ अरहंतसिद्ध॥ इतिषडाक्षरमंत्रः॥ मुमिरोसकलमंत्रकोईद्रा॥ शिवमारगकोदीपसरीर॥ अवरननाभिकमलधरिध्यान ॥ मस्तकपदासिचरनवषान॥६०॥ कंठकंजआकारधराय॥ पंकजहृदयउकारलषाय॥ वदनजलसाकारधरंत॥ यहउआसिआ उसयधिरतंत॥६१॥ ओंअसिआउसा॥ इतिपंचाक्षरमंत्रः॥ चतुरवरनध्यावेजोगेंद्रा॥ चारिपदारथलहेसुरेंद्रा॥ जपेचारिसेचा रिजुताहि॥ फलइकअनसनकोगनिवाहि॥६२॥ कर्मनिर्जराधर्मबढाय॥ मिलेद्राकलसिद्धानिकोंजाय॥ प्रगटेसमोसरनकीरि द्धि॥ औरअनेकसिद्धिकीवृद्धि॥६३॥ चतुवर्णमंत्रः॥ विजसकलमंगलकोजानं॥ सुमिरेयोगीहियमेंआंन॥ शिवपदरहेनह रसंताप॥ दिनदिनबाढेअधिकप्रताप॥६४॥ सर्वसिद्धेभ्यः॥ इतिश्रेयमंत्रः॥ जोओंकारस्वरकोध्यावहीं॥ सोशिवपदनिश्चेपावहीं॥ जपेमंत्रपंचमेंशतवार॥ करेचित्तकोफलनिरधार॥६५॥ अ॥ इतिओंकारमंत्र॥ जिनमुखउद्भवएससबकहे॥ जिनिकेसाध

र)॥ दलदलप्रतिदलवरनधराय)॥ तिनिकेनामकहौसमझाय)॥७२)॥ ॐनमोअरहंताणं)॥ इतिअष्टवरनमंत्र॥ आदिप्रणवअरूसू
न्यमझार)॥ अंतअनाहतमंत्रविचार)॥ तीनिभुवनकोतिलककहाय)॥ नासाअग्रध्यानदृढ़राय)॥७३)॥ प्रगटैज्ञानअशुभगुनसंग)॥ज
वचिंतेइकचित्तअभंग)॥ शुक्लवरनतिनिकोंध्यावेइ)॥ मुक्तिवधूनिश्चैपावेइ)॥७४)॥ ॐह्रीं)॥ इतिसिद्धवरणमंत्रः)॥ हैंहैंप्रणवधरैंहैंदो
रहुंहुंदिगड़ीकारैंहैंओर)॥ तिनिकेबीचहंसपदथाइ)॥ सबकेमध्यस्त्रीहैंआय)॥७५)॥ महावीर्येहेयाकोनामध्यावेराक)॥ चितअभि
राम)॥ मनचिंतेपावेफलसोय)॥ डोरेसकलकर्ममलधोय)॥७६)॥ ॐॐह्रींहंसस्त्रींसंहंह्रींॐॐ)॥ इतिमहावीर्यमंत्र)॥ जपेमंत्रजो
कर्मनिहनै)॥ रागद्वेषआदिकजोवमै)॥ संसारीसबदुषविसराय)॥ अनचिंत्योफलआतमपाइ)॥७७)॥ श्रीमद्वृषभादिवर्द्धमानांते
भ्योनमः)॥ इतिमंत्रः)॥ फिरिचिंतेसुनिमनगंभीर)॥ विद्यावादऊधरनधीर)॥७८)॥ मुक्तिमुक्तिकोहैअभिराम)॥ सिद्धचक्रकहिरानाना
म)॥ सिद्धचक्र)॥ इतिसिद्धचक्रमंत्रः)॥ महावीरमुखउद्भवजान)॥ विद्याजपैनिरंतरसदा)॥ यामैअंतरहोयनकदा)॥ आणिमाआ
दिअष्टसिद्धिघनी)॥ श्रुतसागरपारगवहुगुनी)॥८०)॥ तीनिकालकीदरसीजान)॥ सकलतत्व॥ कोपूरनज्ञानसिंध)॥ आदिजि
प्राणीकूर)॥ ह्रींतिसुपदैरहैसदीव)॥८१)॥ ॐजग्मेमग्मेतत्वेभूयेभच्चेभविरसे)॥ अरहेनपार्श्वेस्वाहास्वहैरहैंनम)॥ इतितीसा
क्षरविद्यामंत्र॥ करिश्रुतसागरकोमंथान॥ प्रगटेमंत्राक्षरगुनषांन)॥ इनिकेध्यानकरैमुनिराय)॥ सोसरागध्यानीकहिताहि
)॥८२)॥ ध्यानकरतपावैनिजवस्थायातेकहिएध्यानपदस्थ)॥ यंत्रादिककोपूजनजोय)॥ ध्यानपदस्थतहीपुनिहोय)॥८३)॥दो
हा)॥ अष्टसिद्धिनवनिधिसदनमननिरोधकेग्रेह)॥ वरन्योध्यानपदस्थयहसोतिथिबारगनेह)॥८४)॥ अथतिथिमंत्रच्योरा)॥ चोप
ई)॥ प्रणवमंत्रपरिवांकोध्यान)॥ ॐ)॥ दोयजदोयवरनमंत्रांन)॥ ॐह्रींमंत्रअनाहतबीजहिजाप)॥ हौंचौथिहिंचतुरवरनपठिआ
प)॥ सिद्धचक्रं)॥८५)॥ पंचाक्षरपांचेकोजोय)॥ णमोसिद्धाणं)॥ छटिकोंषडअक्षरअवलोय)॥ सरकहभ्यंःसातेकोसप्ताक्षर
रचै)॥ णमोअरहंताणं)॥ आठैंअष्टाक्षरकोंसचै)॥ ॐनमोअरहंताणं)॥८६)॥ नवमीमंत्रनवाक्षरध्यायॐह्रींॐअर्हंणमोजिणा
णं)॥ दशमीदशाअक्षिरलोलाय)॥ ॐचतारिमंगलपदाणं)॥ महावीर्यएकादशाथाय)॥ ॐॐह्रींहंसस्त्रींॐॐह्रीं)॥ द्वादशिबीजाक्षर

CC-0. BHAU DAJI MEMORIAL

मनल्यायॐह्रांह्रींह्रूंह्रौंह्रः)॥ असिआउसानमः)॥ तेरसित्रयदशाअक्षिरमंत्रः)॥ ॐअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्योनमः)॥ चोदसिचतुर्दश
शाक्षरमंत्रश्रीमद्वृषभादिवर्द्धमानांतेभ्योनमः स्वाहा)॥ पूरनमासीषोडशवर्ण)॥ ॐह्रींनमोभगवतेभालचंद्रायसर्वज्ञायनमः)॥ मा व
शतीसाक्षरधर्ण)॥ ॐह्रींजग्मेमग्मेतत्वेभूयेभच्चे)॥ भविस्मेअरहेमरकेजिनपार्श्वेस्वाहास्वहैरहैंनम)॥८८)॥ अथचारमंत्रच्योरोअपरा
जितजपिआदिवार)॥ णमोअरहंताणं)॥ णमोसिद्धाणं)॥ णमोआरियाणं)॥ णमोउवज्झायाणं)॥ णमोलोएसव्वसाहूणं)॥ सोल
वारकोअक्षरभार)॥ अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्योनमः)॥ मंगलवारषडाक्षरजांनअर्हंतसिद्ध)॥ बुधवारपंचा
क्षरध्यान)॥ असिआउसा)॥८९)॥ चातुरवरनगुरुवारजपेइ)॥ अरहंतशुक्रवारदुगअक्षिरध्येयसिद्धं)॥ शनिकोंएकाक्षरपर
धान)॥ ॐ)॥ यहपदस्थवरन्योशुभध्यान)॥९०)॥ दोहा)॥ मूंगमोतीहेममणिरूपाफलगुथिसूत)॥ अरुकपूरवस्त्रभेदमितिअष्टोत्तर
शतनूत)॥९१)॥ मध्यमतर्ज्जनामिका)॥ अंगुरनिजीवनस्वास)॥ अगुठासौंजंपमालउरचिगुनिइकइकबहतास)॥९२)॥ इतिपद
स्थध्यान)॥ चौपई)॥ अबरूपस्थध्यानतुमसुनो)॥ जाप्रसादजिनदेवहिमुनो)॥ औरदेवसोनाहीकाज)॥ हैदेवाधिदेवजिनिराज)॥९३)॥ दोष अठारहहितजिनेश)॥ गुणछयालससंयुक्तमहेश)॥ अतिशयमहातीसअरचिर)॥ सोहैप्रातीहार्यवसुसार)॥
९४)॥ अनंतचतुष्टयकोनहिछेव)॥ करैंइंतेंद्रनसिपदसेव)॥ श्रीऋषिभादिचौबीसमहंत)॥ गुणवरमतनहिपावैअंत)॥९५)॥ स
मोसरणकीरिद्धिसमेत)॥ जोइनिकोंचिंतैधरिहेत)॥ ध्यानकरतउनहीसोंजाय)॥ यामेंकछुनसंशयथाय)॥९६)॥ जवनटैरचि
तवेवरूप)॥ तवशिवपदहैसरणअनूप)॥ जोजगमैनरकरतोकाम)॥ पावैताहीकेसवनाम)॥९७)॥ दोहा)॥ यहरूपस्थअनू
पगुणजिन)॥ समआतमध्यान)॥ करिकैआप्यासमुनिपावैपदनिर्वान)॥९८)॥ इतिरूपस्थध्यान॥ अथरूपातीतध्यान)॥ चौपई)॥
धर्मरहितप्रानीसंसार)॥ जपैअनेकमंत्रनिरधार)॥ सिध्यसाध्यहैअरस्वासाध्य)॥ किरियासहितचतुरआराध्य)॥९९)॥ थंभ
नवश्यीकरनअवदात)॥ चेटकनाटवहुउतपात)॥ तातेवर्णसिद्धमुनिजोय)॥ कोंटेविमलमंत्रअवलोय)॥५००)॥ सकलसि
द्धिइनहिकेध्यान)॥ अष्टसिद्धिनवनिद्धिवषांन)॥ एसंसारवटावनसचै)॥ इनहीतेशिवमारगदचै)॥१)॥ मनकीचंचलताको

रोध॥ उपजावेदुरध्यानचिरोध॥ तातेकिमपिमंत्रवरनए॥ मनसारोकनकोंपरनए॥२॥ आतमहितकरिजोध्यान॥ अब सुनिताकोफेरेवषांन॥ सिद्धरूपकोंचितनकरो॥ तातेसकलकर्मनिर्ज्जरौ॥ हैअविकारपरमरसधांम॥ कायविनासहजवि सगरामसदाअनाकुलपरमअमेय॥ अनरूपीअरूअजपादेय॥४॥ तिनिभुवनमेंरहैसमाय॥ ज्ञानदृष्टिविनुलखैनजाय॥ विनुशरीरहैपुरुषाकार॥ किंचितऊनचरमतनधार॥५॥ जोकोऊजिषमेकरेविचा॥ अनरूपीक्यैंपुरुषाकार॥ तासंबोधरै नउरूकहिकथा॥ सिद्धद्वारमेंवरनीयथा॥६॥ सोसिद्धनिसमआतमरूप॥ ध्यावेदविधाडारिअनूप॥ रूपातीतध्यानयह नाम॥ जोलेजायमुक्तिकेधाम॥७॥ दोहा॥ रागरहितइंद्रिनिदमितसकलविकारउडाय॥ जीवतनोविश्रामहरूपातीतकहाय॥८॥ इतिरूपातीतध्यानसंपूर्ण॥ अथप्रत्यय॥ चौपई॥ पंचमिथ्यातप्रथमएकांत॥ विनयद्वतीयविपरीतितितिसंत ॥ चौथोहैसंशयमिथ्यात॥ अज्ञानपंचमोसुनिद्योभ्रात॥९॥ वारदृष्टंतहैदुषदाय॥ तोकेनामसुनोसमुदाय॥ पांचोथाव रम्नवाहिविरोध॥ इंद्रीपांचोमनहिरोध॥१०॥ पंद्रहजोगपचीसकषाय॥ सबसतावनप्रत्ययथायजवलेोइनिमेरेभेजुजीव॥ पावेनहिमुक्तिपथसीव॥११॥ अथजातिस्थानं॥ लषचौरासीजोयनिसंवे॥ ताकोभेदकहोंकछुअबे॥ पृथ्वीवायुअ ग्निजलचारि॥ इतरनिगोदनित्यअवधारि॥१२॥ षटषटथोकबयालिस॥ सातसातवानोपरेतासवन॥ सतीप्रमेकदशाजा नि॥ विकलत्रैंपषटषटलक्षिनषानि॥१३॥ देवनारकीअरुतिरयेच॥ चारिचारिसबचारहसंच॥ मनुषजोनिहैचोदहलाष॥ स बचोरासीमितयहभाष॥१४॥ दोहा॥ चोरासीलषजातिमेंमातपछिजयजंत॥ पंचपरावर्तनभरैभटकेकालअनंत॥१५॥ चौपई॥ करनतीनिमद॥ आठप्रकारपांचोइंद्रीविकथाविचार॥ सातविसनअरूचारिकषाय॥ पंचमिथ्यातजहांसरसाय ॥१६॥ यहछतिसयोगसमुदाय॥ इनिमिलिप्रानीकर्मबध्याय॥ औवेजायसदातहंजीव॥ इतरनिगोदादिकजुसदीव॥१७॥ इतिजातस्थान॥ अथकुलकोडि॥ पृथ्वीकाईबाइसजानी॥ जलकाईपुनिसातषानि॥ तेजकायतहांतीसजुभनोवायुसात लषकोडिहिगनो॥१८॥ वनस्पतीअठाइसहो॥ एकेंद्रीसबसतसटिजोयहेइंद्रीपुनिसातगनेय॥ तेइंद्रीतहांआठभनेई

॥१९॥ चोरेंद्रीनवकोडिप्रतस्त॥ सविचोबिसवीकलत्रयरस्त॥ अवपंचेंद्रीकोसुनिहाल॥ हैतिरयंचसाठतेताल॥२०॥ जलच रसाठचारलषकोडि॥ फुनिनभचरसबबारहजोडि॥ थलचरदेहोभेदबषान॥ चतुपदआदिदृढपरवांन॥२१॥ सरीसर्पन वकोडिजुकहे॥ इमितिरयंचसबेसरदहे॥ देवनिकलछब्बीसजुहोय॥ नारकगतिपच्चीसहिसोय॥२२॥ चौदहमनुष॥ तेने अवलोय॥ सकलजीवइकटेअवजोय॥ इकसयलषगनियैकुलकोडि॥ साठिनि॥ न्यानवऊपरजोडि॥२३॥ एकअकोडकोडि
दायतामेआ

लाषधारिनाकेअंक॥१९९५.....॥दोहा॥पितापसीकुलकोडियंद्रचतुर्विशथानेव॥अवजियगत्यागतसुनोरंडकचो
वीसेव॥२४॥इतिकुलकोडीचौविसथानक॥अथचौविसदंडक॥नारंकगतिहैप्रथमहीभवनपतीदशजाति॥ज्योतिषव्यंतरते
रमोचौदहव्यंतरथान॥२५॥थावरपांचौविकलत्रयपंचेंद्रीतिरयंच॥चौवीसोमानुषगतीकहोभेदअरंच॥२६॥चौपही॥नारकी क
गतिआगतिहोय॥नरतिरयंचपचेंद्रीहोय॥जायअसेनीपहिलालगेंगमनविनुहिंसाकर्मनिपगें॥२७॥सरीसर्पदूलोंजाय॥तीजेलोंन जे
भचररपहुचाय॥सर्पजायचौथेलोंमही॥नाहरपंचमलोंजिनकही॥२८॥नरीछठमलोंसोजाय॥नरअरुमछसातलोंथाय॥अवर्
नरकसवनेकटिजीव॥नरंअरुपशुगतिलेहसदीव॥२९॥छठमैनरकनिकसिकैजीव॥समकितलेहनपापअतीव॥पंचमतैनिकस्यो
मुनिहोय॥चौथेकोकेवलीधरसोय॥३०॥तीजेकोनिकस्योभविकोय॥तीर्थपदधारेसोय॥एसीविधिआगतिपहिचानि॥सातनरकी क
कहिभगवान्॥तेरहदंडकदेवनिकाय॥तिनिकेभेदसुनोमनल्याय॥नरतिरयंचपंचेंद्रीविना॥औरनकहूंसरपदगना॥३२॥देव
मेरेगतिपंचलहाय॥भूजलतरुवरनरतिरमाहि॥दूजेसुरगऊपरेदेव॥थावरहोयनहीकरिगव॥३३॥सहस्रारतेऊंचोसुरा॥म
रिकेहोयमुनिहचैनरा॥भोगभूमिकेतिरअरुनरा॥दूजेदेवलोकलैंपुरा॥३४॥जायनहीयहनिहचैकही॥देवनिभोगभूमिनहिल
ही॥कर्मभूमियातिरपगस्कंधी॥श्रावगव्रतधरिवारमगति॥३५॥सहस्रारतेपरितिरयंचजायनहीतजिहूपरपंच॥अवृतसम्यक
दृष्टीनरा॥बारमतेऊपरनहीधरा॥३६॥अन्यतपीपंचागिनिसाधि॥भवनत्रिकतेंजाइनबाधि॥परिव्राजकोदंडीतेह॥पंचमपरेन
हिउपजेय॥३७॥परमहंसनामापरमती॥सहस्रारऊपरनहिगती॥मोक्षिनपावेपरमितमाहि॥जैनविनानहीकर्मनसाहिकर्मन
साहि॥३८॥श्रावगआर्यअनोव्रतधारि॥बहुरिश्राविकाकहेविचारि॥सोलहस्वर्गपरेनहिजाय॥ऐसोभेदकस्योजिनराय॥
३९॥द्रव्यलिंगधारीजेजती॥नवग्रीवकऊपरनहिगती॥नवनवोत्तरपंचोत्तरा॥महामुनिविनुओरमधरा॥४०॥केईबारदेवजि
यभयोति॥निमेंकेईपदनहिलयो॥इंद्रभयोनइत्याचीहभयो॥लोकपालमुनिकबहूनथयो॥४१॥अरुलोकांतभयोनहिसोय॥न
हीअनुतरपहुच्योलोय॥एवपदलहिबहुभवनहीधरै॥अलपकालमेमुक्तिहिवरै॥४२॥गत्यागत्यदेवगतिमाहअवनरगति

कोभेदसुनेहू॥चौर्वासोदंडककेमाहि॥मानुषजायजुसंसयनाहि॥४३॥मुनिपदधारिहोइवइंइ॥मानुषविनानमुनिपदृदी॥गति
पर्च्चासकहीनरदोय॥अगतिपुनिवाइसजुसोय॥४४॥तेजकायअरुवायजुकाय॥इनिविं॥सूक्ष्मथूलत्रितियजानिये॥थूलसू
क्ष्मचौथोमानि॥येथूलपंचभौकहिगनाम॥थूलथूलछटमोअभिरामम॥४५॥करमवरगनादिथिनआय॥सोसूक्ष्मसूक्ष्महिकहाय॥
अष्टकर्मयपंधजुहोय॥सोसूक्ष्मपुद्गलअवलोय॥४६॥शास्त्रपर्न्नागंधरसजांन॥सूक्ष्मथूलकयोपरवान॥धूपचादिनीआदिसम
स्त॥थूलसूक्ष्मसोकहिरावस्त॥४९॥जलपृतलेल्लआदिदेसर्व॥थूलरुपजानोसोदर्व॥भूमिविमानधामगिरिजानि॥थूलथूलताकोपहि
चांनि॥५०॥दोहा॥सबदबंधसूक्ष्मयुरुवछायातमसंधांन॥भेदउदोतआतपजुतवपुप्रजायदइजांन॥५१॥अथधर्मेद्रव्य॥चोपाई॥
जियपुद्गलजुतगमनकराय॥धर्मद्रव्यतवहोयसहाय॥जैसेमीनबलेजलजोइ॥पैअपनीइछाकरिसोइ॥५४॥
नुऔरसबैनरथाय॥गतपचीसआगतबाईस॥मनुषतनीभाषीजोगीस॥४५॥यहसामान्यमनुषकीकही॥अवसुनिपदवीधर
कीसही॥तीर्थंकरकीदुइआगती॥सुरनारैकेआवैसती॥४६॥फेरीनगतिधारैजगदीस॥जायविराजैजगकेसीसचक्री॥अध
चक्रीअरुहली॥स्वरगलोकतैओवैवली॥४७॥इतिकीआगतिराकहिजानि॥गतिकीरीतिजुकहोवमानि॥चक्रीकीगतिनिजुहोय
सुरगनरकअरुशिवपुरजोय॥४८॥तपधारैतोसुरशिवदोय॥मेरेराजैमेनरकनिहोय॥आषरिपौहुचैपदनिर्वान॥पदधरएव
डेप्रधान॥४९॥अधचक्रीकेदोऊभेद॥हरिप्रतिहरिनारकगतिषेद॥राजमाहिराजनिहचैमरे॥तदभवमुक्तिपंथनहिधरै॥५०॥
आषरिपावैजिनवरलोक॥पुरुषद्वालाकाशिवकेथोक॥बलिभद्रनिकीदोईगती॥सुरगजायकैकैशिवपति॥५१॥तपधोरेएनि
हचैभाय॥मुक्तिपात्रएश्रुतमेथाय॥कुलकरनारदरुद्रकामजिनवरतातमातपद्रनाम॥५२॥इनिकीआगतिश्रुतेतेजानि॥गति
कोभेदजुकहोवषांनि॥कुलकरदेवलोकहीलहै॥नारदरुद्रअधोगतिगहै॥५३॥मदनमदनहतिस्वर्गहिजोय॥कोईतद्भवशि
वपुरहोय॥तीर्थंकरकेपितामुसिद्ध॥सुरगजायकैहैहैसिद्ध॥५४॥मातासुरगलोकहीजाय॥आषरिशिवपुरवेगिलहाय॥
चौर्वासोदंडकेतेभरे॥पशुवहोइतोनाहिनकरै॥५५॥विकलत्रयकीदसहीगती॥दइआगतिकहिश्रीजगपती॥पंचथावर

विकलजुतीनि॥नरतिरजगपंचेंद्रीतीन॥५७॥इनहीदइमेंउपजैजाय॥इनहीतेविकलत्रयआय॥पृथिवीपानीतरवरका
य॥इनहीदइमेंजनमधराय॥५८॥नारकंविनुसबदंडकजोय॥पृथिवीपानीतरवरहोय॥तेजीवायुमरिनवमोजाय॥मनुषहो
यनहिसूत्रकहाय॥५९॥थावरपंचविकलत्रयवीर॥एनवगतिभाषैमहमोर॥दइतेआयतेजअरुवाय॥होयसहीभाषैजिनराय
॥६०॥एचौर्वासोदंडककहे॥इनिकोंत्यागिपरमपदलहे॥इनिमेंरुलैसुजगकोजीव॥इनेतेरहितहोयजगपीव॥६१॥इतिदंडक
इतिसंसारीसंपूर्ण॥अथऊर्द्धगमनवर्णनं॥प्रकृतिबंधस्थितिबंधजुएव॥अरुअनुभागप्रदेशलहेव॥बंधनचारिजीवकोएह
॥चारोंगतिभटकावैजेह॥६२॥बंधविवर्जितजिवजियहोय॥ऊरधगमनकरैजवसोपं॥जैसेंतूंबीमृतिकालेयजलमेंचूडिरहैव
लछेप॥६३॥कमिसोलेपजायपरिजैवे॥ऊरधगनकरैजियतवै॥जोलोचप्रहुगतिबंधोजीव॥विदिशिवर्जिगतिकरैसदीव॥६४॥
अथसिद्धजीववर्णनं॥सोरटा॥वेसेसिद्धशिवषेत॥ज्योंदर्पनमेंछांहदे॥ज्ञाननैननलषीचेत॥चरमंतेनसोंप्रगटनहि॥६५॥पद्धडी
छंद॥तहांअष्टकर्ममलमुक्तहोय॥अरुअंष्टगुनातमरूपजोय॥वयउतपतिध्रुवसंयुक्त॥तीनजहांचरमदेहतेंकबुकहीन॥६६॥
जोअथिरद्रवपरजायकोय॥तसुहानिवृद्धिमरूपजोय॥वेहीनयसिद्धनिकोप्रमांन॥हैवयउतपतिअरुध्रौवजांन॥६७॥जवभव
परनतिनीविनास॥तयभईसिद्धपरजायजास॥निहचलपदपायोसिद्धवास॥एहिवयउतपतिध्रौव्यजास॥६८॥जिनसोथ्यज्ञा
नमरज्ञात्नाहि॥थिररूपपींडहैजातमाहि॥तिनिकोंओकारकदेवाहोय॥सोकैहैएकैदृष्टांतजोय॥६९॥इकमोममईपुतरावनाय
॥नषसिषसमचतुरस्थानथाइ॥तननिराभरपुरषाअकार॥सबहीविधिसुंदररचिअपार॥७०॥फुनिमाटीसोइमिलैवीसोय॥
जैसेंतनऊपरतुचाहोयकहुं॥अंगनषालीरहइसार॥उपचारकलपनायहप्रकार॥७१॥सोअगिनिमाहिलीजैतपाय॥गलिजा
यमोमसांचोरहाय॥अवताभीतरकीजेविचार॥कहारद्रोतहांवुधजननिहार॥७२॥हैमुसिपोसिलिकोसुनिप्रकाश॥नभर
होंजुपुरुषाकारजास॥सोजानोयहअंबरउच्चारी॥तहाब्रह्मरूपपरगटउचारि॥७३॥परियहआकाजटशून्यरूप॥वहपून
चेतनिविदस्वरुप॥पामेषमेयहफेरजानि॥आरुतिमेंकछुअंतरनमानि॥७४॥इहविधिसिद्धतमकोस्वरूप॥सोनिएका

रसाकाररूप)।दिष्टांतयहेनिजहीयेधारि।भविजननकोसंशयनिवारि।।७५।।गीताछंदः।।श्रीवीरनाथजिनेंद्रभाष्योभ्रगटगोतमनेनकेये।।जीवतत्त्ववर्णनिवहुविधिभव्यजननमनसरदयो।वीर्यदर्शनज्ञायकोयहुफेरिक्रमिद्विविधपथगहे।।साधिसकचरनकर्मक्षय।।करिमास्वतेपदकोलहे।।७६।।दोहा।।स्करनरवंदितपदमलध्यानधरतजोगेंद्रा।।तीनिलोकप्रभुताकियेप्रणमोवीरजिनेंद्रा।।७७।।इतिश्रीमहावीरपुराणेभाषायांभगवत्जीवतत्त्ववर्णनोनामत्रयोदशोध्यायः।।१३।।दोहा।।तत्त्वारथपपरगणैटकरनके वलज्ञानस्कभांन।।तीनिजगतनाइकनमोश्रीसनमतिभगवान्।।१।।चोपई।।फिरिगोतमवोलेसिरनाय।।तुमस्वामीत्रिभुवनसुपदाय।।अवए।जीवतत्त्वहिकहिभेदे।।२।।तवप्रभुमुषवानीउच्चारी।।सकलअर्थगर्भितगुनभरि।।जीवतत्त्वगुनपूरनकहे।।अवसषंतत्त्वपदारथुलहे।।३।।दोहा।।पुद्गलधर्मअधर्मनभकालसहितपंच।।सोअजीवजडरूपहैवरतोतिनिहिप्रपंच।।चोपहि।।पुद्गलभेददोयपरकार।।षंधरूपअनरूपविचार।।तोतेपुद्गलरूपीदवंचारी।।औरअरूपीसुनियेलोय।।छेदभेदजाकोनहिहोय सर्व।।५।।वर्णपंचरसपंचहिपाठ।।दोयगंधसंपरसगुनआट।।पुद्गलगुनएवीसवषांन।।इनतेषंधरूपपरवान।।६।।अवअनरूपीसुनियेलोय।।छेदभेदजाकोनहिहोय।।अगिनिजलादिकनाग्राहुन।।ग्रास्त्ररहितपैकारनभूत।।७।।सूक्ष्मथूलषटभेदप्रवांनश्रद्धाकरिसुनियेवुधिवांन।।सूक्षसूक्ष्मप्रथमवषांन।।सूक्षमद्वितियकहेभगवान।।८।।सूक्षमथूलतृतियजानियें।।थूलसूक्ष्मचोथोमानि।।येथूलपंचमोकहिएनाम।।थूलथूलछटमोअभिराम।।९।।करमवरगनादिष्टिनआये।।सोसूक्ष्मसूक्षमहिकहाय।।अष्टकर्मयषंधजुहोय।।सोसूक्ष्मपुद्गलअवलोय।।१०।।ग्राह्यपर्याप्तगंधरसजांन।।सूक्षमथूलकद्योपरवान।।धूपचादिनीआदिसमस्त।।थूलसूक्ष्मसोकहिएवस्त।।११।।जलघृततेलआदिदेसर्व।।थूलरूपजानोसोदर्व।।भूमिविमानधामगिरिजानि।।थूलथूलनाकोपहचानि।।१२।।दोहा।।सवंदवंदेधसूक्ष्मगुरुवछायानमसंतान।।भेदउदोतअतापजुतवपुभ्रजायद्रव्यजांन।।१३।।

अथधर्मद्रव्य।।चोपई।।जियपुद्गलजुतगमनकराय।।धर्मद्रव्यतवहोयसहाय।।जैसेमीनचलेजलजोई।।पैअपनीइछाकरिसोइ।।१४।।अथअधर्मद्रव्य।।जटचेतनिजथहीथिरहोइ।।तवअधर्मसहकारिसोई।।ज्योंपंथीवेटेतरुछाया।।जवउठि

चलेगेहेतवनाही।।१५।।अथआकाशद्रव्य।।लोकालोकदुविधिआकाश।।मूर्तिविवर्जितसदाअकाश।।धर्मअधर्मकालत्रयदर्व।।पुद्गलजीवपंचएसर्व।।१६।।इनिकोंदेइसदाअवकाश।।असंख्यातपरदेशनिवास।।लोकाकाशकहावेसोय।।परेअलोकाकाशजुहोय।।१७।।द्रव्यविवर्जितजितिष्टेसदासूरतिहीनक्रियानहिकदा।।सोहैनंतानंतआकाश।।गोचरकेवलिद्रष्टिप्रकाश।।१८।।अथपुद्गलद्रव्य।।नौतनद्रव्यजुजीरनकरे।।यहवर्तिसमयादिकधरे।।धरीपहरदिनवर्षसुजायसोव्यवहारकालपरजाय।।१९।।लोकप्रदेशअसंख्यजुजोय।।एकएककालानुजोय।।रत्नराशिवतसोभैजाहांभिन्नभिन्नपरदेशीतहां।।२०।।कालजीवपुद्गलपुनिधर्म।।औरअधर्मअकाशाजु।।पर्मएहीछहदर्वेसमुदाय।। कालविनापंचास्तिजुकाय।।२१।।जीवधर्मअधरमत्रयदर्व।।तेअसंख्यपरदेशीसर्व।।नभअनंतपरदेशीसंत।।पुद्गलसंख्यअनंत।।२२।।कालएकपरदेशीजान।।तोतेंकालकायविनुमान।।वर्तमानलक्षिनहैजास।।सदासास्तोद्रव्यप्रकाश।।२३।।इतिशिष्यप्रश्न।।भोगुरुएकप्रदेशीहोय।।कालकायविभुभोयोसोय।।योंपुद्गलपरमाणूसवे।।सोसकायकरिकैसेलसे।।२४।।गुरुउत्तर।।कालानूहैअलसंख्य।।भिन्नभिन्नतिष्टेजुनिसंख्य।।आयुसमाहिमिलेनहिसदा।।तोतेकायवंतनहिकदा।।२५।।रूखीचीकनादिकगुनजांहि।।तेपरमानूहैजगमाहितृतषिनषंधरूपपैहैजाय।।तोतेपुद्गलकाय।।काय।।२६।।अथआकाशप्रदेशवर्णनं।।अडिल्ल।।परमानूअविभागएकसोजानिये।।तेकेजितोअकाशप्रदेशवपानियेकालानूहूएकजहाधर्महै।।पुद्गजीवप्रदेशसवैलहीसर्महै।।२७।।शिष्यप्रश्न।।धर्मअधर्मएकालजीवजुतचारिए।।नभइकदेशादिसवैकहोकिहिविधिवए।।येएकहैअरूपीचारोंधरिलए।।पुद्गलमूरतिवंत।।अनंतेकिमभए।।२८।।गुरुउत्तर।।।।दोहा।।यथाएकमंदिरविषै।।वहुतकदीपप्रकाश।।वाधाकछुव्योपैनहीलहै।।सुजसेअवकाश।।२९।।तैसेंहीपदेशानभपुद्गलेषंधवसाय।।ज्योंअनंतएकहैवाधालहैनकाहि।।३०।।अथआस्रवतत्त्ववर्णनं।।जोकर्मनिकोआश्रवकहिरातादि।।भावदरवदोभेदहै।।कहैजिनागममाहि।।३१।।चोपहि।।मिथ्याअव्रतयोगकषाय।।एसंतावनआश्रवपाय।।तैसैभावजीवजवकरै।।सोभायाश्रवकर्मनिधरे।।३२।।तिनहिभावनिकरैउपाय।।पुद्गलजीवकर्मपरनाय।।द्रव्यरूपआकर्षैजवे।।सोद्रव्याश्रवकहिए

चै॥३३॥अथबंधतत्व॥रागदोषआदिकपरिनामबांध्योनहाआतमाराम॥सोहैभावबंधजगमांहि॥द्रव्यबंधदूजोअवकांहि॥३४॥
जेचेतनिपरदेहाजुकहे॥तिनिपरकर्मपुरगनेगहे॥नोतनकर्मबंधबहुहोय॥द्रव्यबंधयहजांनोसोय॥३५॥प्रकृतिबंधथितिबंधजुधार॥
अरुअनुभागप्रदेशविचार॥प्रकृतिप्रदेशजोगउतपति॥थितिअनुभागकषायनियुक्त॥३६॥अथप्रकृतिबंधप्रथमज्ञानावर्णीकर्म
॥मतिआदिकफनज्ञानप्रकर्म॥आछादैचेतनिगुनसदा॥जैसेंवस्त्रदीकियेकदा॥३७॥दरसनदूसरोजान॥नवप्रकृतिनिसोहै
२ थितिथान॥तिनिकोरोकैकारिजसबैजैसेंद्वापालनृपसबै॥३८॥कर्मवेदनीकर्सायवषांनि॥षडगधारमधुलिप्तसमांनसरसोवतसो
वतसोसुःखकहिकरे॥मेरुप्रमानदुःखअनुसरै॥३९॥मोहिनिकर्मचतुर्थमरेउसें॥आठबीसप्रकृतिनिकरिबसे॥मंदीरावततांकोनिर
धारि॥दरसनचरनहींयेसार॥४०॥आयुकर्मपंचमविष्यांत॥च्योरोगतिसोआयुदाता॥दुःखसुःखसपूरनधार॥श्रंखलवतनीहि
भावविचार॥४१॥नामकर्मछहभजानिये॥प्रकृतितिरानवेतिहिमानिये॥चित्रकारवसेहैगुनसोय॥नरसुरनारकपशुजुहोय॥४२॥
गोत्रकरमकहिरासातमा॥नीचउंचकुलधरीआतमा॥उतिमनिंद्यलहैजनताहि॥कुंभकारवतकहिरातांहि॥४३॥अंतरायहै॥अ
ष्टमकर्म॥भंडागारीगुनतिहिचर्म॥दानलाभगोउपभोग॥वीर्यसहितपांचोनहिजोग॥४४॥दोहा॥इत्यादिकवसुकर्मकोहैसुभा
ववहुभेस॥प्रकृतिबंधजिनवरकह्योबंधैजीवप्रदेश॥४५॥अथथितिबंध॥चोपई॥ज्ञानावरनीदरसनवर्न॥वेदनिअंतरायथितिक
र्ण॥कोडाकोडीसागर॥तीससोउतकिष्टकहिजगदीस॥४६॥मोहनिकर्मतनिथीतिलीध॥कोडाकोडीसतरिसिंध॥आयुकर्म
उतकृष्टवषांनतेतिससागरकेपरवांन॥४७॥कोडाकोडीसागरवीस॥नामगोत्रउतकिष्टथितिशा॥अवजघन्यथितिकोपरवांन॥
मुहूर्तीजुदीसुनियेबुधिवांन॥४८॥कर्मवेदनिहादशाजांन॥कहिमुहूरतइनिउनमान॥अष्टमहूरतनामरुगोत॥यहजघन्यथि
तिइनिकीहोत॥४९॥पंचकर्मजेतेषजघन्य॥अंतमुहूरतथितिपरेमन्य॥मध्यमकेनिभेदअनेक॥सर्वकर्मभुगतेजियराक॥
५०॥अथत्रयपल्लासागरप्रमानवर्णनं॥दोहा॥अवत्रयपल्यप्रमांनमितिकह्यो॥अर्थअवधारि॥श्रद्धाकरिभविजनसुनोमन
संदेहनिवारि॥५१॥चोपई॥उतिमभोगभूमिकीभेड॥सातदिवसकेबालकमेंड॥तिनिकेरोमअठपरमांन॥मध्यमभोगभूमि ॥३॥

इकजांन॥५२॥मध्यमभोगभूमिवसुधार॥भूमिजघन्यभेडइकबार॥जघन्यभोगभूमिवसुहोय॥कर्मभूमिइकबहिरासोय॥५३॥
आठरोमकीलीषप्रमांन॥लीषइष्टइकराईवांन॥राईआठएकातिलतेह॥वसुतिलइकजवउदरगनेह॥५४॥वसुजवउदरेउदरमि
लाय॥अंगुलएकलहैसमुदाय॥छादशअंगुलकोसजुग॥नौंचारिकोद्वालधुजोजनभनो॥५५॥सोइकजोजनकूपषनाइ॥वलया
कृतविस्तारवनाइ॥तितनोंहीगहरोउनमान॥अवसकलियेवहभेरेसुजान॥५७॥उतिमभोगभूमिजोभेड॥ताकेरोमलेइसवषेड
॥तेहीरोमखंडबहुकरे॥पहीकलपनामेधरे॥५८॥दोहा॥अंगुलएकजुरोमकेवीसलाषखंडान॥सहससतानवेएकसयवानवे॥
अधिकप्रवान॥५९॥ऐसेसूक्ष्मसोकरे॥फेरिखंडनहिहोय॥तिनिरोमनिकूपहिभरे॥कूटिदाविद्रढसोय॥६०॥तिनिरोमनिसंष्याक
हि॥अंकहिपैतालीस॥अवतिनिकोविवरनसुनो॥भाष्योवीरजिनीद्र॥६१॥उक्तंच॥गाथा॥चदुमेगंचतयचदुरो॥पणदोएअ
चछकतयसुणं॥तयसुणंवसुदोएहं॥सुएहंतुयनुंरियततसतंच॥६२॥सतंचदुणवपणगं॥मेगंदोएहंचमेगणवदोएहं॥अगोठा
रससुणं॥अंकपणतालरोमलघुपल्ले॥६३॥चौपई॥अवरनिअंकनिकोलिषि॥अर्थजिहिधिजिसांसनगहिगर्थणं॥चारिएकत्राय
नुरियजुपंचं॥दोछतीनीधरिसूणत्रयंच॥६४॥सुन्नआवदोसुन्नजुतीन॥चारिसातफिरिसातहलीन॥सातचारिनवपंचहएक
दोइविशेक॥६५॥सातवीसएअंकहिधरो॥तापरसून्नअठारहकरो॥यहीअंकहैपैतालीस॥कूपरोमकीसंख्यादीस॥६६॥४१॥
॥३४॥५२॥६३॥३०॥८॥२०॥३४॥७७॥७४॥९५॥९२॥९८॥२०००००००००००००००००००॥सोसोवरषवीतिजवजाहि॥एक
एककाटोषुधताहि॥कूपउदरजवषालीहोय॥सोव्यवहारपल्यअवल्पेय॥६७॥भोगभूमियांनरतिरएव॥ज्योतिषव्यंतरभानदेव
॥कल्पवासीनीदेषीसोये॥यहीकल्पजोवितक्रमिजोय॥६८॥आवपल्यएसीविधिकहि॥अवसुनिसागरयल्यजुसही॥लघुजोज
नज्ञानपंचप्रमांन॥जोजनमहाएकुनमान॥६९॥ताकोकूपजुवेहीभांति॥लहिविस्तारगभीरविष्यात॥पूरवरोमएकखंडान॥ता
केअंशज्ञानकपरवांन॥७०॥तिहिरोमनिसोंकूपभराय॥सोवर्षैगतएककदाय॥जवहिकूपवहषालीहोय॥तवउद्धारपल्यअवलो
य॥७१॥ताकेअंकतिरानवहोइ॥इतनीवरषअसंष्यजुसोय॥सोदशकोडाकोडीजाय॥सागरआवकह्योजिनराय॥७२॥देवना

एकीअरुपदकारत्त॥कर्मनिकीथितिनिवेकोगनिहाल॥अरुकोडाकोडीपचीस॥पल्यिउधारेरोमजेदीस॥७३॥दीपोदधिकीसंख्याजो
न॥नामवलिसबकिपहीचानि॥ताकेअंकगनोबुधिवान॥छकोतरद्वातसवपरिवान॥७४॥सागरपल्यजानियेयही॥राजुपल्य
सुनोअवसही॥जोजनमहालाषइकजान॥पूरवरितिरागउनमान॥७५॥रोमअंसवहसोगुनिकेरे॥इहिविधिमहाकूपकोभ
रे॥सोसोजवहीवरषगतंस॥एकएकनवकादोअंस॥७६॥जवहिकूपवहषाल्योहोय॥अद्धापल्यजानियेसोय॥ताकेअंकनि
कोपरवान॥इकसयपच्यासीधरिज्ञांन॥७७॥दोहा॥प्रथमपल्यसंख्यातनि॥हातियअसंख्यवषांनि॥असंख्यातगनितीसरी
॥यहजिनवचनप्रवांन॥७८॥भावपल्यतद्यप्रथमहीम॥ध्यमसारपल्य॥उतिमराजूपल्यत्रय॥अवतिनिगनतीसत्य॥७९॥चौ
पाई॥एकअंककोएकहिनाम॥सुन्नधरेदशाकहिअभिराम॥तृतीयअंकइकसयगनिलेवचारिअंककोसहसगनेव॥८०॥
षटअंकहिकोलक्षिजुहोय॥आठअंककोकोडिसजोय॥कोडाकोडीछोडशाअंक॥ताकिप्रमितपदमनिरसंक॥८१॥दोर्डकोडि
दहपदमजुजहां॥अंकइकतीसहिगनिएजहां॥ताकोनामकलपपरवान॥इतनीसंख्याकहिमतिमान॥८२॥कलपकरोस
यकोडाकोडि॥तिहिसेंतालअंकलिषिजोडि॥जोव्यवहारपल्यवासान॥सोथोसेंतप्रमितयहज्ञांन॥८३॥आवपल्यायहीसो
कहै॥संख्यसंख्यगुनिकीजेजोर॥होयअसंख्यप्रमानवहोरि॥८४॥तेतिरानवेअंकहिगनो॥सागरआवपल्यसोभनो॥असंख्य
असंख्यगुनि॥असंख्यगुनिअहिधरो॥इकसयपच्यासीउदूरो॥८५॥अद्धापल्यनामहैसोयसोदशाकोडाकोडीहोय॥अद्धा
सागरताहिवषानि॥दोसयअंकगनोबुधिवान॥८६॥तेदशाकोडाकोडिसमुद्र॥सोईएकगनोधरिरुद्र॥पंद्रहुतरदोसयअ
क॥द्योदसकोडाकोडीवंक॥८७॥तासोंकहेजगतघनरोह॥अंकदोयसेंतीसपरोहदशाकोडाकाडीघनरोह॥अंकदोसे
तेर्त्तासपरोह॥८८॥अंकदोयसेगनिपैताल॥सोदसकोडाकोडीसाल॥सोकहिएजगसेटिप्रधान॥अंकदोयसेसाठिवषा
न॥८९॥अंकदोयसेगनियेताल॥सोदशाकोडाकोडीसाल॥जोकहिएजगसेटिप्रधान॥अंकदोयसेसाठिवषान॥९०॥
ताकेभागसातकरिदेव॥एकभागराजूगनिलेव॥अवसवअंकनिकोपरवान॥लिष्योताहिभ्रमनासनजान॥९१॥१०० ॥४॥

JAIN BHAU DAJI MEMORIAL

.....

.....

.....

.....॥इतिअंक॥अवमुहुर्त्तकोसुनियेभेव॥जिहिविधिकहोवीरजिनदेव॥समयअसंख्यआवलीएक॥आवलिगरहस्वासहिदेक॥९१॥सातस्वासकोउश्वासअभनेह
॥सात॥सातश्वासकोलवकरिलेयसाटे॥अडतिसरुवपरवांन॥एकघरीकोयहउनमान॥९२॥दोयघरीजवर्वातेसोय॥एक
मुहुरतकालजुहोय॥ताकेस्वाससहसत्रयछांन॥सातसयाहतिहत्तरिजान॥९३॥तामेकमीकेरोबुधधार॥स्वाससतासीआ
वलिबार॥अंतमुहूरततनकोनाम॥आगेगेउरसुनोअभिराम॥९४॥तीसमुहुरतनिशिदिनहोय॥पंद्रहदिवसपक्षिइकजोय॥दो
यपक्षगतमासहिएक॥द्वादशमासवरसइकटेक॥९५॥दोहा॥इहिविधिकर्मनिथितिवध्योसागरमितिउतकीष्ट॥औरजघन्य
मुहुर्तगनित्यागतभव्यअनिष्ट॥९६॥मध्यमकेहैभेदवहतारतम्यकरिलेष॥जुदीजुदीसबप्रकृति॥थितिकर्मकांडमेदेषि॥
९७॥इतिथितिविधिः॥अथअनुभागवंध॥चौपई॥अवअनुभागवंधदुइभेदसुभअरुअसुभसुःष्यदुषषेद॥सुखकेो
उदयचारिविधिवुधा॥गुडरखंडहिश्रीजुतसुधा॥९८॥असुभभेदपुनिचारिप्रकार॥निंमुंजरविषत्रयोधार॥हालाहलजु
तचोरोएह॥इनिसोदुरवष्यापोअधिकह॥९९॥छिनमेंसुषछिनमेंदुषहोय॥हअनुभागवंधअवलोय॥इहिविधिवंध्योजीव
संसार॥कर्मनिसोपावेनहिपार॥१००॥अथप्रदेशवंधः॥जीवप्रदेशाअसंख्यप्रमान॥पुद्गलअनंतानंतवषांन॥तिनिपरदेशनि
चेतनिवध्यो॥दरसनज्ञानचरननहिसध्यो॥१॥दोहा॥इहिविधिचास्योवंधसोसुषदुषवंध्योजी॥वज्राराधनरुषीषडगवंध
काटिद्यिवभव॥२॥इतिवंधतत्वं॥चौपई॥राकादिकपरिनामजीव॥त्यागेतिन्हेसर्वथासीव॥आश्रवतनेनिरोधनहेत॥
सोसुभावसंवरकहिदेत॥३॥द्रव्याश्रवकोकरेनिकरेनिरोध॥सोईसंवरद्रव्यपरोध॥पंचमहाव्रतसुमतिजुपंच॥तीनि

गुमदरशधर्महिसंच॥४॥ हादशाअनुप्रेक्षाचिननी॥ज्यपर्वाइसगरीसातनो॥ एसताउनदोदेधरे॥अस्रीक्रियाद्रव्यसंवरे॥५॥
दोहा॥जेसेनोकाछिद्रजुलओवेचहूंवोर॥सोकर्माश्रवरोकियेसंवरवाढेजोर॥६॥इतिसंवरतत्व॥चौपई॥कर्योनिर्ज्जरा
दोयप्रकार॥सविपाकीअविपाकीसार॥सविपाकीसबजीवनिहोय॥अविपाकीमुनिवरकोजोय॥७॥तपबलरसकर्म
निभोगवे॥सोईभावनिर्जरातवे॥वंधेकर्मघूटेजिहिवार॥द्रविनिर्जराकहिएसार॥८॥इतिनिरजरातत्व॥सक
लकर्मक्षयकारनभाव॥ताकोंभावमोक्षितहराव॥संपूरनकर्मनिक्षयकरे॥द्रव्यमोक्षीअविनाशीधरे॥९॥वंध्योकर्म
वंधनजवजीव॥ताकोंतोडिभयोजगपीव॥लोकसिषिरिपरकीन्योवास॥सुखअनंतउपमानहिजास१०॥अहमिंद्रा
द्रयदेवधिराज॥चक्रीषगआदिकनरसाज॥भोगभूमियापशुपरजाय॥वंतरओरसवेसमुदाय॥११॥इनिकेसवसु
खपिंडीवेरे॥एकसमयसिद्धानिकोधरे॥तौजिहिसमरपुरवेनादि॥सदासुःरकीउपमाकाहि॥१२॥इतिमोक्षितत्व॥
७॥सप्ततत्वसंक्षेपहिकहे॥पापपुन्यजुतनवपदलहे॥ताकोभेदसुनोथिरहोय॥गर्भीतप्रश्नशुभाशुभसोय॥१३॥पा
यप्रगटजगमेंदुषमानि॥निश्चेदुर्गतिदायकजानि॥गहेपंचमिथ्यातनिकूर॥चारिकषायअसंयमपूर॥१४॥सकलप्र
मादजोराषिरथाय॥सप्तव्यसनधरेअधिकाय॥आठोमदगर्वितदृगअंध॥वंकादिकवसुमलअवंध॥१५॥निद्रा
दिनरौद्रध्यानसंचरे॥दुरलेश्यादुरबुधिविस्तरे॥कुगुरकुदेवअतिकरे॥इहिपापआयुग्रहकरे॥१६॥कुटिलकमनप
रधनहरिलेइ॥रोगदोषलंपटअधिकेय॥झूठ्योकोधमोहवशपाय॥निरविचारनिरदयदुखदाय॥१७॥परनिंदानि
जकरेप्रसंस॥वचनअसत्यकहेतजिसंच॥करेकग्रंथतनोअभ्यास॥जिनश्रुतकोदूषेकरीहाय॥१८॥करेअक्रिया
दुद्धरदीनपूजादान॥क्रियाकरिहीन॥क्रूरकरमधावेसवएमजानें॥नहीआतमानेनो॥१९॥शीलअचारनतपरत
विना॥भवसागरदुखजायनगना॥करेपापसोअशुभउपाय॥इहिविधिधरेनरकपरजाय॥२०॥प्रथमआदिसप्तम
परजंत॥लहेदुःखतेदुःखअनंत॥छिनकनहिदुषकोनास॥दुखवेंसादरघृतपरगास॥२१॥मायावीअतिकुटिल॥

सुखमेंयो॥निशिभक्षनपरनारीसुरमेंयो॥मूरषमहाकुमतश्रुतधरे॥पशुअरुवृक्षहिसेवाकरे॥२२॥निकेरेअस्नानप्रभा
त॥भावअशुद्धप्रगटअवदात॥जातकुतीरथकोंअगवान॥जिनवरधर्मवहिर्मुखज्ञान॥२३॥महाकुशीलीअवृत
जोग॥२लेश्याजिनीकेमहाकपोत॥इत्यादिकसवयापसंयोग॥मानतमुवकर्मस्सभोग॥२४॥आरतिध्यानमरनजवकरे
गीतितिरपंचजायअवतरे॥सहेदुखवहुकालप्रजंत॥सोकविचरनिलेहेअंत॥२५॥तीर्थंकरश्रुतगुरुणवंत॥ज्ञानिधर्मवृ
तीमुनिसंत॥महातपोधनचारितधनी॥सेवाभक्तिकरेतिनितनी॥२६॥सिद्धायजिनयुनआधिकाय॥श्रीजिनपतिसेवा
उरल्याय॥इत्यादिकशुभपुन्यउपाय॥आरजखंडमनुषपदपाय॥२७॥उतिमकुलपोवेसोतहा॥राजविभूतिसुसुषअतिजहा॥तहांतेन॥

पकरीकेशिवसधौ।अरुपुनितीथंकरपदुवधौ।२८।पंचमहाव्रतअनुचरततेहु।मुनिश्रावगपलेधनेहु।जेव
कषाहइंद्रीटचोरे।तिनिकोनासकरेतपजोरे।२९।धर्मशुक्लध्यावेजवध्यान।आरतीरौद्रनिकंद
नजांन।मनवचक्रमदिलधेरेविराग।भवदूषभोगपरत्याग।३०।क्षमाआदिदलक्षनधर्मी।इत्यादिक
आचरनिकुपर्म मरनसमाधिसाधिशुभध्यान. पावेअमरलोकसंस्थान. ३१ सागरवहुजाहाकखलहे. सपनेमोहि
दुःखनाहिगहे मार्दवभावसहितनिजाहिये. ऋजु-आर्जवपरिनामहिकिये ३२ अतिसंतोषीसदाअचार. संरक्षा
यचितअविकार. उनिमपात्रसुदानहिदेय. भक्तिभावमनमेअधिकेय. ३३ ताफलभोगभूमिपदलहे. महाभो
गअनुपमसुषगहे. पुन्यतनोफलइहिविधिसार. पावेश्रावगमुनिरधार ३४ कायक्लेशादिविधी-आचरे. त
पअज्ञानमूढजोकरे. तेमरीनीचदेवगतिलहे. व्यंतरआदिअशुभतानहे. ३५ बहुमायाधारीजगमाहि.
कांमीकामतृपतिनहिकोहि. परदारासोदोषविचार. अशुभअंगमरसहिनविकार. ३६ मिथ्यामतीरागकरीअं
ध. मृदकुशीलीपापसंबंध तेनरमरित्रियवेदलअहाय. होयकुरूपदुर्गंधापाय. ३७ शुद्धाचरनशीलपरधान.
माथाकोटिलताकियहान हियेविचारचतुरअतिदक्ष पूजादानकरतपरतक्ष. ३८ इन्द्रीअलपसुःख्यसंतोष.
दरसनज्ञान अमृतपोष. पुरुषवेदतेलहेमहान. भवभवमोहिकरेअघहांन ३९ कामअंधलंपटपरित्रिया.
शीलहीनकृतवर्जितहिया. नीचकर्मरतहेदुरधि. यामारगनीचप्रनर्तनकीया. ४० सोमरिवेदनपुंसकलहे.
महादुःखकोकारनयहे. पापकुफलइमिबहुपरकार. देषोप्रगटहोनदुखभार ४१ जेपशुलादेभारअत्यंत.
जातकुतीरथनिरदयवंत. तेमरिहोहिपुंगअतिनिंद्य. तहालहेदुखरुनचंद्र ४२ जिनसिद्धांतदोषअतिघेरे.
कुमतग्रंथकोवेदनकरे. परनिंदासुनिहरषेअंग. विकथावचनकहेमनरंग. ४३ धर्मवचनकोकरेअभाव.
तेनहिराउपजैतजिज्ञान. ज्ञानावरनीकर्मउदीत पापतनेकारनसबहोत. ४४ जिनश्रुतदेषिननचननहिकरे.
परविभूतिकोलषिपरे. जेरकरेकुदेवकुतीरथजात. परसुतदेषेमननहिसिहास ४५ तेनरमरिकेउपजेअंध॥

दरमनधरनीकोयहबं धमहादुःखकरिपिंडिततेह· भवसागरतटलहतनजेह· ४६ विकथाबचनकहैसदासदा· दोषअदोषनसम लेकदा· निंदितजिनशासनसागरधर्म· पढतकुशास्त्रहरषियपर्म· ४७ जिनवरपूजाभक्तिनकरै· संयतत्वश्रधानहिधरै· अति अज्ञानमाहीलवलीन· तेमूकाउपजैशुतहीन· ४८ जोमनइछैसोईकरै· हिंसापगरबमनधरै ज्योगयंदमदमतआज्ञान· तैसेहिबहनरविनुज्ञान· ४९ श्रीजीनेंदसुगुरुसिद्धांत॥ इन्हेभक्ति रूपपनैनलहात॥तेनरविकलहोंहि अधीकार॥मतीज्ञानावरनीअनुसार॥५०॥सप्तव्यसनसेवतजेकुधी॥विषाआमीषलंपटमनमुधी॥ औरपुरुषजेव्यसननिधरै॥तिनिसोमित्रभावपुनिकरै॥५१॥जेमुनितपवृतआदिकपूर॥तिनि साधुनतेतिष्ठतदूर॥निजवपुपोषकरैअधीकार॥भुगतैभोगरभुनहार॥५२॥निसिभक्तैअरुषायआहार॥निर्दयव्यथाकरैविषवादतेनररोगशोगकोंगहे॥विहवलतीव्रवेदनासहे॥५३ तपवृतधर्मध्यानआचरै॥सबजीयजांनेआपसमान॥दयाभावउरकरैप्रनांन॥५४॥दुःख शोकव्यापनहिकदा॥तेनरसुधीयायुयजैसदा॥रोगरहितसवनिर्मलितगात॥पुन्यतनोफल अवदात॥५५॥तनकोंसंसकारनहिकरै॥यमअरुनियमयोगतपधरै॥इहविधिकालयकाल ज्ञ॥अपारकरतपुरुषजेवहुपरकार॥५६॥जिनवरचरनकमलयुगनमेपरमा॥भक्ति जुत पापनिवमे॥पुन्यप्रकृतीशुभपायसंयोग॥तेनरलहैदिव्यतनभोग॥५७॥कुगुरुकुदेवकुधर्महि भजै॥सुगुरुदेवजुतश्रद्धातजै॥होयकरुपीतदुखपूर॥श्रभुदृतश्रसुषपत्रश्रकूर॥५८॥जि नवरपरमभक्तीउधरै॥अरुमुनिनरकिसेवाकरै॥तपवृतधर्मआदिआच्यार॥यमअरुनिज मदोयपरकार॥५९॥तनममत्वनहिपेलेश॥जीतेइंद्रीतसकरभेस॥तेनरशुभगहोहितन

माहि॥सबजगकोप्रियकरता ताहि॥छमनमलिनमनलिप्तहिअंग॥महाधीनावनसुवसखंग॥ रूपआदिमदधारोगवी॥परत्रीयदोषविचोरेःसवी॥६०॥दुर्जनपापप्रीतीवहुकरै॥सुरजन देषीवेरमननधरै॥तेनरदुरभगहोहिअपार॥निंदितविश्वदुखकोभार॥६१॥दयकृत पदीक्षाजेह॥परवंचनउद्दितअतितेह॥पूजैकुधियकुदेवकुग्रंथ॥विविचारीजानहिः नै पंथ॥६२॥सत्यअसत्यनेजांहिभेद॥मतिज्ञानावरनीयहषदा॥निंद्यकमहापापकोमूर॥अशु भउदयदुरगतीअंकूर॥६३॥तेत्यजतत्वविवेकीजेह॥मृषावचनबोलैनहितेह॥सबकों देइसुबुधिउपदेश॥तपअरुधर्म॥आदिवहभेश॥६५॥सारवस्तुकोयहजुकरै॥औ रकुमतिविधिसवपरिहरै॥मंदकरैमतिज्ञानावर्णमतिः॥ज्ञानजगमेंउद्दुण॥६६॥ श्रीजिनपाठपठनहिकरै॥मत्यतज्ञानगर्भुरधरै॥दुराचापठैमधुहोय॥कुश्रुत पाषिस्तोरेसाथ॥६७॥परपीडाकरीनेकर्म॥बोलैवचनसत्यअधर्म॥मुरुषमहानिंद्यज गमांहि॥श्रुतज्ञानानलिलहितास॥६८॥जिनगुनपठनपाठजेकरै॥कालअकालभेदउद्दरै॥ भव्यनिदेयधर्मउपदेश॥शुभमारगवरतावरसेस॥६९॥कहेसत्यवचसबसूषदाया॥मृषाभा वनहिमनवचकाय॥श्रुतज्ञानावरनीतंवतजै॥७०॥विरकितेहैभवभोगशरीर॥जिनश्रुतगुरुसेवतमनधीर धर्मश्रधर्मविवेकीतेह॥तत्वआदीमनचिंततातेह॥७१॥दुराचारतेरहितपुनीत॥कौटिल्यादीविवर्जितमि त॥शुभअज्ञायतेहिईनरकहे॥पुन्यउदयसवशुभपदलहै॥७२॥परत्रीयहरननिपुनजेसदा॥कुटिलचि त्तजवहैंसवदा॥पैत्रमंत्रउच्चाटनआदी॥चेटकनाटककरैअनादी॥७३॥दुराचारपापैअतिघनो॥

दुखदुखेउरहेतिहितनो॥अशुभायतेईनरजाय॥पापतनोकारनयहमान॥७४॥जेवहुविधिजिनपूजा
करे॥धर्मभाननिहिनआचरे॥देईसुपात्रिदातमहान॥परमभक्तिअतिउरमेआन॥७५॥तपव्रतउर
आचरनकराय॥लोभरहितमनविकल्पनाहि॥सारसंपदापावेहिंतेह॥अनवांछेआवेशुभयेह॥७६॥
पात्रदानजेसमरथनाहि॥जिनपूजैनहिधर्मलहांहि॥परउपगारकिंचितकरे॥तृछाव्रतीकीलक्ष्मीधरे॥७७॥लोभवंतहैकिरपनसदा॥किरियारत्तनहिजानैकदो॥सोनरदुषितदरिद्रहोय॥भव
भवसदानिरधनीसोय॥७८॥पशुअरुनरकोकरैवियोग॥बंधादिकउपजावैसोग॥परस्त्रीपरधनजेहरे॥
सीलरहितसउपापहिकरे॥७९॥जनमजनमतेलहैवियोग॥सुतकामीनीधांधनकोशोग॥इत्यवस्तु-
कोकिल्पपाय॥पीडैहृदयदुःखअधिकाय॥८०॥सकलजीवरक्षाउरधरे॥वधबंधवियोगनकनहूंकरे॥
जिनसासनपोषनपरवीन॥व्रतअरुधर्मध्यानलवलीन॥८१॥जेनरपावैसवसंयोग॥सुषअभिलस
वसंपतीयोग॥बांधवस्वजनगेहवरनार॥पुन्यसुफलकारनसविचार॥८२॥उतिमपात्रदानजो
देई॥भक्तिभावनामनवचतेई॥जिनप्रतिमाचैत्यालयकरे॥धर्मध्यानअतिउरमेंधरे॥८३॥
पुरवसंसकारतेलहै॥श्रेष्ठसुपदउतिमकुलगहै॥अरुपरजनसेवैबहुपाय॥सबसुषहोय
पुन्यसोंआय॥८४॥दानदेनकोकपनअतिवा॥जिनपूजाकीगहतनसीवा॥तेमरीदुर्गतीभवभवमेंमें॥स
र्वप्रजायत्रादिबहुरमे॥८५॥जेसेवैअरहंतगनेश॥ध्यावैतीनगुनजगतमहेश॥शीलसहितकाया
दिढ़रषी॥तेगुनवानकहेवुधभाषि॥८६॥दोषतनोबहुयहजकरे॥महामूढअनगूनविस्तरे॥
करैकुदेवसेवसुषमानी॥धरैहिंभआरंभअजांनी॥८७॥सीषकुलींगीकीउरधरै॥अरुमि

ध्यामारगविस्तरै॥तैनिरगुनउपजैजगवसा॥विनुसुगंधज्योंफुलपलासा॥८८॥तिनिजगतस्वा
मीअरहंत॥गुनगनैसआगमकथयंत॥तिनकीमनवचसेनाकरै॥अरुरतनत्रयतुपरध
रै॥८९॥धर्मध्यानराधैसोय॥मिथ्यामतत्यागभ्रमषोय॥पुन्यवंतउपजैनरतेह॥विस्वसंपदापा
वैजेह॥९०॥दयारहितजेरतकरिहिन॥परबालककोहन्तमलीन॥करैबहुतमिथ्यामतसा
ज॥निजसंतानसिद्धकेकाज॥९१॥चंडिकक्षेत्रपालकीसेवा॥इत्यादीकपूजैबहुदेवा॥अ
लपआवतीनिकेसुतलहै॥पापवंतदारुनदुःखसहै॥९२॥अहिंसाआदिकव्रतसंयुक्त॥श्रधाकरीमानै
जिनसूक्त॥अरुमिथ्यामारगपरीहरै॥इत्यवस्तुकोसाधनकरै॥९३॥तिनिकेरुपवंतसुतहोय॥
पूरनआयुलहैपुनिसोय॥परमप्रतापीसुषकोमूर॥सकलपुन्यकारनभपूर॥९४॥दीक्षादान
धर्मतपध्याना॥कायोत्सर्गनियमव्रतजाना॥जेमुनिमउनिचलीजाहि॥तेकहिएकातरजग
मांहि॥९५॥जेनिजवीर्यतपरगकरै॥महादुःसहतपकौंसंचरै॥ध्यानाध्ययनयोथिरथाय॥तीन
गुपतीपालैअधिकाय॥९६॥सहैविषमउपसर्गअपार॥क्षिमाभावधीरजुधार॥इहिवि
धिकरैकर्मअघिघात॥तेमुनिधीरवीरअवदात॥९७॥जिनसासननिंदतजेकर॥मुनिश्रु
तश्रावगआदिअनूर॥करैप्रसंमिथ्यादेव॥कुश्रुतकुतपसीबहुसेव॥९८॥क्रोधमानमायाजुत
होय॥अजशकर्मबांधैसटसोय॥तेनरनिंद्यजुतिन्योलोक॥अतिअपजसमावैदुखथोक॥९९॥करै
रिगंवरसुरुकियेवा॥ज्ञानवंतगुरुअलषप्रभवा॥व्रतअच्यारकरैसमुदाय॥पालैशीलत्रिविधिदिढ
काय॥१००॥तपजपजध्यानधर्मउरल्याय॥सबकोहितमितवचनसुनाय॥भवभवशीलवंतपु

निहाय॥ सरगमुकतीपदपावैसोय॥३॥ सेवैकुगुरुकुदेवकुपंथ। शीलविनानहिगहैसुपंथा। सुषवंछे उरलेसानीव॥ लहैकुगतितजिभवभवशोल॥२॥ जिनगुणधरगणसिंधा। संम्यकदृष्टीज्ञानप्रबंधा॥ चरनकमलपूजैकरीसेव॥ तिनीगुनप्रापतिकारनएव॥३॥ एहिविधी मपुरुषप्रधाना। इनिकोंतु जिसेवैअघखीन॥ इहभवपरभव दुरतीगहै॥ तेदुरजनमुरष पदलहै॥४॥ तत्वतत्वकगुरुपर्म देवअरहनजूधर्मअधर्मी॥ करिविवेककपूजैभवीजीवा॥ तपजरुध्यानविचारसदीवा॥५॥ जोइहभवसूझीमैडधिहोय॥तौपरभवपावैबहुसोय॥ज्योंकरेसपवित्रयज्ञान॥तपषिनप्रगट लहैइकथान॥ इंदनधर्मगुरुनिंदाकरै॥जिनमतदोषिदोयउरधरै॥ अपरदेवपूजैमननमूढ॥तेपडैदरबुडिठ॥६॥तीर्थंकरगुरुसंगहिपाय॥चरनकमलवंदैशिरनाय॥तिनप्रतिभक्तीकरैमनुला य॥जसकिरतिगुनकहैबढाय॥७॥निजगुननिंदजैभविकरै॥अपरदोषउपगूनधरै॥तेपरभव पावैरूपभोगात॥तिनिजगमसेवकहोत॥८॥निजगुप्रगटकरैअतिजेहा॥परकोदोषकहेअधिकेह॥नीचदेवपूजैअज्ञानकुगुरुकुदेवसुउरआन॥९॥तेनरहोंहिनीचपदजाय॥नीचगोत्रपावै दुषदाय॥भाग्महीनदालीद्रीमरहा॥पापतनोकारनसठलहा॥१०॥जेमिथ्यामारगअनुरा गकुगुरुकेपथसेवैदुरभाग॥पूरवसंसकारकेजोग॥पावैअरुभजैनमअतिशोग॥१२॥जिन सिद्धांतसगुरुजरुधसी॥ज्ञानचक्षुहोंजिनकेपर्मभक्तिसहितसेवैजुगपाय॥जेपरभवति निसर्मगुनथाय॥१३॥अन्यदेवकोसरनजुलहै॥सुपनैमांनकुपथचुनिगहै॥श्री।जिनधर्मनश्रद्धागहै॥मरिकैअ धोगनतेलहो॥१४॥कछियोगधारैमुतसर्ग॥मोंनसहितसाधैशिवमर्ग॥आयशक्तिकोंपरगट करै॥तेन रैस्वर्गमुक्तिपदं धरै॥१५॥निजवीरज आछादैनाहि॥तपव्रतधर्मरैउरमांहि॥करैथोंनमुतसर्गप्रसिद्ध॥तपसमर

थ शुभकरतारिहि॥१५॥षोलग्रहव्यापारजुकरैं॥जोरैपापकर्मबहुधरैं॥अरुपरघातबातबहुकहै॥तपअसमर्थनिंद्यवपु लहै॥१७॥ दोहा॥ इहविधियहसंसारमैदुषसुषजीवलहंत॥भविजनसुनिमनचेतकरिधरौधरमजगतंत॥१८॥ विनधरधीरजधर्मदोषनिजउरलोहि॥क्षिमासलिलसोंसींचियेअलपकालफलहोय॥१९॥पापपुन्यअधिकार॥यहप्र श्नशुभाशुभसार॥वीरनाथभनिनभगटकहिसबनिषनिहितकार॥२०॥सुनिहरषेद्वादशसभाबाढ्योआनदकंद॥ ज्योंसूरिजकेउयतैं विगसैवारिजवृंद॥२१॥ गीताछंद॥ इहभांतिकर्मविपाकजगनियपापपुन्यहिजोगये॥अरुशुभ शुभभानजकरहिकेदुःषसुषसोभोगवै॥तोहकंचनपगनिवैडीदुईविधिछूटैजबै॥तबहीलिवपुरपंथपावैनवलसाहिजुलीनवै॥२२॥ इतिश्रीबनारसीविलासभाषायांभागवतीसूत्रषड्द्रव्यपंचास्तिकायसप्ततत्वनवपदार्थवर्णनोनामचतुर्दशोधिकार॥१४॥ दोहा॥दोषअठारहरहितप्रभुगुणहिछयालिसपूर॥प्रणमोवीरजिनेसपदहौकर्मअपचूर॥चौपई॥अबसुनिगौतमधर्मनिधान॥कहैंमुक्तिमारगसुषखांन॥समकितप्रथमधरैनवजीवश्रावगयतिवरधर्मअतीव॥२॥धर्ममूलहैसमकितसार॥जबजिन वानीनिहचैधार॥सुकलनिरधसरूपमननमैदयाधर्मपालैअधवसै॥३॥अनंतानबंधीहैचार॥दरसनमोहतनीनिरधार॥ सातप्रकृतिएउपसमकरैजबजियउपसमसमकितधरै॥४॥जेवेएसातप्रकृतिछयहोय॥क्षायकसमकितजानोसोय॥कछु उपसमकछुनासजुलहै॥वेदकसमकितातासोकहै॥५॥दोहा॥ सोरठसकितनभेदजुतकहो॥मार्गनामाहि॥अबउपजनदरशाभूमि॥कावरभोआगमपांहि॥६॥चौपई॥आतामारगअरुदेश॥सूत्रभीर्थसंम्यक्तमहेश॥संक्षेपहिविस्तारजुअर्थ॥अबगाढपरमअवगाढदरशर्थ॥७॥अथआज्ञासंम्यक्तहिधार॥८॥अथमारगसंम्यक्त॥जोनिःसंगरहैथिरचित्त॥पाणीपात्रभक्ष णसुपवित्त॥मोक्षमार्गीसुनिश्रद्धाकरै॥सोमारगसंम्यक्तधरै॥९॥अथउपदेशसम्यक्त॥त्रेसठिपुरषादिकजुमहान॥तिनि पुरानसुनिश्रद्धाजान॥निश्चयनजोकरहिप्रतीत॥सोसम्यक्तउपदेशपुनीत॥१०॥अथसूत्रसम्यक्त॥तपआचारक्रियासबन ॥इमिभेंकथिनाभेषुधरजन॥सूत्रसंम्यक्तकहावैसोय॥भविजनहीकोंहितकरताहोय॥११॥अथबीर्यसम्यक्त॥सकप

डाक्टर भाऊदाजी दयाराम्य स्मारकम्
DR BHAU DAJI MEMORIAL

दारथवीरजनाय ॥ सूक्ष्मिमें अर्थसुनेमनलाय । भवीजनत सुद्धाउरआन ॥ सेवीरजसंम्यक्प्रधान ॥१२॥ अथसंक्षेपसंम्यक्॥
सोसंक्षेपकहेबुधवान । सुनेपदारथश्रद्धावान ॥ सोसंम्यक्जांनिसंक्षेप ॥ भवनिनकोसुखकरनसमेप ॥१३॥ अथविस्तारस
म्यक्त ॥ नयविस्तारपदारथगहे ॥ भेदाभेदसंक्षेपरदहे ॥ निश्चयमनहमकरहिविचार ॥ सोसंम्यकाकहिएएकचित्त । १४॥अ
थ अर्थसम्यक्त ॥ अंगसिंधुअवगाहनकरे ॥ बहुविस्तारवचनपरिहरे ॥ अर्थमात्रहरुचिधारेजबैं ॥ अर्थसंम्यक्त्वहावे
तबै ॥ १५॥ अथवगाढसम्यक्त ॥ अंगभावनाउरमें धरे ॥ मनप्रतिरुचिश्रद्धाकरे ॥ तीनकषायगहेगुणसार ॥ सोअवगाढ
संम्यक्तुधार । १६॥ अथपरमअवगाढसंम्यक्त ॥ केवलज्ञानीवचनप्रधान ॥ करैअर्थश्रद्धारुचिदान ॥ यहसंम्यक्तपरमअ
वगाढ ॥ भविजनमनउलुषकरतावा ॥ १७॥ दोहा ॥ उतपतिसमकितजि ॥ गुनभूषनदूषनना ॥ अतीचारसंयुक्तवसुधर
नीताहिप्रका । १८॥ चौपई ॥ केजियउपजेसहजसुभाय ॥ केसतगुरुउपदेशवताय ॥ गतिचारोमेसमकितलहै ॥ १९॥स
तप्रवर्तनिअवस्थादोनि ॥ समताभवसौंहिदिनमांनि ॥ यहैलाभछिनछिनजबहोय ॥ समकितनामकहावेसोय ॥ समकितनामक
हावेसोय ॥ चेतनिघरकौंन्यारोजांनि ॥ तामेंकछुविकलपनहिआनिर ॥ हितप्रपंचसहितथाथि ॥ समकितचिन्हयहीसुषकारि ॥२१॥ कुद
नावातत्यजुतदोय । सज्जनतायानिंदाहोय । समता भागतिविरातिविरागधरांनि ॥ धर्मराग गुण आठप्रधानि ॥२२॥ चितप्र
भाधानाभावसहित ॥ हेयउपादेयहीतमीत ॥ धीरजहरषसहितपरवीन ॥ एहीपांचौभूषनलीना ॥ २३॥ दोहा ॥ अएमहा
मद अएमलषट ॥ अनायतनदीस ॥ तीनिमूढसंयुक्तसबदूषनपचीस ॥२४॥ चोपई ॥ जातीरूपकुल ईसुरजात ॥ तप
बलविद्यालाभहिगुता ॥ इनिआठौमदजोकरै ॥ तहैदुःखनरकहिसंचरै ॥२५॥ आसंकाअस्थिरतावंछा ॥ ममतासहितसदादुरगंछा ॥
चारसत्यरहितदोषपर भाषि । तजिप्रभावनअंगसुमल राषि ॥२६॥ कुगुरुकुदेवकुधर्महिधरै ॥ अरुसराहनाइतिकीकरै ॥ षटअनायत
नजानौयही ॥ महादःखकोकारनसही ॥२७॥ देवकुदेववरोवरिमांनि ॥ सुगुरुकुगुरुकसमचहिचानि ॥ पंथकुपंथनअंतरदीस ॥ तीनीघ
टएदोषपचीस ॥२८॥ ज्ञानगारवकरीअरुमतीमंद ॥ निठुरचरनभाषैदुखकंद । रुद्रभावधुनिआलसधार ॥ एहीनासपंचपरकार ॥२९॥
लोगहास्यभयभोगसुहाय ॥ विधामारगभगतिलहाय ॥ मूलादर्शनीअ

ग्रजुसोच ॥ अनीचारएपांचौमोच ॥ ३०॥ अभमिथ्यातकरणी ॥ जोमिथ्यातकरेदुषदाय ॥ समकितनतीहेसुहायपूंजेहार्था
थोदेभाय ॥ तेमरपावैपशुपरजाय ॥ ३१॥ नरपीपरुकमरआमरा तुलसीजीवनिमोदजुभरा ॥ दूनिकेसेवाजोनकरै ॥ निश्चैता हीगति
कौधरै ॥ ३२॥ यंतरआदिसभी सीतला ॥ सूरजऔरचंद्रकीकला ॥ यक्षनागग्रहदेवीजान ॥ नहीहोमजेआवधमांन ॥ ३३॥ गोवरकी
पूजाजेकरै ॥ गायमूंतलैमाथैं धरै ॥ वैवैभुंजरियामुदजूजाय ॥ पितरसराधकरैसुषपाय ॥ ३४॥ एसवमिथ्यामारगजास ॥ तजिएस
ससकितचेकाज ॥ अबसमकितकीमहीमाजान ॥ कहौंकछुसंक्षेपवषांन ॥ ३५॥ अथसंम्यक्तमहिमा ॥ थावरविकलत्रयनहिदोय ॥
औरनिगोमुदजैसैंसोय ॥ जायकुभोगभूमिनहिकरा ॥ स्वेछाखंडुउपजैनहिसदा ॥ ३६॥ त्रितियनरकआगेनहिजाय ॥ भवनत्रि
कवहूंनलहाय ॥ तीनिवेदमेदोषनधरैमनु ॥ मनुषनीचकुलनहिविस्तरै ॥ ३७॥ अबछाइकसमकितदिढहोय ॥ सवएपदवीधर
यनसोय ॥ नरगतिमैनरईश्वरजांनि ॥ देवनिमैसौदेवप्रधान ॥ ३८॥ दोहा ॥ नभमेंजैसेभानहैचिंतामणिनाहि ॥ कलपवृक्षनिविषेमे
रतकलनगमाहि ॥ ३९॥ सबदेवनिमेंदे । वजिनदेवसमकितअधिकार ॥ सबधरममेंकोमूलहैमहिमातासुअपार ॥ ४०॥ वृतनतपस
यत्रबहूंधरै ॥ समकितविनुजगमांहि ॥ जैसेंकृषिंसबाकेरेबीजविनाफलनांहि ॥ ४१॥ धर्ममूलसंम्यक्तकहिसास्त्रोदायप्रकार ॥ सुरग
मुकतिदायकसही श्रावगयतियसार ॥ ४२॥ अथश्रावगधर्मवर्णान ॥ चौपही ॥ त्रेपनकिरियोंकोअधिकार ॥ सोश्रावगउतिमवडभा
गप्रथमूलगुणअष्टप्रकार ॥ बारहवृतदादशतपसार ॥ ४३॥ सामायककिरियादुकसोय ॥ एकादशप्रतिमाअवलोय ॥ चारिदानजल
गालनिए ॥ इकअनर्थऊन्नरत्नत्रयेटक ॥ ४४॥ अथअष्टमूलगुण ॥ दोहा ॥ पंचउदंबरजानिये तीमकारसमेत ॥ दूनि
कोत्यागीपुरुषजोअष्टमूलगुनलेत ॥ ४५॥ अथपंचकुवर ॥ वरपीपरुकमरसहीतकठ्ठवरषाकरैहै ॥ पंचउदंबरफलनजेजीवरा
शिंरषलेह ॥ ४६॥ चौपई ॥ वरमकोरासामूनार ॥ कुमेहेदेषियगेहलीभजा ॥ फदकचेंचेंढाकलिदगटा ॥ ४७॥ सूरनमूराओरदोहा
री ॥ म्हारूकंदमूलगाजरी ॥ इत्यादिकजेऔरअपार ॥ इनिमेंजीवराशिअधिकार ॥ ४८॥ अथतीनिमकार ॥ दोहा ॥ सवघरह
नमाषारेहैकेरेवचनकेकठोर ॥ उपनहांअदजअधिकदिमेरेबहुठोर ॥ ४९॥ जीवमेरेबहुहोयमहेजभषैसुपाय ॥ तेसठ

पाये कुगतिपथपापफलहृदिसिरभाय॥५०॥चौपई॥नोनिकाओदूधपेमसीअश्रुजलथोनेबसी॥इनेआदिदेओरअनेक॥
महकेअतीचारमजिसेक॥५१॥अथमद्यदूषन॥महुथेआदिवस्तुबहुओरनिनिकोसारिकैरेमदछोर॥त्रस भावज्ञहाजीवा॥अ
नत॥उपजेमरेलहैहनहिअंत॥५२॥जायहमद्यपिपैजगजीव॥मातानित्रियामनोनेसीव॥इहभवनिंद्यहोयेअधिकार॥परभवपोवे
दुरगतिभार॥५३॥अथअतीचार॥स्वादचलितजोवस्तुयेहय॥अन्यजातिकेभाजनलेय॥दिनादोयकोतत्कहि घेरे॥दुदलयस्तु
लेइकढीकरे॥५४॥फूलसुंघिकैमुषमेंदेइ॥अरुअनजानैकोजलपेइ॥एसबमद्यदोषदुखदाय॥इनिकोत्यागोशिवसुषपाय॥५५॥
इतिमांसदूषण॥अथमधुदूषण॥जीवघातनितुहायनमांस॥पापकमेजानोयहनाम॥सूछमजीवपरैतामाहि॥दृष्टिहूकीलषिआवैनाहि॥५६॥तौतै
त्रियनिबसेयहदेह॥तोलोनिमेलहैअधिकेह॥जीवगयेतनमुरदाहोय॥महाअपावनकुबदनकोय॥५७॥अतीचार॥घीवतेलजल
ग॥अतीचार॥घीवतेलजलहीगअनीच॥होहिचरमसंगतीबहुजीवहाटचूनफलहरितसुसाग॥पंचपूलबहुबीरजग॥५९
अनछानेफलभक्षबकरे॥मासहीअतीचारनहिटरै॥जोनरइनिकोत्यागनकरे॥सकलदोषनिहूचैपरिहरै॥६०॥दोहा॥इनिअठोमेघा
पअतिरोमसहितजबत्याग॥तत्वश्रवणरतसंभवै अष्टमूलगुणभाग॥६१॥अथबाईसअभक्ष॥उक्तंच॥कथिंच॥ओरछोरवरानि
शीभोजनबहु॥बीजाबेंगनसंधान॥बहुबीपर॥ऊमर कठूमरपाकरफलजे॥आरअजानकंदमूलमाटीविषआमिषमधुमाषन॥अव
महिराषन॥फलअतितुछतुसारबलितर॥मएजिनमतबीसअभक्षान॥६२॥अथबारहव्रत॥दोहा॥पंचअनोव्रतकोधरै॥ओरगुनव्रततिन
न॥चौसिक्षाव्रतनियहैहृदयाधरतबली॥६३॥अथपंचअनोव्रता॥चोपई॥त्रसजीवकीरक्षाकरैदयाभावहिरदैमेधरै॥हिंसाआदियनिजनहि
गहै॥प्रथमअहिंसाअनुव्रतलहो॥६४॥दोहा॥हिंसाकरिअरविंदनृपसहेनरकदुषघोर॥मातगारिकरीदयासुरबंदेकरजोर॥६५॥इतिअहिंसा॥चो
पई॥मबसोदितमिलवचनसुनाय॥बोलैसत्यधर्मउरलाय॥निंद्यअसत्यतजैसबसही॥सत्यअनोव्रतजोयहीं॥६६॥दोहा॥वसुपरपिसहासब
नसहित अबनिधस्योकहिगूट॥षगधुधिष्ठिरसत्यतैगएसोमोघरतूट॥६७॥इतिसत्यअनोव्रत॥चोपई॥वसुपराईजोढगिलेइ॥अपनीपटीऔरहिकी
देइ दुरावसुकीग्राहनकरै॥धातीअंतनिपराईधरै॥६८॥चौकरतधर्मतबुनसेदुरगतिदुषसागरमेथरै॥दंडसहैबधबंधनआदिमानुषजन्मजायथहा

चष्ट.

१५० पर्यंतसाफी

रादि॥६९॥चोरीकीनहीलीनैवस्तुअरुउपदेशनदेइप्रशस्त॥हिंसाविधिचारीत्यागेवहै॥तृतीयअचौर्यअनुव्रतगहै॥७०॥दो
हा॥चोरीतैतापससहैबधबंधन अतिशोक॥चोरितनिअंजनचोरभरदेवभयोसुरलोक॥७१॥इतिअचौर्यअनुव्रत
॥चौपई॥मायबहिनसुतीसमाचित॥परदारारमिजानोमित॥अवलासोयिनिसीमनधनो॥पुषकीषांनिदूरि
परिहु

रो॥७२॥ शीलविना नरलोगे रहेो॥ विनुपानी कोमोनी जिसेो॥ मननिरमल जिमि जलकर करी॥ ब्रह्मचर्य अनुव्रत यहीतुरी॥७३॥ दोहा॥ रावणदूषकरकै गयो परनारिके काज॥ सेठिसुदरसनशीलते॥ पायो शिवपुरराज॥७४॥ इतिब्रह्मचर्य अनुव्रत॥ चौपाई॥ पानीकीदृ ष्णाअतिघनी॥ पूरनहोवन होतिहितनि॥ तीनीलोककीलक्ष्मीपाया॥ तोभीवहसंतोषन आया॥७५॥ यहेजानिबुधकरतव्रतांन॥ क्षेत्रवास्तु कसेवकधनधान॥ आसनवस्त्रसिंगारभंडार॥ चौपदद्युतदासपरिगहभार॥७६॥ यहपरीगहजानोदुखदाय॥ पापमूलभाष्यो जिनराय॥ जा तेभविरहतउदास॥ सोपरिगहपरिमानहिभास॥७७॥ दोहा॥ समभोषअतिलोभतें सहेदुःखअधिकार॥ शालिभद्रसंतोषते॥ लयो॥ सि धपदसार॥७८॥ इतिपरिगहप्रमानव्रतदूषन॥ अथनिनिगुणस्तन॥ चौपाई॥ दिशिविदिसाकीसंख्याकरेो॥ तहातेउलघिनहिपगधरेो॥ प्र थमगुनाव्रतजानोएह॥ श्रावगकोनिर्मलगुनतेह॥७९॥ पोदनकाटनजलवहुडारि॥ भाउअगिनिपरजालनभारा॥ मूटवचनचोरीपरत्रिया॥ विकथाकहेतजेसवक्रिया॥८०॥ विनाप्रयोजनजायनकहि॥ पापारंभहोयपथमहीं॥ अनर्थदंडकवहुनकरेो॥ दुतीयगुनाव्रतउनिमध रेो॥८१॥ व्रतआचारजहानहिहोय॥ तासदेशजइयेनहिलोयकरेो॥ प्रमान भोगउपभोग॥ तृतीयगुनाव्रतउनिमयोग॥८२॥ अथच उदि ाव्रत॥ जिनमंदिरजिनप्रतिमाकरेो॥ नहांधर्मवृद्धविधिविसरेो॥ गमननगी संख्यानित धरेो॥ देशावकासीव्रतअनुसरेो॥८३॥ आरतिरोद्रध्यानपरिहरेो॥ अरुनिरजनकोंनिर्मलकरेो॥ सवजियसोसमनाषरल्याय॥ धर्मध्यानइकचितलोलाय॥८४॥ संहेपरीसा दिष्टकरिकाय॥ श्रीजिनवरपदजननकराय॥ तीनिकालसमायकसाधि॥ यहसामायकव्रतआराधि॥८५॥ सातेतेरा॥ शुध्यअहा रा॥ एकभगतिकरेविधिसारा॥ फिरियोसहयापैनिरभंग॥ सवआरंभपरिहरेसंग॥८६॥ आठेचौदशिश्रोषध भजेो॥ पाद्यस्वाद्य पलेपयनजेो॥ पून्योमावसिनोमीठानि॥ नवआहारलेदुखभजांनि॥८७॥ शोरहपहर हिउनिमकहेो॥ चोरहकेपुनिमध्यमलयो वारहपहर जघन्यगनेय॥ पोसहव्रतकहिविधिगनेया॥८८॥ नवछहघडिचैदिनआय॥ हारापेषनकीजेभाया॥ मुनिकोपायदेयसु भदान॥ विधिपूर्वकनिर्मलशुभआना॥८९॥ तिहिपाछेनिजनकरेो॥ परमपुन्यकारनगुनधरेो॥ मुनिवरदानयोग्यनहीहोया॥ रसत्याग नवकीजेलोया॥९० चारिप्रकारदानजोदेय॥ अतिथसंविभागव्रतलेय॥ एचासेोशिक्षाव्रतजान॥ लहैसरगसंपतिसुषखान॥ ९१॥ दोहा॥ वारहव्रतपूर्योहार करि॥ पालेश्रावगसोयनिनहि॥ भेदपूरवलियो॥ फिरीवर्णननहिहोय॥९२॥ अथसायकवर्णनं॥ विषयनिसोजुउदास॥ अतिसंयमभावसठाम॥ उरैप्रतिज्ञाकोकरेो॥ प्रतिमायाकोनाम॥९३॥ चौपाई॥ आठमूलगुनपालेजवै॥ सातव्य सननतजिजैसेसवै॥ मलपचीसविवर्जितसोय॥ दर्शनप्रतिमाश्रावगहोय॥९४॥ पंचअनुव्रतलहिकेसोय॥ तिनीगुनाव्रतधारेजोंय शिक्षाचारोपरधान॥ व्रतप्रतिमादूजीपहिचान॥ तिनीकालसमाइककरेो॥ पापारंभसंवेपरिहरेो॥ निरजनथानध्यानकोंदेय॥ सामाय कप्रतिमासोलेप॥९५॥ आठेचौदशिश्रोषधसजेो॥ चारिप्रकारआहारहितजेो॥ पोसहप्रतिमाजानोसोय॥ चतुरथसाश्रावगअवलोय

९८॥हरितवस्तुकोदूजेत्यागा।जीवदयापालेदृढभागा॥पंचमप्रतिमायहैवषानि॥सचितत्यागदृढश्रावगमानी॥९९॥निसिअहारत्यागे
बुद्धिवैन॥सूक्षमथूलमरेजियजंतु॥मूढनजानेहिंसाहोय॥रजनीनीररुधिरसमसोय॥१००॥भूतपिशाचगमनेनिशिधरे॥जेवनअन्न
अपावनकरे॥अशुचिवस्तुउरेजहांआय॥नीचरूपभासनकिकोजान॥१॥दिवसेअंधकारनहारहै॥रातिसमानजानियेवहै॥निसीजुर
सोईकहिनषाय॥रजनीवनदूषनदुषदाय॥२॥दिवसेपुनिछांडैनिजनारि॥निशित्यागीप्रतिमाअवधारि॥यहषष्ठीलोजानोभा॥
हैजधान्यभागदृढहराय॥३॥निजपरनारित्यागगुनवंता॥नवधाशीलभजैवृहंता॥नजैसचित्तन मिष्टअहार॥ब्रह्मचर्यप्रतिमायहसा
रा॥४॥हिंसाआदसकलआरंभ॥तजैविवाहवनिजसवरंभ॥काटनषननआगिनिनहिकरै॥वस्तरधोयनकबहुधरै॥५॥षभुरोषेनहि
मंदिररचै॥नित्यहानकबहुनहिसचै॥वाहनचढैनसायलहेइ॥पत्रफूलफलनाहिगहेइ॥६॥यंत्रमंत्रओषधिनहिसाधै॥वैद्यकजानि
बधानुनराधै॥ऐसीक्रियाभव्यचितरमी॥यहआरंभत्यागअष्टमी॥७॥कटिकोपीनवस्त्रइकलै॥इहशविधसंगत्यागकरिदेइ॥ईर्यारैम
नवचकाय॥षापकरमकीचिंतनहिथाय॥८॥नवमीप्रतिमाजानोएह॥परिग्रहत्यागकहावैतेह॥मध्यमश्रावगधारेयहि॥सूरगपथकी
कारनसही॥९॥वनिजविवाहआपहार॥इनकीअनुमतिदूनसार॥भोजनकोजुबलोजाय॥दशमीअनुमतित्यागकहाय॥९०॥उद्दि
ष्टत्यागप्रतिमागेरमी॥उतिमश्रावगधरीशिरनमी॥ताकेभेददोयपरवांना॥क्षुल्लकऔलककहैवषान॥९१॥जोगुरुनिकटलेदृढनजा
य॥वरसेगुफामठमंडपछाय॥कटिकोपीनकमंडल लहै॥एकवसननलपीछीगहै॥९२॥रांधेभिक्षाभाजनपास॥चारिहुपरवकरेउप
वास॥लेइउदंडसुद्धअहार॥लामअलाभरोसनहिधार॥९३॥माथेकेकनरावैवार॥डाढीमूछिनएपैकार॥तपविधानधारै॥गुरुपा
सकहैमुक्तिआगमआभास॥९४॥दोहा॥यहक्षुल्लकश्रावगक्रियाकहैकिमपिअवधारश्रावकुजौएलककरूनोहैपुनीतअधिकार॥
९५॥कटिकोपीनजुसंग्रहै॥पिछीकमंडलहाथपाणीपात्र॥आहारविधिकेरूचावैमाथ॥९६॥सीनधामसवतनसहै॥ऐलकसहविधि
गएकादशप्रतिमाधरै॥सोश्रावगवडभागा॥९७॥अथचारिदान॥चौपाई॥प्रथमदानआहारजुदेया॥भोगभूमिसुरसुरकुलहेया॥दूजो
शास्त्रदानकोगहै॥यातेपरमज्ञानगुनलहै॥९८॥औषधिदानदेयमनशुद्धा॥तननिरोगदूतिधारैबुद्धा॥अभयदानसबजीवनकरै॥शकचक्रवर्तिष
दपाद्यरै॥९९॥दोहा॥आभूषनपांचौलहै दूषनपंचौत्यागि॥गुनसातौजबउरधरै॥नवधापुन्यफलागा॥२०॥चौपाई॥आनदआदरप्रियवचकहै॥
तिरस्कारभावजुउरमैलहै॥सकलजन्मकरिअंजनलेषी॥आभूषणपंचमइपेषि॥२१॥विमुखविलंबवचनअप्रेया॥आदरचितधरैनहितेया॥देइकुपि
ध्यानपजुकरै॥एपांचौदूषनसौधरै॥२२॥अथदातामनिजशक्तिप्रमान॥भक्तिसहितजानोऐसात॥मोहनाजगगुन
थिप्याना॥२३॥परगृहनपात्रहिकोकरै॥उंचासनवैठकपुनिधरै॥चरनधोअवंदेकरजोहि॥विधिसोपूजाकरैवहोरि॥२४॥मनवचनकायहर्षम
नआनि॥शुद्धअहारदेयसुपषानि॥नवविधिपुन्यलहैयहसोय॥चोदहमलवर्जितअघधोया॥२५॥जीववधजहांरोमरुचाम॥मासरुधिरअरु
हाडहिनाम॥इनिसंगतिजिनकेमलेकुरगंधअशुद्धहितजिदेइ॥२६॥कंदमूलफलरहितजुदेया॥पानफूलबहुविधिवनजेय॥स्वादरहितअरुबहु

दिनवस्तु॥एचौदहमलत्यागिप्रशस्त॥२७॥दोहा॥पात्रअपात्रकुपात्रकेभेदबहुतपरकार॥उतिममध्यमजघन्यताकहौजथारथधारि॥२८॥
चौपाई॥उतिमपात्रकुपात्रयसार॥उतिममध्यमजघन्यविचार॥तीर्थकरजबदमरूलप्रधानआवै॥भोजनहितपुरथाननजावै॥२९॥उतिममेउतकृष्टहि॥
पात्रदानदैयेतदभवशिवयात्रा॥गनधरचारिज्ञानकेधनी॥कृतलीद्धारिऋषिजुतमुनी॥३०॥उतिमपात्रहिमैंतेजान॥मध्यपात्रकहैपरधान॥अष्टवी
सगुनधारैहियै॥षष्टमगुनयानकथितिकियै॥३१॥उतिमपात्रविषैगुनतेइ॥पात्रजघन्यकहावैजेह॥मध्यमपात्रभेदनकनौ॥उतिममध्यमजघ
न्यहिगनां॥३२॥श्रावगगेरहप्रतिमाधार॥ऐलकक्षुल्लककहोयप्रकार॥मध्यमपात्रविषैउतकिष्ट॥दैइहतीध्यामैपरिष्ट॥३३॥दशमीलोसमझूलो
जानि॥ब्रह्मचर्यपालैअधहानि॥धरैचारिप्रतिमाभविनेह॥मध्यमपात्रहिमध्यमतेह॥३४॥षष्ठपैतेपहिलीलगिजोया॥धरैप्रतिमाश्रावगसोय
दृषावरनत्यागिगुनमन्य॥तेमध्यमपात्रहिजुतजघन्य॥३५॥पात्रजघन्यकनौत्रयभेद॥उतिमध्यमजघन्यसमेदृक्षायकसम्यकदृष्टिहोइ॥पत्रसुघन्य
हिउतिमजोइ॥३६॥चेरकसम्यदृष्टीजान॥सोजघन्यमैमध्यममान॥उपसमसम्यकदृष्टीजीव॥पात्रजघन्यजघन्यकहीवा॥३७॥सर्वेद्रव्यलिंगीजेज
तीगुनअठाइसवाहिजरती॥सम्यकदृष्टीविनुजगमाहि॥तेकुपात्रउतकिष्टकहाहि॥३८॥ब्रह्मचर्यकिरियाअनुसारै॥द्रव्यलोभअतिउरधारै॥सम्य
कभावरचनहिलहैं॥तेकुपात्रमध्यमजगवहैं॥३९॥ब्रह्मचर्यवाहिजजोगहिइत्यतनौ॥बहुसंयहलहैं॥सम्यकभावनकबहिभए॥जघन्यकुपात्रनाहि
वरनए॥४०॥जोकुलिंगमिथ्याअनुसरै॥रक्तपीतादिनवस्त्रहिधरै॥दृतसम्यकनजानैरंचा॥सोअपात्रउतकिष्टप्रपंचा॥४१॥नानाभेषधरैजगमांहि
सम्यकिनदृतनकुजानैनाहि॥मिथ्यामारगकोआदरै॥तेअपात्रमध्यमअनुसरै॥४२॥दृतसम्यकनजानैमूलउपावैमिथ्यामतकूल॥हिंसा
करमकेअधिकारसोइ॥अपात्रजघन्यनिहार॥४३॥उतिममध्यमत्रीरजघन्या॥यहीतीनिपात्रअभिमन्या॥औरकुपात्रअत्रहिहोय॥पांचभेदएजा
नोसोय॥४४॥एकएकप्रतिनयजानि॥तेसवपंद्रहभेदप्रवांना॥जुरेजुरेफलतिनकेकनौ॥भविजननिश्चयकरिमनगुनौ॥४५॥अतिपात्रदान
जोदेय॥उतिमभोगभूमिफलसेय॥मध्यमकोजोंदेइसुदान॥मध्यमभोगभूमिपरजान॥४६॥पात्रजघन्यदानफलयहै॥भोगभूमिनैअंतिमलहै॥
यहसुपात्रफलजानोभेद॥अबकुपात्रसुनियेतजिषेद॥४७॥दानकुपात्रतनैपरभाव॥लहैकुभोगभूमिकीआव॥अरुअपात्रकोदीजेदान॥तो
पसुगतिपावैदुःखषान॥४८॥दोहा॥अहिमुखकरलीक्षीपजहस्तातिबुंदजलजोग॥विषकपूरमोतीभयोसोविधिदानसियोग॥४९॥अंधकूपघ
नजारिवेसोयभलोकरैजान॥दानकुपात्रहिदेउनहिसज्जनकरैसयांन॥५०॥अथजलगालनविधिः॥सानलाषजलजलजोंनिजिय॥अरुवसवा
सअनेका॥यातेबुधजलगालियेदयाभावकरिटेक॥५१॥चौपाई॥दीरघछतीसअंगुलजाना॥अरुचौरौचौयीसप्रवान॥गाढोवस्त्रदुगनकरिगा
लि॥इहविधिजीवदयाप्रतिपालि॥५२॥धरीदोयजलगालिउरहै॥फिरिअसंख्यत्रसजियमहालहै॥सोजलगालीगालियोपरै॥विलछनलैज
लघटमैधरै॥५३॥सोनिरांनजलमैलेकरै॥विधिसोंजायवीचनहिगिरै॥एकबूंदजोधरतीपरै॥जीवअसंख्यराशितहांमरै॥५४॥ताकेभवरहोहि
उडिगमै॥जंबूदीपमांहिनहिसमै॥यातेंबुधगालिजेनीर॥अनगालेअघहैबहुवीर॥५५॥दोयपहरआशुकजलरहै॥आठपहरलौनिरवहै
फिरिराषैसनमूर्छनजोवा॥अरुगालेनैंहिंसाहोय ५६ अनगालेजलकूंनहिकरै॥होईपापधर्महिपरिहरै॥उतमविधिजलगालेसोय॥सोश्रावग

किरियाअवलोय॥९६॥अथअंथयशकथया॥दोयघरीअवधीउदयप्रवान॥दोयधरीअंतिमदिनजाना॥इननेमेभोनजलले इ॥मैथुनदिवसहिंत्याग
करेया॥९७॥इहविधिकरियाजेनरचले॥सोश्रावगअंथऊतपले॥अवरलक्षणकहोप्रवाना॥यथायोग्यजिनशासनजांना॥९८॥अ[illegible]कदर्शन
दोहा॥निःसंकादिकजानियेदरसनआठोअंग॥तवरनोसंक्षेपकरिजानेबुधसरवंग॥६०॥चोपाई॥तत्वपदारथसदाविचार॥जिनमुषधर्मकरैभ
वतार॥णंकारहितसकुनकोगहैनि॥शाकांगकहांवेरहै॥६१॥तपसामाहिरहैलोलाय॥श्रीमुखवांनीचितलगाय॥करगनरक कीछानांहि॥निःकाछांग
नुनोमनमांहि॥६२॥कर्ममहामलदियेजराया॥प्रगटीमतिउतिसुषदाया॥सकविचिकित्सानतन्यांपेनाहि॥निर्विचिकित्सअंगसुयाहि॥६३॥देव
गुरुधर्मशास्त्रचितगमै॥ज्ञानचसुसोनिरषैतिनौ॥त्रिविधिमूढकरिरहितप्रवीन॥यहअमूठनज्ञायकुलिन॥६४॥जिनशासनकोसदाविचार॥मि
थ्यामतजानेनलगार॥अपरपंथकोलोपसुकरै॥अपसूहनअंगहिविस्तरै॥६५॥ररसनइतनपसोंचलिगए॥तुषसीरूपकुधर्मीभए॥तिनिकोंसं
वोधेगरल्योवे॥स्थितीकरनपंहेअंगकहावे॥६६॥सठजनमुनिकेसनमुषआवे॥जोमरतपसुमारनधावे॥धर्मचष्टिसोतामदहनो॥सोवात्स
ल्यअंगचितगनै॥६७॥कुमतकुंथलोपसबकरै॥ज्ञानध्यानमपनितविस्तरै॥जिनशास्त्रपरगासोसदासोप्रभावताअंगहिजहा॥६८॥ररसनयु
तएअष्टअनूपा॥मोहसकलनासकअरिरूपा॥सुरगमुकतिकोकारनयही॥वेरवेरअवधारेनही॥६९॥सम्यकूज्ञान॥अवरुनिआठज्ञानके
अंगा॥प्रथमव्यंजनोजिनउतंगा॥दूजोअर्थसमयवषानि॥तिजोसवपदार्थपहिचानि॥७०॥चौथोकलध्यानजानियै॥उपध्यानपंचममानियै॥विनय
मुहितषष्ठमगुनरमौ॥गुर्वायासप्तमोधिअंगसातमौ॥७१॥बहुमानसमुथभानमोजाना॥ज्ञानअंगएआठप्रवान॥इनिकेभेदबहुतपरकार॥आ
गमभेवन्योनिरधार॥७२॥अथसम्यकचारित्र॥अवचारित्रभयोदशसद्धा॥जेपालहिअलपहिसावद्या॥सोकहिण्यहदेशचरिना॥कहोयहीपष
तिकोंप्रनित॥७३॥मुनिकोपूरनचारितधारि॥वरन्योनपकल्यानमकारि॥यहरलत्रयनन्योहार॥पालैजोश्रागगुनधार॥७४॥दोहा॥एत्रेपनकिरि
यादिधिपालेभावगलोय॥षोडशकारनगर्भप्रजनहोंलहैइंद्रपदसोय॥७५॥इतिश्रावगधर्म॥अथयतिधर्मवर्णनं॥चोपाई॥तीर्थंकरनिरगंथपहे
धरयो॥मोषपंथसधवकोकरयो॥ताहीमांतिकरयोउपदेशा॥पुनरउकीभयकहिउनसेसा॥७६॥इहविधिवाहिजग्रंथअनुकहि॥चोरहिअभिन
रहैसहि॥इनमेभिन्नतुषरांपैकोय॥तौभीमुनिपहसिलिनहोय॥७७॥मुनिविनुनहिचलैनिरवाना॥अचलसास्वतेसुष्यनिधाना॥भावलिंगसोविधि
ठानि॥गहैअपरवाषांनि॥७८॥परिगहवंतमुनिपरकहै॥अरुतिनेकबहुजनपदगहै॥सोकवहीनलहैशिव॥भमैजगतदुषसहैअतीव॥७९॥
पश्चिमभानउदैनहिहोय॥अभिनीसिरीकबहुजोय॥जैसीमुनिजिनलिंगविहिना॥मोषनपावैभवभटकना॥८०॥धन्यधन्यजैसाधुमहाना॥भोग
त्यजोआतमसुनिज्ञान॥धन्यधन्यजगकोसीपीठ॥धन्यधन्यशिवसनमुषदीठ॥८१॥तजिआसवनवासवसंत॥ऐसोमुनिहमवंदनवंत॥योनेसा
धैमुकतिपरषेत॥यतीधर्महैवरुपकेता॥८२॥दोहा॥यतीधर्मसंक्षेपसोभाभाष्योइहिअस्थान॥पूरवभयोजुयहकथन तातेंवदन पुराना॥८३
इतियतिधर्म॥अथषटकालवर्णन॥चोपाई॥भरतरवंतएरावतमांहि॥छहोकालवरतैजुसदाहि॥उतसर्पिणिवरतैसमर्पिनि पाया॥रहटघटीवत
आवैजाया॥८४॥दोहा॥अवरवनायहकालकीरुनोसयानेलोय॥जोभाष्योप्रभुग्यासमति॥प्रगटसुनाउनोय॥८५॥चौपाई॥भूतकालउत
सर्पिणिजाना॥कोडाकोडिदशाधिप्रवान॥छटैनपहिलेलागिजाउ॥वटैरूपतनवलसुषआउ॥८६॥वर्तमानअवसर्पिणिकाल॥ताकोभेदसुनो

निहारा॥सोसागरदशकोडाकोडि॥छहोकालकरमंडितजोडि॥८७॥सुषमासुषमाप्रथमविचारा॥कोडाकोडीसागरचारा॥ताकीआदिपल्यत्रयआ
वा॥तीनिकोशतनुंगलषावा॥८८॥उदयअरुनरवितनदुतिधार॥बदरीफलवतदिव्यअहार॥सोहूलोहितिसरैदिना॥मलनिहारवर्जितशुभ
गिना॥८९॥मधतृर्यअभूषनजोना॥आसनशयनजोतिदीपयदजाना॥भोजनभाजनवस्त्रप्रधाना॥एदशकल्पवृक्षसुषदाना॥९०॥कुरैकल्पनामतेसेजी
सी॥भोगसंपदापुरवैतिसी॥तेसवसुष्यवरतिकोकहै॥यंथवढैक विपारनलहै॥९१॥तिनिमषात्रदानजोदेया॥उत्तमभोगभूमिपदलेय॥विकलत्र
यनदिउपजेतहै॥पचेंद्रीयअसैंनिनहि॥९२॥मानुषअरुतिरयंचजुहोया॥आर्यवभावसदाअवलोया॥तहांतेमरिसुरलोकहिजाया॥श्रीरनदूजी
गतीहिलहावा॥९३॥मध्यमसुषसाहतियपवीनसागरकोडीतीन॥आदिपल्यहृयजीवनजारा॥देहतुंगहृयकोराजुभासा॥९४॥पुरनचंद्रकरनिजु
तजिसोंा॥ननसोंहैअतिनिर्मलतिसोंा॥धात्रीफलवतदिव्यअहारा॥तासिदेतदुजेदिनधारा॥९५॥मध्यमपात्रदानजेगहै॥मध्यमभोगभूमिसोलहै
पूरवकथितभोगतहांपाया॥फिरिसोस्वरगलोककोजाया॥९६॥तृतीयकालतहिसुषमादुषमा॥कोडाकोडीसिंधुहृयपुष्मा॥आदिपल्यइकआयु
प्रवांना॥देहकोशइकतनजाना॥९७॥इकदिनविंतेलेयअहारा॥तासीदेनआमलउनहारा॥तनसुवर्णसमदिसैसोया॥भोगभूमियअंतिमहोया॥९८॥
इहविधिकल्पवृक्षसुषदाया॥पूरववतनसोभासवथाया॥पात्रजघन्यहिदेयजुदाना॥लहैजघन्यभोगभूथाना॥९९॥दोहा॥तृतीयकालकेअंतमें
इहीपल्यवसुभागा॥चौरदकुलकरऊपनैकयोनामवडभाग॥१००॥प्रथमहिकुलैनअंतरौदशइहाभागहिहीन॥पल्यभागइहगत भएअनुक्र
मसोगनिलीना॥१०१॥चोपाई॥प्रतिश्रुतकुलकरप्रथमहिजाना॥रानीस्वयंप्रभागुनषाना॥ज्योतिरागद्रुममंदहिलहो॥चंद्रसूरतवपरगटभयो॥र
तनमतिमनुजजसस्त्रीनारि॥ज्योतिरगतवनासहिधारि॥हिननिशिनषननारजुतदेषि॥प्रजावोधिकीन्योतिनिपेषि॥१०२॥सेमकरहिसुनंदात्रिया
देष्योशिषमृगहीषधकी॥याकेमंधरविमलावरलियो॥यष्टिग्रहनउपदेशजुदीयो॥१०३॥सीमकरहिमनोहरिसाहा॥मंदकल्पतलकरहिविवाहा॥नाम
सीमंधर धरनीपती॥यहउतपतिउदेस्योअति॥१०४॥विमलवाहनियसुमतिविचारा॥अंकुशअवधगजअसवारा॥चक्षुष्मानियधारनिऐन
तननिजनीजसुनदेषैनैना॥१०५॥मनुजजसस्त्रीअमरतप्रिया॥वंतेप्रसूतिजातक्रमकिकिया॥मनुअभिचंद्रश्रीमतिकंता॥विनापुत्रक्रीडाजु
करंता॥१०६॥मनुचंद्राभयभावतिजुतापुत्रविवाहकरनउतपा॥तामनुमरुदेवअनुपमाजाना॥नहीनाबकीयगिरिसोयान॥१०७॥नृपप्रसेनअनुज
सोजासअभयपटलअरुजरायुकाशा॥नाभीरायमरुदेवीयहि॥नाभिजरासूनुउपजीनहि॥१०८॥मेघदृष्टीघनगराजे घोरचमकेविजुलीचहु
ओर॥विकलत्रयउतपतिनहाभेई॥सकलधान्यउपजमुविठई॥१०९॥[illegible]पल्यहिदशमेभागप्रथमकुलकरथितीदशलषकोडाकोडी
पूरववतिमिति॥देहदशभागहीहीनअवरकमलहै॥चौरहिनामिनरेंद्रपूर्वइककोडिहि॥११०॥दोहा॥पनशतधनुषचौसहिअंगुलनामि॥शरयपी[illegible]
यपइसासोहहि॥कालतिजेलोकनिभाया॥१११॥इनेकुलकरभएन तहांचारनरसेजाना॥प्रतिश्रुतप्रथमउतंगतनुभुजअठारसेठना॥११२॥चौ
पाई॥चतुरथकालकीसंख्यावधिबादालीसहजारवर्षनामकहेत॥सागरकोडाकोडीएक॥सहससत्यालीससतघटितसकलेख॥११३॥आदीपूर्वइककोडिजुआयु॥

धनुषपंचसयउन्नतकाया॥पंचवरननगरतनुदुतिगहे॥नित्यअहारवारइकलहे॥५७॥कर्मभूमिप्रगटीइहथान॥नेमादि शिलापुरुषमहान॥उपजेक्रमसौ
आरजया॥आदिअंतलोकालप्रवाना॥६६॥चतुरवीसश्रीजिनकरनाम॥चक्रवर्तिहादश्अभिराम॥नववलिनवहरिनप्रतिहरि॥इनिकेभेदकहोकछु
धरि॥६७॥चौदहकुलकरनाभिनरिंदा॥मरुदेवीप्रियआनदकंदा॥तिनिकेरिषिभदेवजिनउए॥युगलधर्मनिवारतभए॥६८॥अडिल्ल॥ चौरासीलख
पूर्वकरिषभजिन आनहो॥ताकीगिननीलिषोवरषठहरावहो॥उनसठिलषसहसचवीससहससचलीससे॥इतनेकोडाकोडि अंकइकईस॥६९॥चौपा॥
कल्पवृक्षसबगएपलाय॥जगआचंभयोदुषपाय॥क्षुधाविषाकरिपंडितमजा॥आयेप्रभुसमीपकरेरजा॥७०॥कर्मभूमिकोभेदबताय॥सबकोसंबोधे
जीनराय॥असिमसिकृषिविद्याबहुभेस॥वानिजपशुपालउपदेश॥७१॥जोलोरुषिउपजेअबमहि॥इंद्रमहारलेउसवहि॥नवसोजायइंद्रसलि
यो॥इक्षुधातुपानकोमिटिगयो॥७२॥सचिवसचारिथपिसाथ॥निजइच्छाकरसोमहिनाथ॥कुलविवाहकीमोपदुजरी॥धर्मक्रियासबहिविधिठई॥७३
प्रभुपंचकल्यानकसाधिगये मोक्षनयजगआराधि॥तिनिकेपुत्रभरथचक्रे॥राजहोसंइक्ष्वाकुअधिषमदेसा॥७४॥दोहा॥अदुंठमासकरिहीनदेरदीव
बजवचारि॥आदिनाथजिनशिवरनी जेकालमकार॥७५॥चौपाई॥जोकोईयहविकलपयंहे॥नीजेकालमोष किमिलहे॥इंद्रासर्पिनिहोयअनीव॥
जेसप्तिपदमठावनजीवा॥७६॥प्रथमआदिजिननीजेकाला॥पदुचेमोषकालयहहाला॥शांतिकुंथुअरहनाथभनेहा॥तीर्थकरचकीपदएहा॥७७॥प्रथमत्रिष
ष्टिनरायनभला॥वर्धमानअंतिमजिनवला॥भरथचक्रिथाचौहितवर्ता॥तेअनेकपापहिउधरणा॥७८॥मरुपंचौमिथ्यातनुभए मानभंगपुनिचक्रीलग
तीर्थकरउपन्योउपसर्ग॥भयोमूढमिथ्यातहिवर्ग॥७९॥गुरुमतिकहेशिष्यफिरितवे इंडासर्पिनिउपजेकवे॥सर्पिनिअरुउतसर्पिनिकाल॥
जावत्संवेसोअतीत॥७०॥इंडासर्पिनिजबहीहोय॥एतेदोषप्रगटकरिसोय॥तिनतेहुंडावसर्पिनिजबजादिविरहकालजबउपजेआंहि॥७१॥दोहा॥
षटमहीनापरजंतलेो॥मोषपंथनहिलाय॥आठसमयवाकोरहे॥तिनिमेतेशिवजाय॥७२॥बतीसहिअठतालपुनीसाटिबहनरिफिरि॥चौरासीध्या
नबचहुरि॥समयबक्रअधिकहुवेरा॥७३॥अवजिननीनातकेलिषो॥नामस्मुहायजनमपुरीो॥कौंवर्नउंनयकल्यानकथा॥७४॥चौपाई॥नानि
शयमथमहिजिननाना॥मरुदेवीमातावियाना॥नर्गअयुध्याधनदहिरची॥ नवबारहजोजनकरिषची॥७५॥जितशत्रुहिहजेजिनपिता॥विजया
देवीमातायुता॥अवधिपुरीअतीवनीमनोगरची॥कुबेरजनमसंयोग॥७६॥नृपतिताहिरीजेप्रभनाना॥सेनादेवीहिएमाना॥साविनीनगरीअतिभली
त्रयकल्यानकशोभारली॥७७॥संभरनामरायगुनधाना॥चतुरथजिनकोपिनाभिरामा॥सिद्धारथदेवीहेमायनगरी॥अयोध्याजनमलहाया॥७८॥मे
घःप्रभाजिनपंचमताता॥सतीमगलादेवीमाता॥नगरीअवधिजनमपुरसोय॥देवनिरचोमहामहषोय॥७९॥धारनानापिताकोजान॥देवीसुसीमा
मातबषाना॥कोसंबीपुरनगरीसोय॥छट्टम जिनवरजनमसकोय॥८०॥सुमतिछिनामापदमताता॥एथीदेवीजानोमाता॥नगरबनारशिजनमसमु
भयो॥समप्रभजिनपदसुरपतिनयो॥८१॥महासेनिअष्टजिनपिता॥ नामसुलक्षिमिदेवीजुता॥सौप्रभकीयहजानोमाता॥चंद्रपुरीमेजनविष्या
ता॥८२॥पदमप्रभजिनवरकोपहिचाना॥रामादेवीनाकीमाता॥ किष्किंधानगरीअवलोय॥ धनदहरचीप्रभुआगमजोय॥८३॥दिढरथशयपिनाअ
भिराम॥मातसुनंदादेवीनामा॥भागलपुरीहरिजनमअवतार॥नववारहजोजनविस्तार॥८४॥विष्णुकुमारजुकहिएमाता॥विमलदेवीजिनवरमात

सिंधुपुरीएकादशथाना॥श्रेयांकुवेरहर्षउरआना॥८४॥वसुपूजहरिवंशपिनावषाना॥मातजयावनिदेवीजाना॥बारमजिनचंपापुरदेयेनि॥ नकेपंचकल्याण
भयें॥८५॥कृतधर्महिरिपनातवषान॥तहांरापाता माताकोजान॥कपिलनगरीअवसाता॥तेरमजिनवरजनमविष्याना॥८७॥सिंघसेनिराजाप्रभुना
ता॥सूर्जादेवीकहिएमात॥चौदमजिनपतिस्करपतिनयें॥नगरअजुध्याजनमसकलयो॥८८॥भाननामराजाजिंतननाना॥सुव्रतादेवीजिनकीमात
रतनपुरीहैजनमसथाना॥पंद्रमजिनवरकोपहिचाना॥८९॥विश्वसेनिनृपतिनामुकीना॥एरादेवीजननीजाना॥हस्तनागपुरजनमधरेवा॥षोडशर
जिनवरइंद्रहिसेवा॥९०॥सूरनामनृपतिनाजुकहे॥सिरीमतीमातायुनलहे॥ हस्तनागपुरजनमसकलयो॥शत्रमजिनसुरनमुनिनयो॥९१॥
रायसुदर्शनिनामप्रधान॥देविसुमित्रामाताजान॥हस्तनागपुरकरिएसोय॥अठरामजिनवरअवलोय॥९२॥पिताकुंभनृपजगतविष्यान॥प्रभा
वतीहैतिनकीमान॥मिथुलापुरीजनमभगवाना॥इनवीसमेंसुजिनवरमाना॥९३॥पितासुमित्रमहासुषदाय॥पदमादेवीमातागाय॥नगरकु
शाग्रजनमअस्थान॥बीसमतीर्थकरपरधाना॥९४॥विजयनामसोपिताप्रधान॥विपुलादेवीमाताजाना॥मिथलापुरसुजनमजियजान एकवी
समेंजिनवरमाना॥९५॥ससुरविजयनृपसुहिएमाना॥शिवदेवीमातविष्याना॥द्वारावतीधनदहीरचि॥बाविंसनिजिनजनमसची॥९६॥अस्व
सेनिनृपतनातपधाना॥वामादेवीमलाजाना॥पुरीवनारशिहैवहाना॥तेवीसमजिनवरविष्याना॥९७॥सिद्धारथनृपतिनाजजुभए॥त्रिशलादेवीकेउर
ठये॥कुंडलपुरनगरीअवतार॥चौवीसमअंतिमजिनसार॥९८॥दोहा॥अबचौवीसजिनेकहोकिमपियुनगाय॥लछिनअबउतंगदुतिजिनअंतरसर
मुदाय॥९९॥पद्धडिछंद॥वृषलछिनवृषभजिनेनाभाव॥पूरबचौरासीलाषआव॥धानपंचधनुषतनतुंगपोषा॥दुतिहेमवरनकेलाक्षमोषा॥१००॥अंत
रलषकोडिपचासमिधा॥जिनअजितजिनभयेलछिनगयंरलषपूर्वबहतरिआवधर्नी॥शातधोचधनुषतनहेमवर्णा॥१०१॥गतवीसलषिसायरहकोडि
संभवजिनलछनतुरीयजोडि॥थितिसाठिलाषपूरबगनेहा॥१०२॥दशलषकोडिसायरगनीस॥जिनअभिनंदनलछिनकपीस॥पंचासलाषपू
रबस्कआव॥धनुधानअदुंठवपुहेमभाव॥१०३॥नवलाषकोडिसायरस्थनीना॥ जिनसुमतिचिह्नचकवापुनीत॥जीवीनपूरबचालीसलाष॥शातती
निधनुषतनहेमभाषा॥१०४॥नवेहजारसायरहकोडी॥ जिनपद्मलछिचिह्नजोडि॥तिनितीषलाषपुरबस्कआव॥ अढाईसयतन अरुनभाव॥१०५
नवसहसकोटिसायरगनेहा॥स्वस्तिकसुपार्श्वलछिनभनेहा॥लषबीसपूर्वजितीतप्रवाना॥शातधनुषहोयतनहरितजाना॥१०६॥नवसयजुकोडिसा
यरगमाया॥चंद्रप्रभलछचंद्रपाया॥दशलाषपूर्वसबअयुतास॥शानउठ धनुषवपुस्तेनभास॥१०७॥गयेनवेकोडिसायरअजना॥सोमगरचिह्नजिन
पदुषरंना॥प्रभुआयलाषहयपूर्वजान॥सोधनुषतुंगतनस्तेनमान॥१०८॥नवकोडिसिंधुकालहिगमाया॥शीतलश्रीतरुवरचिह्नपाया॥तिनिएक
लाषपूरबअनुभाया॥अरुनवेधनुषतनहेमठाउ॥१०९॥तहाएककोडिसागरगतेहा॥सोसायर नामेहीनलेहा॥षटिचहलांषेजोवरषओर॥छोवीस
सहसापुनिरहुठोरा॥११०॥नवउपजेश्रीश्रेयांशनाथा॥लछनगेंडाडुतिहेमसाथ॥जीवितचोरासीलाषवर्षा॥धनुअसितुंगकायाजुपर्षा॥११२॥शात
चौवनसागरजबलिहू॥श्रीवासपूज्यमहिषास्कचिह्नू॥जिनसतरिलाषजुआयुहोया॥सत्तरिधनुवपुदुतिअरनहोय॥११२॥सायरसहतीसगत
जबहिहोय॥जीनविमलविहारजुचिह्नसाव॥हैसाठिलाषजीवनस्कआयु॥धनुसाठिहेमजुधरियकाय॥११३॥नवसायरकालगमाय

चिह्नसपद अनंतमायु सचि हाहेतीगत्यापकीआज्ञा ना॥पंचसयधनुषदेहमहदेहा॥ ७॥सागरजु चारिगतवर्षहोय॥जिनधर्मवंशलक्षान
हिजाय॥इहलाछ अवदुतिहेमवंगा॥पैनालिसधनुकायाअनंगा॥७५॥अजसागर हीनहिपछपोनजिनराजा॥तनाथ मृगचिह्नश्रोना॥हैएक
लाषनक्रूअयुजान॥चालीसधनुषतनहेमवाना॥७६॥गत अधपल्यजबवरषजाय॥जिनकंथचिह्न छेलोबताय॥ पंचानवसहस हिथिति
गनतापतीसधनुषतनुहेमदेह॥ ७७॥हैपावपल्यगतवरषजोडि॥तामेघादिएकसहस्रकोडि॥अरुमीनचिह्नधनुतीसकाय॥इतिहेमसहस्रवीरामि
आय॥७८॥इकसहस्रकोडिगतवरषसोइजिनमल्लिकेसलांछनसोय॥पचपनसहस्रतिसआयुठाना॥पचीधनुषवपुहेमभान॥७९॥जबचौव
नलाषजुवरषजाय॥मुनिसुव्रतकछपचिह्नपाय॥तहातीससहस्रथितिलहिजास॥धनुबीसकायद्युतिहेमभास॥८०॥छहलाषवरसजबकाल
जाय॥नमिनाथकमललक्षिनसुथाय॥दशसहस्रआयुजिनकीषानि॥धनमंडहकायद्युहेमबांना॥८१॥तहांपंचलाषवरषेव्यतीत॥जिननेमि
संखिलक्षिनपुनीता॥थितीएकासहस्रकीलहीते हा॥दशधनुषकायस्यामलेहा॥८२॥गतसहसतिरासीयसाठसात॥जिनपारसचिह्नफनेंद्र
जाता॥इकशायबवरषेजीविनमुंथाना॥नवहाथकापद्युतिहरितजाना॥८३॥अठाइसजबहावरषजाय॥जिनवीरसकलक्षिनसिंधथाय॥थितिब
रषबहत्तरिहेमवर्ण॥वपुसातहाथजगद्युरिनहर्नी॥८४॥दोहा॥भएचतुर्दशद्वादशकुलकुलकरुवंसमकारा॥पुनिहरिवंशीचारिएहोइउपज्य
बधारि॥८५॥तासपूज्यचंपानवरीनेमिमोषगिरीसीस॥पावागिरिश्रीवीरजिनसिधिरिसमेदहिवीस॥८६॥प्रथमभरथचक्रीकोनाम॥प्रथ
मजिनवारेअभिराम॥दूजेसगरचक्रवर्तीजान॥वर्तमानदूजेभगवान॥८७॥मघवाचतीयचक्रवर्तिभए॥धर्मनाथजिनशिवजबगए॥स
नत्कुमारचतुर्थमकहे॥तिनिपिछेकछुक्रमसोलहे॥८८॥शांतिनाथजिनचक्रीआय॥सोपंचमपदभविजनजाय॥षष्टमकुंथनाथचक्रेश
अरहनाथसप्तमअवनेश॥८९॥तिनिहितेंकछुकालगमाया॥अष्टमचक्रिसुभूमिकहाया॥मल्लिनाथशिवगयेचहुकाल॥महापद्मनवचक्रवि
शाला॥९०॥मुनिसुव्रतकछुकालव्यतीता॥रामचक्रिकहरिषेणपुनीता॥जिननमिनाथहिबारेभए॥एकादशमविजयरूपठए॥९१॥पार्श्वजिने
श्वरकेवर्तमाना॥ब्रह्मदत्तद्वादशचक्रपाय॥अबबलिहरिप्रतिहरिकेनाम॥नारदजुनवरनो अभिराम॥९२॥श्रीश्रीयांशनाथवर्तमान॥प्रथमत्रिपृष्ठ
बलिहैवबखान॥हरिग्रिहरिहिंतिनिभानजुसोइ अस्वग्रीवप्रतिहरिनहोय॥९३॥तिनिसंबंधीनारदभीसा॥मुनिपदगहेहतकीसीमा॥वासपूज्यजिनवर
केसमेंमहाबलधरअबलहितीयजगनमो॥९४॥हरिहिपिष्टतारकप्रतिहरि॥महाशुक्रमनारदपरधरी॥विमलजिनेश्वरबारेजोय॥धर्मबलीतिजोपदहोय॥९५
हरिजुस्वयंभूगुणहिसमुद्र॥मेरुकप्रतिहरिनारदरुद्र॥पुनिअनंतजिनबारेभए॥स्वप्रभबलिचौथेवरभए॥९६॥पुरुषोत्तमहरिनिकेभ्रात॥मधुकै
टभप्रतिहरिअवदात॥महाशुक्रहैनारदठौर॥धर्मनाथबारेसुशिओर॥९७॥नामसुदर्शनपंचमबली॥पुरुषसिंघनारायनमिलि॥अरुनिशुंभप्र
तिहरिजानि॥कालनामनारदपदधानि॥९८॥अर्हनाथबहुकालहिगयेऽ॥अरुसुभूमिचक्रीकेभयेऽ॥घष्टमनंदीबलिउपजेहा॥पुंडरीककृष्णनारायनने
हा॥९९॥पुनिप्रतिहरिमहलाहजुभये॥महाकालनारदतहांठये॥मल्लिनाथगतकिंचितकाल॥नदीमित्रसप्तम अबलिहाला॥१००॥अरुश्रीदत्त
हरिविख्यातबली॥प्रतिहरिकोकिन्योघात॥दुर्मुखनारद नामकठाय॥अधिकप्रपंचीरिषिषदथापा॥मुनिसुव्रतजिनशिवपदगयो॥किरिदरिषे

ज्ञानभारती
MEMORIAL
LIBRARY

नचक्रवतिभए॥तिनहींनेकछुकालगमायो॥अष्टमरामचंद्रबलिभाय॥लक्षिमननागायनपदजानि॥प्रतिहरिरावनप्रगटवषांइ॥नरमुषनारदनामकहा
थ॥विद्याबहुबसकरेउपाय॥९०॥नेमीनाथजिनबारेभए॥हलधरपद्मनवमबरनए॥कृष्णनारायनजगधरनामा॥जरासिंधुप्रतिहरिपहिचाना॥९१॥छन्म
नमुषनारदतिहियाना॥अबएकादशचक्रवषाना॥भीमप्रथमसंकरजानियेऽ॥प्रथमहिजिनबारेमानियेऽ॥२॥बलिदूजेरुद्रहिकोनामा॥अजितनाथबारेअ
भिराम॥जितशत्रुतिनीजेपभुपति॥पदुपदंतबारेप्रतिहा॥३॥विश्वानलचौथोपदजान॥शीतलजिनसमयेपहिचान॥श्रेयसमेंकप्रतिहनुरुद्र॥पंचममे
हैपायसमुद्र॥४॥वासपूज्यजिनबारेभये॥अचलरुद्रषष्टमबरनए॥विमल नाथकेसमयेकहे॥पुंडरीकशिवसप्तमलहे॥५॥मुनिअनंतजिनबारेमादि॥
रुद्रजिनंधरअष्टमतांहि॥धर्मजिनेशहिकेवर्तमान॥जिननामहिंसकरपहिचान॥६॥शांतिनाथजिनसमेंरुजान॥पिंगोलनगहिवद्दामप्रधान॥पुत्र
पुषसनकिस्थान जुनामा॥एकादशमवीरजिनठामा॥७॥अबचौबीसमरहनुद्युतिधाम॥आगमउक्तिकहोंतिननाम॥बाहुलीप्रथमहि॥जिनपुनद्वजे अमृ
तेतेजेयुनुजुना॥८॥श्रीधरतीजे उपजेकामा॥अरुदत्ताभद्रचतुथामठामा॥प्रसेनचंद्रपंचमगुनमूला॥चंद्रवर्णछटेसमतूला॥९॥अग्निषुरुकसमसमगुनधार
अष्टमकहिएसननकुमार॥ बलराजनवमेंवरनए॥कनकप्रभेदसमेंजबभए॥९०॥मेघवर्णएकादशभेषा॥द्वादशमेंश्रीचंद्रजिनेशा॥कुंथनाथतमपद
जाना॥अरजिनौदहमेंपदवाना॥९१॥विजयराजपंद्रहमअवतारा॥सिरीचंद्रषोडशमेंधारा॥नलराजासतरहमगुनषाना॥प्रभारमहनिमंतसुजाना॥९२॥बलिराजा
नरहसमठए॥वसुदेवबीसमदत्तनुजुभए॥इकवासमप्रथमनरुहोइ॥नागकुमारबाईसमजोइ॥९३॥तेवीसमश्रीपालकुमारा॥तुंबुस्वामिअंतिमप
दधारा॥एकसयकामदेवबरनए॥देवभएएकईसवगए॥९४॥दोहा॥एसचपदवीधरपुरुष॥चतुरथकालमहेइ॥नरपतिषगपतिसुर॥अमरचरननम
नअरचेइ॥९५॥प्रथकप्रथकजिनगुन॥निकेभावेसकलपुरान॥श्रीजिनगौतमप्रतिकहे भूतभाविवर्तमाना॥९६॥चौपाई॥ अबकहिदुषिमापंचमकी
था॥इकइकपूरितनरहेगोजनइकठौ॥ सहजारवरषपरवानजिनवरा॥धर्मनहालोजाना॥९७॥ताकी आदिमनष की आना॥दिसोनरइकसयवरषाना॥सात
हातउतंगजुदेहा॥रूषी अतिरूषवर्जितगेहा॥९८॥संदमतीकुदिल्लिसयसोया॥दिनप्रतिवहुदषभोजनहोइ॥कालकीअरुरूपकलकीलहै॥पंचसय
वरषचीहषहही॥९९॥होहिकुलिंगीभेषअनेका॥अरुपापंडअगटकीटेकगहेमूर्खा॥मिथ्यातअपारा॥सोइकगतिपंथपगधारा॥२००॥विरलेमेविश्वा
वगहतधारि॥अर्जवपरिनामीरुविचारि॥जाइविदेहकेवलिहोइ॥केसरलोइलहैरुषसोइ॥२०१॥दुषमादुषमाछटमकाल॥सोइकईससहस्र
वरषजाल॥ धर्मविवर्जितदेहकदेहा॥धूमवरनउतिहैविनगेहा॥२०२॥जौवनबीसवरषकीआदि॥नषसदावरुखरवेवादिस्वछअहारपत्रफलषाहि॥
गिरिकंदरषरुवनजुरहांदि॥२०३॥कालअंतइकहाथसरीरा॥षोडशवरषअउत्तरुवीरा॥मरिकेदुरगतिसंचेलहांहि॥मतिविनकियाननजानेजाहि
२०४॥ढाकुरदासनकोईहोई॥अधिप्रजालनभंदनसोई॥मानाक्रियावहिनीसवदेषेद॥ज्ञानविनाजानेनहिभेद॥२०५॥कालअंतरुरपतिमनजा
ना॥प्रलपतोषअवआरजथाना॥आज्ञादईनीयोगीदेवा॥करुजीवकीरक्षालेवा॥२०६॥सोनलाआइनिकीनीवेर॥इकइकजातिजीवभवठेरा॥यु
गलवहतरिलेलैजोइ॥राषेनिकटविद्याधरसोइ॥२०७॥पृथ्वीअगिनीपवनजलजोरा॥इत्यादिकवरषेघनघोर॥लवनसमुद्रमजादहिलाइ॥अ
गस्त्योबदुल आरजवोर॥२०८॥दिनउनचासमयोंउनपाता॥आरजखंडसकलजियघाता॥सोजलनिधिगोउदधिसमाइ॥चित्राभामरहिरहीठह

राइ॥९॥फेरिसर्करारत्नादसमाना।वर्णमृत्तिकानिहिअस्थाना॥इहविधिधर्मार्थ्यनिकालप्रवाना।सोसंक्षेपहिकहोवषाना॥२०॥फेरिअयोध्यान
गरवनाइ॥सोरुरउनिजीवनितहंल्याइ॥मृत्तिकाहारकरैननपोषा।रहैरुषसोधरिसंतोषा॥२१॥इत्सर्पिनिफिरिउपजैआये॥इत्थरुपकृमिक
मिचटिजाइ॥जिहिप्रकारषटकाहिजाना।तिहिसमानवरनीउनमाना॥२२॥दोहा॥इहविधिजिनमुषकमला।वचज्ञानपयूषहिपीया।वम्योमोह
मिथ्यानविषगोतम विप्ररुधीया॥यहमिथ्यातमारगइ॥षटषटअरुभषापउपजाइ॥विश्वभोगतनलक्षिमभयोचिरकरुकुमार॥२४॥चौपाई॥
यहमिथ्यामारगदुषदाई॥अशुभपापउपजावेआइ॥मैसेयोरुदृथाचिरकाल मूढचितनिहित जगजाल॥२५॥यथाअंधनरकूपहिपरैो तहा
विकलनानादुषधरैो॥त्योमिथ्यातअंधजगजीवा।नरककूपमेगिरेअतीवा॥२६॥समकितनाचिंतवनधर्महिगहो।तेसिवपंथरुगमकरिलहे जोश्र
हिषाइअधिकवरसोइ॥पैमिथ्यादृषभवभवलेइ॥२७॥गोसिंगहिमैदुधजकटै॥जवविलोइजोनोनीवटै॥मिथ्याकरितोभीरुषनाहि॥धर्मलाभ
कह्योहेनाहि॥२८॥मिरोसफलजन्महेआजा॥पुन्यधर्मपाएजिनराजा॥कह्योधर्ममारगरुषभासा।मिथ्यानासनकिरनप्रकासा॥२९॥इत्यादिकचिंत्या
अधिकाया॥परमानंदबढ्योबहुभाइ॥धर्मअधर्मफलाफलजाना॥भयोगाढवैरागप्रवाना॥३०॥मिथ्याआरतिममताहेहा॥इनिकोनामकि
योतजिनेइ॥परमदिगंबरदीक्षाधरि॥मनवचकायाकरुथआदरी॥३१॥तीनोध्यानदिगंबरभण॥त्रिष्यपंचशायजुतमुनिठण॥त्यजोसंगचोवी
समकारा॥जिनमुद्राधारीअविकारा॥३२॥श्रीरभव्यबहुसंयमलयो॥मोहसंगछिनमेतजिदयो॥मुनिनारीमनविरकतहोइ॥यहतजिभई अजि
कासाइ॥३३॥काहूनोभावगजमलणा॥सत्यदयानिजउरमेठणा॥मुनिश्रीजिनमुषअमृतबानि॥नरनारीनिजजिनव्रतठानि॥३४॥चमुरनिकाईदे
वनिगंने॥मानुषपशुमिथ्यानहिहनो॥तेजिनवानिरुनिमनरुरो॥दयाभावसवहिप्रतिप्रतिकरो॥३५॥व्रतआचारभक्तिउरलाइ॥पूजाज्ञानभक्ति
अधिकाइ॥कोइतपजपलेरअपारा।कठिनकर्मनाशकनिरधारा॥३६॥अवगोतममनगराजप्रधान॥प्रथमगुंइनमिनिरधिपानि॥दिव्यध्वजु
तपूजाकरी॥भक्तिसहितअस्तुतिविस्तरी॥३७॥नतछिनश्रीगोतमगनराइ॥समरुथिउपजीनहाआइ॥पूरवपुन्यप्रगट्यहभयो॥रुत्थप्रमानी
रुभपदलयो॥३८॥दोहा॥देखोजगमेरुत्थमनइष्टसंपदाहोता।उपजैआधेछिनकेमेकेवलज्ञानउद्योता॥३९॥चौपाई॥यथाअमरगमैसरगइ
स्योंगनधरमेगोतमथाइ॥मनविचारिसोधर्मसरेसा॥इंद्रभूतिकहिनामसदेसा॥४०॥श्रावहतिया पहिलोपछसुध्योगशुभलगनमतछा॥पूर्वो
हिकवेरानतहाआइ॥तजिपरिगधरपदपाइ॥४१॥तोप्रभुनत्वपदारथकहे॥सोपथार्थगनधरसरदेहे॥द्वादशांगनचरचनाधारि॥ग्यारहअंग
पूर्वदससारि॥४२॥तिनकेनामकहैोश्रुतउक्ता॥पहचमश्लोकवरनमंयुक्ता॥आचारांगप्रथमजानियेा॥सूत्रकृतांगदुजोमानियेा॥४३॥तीजोस्था
नकरुकहिएअंगा॥चौथोहैसमवायअभंगा॥पंचमव्याख्यप्रज्ञासरसाला॥छटमोग्यात्र कथागुनमाला॥४४॥सातमअंगउपासकदयधना॥आठम
अंतकृतहैगुनरयना॥नवमअनुत्तर कहिएसोइ॥दशमप्रश्नव्याकर जुहोइ॥४५॥विपाकसूत्रएकादशजाना॥बारमदृष्टिवाद रुषवाना॥
ताकेपूर्वचतुर्दशकहे॥तिनकेनामकिमपिअवलहे॥४६॥अग्रायनीप्रथमगुनषानि॥सुरवीर्जानु दूसियपहिचानि॥संतनमहनीजो अवलो
इ॥अक्षिनास्तिपुनचौथोहोइ॥४७॥ज्ञानप्रवादपंचमोजानि॥सत्यप्रवादषष्ठमोमानि॥आत्मप्रवादसप्तमोगनेो॥कर्मप्रवादअष्टमोभनेो॥४८

प्रत्याख्यानवमगनसारा॥दशमपूरवविद्याधारा॥पृथविद्यानुवेरमोकहे॥अरुकल्यानवारमोलहे॥५०॥पूर्वचमोदशप्राना याव॥क्रिया विस्तरच
तुर्दशाथाय॥नामावलिजानोयहसारा॥सकलभेदआगमाधारा॥५१॥द्वादशांगसवपदपरवाना॥इकसयवारहकोडिवषाना॥लाषतिरासीअठा
वना॥सहसपंचदशअधिकेगिना॥५२॥ अथसर्वपदश्लोक॥ पांचरनुजहकोडाकोडि॥ऊपरअेसनासैंनोडीनेसहि कोडिजानियेपंच॥दिलाष
जोरपरवान॥५३॥सहसंतानवेकोडिमहिन॥तातेअधिकअेारकनीमती॥वादसकोडिपचासीलाष॥सो अरुसाठेसातजुभाष॥५४॥द्वादशां
गपदसकलविचारा॥यहश्लोकनिसंख्याधारा॥तामेंएकपदहिविसारा॥कहिश्लोकवरनिअवसारा॥५५॥कोडिएकयावन आठजुलाष॥छह
साठेइकरुमभाष॥इकश्लोकहिसंख्यासोइ॥द्वादशांगअधिरतकहोइ॥५६॥अवरुकपदकेअधिरजिने॥भाषेोजिनवागसनपरमिते॥एक
सहसअठसयचौतीस॥इतनेकोडिकहेजगदीस॥५७॥छपनलाषउनीसहजार॥आठसयाय श्लोकाधार॥अवसतिचारिवेदपरकास॥द्वादशांग
गर्भितगुनजास॥५८॥पद्धडिछंद॥प्रथमानुयोगहैप्रथमवेद॥जामेंवेसठिपदकथनभेद॥हैदुतियवेदकरुनानुयोग॥लोकाअलोकप्रगट्योमनोग॥५९॥
चरनानुयोगत्रयवेदजाना।महामोषपंथकारनवखाना॥द्रव्यानुयोगचौवेदभास॥षटनिद्रव्यभेदाभेदजास॥६०॥दोहा॥द्वादशांगचरनारची ईंद्रभूतिगि
नराइ॥सोविधिकविसंक्षेपकरि।वरन्योअगमाइ॥१०॥गीताछंद॥बहुभांतिधर्मविषाकरिकैभएगोतमगनपति॥सकलमुनिगनमुख्यगोमित
चरनअरचेकरपती॥सुनज्ञानअषिलविधान॥पूरनप्रगटभव्यनिहितकर्यो॥यहजानिबुधजनधर्मउरधरि॥सिद्धीसवकरिनसर्यो॥७१॥धर्मजग
मेंसरगकरनाधर्मनेरकवरावहि।धर्मअधर्मस्वविजयकीनेधर्मसीवेपरपावहि॥जोधर्मप्रभउपदेशवानीसभाद्वादशजातिभानि॥नवलसाहिप्रनाम
जिनपदधर्ममुद्रिदीजैधनी॥७२॥इतिश्रीवर्धमानपुरानेभाषायां भरतखंडमध्यआरजखंडी।तधर्मोपदेशानूपदकालवर्तनगोतमगनधरनपरप्राप्तीनिद्वाद
शांगवरन्नाम वर्णनोनामपंचदशोधिकारः॥दो॥मोहनीसमनउदयज्ञानसूर्यजिनराया॥विस्तवतत्वदीपकनमों॥भव्यकमलविगसाइ॥१॥चौपाई॥
अवसोधर्मदेइवृषवान हर्षचंतप्रनम्योभगवान॥भक्तीसहितअस्तुतिआरंभा॥निजहितकियोपरमगुनउंभा॥२॥नुमतीर्थकरजगतमहंता।रुउप
गारकरनपरमेस कीजैआरजखंडविहारा॥भव्यपुरुषसंबोधनसारा॥३॥नुमप्रभतीनिजगनपरवीना॥निर्मलगुनसागरसमलीना॥केवलज्ञानच
रचरसाधा॥घनमरुधाकरिकरहुसनाथ॥४॥प्रभुआवकीजैयरमविहारा॥आरजखंडसमोधनधारा॥विसतत जिमिहोइप्रगासा॥भविजनकमलि
नेश्रघतासा॥५॥नुमउपदेसमव्यजियलहै।भवधिनिहवैषटगनपगहै॥होइमोषपदनिहचैनाह रुषसागरमुअनंतलहेहा॥६॥कोइपावेपदश्र
हमिंद्र कोईहोइकरगमेइंद्रा॥नुमउपदेशाधर्मरुनिकोइ॥वमेषापमिथ्यामतसोइ॥७॥तातेप्रभआवकरहुविहारा॥धर्मअनुग्रहहोइअपारा॥
नुमउपदेसधर्मरुनिकहै॥वमेषापमिथ्यामतसोइ॥७॥तातेप्रभआवकरहुविहारा॥धर्मअनुग्रहहोइअपार॥भव्यमोषमारगप्रमिलता॥अरुमि
थ्यानीरागकिनगहै॥ बहुविधिसूत्रकरीथुतिधनी॥कीजेगमनभागिजगधनी॥वेरवैरपररंसाकीना॥निजरुकर्मकरैरुमहिना॥८॥नवप्र
भक्षीनि जगतनुमराइ॥कियोविहारभव्यहितल्याइ॥मिथ्यामतइमिचल्योपलाइ॥ज्योरावरुगेनिमिरपलाइ॥९॥ गमनसमैंजोरेविधि
भई॥समोसरनचरनाधिरगई॥जलाथिरहोइकिमपिफिरिजाइ॥छिनमेंतहांरचेधरनराइ॥१०॥इंद्रादिसभासंगमिलिलेो॥जयजयघोरुक

रतनतलामंडे॥नभमेंगमनकरे सबसोइ॥बारहकोटिपटहधुनिहोइ॥२१॥छत्रचमरकरधररहसमहारि॥धुजापंक्तिकरमिलियेअपारा॥विहरे
भव्यनहितभगवान॥अनइच्छापूर्वकइरजान॥२२॥समोसरनप्रभजहा[illegible]रहोइ॥ईतिभीतिनहिव्यापैकोइ॥सोजोजनकगिरदाकार॥तरुकर
मिस्तलदेअधिकार॥२३॥वीरजआदिन अतिक्रमिहोइ॥सकलनाजरलपनेछितिसोइ॥सूषेसरजेजलकपिपूरा॥फूलेअंबुनजलजभूरा॥२५
नानादेशग्यामपुरथाना॥गगनगमनविहरेभगवाना॥विश्वभव्यउपगारनुकरे॥जगजीवनकीदविधाहरे॥२६॥केहरिमृगइकथानवहारि॥गाइ
व्याघ्रनिवसेअहिमोरा॥इत्यादिकजेक्रूरजुतोइ॥प्रानीवधलहनहिकोइ॥२७॥घातिकर्मनवहनेजिनेसअग्न॥आहारनभुगतलेसपुष्टकरे॥
नोकर्मअहार॥सकषअनंतवीरअधिकार॥२८॥छादशागनवेधिनसरवंगा॥सकादिकपदनमहिअभंगा॥नरसुरअसुरश्रीरतिरपंचा॥क
रेनहिउपसर्गप्रपंच॥२९॥चतुरानननवारिहुहिसिथाइ॥तिनीजगतजियकोंमुकषदाइ॥निजनिजकोटाधरसमुदाइ॥सबहिप्रभसनमुषलालार
[illegible]केवलज्ञानचराचरजान॥दिव्यविभवस्वामितथान॥दिव्यदेहशोभाविनुरेना॥पलसोपलनहिलागेनेना॥३१॥नषअरुकेशादहधनहिहाइ॥जि
ननेनेतिनेरहिसोइ॥चारिघातियाषपनवकरे॥एहशअतिशयउत्तिमधरे॥३२॥सबहिनहोइमाघधीभाषा॥सर्वअंगिधुनिसुनिअभिला
षा॥घिरेनिरछरवानीसोइ॥सकलाक्षरगर्भितपुनिहोइ॥३३॥इविधधर्मप्रगटनसुविसा॥तत्वअरथसूचकगुनमाला॥अहिनोरहिकवैर
सुभाइ॥मनीभावकरेसबआइ॥३४॥सबऋतुकेफलफूलहिजा॥प्रभुहिदेषिनरहेइहुलासा॥जहाआगमनुकरेभगवान॥दिव्यभूमिदर्पनस
मान॥३५॥तिनीजगतप्रभनिकटहिसेवा॥मंदसुगंधपवनकरिदेवा॥परमानंदलहेसबजीव॥तनमनसोकनरुपजैसीव॥३६॥मरुतकुमारपवनअ
तिलहे॥इकजोजनचरनकीन्हनुरहे॥सनितकुमारभक्तिउरधारा॥गंधोदिकवरषावैसारा॥३७॥इकमलकेसरिजोग॥गमनसमैसुररचेमनोग॥पंद्र
हपंद्रहपंक्तिप्रवाना॥सवालहरसेसचउनमाना॥३८॥अंतरिक्षप्रभनेभरे॥अधोभागलेतिलविस्तरे॥सवजियसुषसंनाषवढाइ॥देससवा[illegible]इमल
हिसुभाइ॥३९॥समोसरनजिहिथानकहोइ॥इहाहीहिमिलहानिर्मलगो[illegible]इ॥चतुरनिकाइदेवसमुदाइ॥हरिमिलिसोसेवैप्रभुपाइ॥४०॥रत्न
मइहीपतिअधिकार॥एकसहस्रसभानतीसनआरा॥मिथ्यारूपीतमकोदले॥धर्मचक्रप्रभुआगेचले॥४१॥इंद्रनादिवसुमंगलदे[illegible]॥सोअति
मंगलकरतासर्व॥इहविधिदेवचरितअवधारा॥वरनैअतिसपदशाअरुचार॥४२॥दोहा॥इहाअतिसयप्रभजनमके॥इहाकेवलपरगास देव
रचितचौदाकहेसचौतीसजुभासा॥४३॥प्रातिहर्यवसुसंयुगननंतचतुष्टयवंता॥ज्यालीसमुनयेकहेमंडितश्रीअरहंत॥४४॥चौपाई॥क्षुधातृषा
दुनिरागदोषा॥जनमजरामरुमरनहिनोषा॥रोगशोगभयविस्मयजाना॥निद्राषेदस्वेदमरवाना॥४५॥मोहआरतिचिंता अधिकेहे॥द्वेषअष्ट
दुजानोएह॥इननेरहननिरंजनदेवा॥नरसुरअसुरकरेसबसेवा॥४६॥विहरेदेशग्यामपुरषेटा॥करेधर्मउपदेशसंहेट॥मिथ्याज्ञानकुमार
गअंधा॥वचनकिरनतलषिजगतप्रबंधा॥४७॥रत्नत्रयनपधारेसोइ॥शिवमारगमारगभ्रमपावेभ्रमषोइ॥जिनवचसुधापियेजेलोय॥फेरिनजन ९६
गमैआवनहोइ॥४८॥मगधदेशराजायहसारा॥विपुलाचलपुरनिकटपहारा॥चारिसंघसुरचतुरानकाया॥आहेसभासहित जिनराजा॥४९
षटऋतुकेफलफूलजुभए॥वनपालकलाषअचिरजठए॥लइभेंटआयोउरपासा॥श्रेणिकभूपसभापरगासा॥५०॥धरिफलफूलप्रनाम
करए॥अरुविरतांतकह्योसमझाई॥विपुलाचलपरचंतसिरभीरा॥समोसरनआयोजिनवीरा॥५१॥सातपैंडआगेदोरायप्रभहिप्रनाम

किये[illegible]रपाय॥बदुतदाननपालहिरयो॥राजाउरआनंदीतभयो॥५२॥आनंदभेरिनगरदिवाइ॥हयगयरथपयदलहिसजाय॥सकलविय
बांधवपुरजनसाथ॥चल्योनुरतश्रेनिकरनरनाथ॥५३॥आयोसीघनलारुवार॥समोसरनहीठयोअविकार॥भक्तीभावहिमेंबउरधरेो॥जयजयका
रसबदउचरेो॥तीनिप्रदछिनदेसिरनाइ॥धूलिमालभवेस्योआइ॥मानस्थंभाविलोकयोजबे॥गयोमानगलितननेसबे॥५४॥क्रमक्रमकरितहोष
दुवेआइ॥हरमेवीरनाथजिनराइ॥भक्तिभावनुतप्रनमोपाइ॥वेरवेरभुविसीसलगाइ॥५५॥धरनकमलप्रभपूजनरुय॥अष्टद्रव्यजलआदिकल्या
इ॥फिरिकैनृपजिनवरपदनयो॥भक्तिसहितअस्तवनजुदयो॥५६॥सवेयाइकतीसा॥धन्यआजुजनममोहिहरसेजिनराजतेा[illegible]हि॥तिनिलोकना
थदेवज्ञानज्ञानकेधनी॥प्रनम्योजिनब्रह्मचार॥मानुषसकरपदनिहारदषा॥सिंधुमोहदिककमकोहतीनमोशांतिरूपदेव॥पापतापनाशनेवि
स्वदीप॥सुकिनारिवल्लभमनरंजनि जैजैजिनराजवंदा॥काटनभ्रमजालफंदा॥आवदानिवारसर्वरोषहानी॥५८॥तुमारीसर्वज्ञदेवसकरनरमुनिकरे
सेवा॥नासतअघजालजन्मसिंधुउत्धरी॥तुमगुननोनामलेतचिंतकोइहराइ॥देतअंतरमनुसुकधहोनरोगकोइहरि॥तुमरीथुतिकरेजेउज्ञाना॥कीप्र
कासतेहदवचनकोविलापइ॥अर्थसोहनीजैजैजिनराज॥५९॥सूजतजिनराजपाइ॥अष्टद्रव्यसकल्याइपानिगनिरना समोषपंथपावनी॥भवदधिसं
सारपारतुमहीउत्धरनहार॥भविजनसुषकरनधर्मवाचभावनी॥तुमहीगुरुनीतिलोका॥कर्मनिकोकरतरोकनपजप तपसीषरत वेदनाहनी॥जैजैजि
नराज॥६०॥नेमआजुसफलहोइचरा॥कमलप्रभहिजोइपलकदेसफलनयोनषनीअमनी॥हरलसफलभए आजचरचेपइ॥तुमसमासफलभयोमुर
कोहिअस्तुतिकरिपावनी॥गानसफलभयोसर्वगंधोदिकमर्सिवर्धवूरतसंसारसिंधुभक्तिनारनी॥जैजैजिनराया॥६१॥महावीरवीरधीरया
तिकर्मनासिवीरबंदोसिरनासकलसिधिसंचनी॥प्रनम्योजिनवर्धमानप्रानीदलनमानज्ञानको॥प्रकाशमोहनींदनासनीसन्मतिप्रसकमतिदाय
भवभवअज्ञान॥धारतिनेतुमचरनकमलपापमोनी॥जैजैजिनराय॥६२॥दोहा॥इहविधिबदुअस्तुतिकरिकरि फिरिप्रनम्योभूपाल॥नरकोठारआ
रुढेहे सन्योसकधर्मविशाल॥६३॥चौपाई॥गोतमगनधरकोसिरनाइ॥बदुमश्रकीनेनरराइ॥नवश्रीजिनमुषवानीभर्थी॥सोनृपमतिगनधरवरन
ई॥६४॥प्रथमनलगनाइसकहे॥श्रावगजतिधर्मदयलहे॥चतुरविंशतिजिनवरजुपुरान॥तुहेजुदेभाषेगुनषाना॥६५॥चक्रवर्तिजेबारहसभए॥तिनि
केसकलचरितवरनए॥नवहरिनवप्रतिहरिबलिजानि॥तिनकोप्रथनकह्योभगवान॥६६॥तीर्थकरकेतातरुमाता॥कामदेवचौवीसप्रख्याता॥नोनार
दअरुरोमरहइ॥चोरकुलकरज्ञानसमुद्र॥६७॥श्रीरघुरुषजेमुक्तिहितगए॥कोइरुरगनरकचुनिगये॥तिनितीकोकछुकारन पाइ॥कह्योभेदगनधरसमझा
इ॥६८॥प्रथमप्रथकअंतभाषेरसबे॥तिनिकेभेदकहोकछुआवे॥गोउत्राकारनउत्तिमसाषा॥भाखीमाषचैत्रत्रयभाषा॥६९॥दिनचवीसइकांतरकरेो॥षो
उशअंभादानाधरेो॥षोउशवर्षप्रजंतनाहगंढे॥निहचनीथंकरपरलहे॥७०॥इहालखिनिपुनिनीनहचारा॥सकलपरपरपंचमिटेधारा॥इहाहिनकरे
भावसंतोषा॥इहाअंगपाले निरदोषा॥७१॥पदुपायांजलिमुनिनिनहु॥मांसपंचमितेपंचदुदिनभास॥अरुरत्नत्रयतीनदुपक्षा॥तेरसितेदिनत्र
यकरिरक्षा॥७२॥मुकीविधानमासत्रयलेहा॥मुठीचटाइअहारहिलेहा॥अष्टाह्निकव्रतकरिउरगाढा॥कातिकफागुनमासअसाढा॥७३॥शुकूप
क्ष अष्टमिदिनआठा॥नंदीस्वरजिनपूजनठाठ॥पोषधकेकांजीइकबारा॥अष्टवरषउपपान धारा॥७४॥अरुसंकष्टव्रततीनोसाषतेरसितेदिन

तिनिजुभाषकरेनेह॥जिनवरइकगारस॥तेउवदिपरिमितेजासा॥६५॥अहिनवारनरैतवबारा॥रुद्दिआषाढभरिधारा॥षठवरसषठमहिनापरजंत एकएकरसछेरोमंता॥६६॥जिनरससमानवारपरवाना॥इकइकरसत्यागेदिनमाना॥त्रेपनक्रियाघनहिअवभासा॥तिनिकेहैत्रेपनउपवासा॥६७॥अष्टमू लअष्टगुनअष्टमिआठ॥बारहव्रतद्वादशीठाठ॥बारहितपबारहद्वादसी॥प्रतिमागेरहएकादसी॥६८॥बारिदाकीचौजुचारि॥जलगालनपवि वाइकधार॥सामाइकश्रेथोहैजा॥रत्नत्रयत्रयतीजसमेज॥६९॥एत्रेपनविधिजोकरैरो॥एकवरषअंतरनहिपरैरो॥अष्टकरमचूरनव्रतजाना॥सोसहिदि नकोकरैप्रवाना॥७०॥अष्टमिवसकेवलउपवासा॥अष्टमिआठकंजिकाजासा॥अष्टमिवसइकलंहइषाई[illegible]॥अष्टमिअवग्रासइ कषाइ॥७१॥चरुअष्टमिकुरथभोजच॥अष्टमिकसइकरसइका॥अन्नएकलठानो॥अष्टमिआठा॥वसुअष्टमिरथनसठाठा॥७२॥नमोकारव्रतअ वसुनिरजा॥सतरिदिनएकांतारसाजा॥तीर्थंकरचौवीसओरा॥अठतालिसइकांतरठोरा॥७३॥पनिसमकित बीबीरीभनेो॥अठतालिसइकांतर गनेो॥भावनपचीसीव्रतनाम॥एकांतरपंचासप्रवान॥७४॥पलविधानसुचौतिसदिना॥पचीससोषधनवपारना॥एकाहनेपाचाहलौचरि॥ चैमिउतरषहिलेलेरिठेो७५॥व्रतनहसमालाउरधरेो॥सोवनएकांतरकरैो॥लधिविधानकरैोव्रतएहा॥हैवनीमइकांतरतेहा॥७६॥समकुंभव्रतवासटि॥ दिनपैोनालिससवरपारना॥वहिसिंघकीडिनव्रतसनैो॥इकसयअटसटिदिनकोमुनैो॥७७॥इकसयसेतिससनिहिउपवास॥करैपारनेएक,तिसजास मध्यमसिंहकीडिनीओर॥असीधासकोव्रतकरिठेोरा॥७८॥साठिउपासतासकेधरैो॥बीसपारनैइहिविधिकरैो॥त्रिगुनसारव्रतालिसा॥गेराजेवाषोष धितीसा॥७९॥भाइवनसिंघकीडनीजान॥इकसयदिनताकोपरवान॥इकसयपचहत्तरिउपवास॥करैपारनैपचीसजासा॥८०॥चारित्रव्रतसुधजुग नथाम॥बारासेचौतीसानामा॥तेरहअंगनिविगउपवास॥करैनिरंतरपूरनजासा॥८१॥व्रतजुसर्वतोभद्रविचारा॥सोदिनकीमरजादाधारा॥प्रोषधपच हत्तरिपरवान॥अरुपचीसपारनेजाना॥८२॥महासर्वतोभद्रदिजासा॥दोसेंचौवनदिनपरगासा॥इकसयपचानवउपवास॥औरपारनेकदिनचासा॥८३ व्रतदुषहरनएकसोवीसा॥तितनेतिल्लकांतरदीसा॥व्रतजुपुरंदरहरिहरिमासा॥सकलअष्टमिलैोएकात्रासा॥८४॥धर्मचक्रपालकव्रतजासा॥बरजेवाषोडउ पवास॥व्रतधर्मचक्रव्रतधारै॥इससेंदलंदिनमोकलकरैो॥८५॥जिनगुनसंपतिछासटिदोस प्रोषधछतिसपारनतीस॥लघुलिनगुनसंपतिंत्रेसटि करिएकांतरपूजिधर्मेठि॥८६॥रुषसंपतिदिनइकसयवीस॥पूर्न्योमासप्रोषधदीस वरषपंचलैोपूरनहोइ॥रुक्मिलधुरुषसंपतिव्रतजोइ॥८७॥ दिनविंशोत्तरवर्षदलकरैो॥पून्योचाहैभावसिधरैो॥रुद्रवरसंतयुचालिसदिना॥पैतिसप्रोषधनपपरना॥८८॥इंद्रीलकल्यानएकरैो॥असी॥करैमोद लैो प्रोषधजिसि॥इकसयवीसपंचकल्याना॥प्रोषधजिनकल्यानकठाना॥८९॥चंद्रकल्यानदिवसपचीस॥पंचपंचदिनचौरोरीसा॥प्रोषधकंजिकएक लटाना॥रघुजुअनागारयतिविधान॥९०॥श्रुतकल्यानवहिविधिधार॥श्रुतितिपाठकरिलिइअलार॥लघुकल्यानव्रतहिदिनपंच॥एकएकदिन उदिवि धिसंच॥९१॥मध्यकल्यानजुतेरादिना॥आदिअंतइयप्रोषधगना॥एकलचारिकंजिकीतीन॥रुचरुअनागारद्वयदून॥९२॥श्रुतस्कंधव्रतजव आदेरै॥तीसदिवसएकांतरकरैो॥पंचश्रुतस्कंधहिव्रतसार॥करैउपासनिरंतरधार॥९३॥इकसयअठसदिनपरवाना॥जवचौहैआरंभैथान लघुरत्नावलिइकतालीसा॥गेारजेवाप्रोषधतीसा॥९४॥मध्यमरत्नावलिव्रत॥औरप्रोषधसवैवहतरिठेोर॥शुकलपंचमीछटिइकादसी॥

कुसंहैजकाहअरुनादसी॥९५॥महीरत्नावलिव्रतहिवषाना॥सयबत्रयथासटिदिनपरवान॥प्रोषधसवैतीनिसैधरैो॥छासटितहापारनेकरैो॥९६॥मुक्तफ लप्रोषधइकबासा॥करैपारनैतेरहजासा॥लघुमुक्तावलिनवउपवास॥नाकोंद्योरोचारिजुमास॥९७॥भद्रोत्तरदिसप्तमिएकादसी॥कारषंदोषष्टी चौदसी अरुरुकरीकीएकादसिजान॥कनिकवदिवारसपरवाना॥९८॥सुदिकीछवि अरुएकादसी॥असहनवदि अष्टमिमनवसि॥यहिमासमाहनिजमकास सोव्रतपालैनवउपवास॥९९॥ अवइयकावलिव्रतआवनीसा॥प्रोषधसवइक सय छबीस॥मांरामांसप्रतिवेलातासा॥सुकलपषमदिचारिसुहास १००॥परिमाचौथेदिजपंचून॥आठेनमेवउदिसिपून॥रुसपछिछटि आदेनवमी॥तेरसिचौरसिएत्रयसेमे॥१॥लघुइयकावलिइकसयबीस॥वेला प्रोषधधरिचौवीस॥इकहारेअठतालिओर॥सवैपारनैचौविसनोर॥२॥अवकनकावलिकरिइकवर्ष॥महिनाप्रतिछठप्रोषधवर्षा॥सुकूप्रति पदापंचमदिसै॥कृष्णदेजछटिदादसिवसै॥३॥वदिकनकावलिव्रतहिवषान॥दिनजुपंचसयबापीसमान॥प्रोषधकरिचवसयचौतीस॥जेवोमैअ ठासिदीस॥४॥एकावलिएकवर्षसमाना॥मांसहिप्रतिप्रोषधकरिसाना॥रुसचौथिचौरसअष्टमी॥आठेचौदसिपरिमापंचमी॥५॥वज्रमध्य व्रतदिनअठतीस॥जेवानवप्रोषधउनतीस॥मृदंगमध्यव्रतकरिनीस॥सतजेवाप्रोषधतेवीसा॥६॥करदिनध्यतेनीसजान॥छबीसप्रोषधधरेवासात मेरुपंक्तिदोसयदिनबसी॥सयबीसप्रोषधजेवासी॥७॥नंदीस्वरपंक्तिव्रतहोइ॥अष्टोत्तरसतदिनअवलोइ॥प्रोषधनिहिमहाव्रतधरैो॥सवपंचास पारनैकरैो॥८॥लघुनपंक्तिचारिसैआठ॥करिएकांतरप्रोषधबाठ॥विमानपंक्तिनेसठिगहेा॥प्रथमहिवेलाएकजुलहै॥९॥फिरिएकांतरचारिजुकरै याहीभांतिनिरंतरधरैो॥वारहतपव्रतवारहभांत॥वारहवारहइकरससाता॥१०॥रसहित्यागचौरासीएह॥पुनिकंचकवारहगनिलेह॥अरुउदंडवार हअहारा॥मनचिंतैवारहनिरधार॥११॥एकलवारहरुसा॥इकसयचवालिसदिनसवछ॥अष्टमिगंधवितिसयवावन्नइकसयाअठमीप्रोषधमन्न १२॥करैपारनैचौसठिजासा॥अवचंदायव्रतहरिमास॥सुकूपास इकदिनहिनबैठै॥रुषणपसइकदिनघटै॥१३॥जिनमषअवलोकनव्रतएव वर्षदिनादर्शनकरिजेव॥जिनरात्री क्रतएकउपवास॥फागुनवदिचौरसिकोमासा॥१४॥पूजाकरिजागर्नकराई॥पहरपहरप्रतिजिनदरसाइ वारदिनोलव्रतहरिमाना॥देउद्वादसिकरिउपवास॥१५॥एसौनवव्रत दिनचारिसै॥रुपरतहापचासीलसै॥जेवाअसीव उसयउपवासा॥इकसै नवलैोचठिचठिजासा॥१६॥एसौदसव्रत घसैउपासा॥सौजेवासठपचसयवास॥दइलोचढै अनुक्रमसोइ॥जौलौं यहव्रत पूनहोय॥१७॥ कंजिकव्रतजल भातअहारा॥चौसठिदिनपालैनिरधारा॥ यथाशक्तिकवधुओरहतंना॥तितनेमासरूवर्षप्रजंत॥१८॥व्रतरोहिनिकरिप्रोषध चाठ॥एकवरषथिपित्रथमआषाढ॥कर्मनिर्जराव्रतइकवास॥महिनाप्रतिचौदसीउपवास॥१९॥श्रुतपंचमिपहिला॥स्त्रविसाला॥जेउस दिपंचमिउपवास॥उज्जालिपंचमिपैसठिमास॥शुक्लपंचमीकौउपवास॥२०॥रुछपंचमीनेहीवर्ष॥रुछपक्षियचमिकौवर्ष॥आकासपंच-

मीनतरि ग्याकास ॥ भादोसुकदिपंचमिरपवास ॥ २ ॥ पंचपो ररयाणादिनजान ॥ घरपचीसवारेपकवान ॥ चंदनषष्टीभादोशुक्ल ॥ चंदनचर्चिमुभो जनमुक्त
२२ ॥ निर्दोषसप्तमिभादोसुदिधर्म ॥ फूलनिमंरुफपूजाकरनी ॥ कमारसप्तमीवाहीदिना ॥ षजुर्गमंरुफपूजेजिना ॥ २३ ॥ मन्यअष्टमीभादोसुकदी ॥ प्रोषनकरिस
यनामनयुदी ॥ मनचिंति ग्यवैवरथान ॥ २४ ॥ अवरुगंधदशमीव्रतजान ॥ भादोसुकदिदशमीकोमान ॥ गंधचर्चिदमदेइ अहार ॥ पीछे भोजनआपुनधा
र ॥ २५ ॥ पुनिसोभाग्यदसमीव्रतठानि ॥ दससहस्रनोभोजनदान ॥ इसामिनमाहुत अवधारि ॥ आदरजुतपरधरआहार ॥ २६ ॥ चमकदशमीश्रोर
चमकाइ ॥ औरभोजननहिनोअंतराय ॥ छहारदसमीव्रतइहपरकार ॥ छहरुपात्रकोदेइआहार ॥ २७ ॥ तंबोलसमिव्रतकोयह ओर ॥ दससहपात्रकोदेइत
बोल ॥ पानदसमीवीरादसथान ॥ दससभावसंदभोजनदान ॥ २८ ॥ फूलदसमीफूलनदसमार ॥ दससहपात्रपहिरायअहार ॥ फलदसमीफलदशकरिलो
इ ॥ दससश्रावकघरघरदेइ ॥ २९ ॥ दीपदशमीदीपबनाइ ॥ जिनहिचढाय आरतिकराई ॥ धूपदशमीव्रतधूपदशांग ॥ यैवैजिम्पदभावअभंग ॥ ३० ॥
ऊ नादिदशमीव्रतदशदशपुरी ॥ दशश्रावकदेभोजनफेरि ॥ वारादशमीसहारिलेइ ॥ वारावारादसघरदेइ ॥ ३१ ॥ न्योनदशमिदशमिकराय ॥ नग्गनग्ग
सपात्रजिनवाइ ॥ दशमिउदंडउदंडअहार ॥ पंचधरनिजोमिलिश्रीकार ॥ ३२ ॥ भंडारदशमिव्रतनाकि नुआइ ॥ दशजिनभवनभंडारचढाइ ॥ श्रीवेद
शेरुकसामानभाषा ॥ तिहिव्रतकरिकेवलउपवास ॥ ३३ ॥ अवछदशमीवाकीओर ॥ देषोकथाकोसकैठौर ॥ इत्थर व्रतकहिभादोधारो ॥ वारासकोपय
भोजनकरै ॥ ३४ ॥ भावदादसीताहिदिना ॥ अनरतनकरेसुगंधमनतना ॥ अनंतचतुर्दशिजोदहवर्षा ॥ भादोसुकदिचादसिकोवर्षा ॥ ३५ ॥ जिननी साषजोनव्रत
धरै ॥ तिननी वर्षउजैनीकरै ॥ यथाशक्तिपूजादान ॥ चहिनोव्रतदोपरनान ॥ ३६ ॥ श्रीरसंवेव्रतकियाजेम ॥ अरुजिहिकथ्योलहोफलतेम ॥ कथा
कोशमेंलिखजानो ॥ इत्यादिरेबहुवेदेपुरान ॥ सोगनराइभूमनिकथ्या ॥ भविजनफलिसबहीव्रतलहो ॥ इत्यादिकबहुभेदोधार ॥ आदिअंतसबसाफलजा
र ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ जोप्रछीव्रतपारनागोतमउरसाल ॥ वारसभाजयजय कियोकथानाथ धनिराज ॥ ३९ ॥ फिरिगनधरपदमनमिकै पूछेश्रेनकराइ ॥ कहोभ
वांतरपूर्वमुझमनविकलपजिमिजाइ ॥ ४० ॥ इंद्रभूतिनगराजकहिस्कनिवधिवंतनरेस ॥ इकचितनुमसरदहोकहोभवांतरसेस ॥ ४१ ॥ चौपाइ ॥ एहिआर
जषंडमकार ॥ विंध्याचलउतंगपहार ॥ दक्षिनदिशिवरकूल विशाल ॥ जलतरुधनवनश्रधिकरसाल ॥ ४२ ॥ षदिरसारतहांवसहिकिरात ॥ मासअहारी
जियश्रीथाना ॥ एकदिनाकभूपुन्यउपाय ॥ दरसिसमाधिगुप्तिमुनिराय ॥ ४३ ॥ सिरतवाइतिनपगमेपाइ ॥ धर्मवृद्धिदिनियतिराइ ॥ सुनिकिरातफिरि
गोरेहाथ ॥ भोमुनिकृपासिंधुजगनाथ ॥ ४४ ॥ काहाधर्मकहिएसमझाइ ॥ कोनभांतिनपावतनाहि ॥ भिल्लवचनसुनिमुनिदइकहे ॥ सुरापामधुमांसनर
४५ ॥ जीवननोवधकरइनलेस ॥ यहिधर्मजगमाहिमहेस ॥ ताककरिपरमपुन्यकोलहै ॥ निहचेसुरगसुरकफिरिगहै ॥ ४६ ॥ तबमुनिवचसुनिकरइ
किरात ॥ मधुअरुमांसतत्यागोजात ॥ यहीकोहमरेआहार ॥ इहविधिछिननहिजीवनधार ॥ ४७ ॥ भिल्लवचनसुनिकहइमुनेस ॥ कागमासतुमत्यागोसेस

यहसुनिकहेकिरातजुसोइ ॥ इहिव्रतनियमराषिहोजोइ ॥ ४८ ॥ श्रानजाइपरव्रतनहितजो ॥ तुम्हरेचरकमलनुरमजो ॥ मि
लुवचनसुनिव्रतदीयो ॥ जातिसंष्टहोइतिहिलयो ॥ ४९ ॥ इहिविधिकागमांसतजितेह ॥ नियमगाढधास्रोअधिके
ह ॥ फिरिमुनिवरकेमनमेपाइ ॥ गयोआपनेगृहसुषपाइ ॥ ५० ॥ एकसमेतिहिजसुभउपाइउपज्योरोगदेहअतिआ
इ ॥ वैद्यबताईओषधिताहि ॥ कागमासषायेदुषजाइ ॥ ५१ ॥ तबपरियनइमकहिअकुलाइ ॥ याहिवेगलेआवोजाइ ॥
यहसुनिभिल्लकहेतववैना ॥ कागमांसमेछोड़ोजैना ॥ ५२ ॥ श्रानजाइपरव्रतनहिजाइ ॥ व्रतविनुहेजीवितदुषदाइ ॥ व्रतजुतमि
वसुरगपदलहै ॥ व्रतविहूननरनरकहिगहै ॥ ५३ ॥ इहिविधिभद्रनियमजबसुनो ॥ मगनीपतिआयोतिहिननो ॥
सुस्रीरतसुनामविषेषि ॥ पंथनिकहयटतरुइकदेषि ॥ ५४ ॥ कांचदेवीरोवनिजोइ ॥ वहीतरुतलिआयोसोइ ॥ दे
वीप्रतीसोपुछनभयोकोनविछोहरुदनइलठयो ॥ ५५ ॥ कौनुमकहांतुम्हारोगम ॥ सबविरतंतकहोअभिराम ॥ भीलव
वचनसुनिदेविकही ॥ मेरवचनसुनोतुमसही ॥ मैहोंबनदेवि सुनिमास ॥ याहीवनमेमेरीवास ॥ मित्रहेतअ
तिपीडितदेह ॥ कामअगनिनिवाटीअधिकेह ॥ ५७ ॥ षदिरसारहैभद्रकिरात ॥ आवनिकटआईअवदात ॥ काक
मासव्रतपुन्यहिजोइ ॥ होंनहारमेरोपतिसोइ ॥ ५८ ॥ काकमासतुमदेहोजात ॥ बहनारकगतिहैषात ॥ ताकरनहम
रोवतिषरि ॥ औरनदूजोविकलपधरी ॥ ५९ ॥ इहिप्रकारपद्मिनिवचसुनै ॥ समापानतानिजमनगनै ॥ मिय
मभंगमेकरतोजात ॥ पनिदेवीजिहिरापीवात ॥ ६० ॥ यहकहिजालुरआयोनहां ॥ भद्रभिलदुषपीडीतजाहां ॥ ति
हिपरिनामपरीक्षाकाज ॥ कपटवचनबहुभाषेसाज ॥ ६१ ॥ अहोभद्रदुषपीडीतगात ॥ वैद्यकथितओषधिकि
निषात ॥ वृथामनरतुमकाहेलहो ॥ जोजीवोतोफिरिव्रतगहो ॥ ६२ ॥ तिनिकेवचसुनिवोल्योवाहि ॥ तुम्हेंयो
ग्ययहकहिवैनाहि ॥ अनुचितकर्मजगतमेनिंद्य ॥ सुव्रतनोकारनदुषवृंद ॥ ६३ ॥ मरनअवस्यापुनीमो
हि ॥ मोप्रतिजमनितदरसनहोइ ॥ तातैंकिंचितधर्मसनेह ॥ सोपरभवसुषदाइकजह ॥ ६४ ॥ सूरवीरनिश्चयदिढजानि ॥ लवहियस्त्रीनीकथावषानि ॥ व्रतफलकह्योसकलसमलाइ ॥ देवीप्रीतिवचनअधिकाइ ॥ ६५ ॥

तिनिवच सुनितबभद्र किराज॥ उरसवेगधरयो अवदात॥ सकलमास कोत्याग॥ पंचअनोव्रतमेअनुराग॥६५॥
काल निकटउरधारि समाधि॥तजेप्रानपरमेष्ठीअराधि॥प्रथस्वर्गसौधर्मसुथान॥भयोमहर्धिक देव॥६७॥
सूरवीरफीरि निजपुरजाइ॥तरुतलदेवीदेवीआइ॥तवपुत्रनिप्रतिपूछीतहां॥अब किहिकारन रोवतिएहां॥६८॥
तबफिरिपुत्रिनिभाषेपम॥सूरवीरसुनिकारनजम मोविरतांतयोंसुनजाइ॥भिल्लुमांस सबसागकराय॥६९॥
ताफलप्रथमसवर्गसोगयो॥ तुतिमदेवमहर्धिकभयो॥व्यंतरपदकोकीन्योनास॥मेरोपतिनभयोगइआस॥७०॥सुगतेकमलपलोकसुषजाइ॥बहुदेवीसबै तिनिपाइ॥सकल लछिमीतहांअधिकाइ॥ सोसबमेदेवकोसमफाकइ॥७१॥देववचन सकलसुनिसोइ॥उरमेइमि चिंयोचमयोइ॥व्रतफलप्रगटप्रवर सुषकारो॥परमारथपदसाधनहार॥७२॥व्रतजुतसुरगसंपदारलहे॥व्रतविननरकदुखोरदशसहे॥यहचिंतततहांगयोवनीपा॥समाधियुतिमुनिराजसमीता॥७३॥सिरनवाइकेव्रतमेपाइ॥ग्रीवगह्यतलीनोसुषपाइ॥चरनकमलनमिफिरिमहगयो॥यथायोग्यविधिपालनुभयो॥७४॥एहीआरजषहहिठयो॥सोमरिसुंदरपुरदुजनयो मिथ्यामततिहिकेअधिकारा॥अर्हदासश्रावोध्योसार॥७५॥
काललब्धिसोंनियडीपाइ॥ मिथ्यामत[illegible]॥ जिनमुद्रोधरितपुवहुकियो॥पूरवकर्मजलांजलिदियो॥७६॥आवनिकटमरितपफलल्यो प्रथमसगामेसुरभयो॥बहुदेवीजुतक्रीडाकरे॥धर्मनेहनिसिदिनउरधरे॥७७॥दोहा॥षदिरासुरसुषभुगति॥सागरदोइत्रजंता॥आवनिकटतहांतेचयो॥पुन्यपापकरिअंत॥७८॥उपश्रेनिकभूपालगतह सतीश्रीमतीनारि॥उपजेश्रेनिकनामतुमभव्यश्रेनिसुषकारि॥७९॥सूरवीरजियदेववहतुषसुतउपन्यो सोइह॥अभयकुमारप्रधानतेदभव सिषपदहोइ॥८०॥कांचीदेवीक्रमहिसोंचेटकनृपकिथीय॥सतिचेलनानारितुमजिनआगमलवली॥८१॥चौपइ सुनेभवांतर निजसमदाइ॥श्रीजिनचरनकमलप्रनमा

इ॥गनपतिनमिपूछोफिरिराइ॥८२॥अवआगिमभवकहिपमोहि॥यातेंउरविकलपषयहोइ॥इंद्रभूतिवोल्योनराइ॥श्रेनिकनृपसुचित्तलेगाइ॥८३॥तुमकीन्योप्रथमहिमिथ्यात॥पंचपाहिसादिकजात॥विषयनिमेंतेमचित्तवहुधर्यो॥वाथभक्ति अथरभआचर्यो॥८४॥नारकगतिअवगाढवधाइ॥थितिकासत्तमभूजाइ॥तातेंदुविधिधर्मजेकरे॥निहचेसुरगमुकतिअनुसरे॥८५॥अरुसम्यक्तिवितुसुधरेना॥हिशिवतरुमूलजुसमकितआहिभ॥ताकीदशविधिभूमिहांना॥मोषमार्गप्रथहिसोपान॥८६॥सोरठा॥आगन्यामार्गपदेश॥सूत्रवीर्यसम्यक्तभुव संक्षेपहिवहुदेस॥अर्थगाढप्रमगाढदस॥८७॥पूरववरनीसोइ॥एसमकितदसभूमिकादेषिलेठविलोइ॥सावनृपप्रतिगनधरभनी॥८८॥चौपई॥सोअवनृपतुमरुविउपजाइ॥सकलतत्वसुनिग्रहालयाइ॥परमगाठनिहचेमदनदयो॥छाइसकसमकितदिढकरिभयो॥८९॥अरुतुमसोडशभावनभाइ॥केवलनिकटत्रिनिउपजाइ॥इमगंथ्योतीर्थकरगोत॥जगअचिरजकरतायहहोत॥९०॥थितिछूटीसप्तमनरकनीप्रतिकोवंधजाइनहिहनिप्रथमनरकपहिलेपाथरो॥कमपाकफलभुंजनकरो॥९१॥वरषसहस्रचोरासिआउ॥तहांतेंनिकसिपुन्यपरभाउ
इतहीफिरिउत्सर्प्पिनिकालछेमंकरचोदमकुलवाल॥९२॥पद्मनाभितीर्थंकरदेव॥प्रथमहितुहूहोसुनिभेवा॥धर्मतीर्थवर्तकगुनगेह॥यातेंमतिमानोसंदेह॥९३॥इहविधिसुनिकेनृपजबेअतिआनंदवढ्योउरनवेमान्योसफलजनमअवपहा॥आन्योतिर्थंकरुपदनेह॥९४॥बारहसभासुनियहकथा॥भविजनमसवहरषेजथा॥केइकलीन्योवेराग॥केइकथास्योसमकितभाग॥९५॥केइकश्रावगव्रतेंआदस्यो॥ मोहतिमिरिउरतेपरिहस्यो॥पुनिनृपजिनचरनोंउआइ॥अरुगनपतिकेनैनमेपाइ॥९६॥प्रभुमुषधर्मसुधाइमिवियो फिरिनिजपुरकोआवनकियो॥अवजेसभोसरनथितिजीव॥तिनिकीसंष्यासुनहअतीव॥९७॥दोहा॥इंद्रभूतिगनधरप्रथमवाइ

प्रतिपु निरोइ॥अ निष्प्रतिगनत्र तियसुधर्मजु सोइ॥९८॥ मौर्यपंचमैमौद्गल्यषटपुत्र मित्रगुनधार॥नाम अंक
पनै अंधबलप्रभासोमअविकार॥९९॥चौपई समोसरनश्रीसनमतिनाथ॥एएकादस गनधरसाथ॥
चारिज्ञानकेधरतासोइ॥प्रभवानिप्रगटत्रप्रभपोइ॥१००॥अगपूर्वधारिजेजती॥सबै तीनिसेउममती॥नव
सहस्रनवसैमुनिराइ॥प्रभुकेचरननमैचितलाइ॥१॥अवधिज्ञानेभूषिननिरभंगन तेमुनिवरतेरहसेसंग
फलज्ञानिवरजोई॥सकलसातसेजिनवरसोइ॥२॥रुद्धिविक्रियाजुतत्रुमहो॥नवसैउतमसबै मुनैस॥
चारिज्ञानकेधारकजोरा॥पूज्यपंचसैतेसिरमोरा॥३॥उत्तरवादीमुनिसुषदानि॥सोगुनप्रगटवादिसय
जानिसबमुनिजोपंडीकृतकरो॥सहस्रचतुर्दसउतिमधरो॥४॥तेमुनिवर्धमानजिनसाग विहरेतीनिर
नननिरभंगचंदनाद्यिछतीसहजारनमैअर्जिकाप्रभपदसार॥५॥दरसनज्ञाचरनतपवती॥पकलद्धि
आवगजिनमति॥तीनीलखिश्रावगिनीसाथ॥प्रभपदनमैसीसधरिहाथ॥६॥देविनिसहितदेवबुधवान
असरव्यातकहिपरवानप्रभपदकमलनमैकरिसेव॥पूजास्तवकरैबकरैबहुभेव॥७॥सिंघसर्पआदिक
तिरपंच वैरविरोधनउपजैरंच॥असंख्यातसबसमतालियें॥जिनवरभाक्ति धरैनिजहोत॥८॥एसच
द्वादससवाल्लारा॥निवसैभावभक्तिउरधारा॥सनैसनैप्रभुकरै बिहार॥नानादशनामपुरधार॥९॥सब
कौकैरैधर्मउपदेस॥मुक्तिप्रथमविगहतमहेस॥ जिनमूरजवचकिरनप्रगासा॥मत अज्ञानमथो
अगनासा॥१०॥आरजखंडकियोसंयोथ॥तीसवरषविहरेअविरोध॥क्रमकरिपावापुरउद्यान॥सुभ
सडागतहांवारिनिधान॥११॥जाहांआइप्रभदीन्योध्यान॥त्रतियसुकलमंडयोतिहिथान दिव्य
ध्वनिभाषानहिहोइ॥समोसरनसबविघटयोसोइ॥१२॥प्रतिमायोगदियोभगवान॥प्रकृतिवह
तरिकीवीहांना॥प्रथमदेवगतिपंच सरीरा॥अरुसंघातनपंचवरवीरा॥१३॥बंधनपंजुअंगउपंगा॥षटसं
स्थानसंघननजुसंगा॥पंचवरनरसपंचदिगंधा॥अरुअस्पर्शअष्टहनिरंधा॥१४॥देवगत्यानुपुवि
जातगुरुलघुपरघातक॥अपघात॥प्रसस्तअप्रसस्तवियोगती॥अरुउछ्वासअपरजापती॥१५॥

MEMORIAL LIBRARY

उन्प्रितेकथिरअथिरविनासि॥सुभअरुअसुभजुदुर्भगत्रासि अनादेयसुस्वरदुःस्वरा अजसआसातकर्मनिहार
१९५नीचगोत्रकीकीनीहानि गपूउलंघितेरमगुनथानि सुकलध्यानसौशैलेपदधारी बहि अयोगसुसंहारि १७ ताके
अंतसमयद्वयमांहि तेरहप्रकृतिविछिपाइ ताहिप्रथमदिसातावेदनिहनी मनुषआवमानुषगतिभनि १८ मनुषगत्यानुपूर
वीजांनपंचमइंद्रीकीनीहानि सुभगतहांआदेयविनासि जसअरुउच्चगोत्रकुनिभास १९ पर्याप्तत्रसबादरकर्म थिरपति
थंकरगोत्रसुसर्म इहविधिअष्टकर्मकौंजारि उर्ध्वगमनकरिशिवपुरधारि २० कातिककृष्णअमाचसिस्वाति नक्ष
त्रसमयपरभाति लोकसिखिरिराजितजिनवी किंचितउनजुचर्मसरीर २१ कर्मकायहनिमुक्तीहिगण सिद्धअष्टगुणामंडित
प्रण मोहकर्मअरिकीन्योनास क्षायकसमकितगुनपरगासि २२ ज्ञानावरनीकर्मनिपूर ज्ञानअनंतानंतजुपूर दर
सनवरनीकर्मनिवारि तबअनंतदर्शनगुनधारि २३ अंतरायप्रकृतनिकोजारि बलअनंतकीकरीसंहारि नामक
र्मकौजवषयकीन अगुरुलघुगुनकीप्राप्तिकीन २४ आवकर्मजिनिनास्योजबै अवगाहनगुनपायोतबै प्रलववेद
नीकर्मनिवारि तबहिअगुरुलघुगुनु आधारि २५ गोत्रकर्मजयकीन्योनास अव्याबाधगुनहिपरकास इहविधि
मुगतेसुरकअनंत निरुपमनिरावाधानिरसंक २६ नरसुरअसुरषचरपतिजोइ तिनिजगतजीयसुषआ
वलोइ तेसबजोपिंडीकृतकरै सिधनिएकसमयनहिजुरै २७ अवहहचतुरनिकाइदेव प्रभनिवैनिजा
निसबभेवजयनैअपनैवाहनसाजि परियमजुतआयेसुरजाय २८ सबविक्रतिपूरववतंजानि गीतनृत्य
उत्सवउरआनि झुंतिकल्यानक करिजिनराज पावापुरपूजाकरिसाज २९ प्रभुतनषिरिकपूरवजाइ
बषअरुकेसरहेसमुदाइ लेलैसुरपतिजिनतनरच्यो मनिययसिवकामेंपूनिसच्यो ३० भक्तीसहितपूजा
तहाकरी अष्टद्रव्यजलआदिकधरी चंदनअगरकपूरमगाइ सरउंतगकीन्योअधिकाइ ३१ तहाजिनत
नमायामयधस्योअग्निकुमारप्रनामजुकस्यो उठीमुकटज्वालामनीतनी अतिविकरालअगिनिकिघनी
भसमीकृतसरीरभयोअबंध दसहीदिसिपैल्योजुसुगंध सबसुरनयजयकारसुकरै अतिआनंदभक्ति
नुधरै ३२ प्रथमइंद्रकरभालल्यगाइ भस्मवंदनाकरिअधिकाइ अरुसबचतुरनिकाइदेव निजनिजसीस
नमतभविरव ३४ अवनिपवित्रजानिअधिकाइ फिरिपूजाकीनीसुरराइ यहनिरवानक्षेत्रसुभथान भ

विजियपातिगहरननिदान ३५ अतिआनंदनुअंगसमाइ नाटकरंगकियोसमुदाइ देवनिसहितपरमउत्साहकि
न्योअधिकअधिकसुरनाह ३६ इहिअंतरगौतमगनराइ सुकलध्यानवलेकर्मघिपाइ केवलज्ञानभयोअवदा
त इंद्रआदिसुरकीनिजात ३७ गंधकुटीतहांरचीकुबेर नानाभांतिनलाइलेर भविजनहितसंबोधनकाज
विहरेसभासहितगनराज ३८ दोहा आठठमासकरिहिनहेरहीयरषजक्चारि श्रीसनमतिजिनसिवगण
चौथेकालमझारि ३९ अथभवावलीवर्णनं पद्धडीछंदा भवग्रथमपुरुषाभीलईस संबोधिवनमेंश्रीमुनीस दू
जेभवउपनेंभिदत्तदेव सोधर्मसुरगवहुसूरकलेव ४० तीजीभवभरथचक्रसुपुत्र मारीचकुवरमतथापिउत
चौथेभवब्रह्मजुसुरगवास पंचमभवब्राह्मनेजटिलजास ४१ सोधर्मसुरगछटेजुपाष पुनिपहुपमित्रद्वजसप्त
माय अष्टमसौधर्मजुसुरगदेव दुजअग्निसिंधनवमेंगनेव ४२ दसमेंसुरनतकुमारहाइ दुजअग्निमित्रगेरम
हिसोइ माहेंद्रसुरगद्वादसमवास तेरमद्वजभारद्वाजजास ४३ मिथ्यामतसेयोवहुप्रकार षरिव्राज्यकरी
क्षाधरिअसार ब्रह्मदासभूतसुरगमहेंद्रहोइ तहांतेंगिरिवहुपरजाइसोइ ४४ दोहाइतर निरगोदेसोगयो
सागरषकप्रजंत कवहुकअसुरकुमार कैनरकनिमांहिफिरंत ४५ पद्धडीछंदः तवसाविसहस्सतरुअंक
होइ वहुपापीदुःरकनगनहिकोजाइ तहअसिसहसभवसिपंजान फिरिनीमरक्षभयोदुरकषांनी ४६
सीवीससहस्सतनुधरिधरिउतेहे जहांचंदनरसजुरूपरेह पुनिकेवलिरूक्षसोभयोआनि भवनवेसहस
ताकेप्रवान ४७ जहांचंदनरसजुसहस तीसलहि दुःरक सहेजानेजिनीस पुनिकनयरिकोडिजु
पंचसोइ जहातीसकोडिजलमछहोइ ४८ फिरिनिकसिभयोगनिकाजुजोनि सोसाठिसहसतन
धरीउजोनि फीरिपंचकोडिभवस्थान जोडितवभयोनपूंसक सारिलाव फुनिवीसकोडित्रियवेदभा
व ५० तहारजभयोनरनयेलष सोजाटकोडिपुनितुरीयसाष भवसागरमेंरुलियोनिदान मंजार
भयोतहांदुःरवषांन ५१ जहांधरीदेहसीवीसकोडि भमियोचिर कालप्रजायजोडि अवसाठिलाष

भयोजैनराय तहाकर्मनछोडेकरिउपाय ५२ फिरिभोगभूमधरिअसीलछ तहापायोसुःरवसुविधिदछ पुतिसुरग
लोकसुरभयोसोइ तहाजसीलछतनुधरयोजोइ ५३ क्रमसोगिरिगर्भजानि है साठिलसवाकोप्रमान पुनिपुनिभ्रमिसंसा
र वहुवहुपरजायेधरजोर ५४ दुहकर्मभयनिपस्योसोइ त्रसथावरमेंधरिजोइ तहासवदुरवनानाप्रकार मिथ्यात
रूपलियोयहजपरा ५५ भवटकिभयोदुजथावराष्य पूरववतदीक्षाधरियसाष्य फिरिभयोमहेंद्रजुसुरगदेव दे
विनिकरिभुगतेसुषघनेव ५६ तीजेभयेश्रीनृपविश्वनंद करितपसाधारिनिदानवंद फिरिमहासर्गकभयेस्वर्ग
सोइ सुषकीनेंवहवर्णाननहोइ तहातेंचयपोदनपूरअधिस केसयपदग्रथमत्रिपृष्टईस फुनिपस्योसप्तमेंनरक
जाइ दुषसहेतहाधरिदुष्टका ५८ फिरिनिकसिधरिसिंघहिप्रजाइ अतिरौद्रध्यानसोंमरनपाइ तवप्रथमन
रकतहागयोसोइ तहोजाइसहेवहुकूरजोइ ५९ पुनिभणसिंघहिभवनगिरीस. तहांसंबाधेचारनमुनीस
सौधर्मसुरगमेंसिंघकेत सुरलहेसुरकेदेविनिसमेत ६० कनकोज्वलविद्याधरसुराइ तिनिधरितप
स्याजेनपाइ फिरिकीसवसुरभवद्वादसेव तहानामवैसयोजुमहर्षिदेव ६१ हरसेननृपतितेरमगनेय
त्रजिराजरिद्धिवनमेंसेवसेय पुनिमहासुक्रसुरलहिउवास सुरवभुगतेनानाविधिहुजास ६२ प्रियमित्रचक्रेय
तिगुनगरीस पूरवविदेहषट्षंडधीस सहस्रारसुरगफुनिसुरकजारी अगरहसागरवसातास ६३
सत्रमभवमेंनैपुन्दनाम बहुपरपोढसकारनभाइसुठाम अच्युतसुरेसपदलयोफेरि सुषकीनेवाइसजल
धीघरे ६४ तहातेंचयविसलाउपरवसेप श्रीवीरजनमजगप्रगटेधेय तपकेवलिज्ञानजुसाधिएव नि
रवांनपवंदोसुदेव ६५ दोहा आदिभूवनरचोदहाअंतहिउनविसेव मेंध्यमभवभटकेवहुरिथावरत्र
सवहुदेव ६६ गीताछंद चारिगतीदुखसुरकभुंजवितीर्थपद सुभपाद्रयो साधिसुरनजोगुतिम
सकलकर्मषिपाइयोसुरअनुभसुरनरषगपति मुनि सवदासनमतिपदनप शाधिसिवपुरसिद्धपदलह
हिअष्टगुनमंडीतभए ६७ वीरजीनजनचरनपू जतवीरतिनि आश्रमरहे वीरनेहविचारि सिवसुषथी
रजकोंगहे वीरइंद्री अघघनेरे विरविजइ होसही वीरप्रभासुभवसोचितनित वीरकर्म विनासहि

॥ ६८॥ दोहा॥श्रीसनमतिप्रभचरननुनवरन्यो॥आगमदेषिअवकवितकलकरहु॥कछुउनपतिनहिविशेषि॥६९॥
चौपई॥चारिवरनभेवैस्वजुचंसतिनिमैकविकुलकोअवंतसं॥सवहीन्यांतिचौरासीकहो॥जुदीजुदीभाषीपहमहो॥७०॥
गोलापूरवप्रथमयषांति॥गोलारारेदूजोजानि॥गोलसिघारेतीजेधारा॥चौथेसाषिवंतपरवारा॥७१॥पंचमजैस
वालकोजान॥छटमहूंमंडलकहेवषान॥कठनेरेसप्तमहैसोइ॥षेठरुवालअठमगुनजोइ॥७२॥नेतवरहियान
वमैकहे॥सिरीपालदसमेपुनिसही॥एकादशमलमेचूजानि॥बीसवालद्वादसपरवान॥७३॥त्रयदशजगा
खालेगोत॥तिनिमेंजैनीजिसमहोता॥इतनिसोदेवारहन्यांतिधर्मसनेहपांतिइकभांति॥७४॥जिनचेरेचादमव
रनएवघलवारपंतिसाषउनविंशविमेंनैमाभाष॥बीसमन्यातिअसइमवरलए॥षोडशपदमावतिपुरवाए॥द्
सरसचहमेगुनधार॥७५॥महपतिअठारमतिसोइ॥उनविंशविमेंनैमाभाष॥बीसमन्यातिअसहटीलहे॥पं
छिवारइकविसमकहे॥७६॥पूरवारवाईसोधारठठतवालतेईसनिहार॥चोवीसमहेपुष्करवारहत॥नेलौक
लुजैनलगारा॥७७॥मंडितवालडेडियाजाना॥सहेलवारहरसोरामानै॥गोरवारंपुननगरांघनो॥सीहोरामटनागघ
नो॥७८॥चीतौराजुमदेराहोइ॥हरिषीओरधाकरासोइ॥बाचनगरियाजनोदोइ॥मोरवारटाकोपुनिओढ॥७९॥मांग
रऔरजलहरकहेवंशसिंघपुरीवहयकपोलालहे॥डोसीवालनगेंद्रालेवा॥गोडपूरिश्रीगोडभूमेवा॥८०॥गागडडाव
डायतासजाना॥बघनोराजुदसोरावानाघनोरकेथेराहाल॥कोरवालअरुसूरीवाल॥८१॥रेकवालपुनिसिंघेवाल॥न्या
तिसिरेलाडविसाल॥लहेवारअरुजोरमवाला॥जंबूसरासेठियाप्रवर॥८२॥चतुरथेलपंचमदोकूवेअग्रेरवाल
अयुध्यापूर्व॥नानावालमडाहलकहे॥कोरटकालकरूहियालहे॥८३॥अनदोरेहहरदोरहसोइ॥जेहखालजेरी
दोइ॥माघकराकरानसियापत्र॥कोलपुरियंमवोराहेमा८४॥अकनतहमैसनिपरवारी॥पंचेडावेसओमरेसा॥पजा
नोचौरासीनेतवैसवरनसवहीसिरजैत॥८५॥दोहा॥तिनिमैगोलपूर्वकीउ॥पतिकहोवषानि॥सवोधेश्रीआ
दिजिनइमानकवंसपरवान॥८६॥चौपई॥गोइलगठकेवासीतेस॥आएतहांश्रीआदिजिनेस॥चरनकमप्रन
मैधरिसीस॥अरुअस्कृतिकीनीजगदीस॥८७॥तवप्रभुकपावंतअतिभए॥श्रावगवृततिनिहूंकीदए॥क्रियाच
रनकीदीनीसाष॥आदरसहितगहीनिजठीक॥८८॥पूर्वव्याषीनेतजुएह॥अरुगोइलगठथानेकदेह॥तातेगो

लापुरवनामभाष्योश्रीजनवरजभिराम ८९ दोहा गोलापूरवभेदत्रयप्रथमविसदमुजान औरदसविपचिविसेक
हीवैकगुनषांनि ९० सवैया ३१ पागफुसकेलेयोचेरेघिघामरे यांपेपोरिहावबनोनिहांसुटेटवारजानिये इंद्र
महाजनषुरदेलोमिलसेयारोतेलेअतहरेयानिरमोलिकप्रवानिये धौनीपेथवारहदेलेकपासीयारसगोदरेगुगो
रियाघवालियाजुयनिये ९१कासोडसरपडेसाधारनदीकाकेरावतवदरोटि यासोनीसोसजुलीजीये तापरीयाधु
धोलियापचलौरे घटेदेसनकुटाहिरापुयावेरियासुनीजिये कानकपुरियाकनसेनियापटोरिहावाहर गंद्रपसादेल
मनीजीये ९२ दोहा सुरपुरियाअरुकौनियाप अठावनवेकनवलकहे संखेपसोजिनकुलवरनेन ९३ चौप
ई वैकचदेरियाषेरेचारि प्रथमहिवहदूषे परधारि षामत्रितियषरोपहचानि चौथोगेरुचौराजानी ९४ वहुचंदे
रियाप्रथमवषानगोत्रप्रजापतितिनहिवषानि चतुरथकालआदिहीमांन गोल्हनसाहुचदेरीथा ९५ तिनितेजौ
सवरननकरो वांढेग्रंथपारनहिधरोपंचमकाल भेलसाम्राम भीषमसाहुवसेतिहिगमे ९६ चारिपुत्रतिनि
केवहभाग कुलदीपकधर्महिअनुराग प्रथमवहोरनगुनकीषांन द्वितीयसहोदरकृपानिधान ९७ अहिमनतीजे
सुषअतिपर्म चौथेरेतनसाहिधरिधर्म एकदिनासुभपाकहिपाइ मंत्रउपाइकियोचहुंभाइ ९८ पितासहितमि
लिकियोविचार कीजेकछुधर्मविस्तार राजमयाअरुधनकनसवै ताकोफलकछुलीजेअवै ९९ सवहिप्रतिष्ठाकी
विधिकरी रज्योदिवालौउतिमधरी जिनीप्रतिमाजुमराईतहां तोरनधुजाछत्रअतिजहां १०० श्रावगदेसदेस
केआइ तिनिकीआदरअधिककएइ अरुपूजाकीविधिसवकिन जथायोग्यभाषीसुतलीन १ चारिसंघको
दीन्योदानऐसकीन्योसवकोसनमांन पुनिरथकोफेरोचढिजाप उपरश्रीजिनप्रतिमाथाप २ नगरचोधरीलोधी
जान तिनिकीनीअधिकीमहिमानचारिसंघनिलीटीकाकियोसंघईपदेसवजुरिकेदियो ३ दोहा सोरहसेइक्या
नवेअगहनसुभतिथिवार नपजुलारवुंदेलकुलतिनीकेराजमलार ४ यहसंखेपवषानकरिकेप्रतिष्ठा
धर्म परियनजतुवाठीविभवतिनिउतपतिवहुपरम ५ चौपइ संघईरतनसाहिगुनपुत तिनिकेभएजदीलेपु
त तिनिकेतनुजअनंदीराम तिनिकेसुतहिजगतमनिनाम ६ दोहा क्षेत्रविपाकीप्रकृतिवसतभ्योभेलसा
म्रामदेसषटोलानिजनगर आयकियोविसराम ७ तिनिकेउपनेउपनेचारिसुतप्रथमहिकेसोराइ सूरज

षोडराइसुनिपरमानंदसुभाइ ८ तिनिमेराइकेतीनीपुत्रपरवांन प्रथमहिदेवराइसनिसोजइंद्रमनिजान ९ सिघ्रदेवा
राइघरमानमतीउरधारिचारिपुत्रतिनिकेभयकहोनामअनुक्रमारि १० चौपइ प्रथमहिनवलसाहिजानियेदूजेसु
लोरामसमानिये तीजेघासीरामबषान चौथेराघवसिंघसुमानु ११ प्रथमहिनवलसाहिजाम मंथारंभकियोअभि
राम अवतिहिदेसराजकेधनी बंसबुंदेलासवतिरम १२ दोहा छत्रसालपंतिप्रबलनातीश्रीहरिदेश सभासिं
घसुतहिंदुपतिकरहिराजहहिदेस १३ इविधीतिव्यापेनहीपरजाअतिआनंद भाषापठेपढावहीषटपुरआव
गहद १४ चौपई ताहिसमैकरिमनहिहुलास कीजेकछुश्रीजिनवरसारू भक्तीप्रभावबढ्योउरअनि तवप्र
भवर्द्धमानपांनि १५ कबीअस्तनवभाषाजोरि नवलेसाहिमहतजिमनमोरि सकलकीर्तिउपदेशप्रवान
पितापुत्रमिलिरचेपुरान १६ सन्मतिजीनगुनकोटिनिवद्ध यहनीतअनिचरितसमृद्ध जोसैथेनिजहिरदेल्या
ह तापुरकेसवपातिगजाह १७ जेयहग्रंथपढेउरधारि अरुजोरेसुपढावैसारु तेपरभवहुंदेगुनमांन औरप्रग
टउतिभवहुज्ञान १८ लिषेग्रंथयहपरमपवित्त औरदेइलिषाइसुचित्त मतिश्रुतिज्ञानलहेजीव तपकरि
केवलपतिजगपीव १९ रागद्वेसनासगुनषान कटैकमीआरिवेलिनिदान यातनअंतकालछगिरारनदीआ
आरजषहमलार २० दोहा अदभुषोडससुपनफलजन्मवीरजिनराज तिनिगुनषोडसपरिकरनूरग्रंथ
भविकाज २१ षोडसकारनभावनाभाइपूरवठाम तीर्थंकरलहिचरितषोडसतिनहिप्रभाव २२ ऊद्ध
लोकषोडसखरगपुन्यलहेअवतार तिमियहषोडससमरूपकरिलीनोग्रंथपार २३ षोडसकलासुचंद्रमा
पूरनमासीजांन तिमषोडसअधायकरिपूरनभयोपुरान २४ ज्योमामिनिउपमाबसेलहिषोडसशिंगार
यहपुरानअनुपमलसैकहिसोपडसअधिकार २५ सप्तप्रकृति उपसमषिपकनोकषायषकाज ताहितनव
सतसंधिकरिरच्योग्रंथजिनराज २६ अष्टकरमनासेसवे अष्टमप्रथवीवास तिनिवसुदल दुवारकरि
अरूतिकियोअभ्यास २७ सातमहीना आदिलिषिकछु अंतरनअंत थिरताअल्पतिग्रंथरचिषोड
समासप्रजंत २८ अथसर्वग्रंथकठीक छपय उनतिससयपंच्यासदिचौपहीप्रमानैं दोहाचउसयआठसो
रठाद्वादशआनौ त्रेसठिगीताछंदजोनिया पंचसाहिथिरविसुइकतीसाजानिचालिसैतालठीककरि

अधिकसतासीप--- छंददपद्धडिलेषलेइसाषटगाथाचउछप्पयआठविसेषि २९ दोहा क-----
उनती अडिछुपंचचउरीतान छंदत्रिभंगीएकदसकाव्यएकपरमांन ३० चौपइ अवतिनकोकरिजोर अठतिस
सयअरुछहअधिक अरुश्लोकसिवो सहस्रपरमानमिति ३१ दोहाउग्रसेनितिविक्रमनृपतिसवतसरग
नितेह सतअगरपश्रीसअधिकसमयविकारीपह ३२ द्वादसमेंसूजगनोद्वादसअंसहिउन द्वादसमोमासहि
ननोसुकलपक्षतिथिपंन ३३ द्वादसनषत्तवषानियेवुधवारहस्तिजोग द्वादसलगनप्रभातमे श्रीदिनलेषमनोग ३४
रितुवसंतअरुफुलुअतिफागुसमयसुभहीयवर्द्धमानभगवानगुनग्रंथसमापति कीय ३५ अथकवित्तघुता दो
हा द्रव्यनवलक्षेत्रहिनवलकालनवलहैऔर भावनलभवनवलहहिगैर ३६ कायनवलअरुमनवलवचनवल
विसरामनवप्रकार जुतनबलयहनवलसाहिनाम ३७ छंध्ये सारस्वतनहिपढ्योकाव्यपिंगलनहिसिख्यो सक
छंदव्याकरनअमरकोमेनहिदीष्यो अलपबुद्धिथिरनाहिभक्तिवसभावचष्यायो जिनमतकेअनुसारग्रंथको
पारलगायो बुधवंतसंतजनवीनतीहांसिभावकोदूमतिकरो लुकहीनछंदजोअमीलकहुंतौविचारि
असिरधरो ३८ गीताछंद कीतिजरसनहिचाहमेरेलाभलालचउरनहीं कवितछंदनमांनमेलु
छवुधिमुकहेतही ग्रंथप्रमारथप्रकासकरवपरकारजहितकियो करमहानिनिमित्तनिहचेजातमापदथि
रथिरलियो ३९ वीरजिनवरचीतउतिमभावजुतजोभाषही सुनेजनरत्यागिचितासुद्रुथिरमुनराषही हो
इअष्टोसिधिनवनिधिमनप्रतीतिधेसहिज्ञानदरसनचरनआदिकमुक्तिसामग्रीयही ४० सकलतिर्थकरजु-
नाइकगुनछयालिसजासुतेसिद्धजगतनिवारनिरुपमअष्टगुनमयसासुते सूरिपंचाचारिमंडितपरमपाठ
कउधरोसाधयोगअभंगसाधतसदामुहिमंगलकरो ४१ दोहा पंचपरमगुरुयुगचरनभविजबुधगुनधाम
क्रमावंतदीजैभगतिदासनबलपरिनाम ४२ इतिश्रीवर्द्धमानपुराणेभाषायांभगवद्विहारगमनसकल
देससंबोधनश्रेनिकप्रश्नावर्णानभगवन्निर्वाणकल्यानकप्राप्तिनामषोडशोमाधिकारः १६
इतिश्रीवर्धमानपुराणसंपूर्णो श्री श्री श्री श्री श्री

शके १७०४ रुद्रोद्गारसंवत्सरे वैशाखशु॥ १२ रविवासरे- ए॰ जै॰ पु॰ क॰ ए॰ ब॰ बां॰ म॰ के॰

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017